Published by
B. R. Suneja
Navketan Publications
New Delhi.

Hindi Translation of **My Nine Lives in the Red Army** by **Mikhale Soloview** Originally Published in English by David Mckay Company Inc. New York
(Published with the permission of author and publishers)

Printed at
Pioneer Fine Art Press
Delhi.

पहला भाग

यह प्रत्येक के लिए एक खराब वर्ष था। युद्ध समाप्त हो गया था और पराजय के परिणाम सामने आने लग गये थे। अमीर गरीब हो गये थे; अमीर अधिक अमीर हो गये, गरीब अधिक गरीब हो गये; परन्तु कुछ गरीब से गरीब यकायक बहुत अमीर बन गये। हम लड़कों ने इसे भवितव्यता समझ कर स्वीकार कर लिये। अगर आकाश गिर पड़ता या यदि चन्द्रमा अचानक एक मुरमुरे बिस्कुट की तरह हो जाता तो भी हमें कोई आश्चर्य न हुआ होता।

युद्ध के अंतिम वर्ष में हमारा शहर आरमागेडन से भौगोलिक दृष्टि से नजदीक किन्तु चामत्कारिक रूप से उससे अलग था। किन्तु यह चमत्कार ही था कि वह युद्धज्वाला से बचा रहा। रात में निरन्तर बिजली सी चमकती रहती और भारी-भारी तोपें दनदनाती रहती थीं, जिस प्रकार आकाश में बिजली कौंधने के बाद दूर कहीं गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई देती है। लोग इधर कुछ भी ध्यान नहीं देते थे। सेना के हाईकमाण्ड का कहना था कि युद्ध अच्छी तरह चल रहा है किन्तु वह इतने वर्षों से आशाप्रद रिपोर्टें दे रहा था कि कोई अब उसकी बात पर विश्वास नहीं करता था। सभी खबरें अच्छी खबरें होती थीं। वे सिर पैर की विज्ञप्तियां भी निकाली जाती थीं, जैसे "लैम्बर्ग अभी भी हमारे हाथ में हैं" जब कि हर कोई जानता था कि लैम्बर्ग पर रूसी कब्जा कर चुके हैं। कुछ लोग शहर छोड़ कर चले गये थे किन्तु आतंक नहीं था। हमारा शहर चूंकि इस्पात और गोले बनाता था इसलिये उसके महत्त्व को समझते हुए हाईकमाण्ड ने बाधा डालने वाले सारे यातायात को बड़ी होश्यारी से बाहर के रास्तों से जाकर मोर्चे से अलग

कर दिया था। घायल सैनिकों और भयभीत निष्क्रमणार्थियों के दिल तोड़ने वाले नजारे को वह हमारे इस्पात कारखाने के कर्मचारियों और खानों में काम करने वाले खनिकों की नजरों से बचा कर रखना चाहता था। उसकी धारणा में जीवन प्रवाह और शास्त्रों का उत्पादन किसी भी हालत में जारी रहना चाहिये था।

मेरे सहपाठी और मैं इन घटनाओं को उपेक्षा के भीने पर्दे के जरिये देखा करते थ जैसे लोग किसी दूर विदेश में जहां उनके कोई दोस्त या रिश्तेदार नहीं हैं, ज्वालामुखी फूट पड़ने या दुर्भिक्ष पड़ने की घटनाओं को देखा करते हैं। हमें मार्श फौक के निर्णयों की अपेक्षा प्रो० फ्रेंक की भावमुद्राओं की ज्यादा चिन्ता थी। शरत्कालीन फुटवाल चैम्पियनशिप, जिसे यदि फाइनल में रियलशूल की टीम ने रैफरी की सहायता से हमें हरा न दिया होता तो हमारी कक्षा की टीम ने करीब करीब जीत ही लिया था, वर्सलीज की शान्ति सन्धि से अधिक महत्वपूर्ण समझी जा रही थी। तब हम बिल्कुल ही किशोर थे।

जाड़े का मौसम बहुत ठण्डा था। कमरे गर्म रखने के लिये कोयला प्राप्त करने का कोई उपाय न था, यद्यपि हमारे घर के तहखाने के १०० गज से भी कम नीचे लाखों टन कोयला जमीन में भरा पड़ा था। हैप्सवर्ग राजतंत्र की समाप्ति के बाद जो नया शासन कायम हुआ था उसने लोगों की राजनैतिक चेतना जगा दी थी। खनिक संगठित हो रहे तथा सभायें कर रहे थे, उन्हें कोयला निकालने की फुर्सत कहां थी।

जो लोग चोर बाजार की कीमतें नहीं दे सकते थे उन्हें खाद्य पदार्थ भी दुर्लभ थे। मांस के पके हुए टुकड़े राख के-से रंग के होते थे और रोटी की तरह उनका स्वाद था। रोटी काली होती थी और उसमें रेत का सा स्वाद आता था। यह कुछ लोगों की बर्दाश्त से बाहर था। उन्होंने या तो कोई जहरीली गैस सूंघ कर या नदी में कूद कर आत्महत्या कर ली। परन्तु हम तो अभी लड़के थे; और डाकटिकट एकत्र करने, फुटवाल खेलने और

प्रा० फ्रैंक के किस्से सुनने-सुनाने म ही बहुत व्यस्थ रहते थे। इतिहास कान्ति-करिए हो रहा था, लेकिन हमें उस का पता न था। हैप्सवर्ग राज घराने के अंतिम लोगों के चित्र कक्षाओं और गलियारों में से हटाये जा रहे थे और उन स्थानों पर उस व्यक्ति के चित्र लगाये जा रहे थे, जिसे हमने पहले कभी नहीं देखा था।

हमें बताया गया था कि अब एक जनतंत्र कायम हो गया है। हमने कोई परवाह नहीं की क्योंकि हम आशा करते थे कि उसका निर्माण प्लेटो की 'रिपब्लिक' पुस्तक में निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार होगा। घर पर हमारी मां ने कैसर फ्रांज जोसेफ प्रथम का चित्र तभी उतारा जब उसके भाई एडी ने उसे यह चेतावनी दी कि कैसर और पुराने शासन के प्रति वफादारी रखना नई सरकार का निगाह में राजद्रोह समझा जा सकता है। किन्तु कैसर के चित्र के स्थान पर कोई दूसरा चित्र लगाने से उसने इन्कार कर दिया। दीवार पर जहां वह चित्र लटका हुआ था, एक भद्दा निशान बना रहा।

मैं कभी भी राजतन्त्रवादी नहीं रहा यद्यपि मेरी जवानी के प्रारम्भिक दिनों में कैसर के प्रति भक्ति के लिए मुझ पर बहुत मजबूत दबाव था। मेरी माँ को 'गरीब कैसर' के साथ बड़ी समवेदना थीजो बड़ी शोचनीय परिस्थितियों में अपनी पत्नी और पुत्र से हाथ धो बैठा था। भोजनालय में अपनी कुर्सी के सामने दीवार पर टंगा शाहे शाह फ्रांजजोसेफ प्रथम का चित्र उसे बहुत भाता था। यह एक प्रभावशाली चित्र था जिस में हिज मैजेस्टी का आधा अंग दिखाया गया। बाल उनके सफेद थे, दाढ़ी-मूछें थी और वे दान-बन्धु-दानी नजर आते थे।

मेरा ख्याल है कि मेरे परिवार की राजतन्त्र के प्रति सहानुभूति सिर्फ एक संयोग की बात थी। १८४८ से १९१६ तक कैसर का शासन रहा और मेरे परिवार के सुख के दिन भी यही थे। मेरे दादा सन् १८५० में इस

शहर म आये थे जब वे और कैसर दोनों ३० वर्ष से कुछ ही अधिक आयु के थे। कैसर का राज्यारोहण बड़ी शान और सज-धज के साथ हुआ था। दूसरी ओर मेरे दादा का इस नगर में पदार्पण बिल्कुल चुपचाप हुआ था। परिवार की दन्त कथा के अनुसार दादा घास ले जाने वाली गाड़ी आटे की दो बोरियों पर बैठकर जो तब परिवार की कुल सम्पत्ति थी इस नगर में आये थे।

आगामी अर्ध शताब्दि में कैसर और मेरे दादा दोनों अपने अपने क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य करते रहे। कैसर एक च्छत्र राजा थे और दादा ने इस क्षेत्र में एक बड़ी मिल, अनेक मकान, और एक निजी बेंक खड़ा कर लिया था, तथा काफी जमीन के मालिक बन गये थे। कैसर का मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व जब १९१३ में वे परलोक सिधारे तो दादा उस शहर के सबसे धनी व्यक्तियों में गिने जाते थे।

मेरी मां कभी यह बताने से नहीं चूकती थी कि दादा ने यह सफलता अपने खर्च कम कर सकने के कारण ही प्राप्त की।

"वे कभ। किसी चीज को अपव्यय नहीं करते थे" मेरी मां कहा करती, "बेंक में वे काम में लाये हुए लिफाफों की उलटी तरफ का उपयोग किया करते थे"।

कुछ अरसे तक मैं भी काम में लाये हुए लिफाफे जमा करता रहा और प्रत्यक्ष में मेरी समृद्धि उससे बढ़ी नहीं। इससे मैं ने यह परिणाम निकाला कि मेरी मां ने यह कहानी मुझे मितव्ययिता के गुण बताने के लिए सुनाई है। जब मैं कछ और बड़ा हुआ तो मैंने दादा के बारे में भिन्न भिन्न प्रकार के किस्से सुने। उदाहरणार्थ मुसीबत में पड़े दोस्तों या रिश्तेदारों को बड़ी बड़ी रकमें दे डालने में उन्हें कोई उज्र नहीं होता था। सौभाग्य से वे उस समय तक जीवित नहीं रहे जब वे अपना ऐश्वर्य युद्दोत्तर काल के आर्थिक भूकम्प-मुद्रास्फीति, मुद्रावमूल्यन, युद्ध के बौण्डों की क्षति, विफलताओं और

मन्दी में नष्ट होता हुआ देखते । तब से हमारे परिवार म यही विश्वास घर कर गया है कि कैसर फ्रांज जोसेफ प्रथम उसके संरक्षक देवता थे और सन १९१६ में कैसर का मृत्यु विलर्ट परिवार के स्वर्णिम युग की समाप्ति का प्रारम्भ था।

"जब तक कसर जीवित रहा सब कुछ ठीक रहा", बिल्कुल ही अप्रत्याशित क्षणों में मेरा माँ कहा करतीं। अच्छे माँस, अधिक धूप वाले अवकाश दिवसों, कम कीमतों, अच्छे स्वास्थ्य, तेज रेलगाड़ियों और विश्वास पात्र नौकरों का श्रेय कैसर के अस्तित्व को ही था। सन् १९१८ के बाद इस प्रकार की राय रखना राजद्रोह से कम न था और अपनी माँ के साहस पर मुझे आश्चर्य होता था।

अतीत की बातें करने का मेरी मां को बहुत शौक था। दादा के बारे में वे बहुत से किस्से जानती थीं, जिन्हें सुनकर यही अनुमान हाता है कि वे बहुत विलक्षण आदमी रहे होंगे। मुझे उनकी सिर्फ धुंधली स्मृति है क्योंकि जब मैं ६ वर्ष का था, तभी वे मर गए थे। वे बाईबल के उल्लेख के मुताबिक हमारे परिवार के मुखया थे। बड़ा और सुन्दर आकार का सिर, लम्बी स्फेद दाढ़ी और ऊंची आवाज, यह उन की आकृति की विशेषता थी। इतिहास की अपनी पाठ्य पुस्तकों में मैं जब कभी माइकेलएंजलो की 'मसा' तसवीर देखता तो मुझे उनकी स्मृति हो आती। वर्षों बाद जब कभी मैं रोम जाता, तो मैं मानो दादा के बारे में माइकेलएंजलों की पूर्व कल्पित धारणा को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मूसा की उस मूर्ति के पास आता था जो विकोलो में सानपिएट्रो में अवस्थित है।

सभी के दादाओं के बारे में कुछ किस्से-कहानियाँ प्रचलित हो जाती हैं। मेरे दादा ने क्या किया, क्या कहा, इस बारे में जितनी किम्वदंतियां हैं, उन्हें मैं दोहराऊंगा नहीं। किम्वदंतियों को रोकना कठिन होता है। किन्तु मुझे अपनी माँ की कहानियों से प्रेम था और उन सब कहानियों में भी मुझे दादा और ताऊ मैक्स के किस्से बहुत पसन्द आते थे।

ताऊ मैक्स दादा के ज्येष्ठ पुत्र और पिता जी के प्रिय भाई थे। मेरे पिता, जो कैसर की सेना में रिज़र्व अफसर थे, प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ होने के तीन महीने बाद ही रूसी मोर्चे पर मारे गये थे। तब मैं सिर्फ ७ वर्ष का था लेकिन अपने पिता की मुझे अच्छी तरह याद है और मां से उनके बारे में किस्से सुनकर तथा मां के शयनकक्ष में उनके चित्र को देख कर मैं उन्हें और अच्छी तरह जान गया था। यह चित्र काफी बड़ा, सुन्दर और अण्डाकार था जिसमें मेरे पिता मेज से ढासना लिए दिखाए गये थ। उन्होंने ऊँची सख्त कालर की काली साटिन की वास्केट पहनी हुई थी। दो पंक्तियों में उसमें बटन लगे हुए थे, जो तब बहुत फैशनेबल रहे होंगे। उनकी भद्र आकृति और शांत गरिमा से मैं प्रभावित हुआ। वे अपने दयामय नेत्रों में मेरे लिए प्रेमपूर्व और उत्साह वर्धक अभिव्यक्ति लिए मुझे देखते प्रतीत होते थे। जब कभी मैं उदास होता कमरे में जाकर उस चित्र के सामने खड़ा हो जाता और अपने पिता की आंखों में देखने लगता। उन्होंने कभी मुझे निराश नहीं किया। उनकी आंखों ने सदा ही मुझ में उल्लास भरा है। जैसे जैसे मैं बड़ा होता गया उनका प्रभाव बढ़ता गया। उनके बारे में बातें करते हुए मां अक्सर रो दिया करती थ।। तब म विषय बदल कर ताऊ मैक्स के बारे में सवाल पूछने लगता था। ताऊ मैक्स मानो दूर से ही लोगों को खुश कर देते प्रतीत होते थे।

"ताऊ मैक्स तुम्हारे पिता पर सदा कृपालु रहे।" मां कहा करती और तब सुबकियां भरने और आंस पोंछने लगती थी। उन्होंने विएना में तुम्हारे पिता की पढ़ाई का खर्चा दिया। "हंसी खुशी के वार्षिक फाश्चिंग समारोह में वे दोनों सभी नाच कार्य क्रमों में साथ साथ जाते थे। तुम्हारे पिता ताऊ मैक्स के साथ बिताये सुहावने दिनों की बातें ही सुनाते रहते । नाश्ते के समय से पहले तो वे किसी नाच में से शायद ही कभी आते हों। एक र—"

मां चुप हो गई और उसका चेहरा एक सुखद आकांक्षा मचे मुस्कान से कोमल हो गया और मैं समझता हूं कि मेरे पिता के जीवित रहते हुए जब कभी भी वे मुस्कराती होंगी, ऐसा ही होता होगा। मैंने उनसे नहीं पूछा कि वे क्या किस्सा सुनाने जा रही थी और न मुझे उसका पता लगा। सत्य न जानना और उसके बारे में कल्पनायें करते रहना ही अधिक अच्छा था।

ताऊ मैक्स विएना से हमारे शहर बहुत कम आते थे। मां कहा करती थीं कि इस शहर में उनके लिए बहुत ज्यादा दुःखद स्मृतियां हैं।

"विएना में रहना अधिक अच्छा है।" मेरी मां कहा करती थी। "विएना" उसके लिए शिल्पकारी की सर्वोत्तम जगह थी। वह वहाँ साल में दो बार अपनी प्रिय चाची बरटा को देखने और अपनी पोषाक बदलवाने आया करती थी। ये पोषाकें हमारे शहर का एक दर्जी सीता था और वे बहुत अच्छी मालम दिया करती थीं किन्तु मेरी मां को तब तक उससे संतोष नहीं होता था जब तक विएना में उनमें कुछ रद्दोबदल नहीं करा लेती थी। वह अपने दोस्तों को विएना के इस दर्जी के बारे में जो एकान्त म रहने वाला रहस्य-मय व्यक्ति तीत होता था, बताया करती थी।

ताऊ मैक्स हमारे घर पर पिता की मृत्यु के कुछ अरसे बाद सिर्फ एक ही बार आये। वे नीली वर्दी और हल्के नीले पेण्ट पहने हुए, ऊँचे कद के और फुर्तीले थे, उनका कालर काफी सोने और अनेक सितारों से अलंकृत था। मुझे यह जान कर उनके प्रति श्रद्धा हुई कि वे आस्ट्रीया की सेना में पूरे कर्नल हैं।

वे रहने के कमरे में आये। अपना टोप और तलवार उतारी और उन्हें लापरवाही से गद्दे पर फेंक कर प्यानो के पीछे बैठ गये। कुछ ही क्षण बाद कमरा मधुर संगीत ध्वनि से गूंज उठा। ताऊ मैक्स प्रसिद्ध प्यानो वादक, प्रसिद्ध अल्फ्रेड ग्रूनफील्ड के दोस्त रहे थे। वे विएना की प्रदर्शिनी

में स्वागत करने वाली लड़कियों को दो प्यानों पर स्ट्रास के 'वाल्टज' राग गा कर मुग्ध कर देते थे। ताऊ मैक्स संगीत में बहुत दक्ष नहीं थे लेकिन उन्हें संगीत का सच्चा शौक था। उन्हें संगीत से प्रेम था जब उन्होंने अपने दायें हाथ की उँगलियों से प्यानो की रैक पर एक-दो-तीन; एक-दो-तीन की ताल से 'एम्परर वाल्टस्' की पहली सरगमों को बजाना शुरू किया, तो मेरी मां के शीशे के बक्से में रखी मीसेन मूर्तियाँ भी मानो राग अलापने लगीं और खिड़की शीशे भी एक-दो-तीन की तालबद्ध आवाज से मजे में खड़खड़ाने लगे। मेरी मां भी अपने पैर से एक-दो-तीन, एक-दो-तीन की ताल देने लगी और तब ताऊ मैक्स ने अपनी कोमल और भारी आवाज में गाना शुरू किया।

यह बहुत अच्छा गाना था। मैं मुग्ध हो गया और यह नहीं समझ सका कि मां ने रोना क्यों शुरू कर दिया। ताऊ मैक्स स्ट्रास के 'एम्परर वाल्ट्स' के बीच में ही एक उठ खड़े हुए, और सान्त्वना देने के भाव से अपना हाथ मां के कंधे पर रक्खा और तब बड़े आश्चर्य से मैंने यह देखा कि वे भी रो रहे थे। आँसू उनके गालों पर से बह कर नीचे आ रहे थे लेकिन उन्होंने अपना मुंह मोड़ लिया जिससे मेरी मां उन्हें रोता न देख सके। तब वे मेरे पास आये, और मुझे अपनी गोद में उठा लिया।

"मुझे खुशी है कि तुम अपने अच्छे पिता की प्रतिकृति हो। भगवान् उनका भला करे" उन्होंने कहा। उन्होंने मुझे यकायक इतनी जोर से उतार दिया कि मैं गिर सा पड़ा। वे वापस प्यानो पर जाकर बैठ गये और एम्परर वाल्टस् फिर शुरू कर दिया।

ताऊ मैक्स गत शताब्दी के अंत में दादा का घर छोड़ कर विएना चले गये थे। इससे दादा को बड़ी निराशा हुई। वे आशा लगाये हुए थे कि उनका ज्येष्ठ पुत्र मिल और बैंक को सम्भालेगा किन्तु ताऊ मैक्स डाक्टर बनना चाहते थे। उन्हें चिकित्सा के प्रति रुचि थी। दादा अपने जीवन में कभी

सख्त बीमार नहीं पड़े थे और डाक्टरों का भविष्य वे अच्छा नहीं समझते थे। वे कहा करते थे कि ये नीम हकीमें घोड़ों के चारों ओर वकीलों से सिर्फ एक कदम हट कर रहते हैं। तो भी जब ताऊ मैक्स ने उन्हें एक अच्छा डाक्टर बनने का वचन दिया तो उन्होंने विरोध करना छोड़ दिया। ताऊ मैक्स ने अपना वचन पूरा कर दिखाया। व बहुत होश्यार विद्यार्थी रहे, यशस्वी प्रो० ईसलबर्ग और स्खाऊटा के असिस्टेंट बन गये और अन्त में उन्होंने अपना औषधालय खोला और विएना विश्वविद्यालय के मैडिकल स्कूल में पूरे प्रोफेसर बना दिये गये। विद्वानों की संस्थाओं के वे सदस्य बन गये, सारे यूरोप में घूमें, अन्य प्रोफेसरों को उन्होंने बड़े दुरूह व्याख्यान दिये और प्रसिद्ध हो गये।

ताऊ मैक्स पर परिवार को गर्व था। मां कहा करती थी, "जरा प्रतीक्षा करो, वह बहुत बड़ा आदमी बनेगा।" वे इस प्रकार के कल्पनाओं के घोड़े दाड़ाया करती थीं कि ताऊ मैक्स नाइट और शायद बेरन ही बना दिये गये हैं। राजा ने उन्हें आनुवंशिक नोबल पद—दे दिया है। यहूदी होते हुए भी शायद उसे वरिष्ठ सदन का सदस्य बना दिया जाए। मां कहा करती थी कि यदि ऐसा हुआ तो वह एक असाधारण बात होगी पर ताऊ मैक्स के बारे में क्या सब कुछ असाधारण नहीं है ?

"वे कैसर के राज में सबसे बड़ा स्त्रीरोग विशेषज्ञ है" मेरी मां कहा करती थीं। चिकित्सा कार्य में ताऊ मैक्स की कुशलता की बातें सुन कर मैं प्रभावित अवश्य हुआ था किन्तु पूरा विश्वास मुझे नहीं था। जब मैंने अपनी मां से पूछा तो उन्होंने अस्पष्ट रूप में कहा कि "वह स्त्रियों का डाक्टर है।" जब मेरी मां ही साफ साफ नहीं बता रही थी, तब उन बातों को कुरेद कुरेद कर पूछने से कोई लाभ नहीं था। इसके अलावा मुझे ताऊ मैक्स के चिकित्सा कौशल की ज्यादा परवाह नहीं थी। मुझे उनके चिकित्सा से अन्य कामों में कहीं अधिक दिलचस्पी थी। वे प्रसिद्ध शौकिया पेन्टर थे, घुड़सवार थे। चिकित्सा सम्बन्धी उत्तमोत्त ग्रन्थों के प्रथम संस्करणों का उन्होंने संकलन

किया था और एक बार कांगो में किसी विचित्र बीमारी के बारे में जानकारी
प्राप्त करने भी वहां गये थे। सबसे ज्यादा रोमांचकारी बदनामी की वह
शोहरत थी, जो उनके बारे में लोगों में फैली हुई थी। जब मेरी मां और
उनकी सहेलियां काफी कल्पश ले रही थीं, मेरे कमरे में घुस आने पर
यकायक बातचीत करना बन्द कर देती थीं तो मैं जान जाता था कि वे मेरे
ताऊ की किसी नवीनतम कारगुजारी के बारे में बातें कर रही हैं। मुझे अभी
'बच्चा' समझकर कोई नहीं चाहता था कि मैं वे बातें सुनूं।

ताऊ मैक्स अविवाहित थे। उनके रोगी, जिनमें कुछ उच्च सामाजिक
हैसियत की महिलायें थीं, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि वे दृढ़ नैतिक चरित्र
की भी हों, उन पर मुग्ध प्रतीत होते थे। वे बीमार न होने पर भी उनके
औषधालय में जाते थे। मुझे तो यह बात बड़ी बेहूदी प्रतीत होती थी कि
कोई आदमी जबतक विवश न हो जाय, तब तक किसी डाक्टर के पास जाये।
मैं अपने पारिवारिक चिकित्सक डा० ग्रुएन से, उनके प्रतीक्षालय में ईथर की
गन्ध से, शीशे की पेटियों में चमकते हुए चाकुओं से, मेज पर रखे रूई के
गठरों से और एक कोने में रखी सफेद तामचीनी की बाल्टी से, जिसे मैं खून
से भरा समझता था, बहुत डरता था। मुझे बाल्टी पर निगाह डालने का
कभी साहस नहीं हुआ। जब कभी मुझे डा० ग्रुएन के औशधालय जाना
पड़ता था तो मैं घबरा जाता था। तो भी तीत होता था कि कुछ महिलायें
ऐसी हैं, जिन्हें वस्तुतः किसी डाक्टर के पास जाने में आनन्द आता हो।

"वे सब उसके पीछे पागल हैं" मेरी मां कहा करती थी। "इसमें
उसका कोई दोष नहीं है।" मेरी मां समझती थी कि ताऊ मैक्स कोई गलती
नहीं कर सकते। वे और दादा हमेशा उनका पथ लिया करते थे। परिवार
में यह निन्दनीय तथ्य सब को मालूम था कि दादा बड़ी बड़ी रकमें चुपचाप
विएना भेजा करते थे क्योंकि ताऊ मैक्स ने भारी जुआ खेला था और वे
हार गये थे। (ताऊ मैक्स के बहुत से कारनामों का यह मुझे उचित परिपाक
प्रतीत होता था कि वे मूर्खता पूर्ण दुःसाहसी जुएबाज हों) जब मौसी इरमा आह

भर कर कहा करती थीं कि अब मैक्स आखिरकार ५० साल का हो गया है, नाम भी उसने काफी पैदा कर लिया है, उसे अपने ये मूर्खतापूर्ण तरीके छोड़ कर अन्य पुरूषों के समान शादी कर लेनी चाहिये और घर बसाना चाहिये तो मेरी मां कहा करती थी, "बेवकूफ मत बनो इरमा।" तुम जानती हो कि मैक्स का जन्म केवल शादी करने के लिये ही नहीं हुआ है। अगर वे सब बेवकूफ और उसे प्यार करने लगें तो वह क्या करे ?

और तब दोनों जोर जोर से आहें भरने लगतीं और मौसी इरमा कहा करती थी 'हां, क्या तुमने चांदी की सी सफेद कनपटी के मैक्स को सफेद कोट पहने हुए उसके कार्यालय में देखा है ? स्पष्ट है, मैं तो उन महिलाओं को कोई दोष नहीं देती।" वे दोनों सदा 'वे महिलायें' कह कर बातचीत किया करती थी और मैं हैरान रह जाता था कि 'वे महिलायें' कौन हैं किन्तु कोई मुझे उस रहस्य के बारे में बताता नहीं था।

कभी कभी ताऊ मैक्स कार्य उन्हें शहर में बदनाम करते थे। एक बार दादा को एक स्थानीय पत्र का कई कालम इश्तहार, ताऊ मैक्स का नाम उसमें न आने देने के लिये खरीदना पड़ा किन्तु उनकी नवीनतम कारगुजारी की अफवाह काफीहाउसों और बाइसिक्ल क्लबों में फैल जाती थी जिसमें मेरे ताऊ, ताई, चाचा व चाची सदस्य थे। (क्लब का नाम मेरे लिये एक पहेली था। क्लब का कोई भी सदस्य कभी साइकल पर सवार नहीं देखा गया)। कानाफूसी और वक्रोक्तियों से मैं इतना ही जान सका। ताऊ मैक्स कैसर नरेश के किसी सम्बंधी के साथ एक भयानक काण्ड में उलझ गये हैं।

मैंने इसके बारे में अपनी मां से पूछा पर उन्होंने गुस्से में झिड़कते हुए कहा कि यह इस नगर की एक खास गद्य है।

उन्होंने कहा, "कुछ डाक्टर ताऊ मैक्स की प्रतिभा को देख-देख कर जलते हैं। एक बार ताऊ मैक्स विएना के आपेरा बाल में सारी रात नाचे थे और सबेरे जब वे तब भी टोप और टेल पहने हुए थे अपने औषधालय में आये तो उन्हें बताया गया कि एक रोगिणी बहुत बीमार है और उसके

मरने की आशंका है। तुरन्त ताऊ मैक्स ने सफेद पोशाक और रबड़ के दस्ताने पहन कर ऐसा आपरेशन किया कि ये डाक्टर देखते रह गए। सब अखबारों में यह बात छपी थी। रोगिणी ठीक हो गई। तब क्या अचम्भा है कि डाक्टरों को ताऊ मैक्स से चिढ़ है, स्पष्ट ही उनसे ईर्ष्या है।"

मैं बहुत अरसे तक यः रात में सोने से पूर्व उस किस्से के बारे में सोचा करता था। मुझे दिखाई देता कि ताऊ मैक्स आपेरा बाल से लौटकर तेजी से अपने अस्पताल में जा रहे हैं। सिर पर हैट पहने, रेशमी कपड़े के अस्तर वाला कोट पहने, स्फेद टाई और तेल लगाए हुए बिल्कुल फिट वेषभूषा में हैं और हाथ में एक सुन्दर काली छड़, जिस पर चांदी की मूंठ है, लिए हुए हैं। मुझे विश्वास था कि छोटे-छोटे आपरेशन इसी औपचारिक वेष में करते हैं। मेरे लिए वह एक जागुवार थे और जादूगर

और उनके पास चांदी की मूंठ की छड़ी रहा करती है। मैं ने मां से पूछा कि क्या ताऊ मैक्स के पास भी ऐसी छड़ी है। वह अचम्भित प्रतीत हुई।

"वस्तुतः वह उसके पास रहती है" उन्होंने कहा और मेरे बाल सहलाने लगीं। "तुम ने यह कैसे मालूम किया ?" उन्होंने पूछा।

मैं ने ताऊ मैक्स की नवीनतम कारगुजारी के बारे में सावधानी से पूछ-ताछ शुरू की लेकिन मुझे तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक मैं ने अपने चचेरे भाई रोल्डी को सब कुछ बता देने के लिए बोसनिया १८६६ के ३ टिकट देने का वचन नहीं दे दिया। भाई राल्डी मुझ से तीन वर्ष बड़ा था और जीवन की वास्तविकताएं जानने का दावा किया करता था। मैं तब स्थानीय प्राईमरी स्कूल में पढ़ता था लेकिन वह सैकण्डरी स्कूल रियलश्यूल में जाया करता था जहां वह न तो ग्रीक पढ़ता था और न लैटिन; सिर्फ फ्रांसीसी और अंग्रेजी भाषा पढ़ता था।

"यह एक भयानक किस्सा है" रोल्डी ने कहा। ताऊ मैक्स बैरन बनाए जाने वाले थे, बैरन रोशचाइल्ड के समान। जो कुछ हुआ उसके बाद अब उन

के बैरन बनने की कोई आशा नहीं है। कैसर ताऊ मैक्स पर बहुत क्रुद्ध है।"

मैं स्तब्ध रह गया। कैसर की नजरों में आ जाना भले ही वह कुपित दृष्टी हो, मैं बहुत बड़ी सफलता समझता था। लाखों लोग पैदा होते और मर जाते थे और कैसर को उनके अस्तित्व का भी मान नहीं होता था।

"क्या हुआ ?", मैं ने पूछा।

रोल्डी ने मुझे व्यंग्यात्मक दृष्टि से घूरा। "तुम ग्रेड-स्कूल के बच्चे कुछ नहीं जानते।" उसने कहा। अर्भरजोगिन के साथ ताऊ मैक्स के किस्से के बारे में कभी नहीं सुना ?"

इस मामले के बारे में मेरे मन में सिर्फ धुंधला सा ख्याल था। पर मैं ने झूठ-मूठ ही ऐसा दिखाने की कोशिश की कि मैं उसे जानता हूं।

"आर्कडचेज ताऊ मैक्स की रोगिणी थी और वह उनसे प्यार करने लगा।" रोल्डी ने कहा। "बहुत उग्ररूप से, तुझे समझे ? जब उसके पति आर्कड्यूक को उसका पता लगा तो उन्होंने ताऊ मैक्स को द्वन्द्व युद्ध के लिए चुनौती दी।

अब मुझे हतप्रभ होने का डर नहीं था। मैं ने द्वन्द्व युद्धों के बारे में अपनी कहानी की पुस्तकों में सब कुछ पढ़ रखा था। "तलवार या खंजर" मैं ने ठीक-ठीक पूछा, मानो नाश्ते से पूर्व में प्रति सप्ताह दो द्वन्द्व युद्ध देखा करता हूं।

"तलवार और खंजर बच्चों के लिए है" रोल्डी ने घृणापूर्वक कहा। "क्या तुम नहीं समझते कि यह द्वन्द्व गुप्त रखा जाना था ? आखिरकार ताऊ मैक्स साधारण आदमी है और यह कल्पना नहीं की जा सकती कि शाही परिवार के सदस्य साधारण व्यक्तियों को चुनौती देंगे। वे "सैटिस्फैक्शन फाटिग नहीं है।"

"यह क्या बला है ?" मैं ने पूछा।

"तुम्हें इससे क्या मतलब है।" मेरे भाई ने कहा। "कुछ भी हो द्वन्द्व युद्ध की व्यवस्था बिल्कुल गुप्त रखी जाती थी जिस से कैसर को उसका पता न लगे।"

"क्या उसे पता लग गया ?"

"निस्सन्देह। कैसर हर बात का पता लगा लेता है।"

मैं ने भी हामी में सिर हिलाया। एक बात पर तो मैं रियलश्यूल में पढ़ने वाले अपने चचेरे भाई से सहमत था।

"वे पिस्तोलों से लड़े।" रोल्डी ने कहा। ताऊ मैक्स बहुत सधे हुए निशाने बाज थे। सेना में उन्होंने चांदमारी की बहुत सी प्रतियोगितायें जीती थीं। वह आर्कड्यूक को इस प्रकार खत्म कर सकता था यह कहते हुए रोल्डी ने अपनी उंगलि चटकाई। बहुत कोशिश करने पर भी मैं उसकी नकल नहीं कर सका। "पर आर्कड्यूक के लिए उन्हें खेद था और वे उसे सबक सिखाना चाहते थे" रोल्डी ने कहा।

यह मुझे कोई अक्लमन्दी प्रतीत नहीं हुई। एक साधारण आदमी राजपरिवार के एक व्यक्ति को द्वन्द्व युद्ध में गोला से मार कर गौरव हासिल करने का अवसर गंवा दे, यह बात मेरी समझ से परे थी।

"ताऊ मैक्स को उसे मार डालना चाहिए था," मैं ने कहा। रोल्डी ने मुझे घृणा की दृष्टि से देखा "तुम कुछ नहीं जानते। आर्कड्यूक को मारा नहीं जाता। आर्कड्यूक अब बहुत थोड़े रह गए हैं उनकी हिफाजत का जानी चाहिए।"

"जंगली हिरणों की तरह ?"

"हां। ताऊ मैक्स ने आर्कड्यूक को जो गोला मारी वह उनके हृदय की बाहय परिधि को की छेदती चली गई। ताऊ मैक्स के लिए यह बहुत

आसान था । डाक्टर होने के नाते वह बिल्कुल ठीक-ठीक यह जानते थे कि हृदय किस स्थान पर है,।"

मैं ने उसकी बात से सहमति प्रकट की ।

"आर्कडयूक गिर पड़े" राल्डी ने कहा । "हर किसी ने यही समझा कि वे मर गए किन्तु उनसे ज्यादा ताऊ मैक्स का पता था ।"

"बेशक"

"उन्होंने अपने घुटनों पर बैठ कर आर्कडयूक के दिल की धड़कन कान लगाकर सुनी, उन्हें अपने अस्पताल ले गये और सर्जन के दस्ताने पहन कर उन्होंने आर्कडयूक का हृदय सी दिया और ५ सप्ताह बाद आर्कडयूक पहले की तरह ही तन्दुरुस्त प्राटर में सवारी कर रहे थे । वह और ताऊ मैक्स तब से पक्के दोस्त बन गए ।" रोल्डी लोलुपता के साथ मुस्कराया और उसने कहा, "अब मुझे ३ बोसनिया टिकट दो ।"

"अभी ठहरो" मैं ने कहा "आर्कडचेज का क्या हुआ ?"

"ओह ! मैं नहीं जानता" मेरे भाई ने कहा और अधीनता से अपने कन्धे उचका दिये । स्पष्ट ही इस विषय में उसने कुछ सोचा ही नहीं था । "मैं समझता हूं कि वह अन्य डाक्टर से इलाज कराने चली गई", रोल्डी ने कहा ।

"और कैसर ने क्या किया ?"

रोल्डी चिढ़ गया । "कैसर क्या कर सकता था ? उसने आर्कड्यूक को बुलाकर एक सामान्य आदमी के साथ उलझने पर झिड़का । तब उसने ताऊ मैक्स को बुलाया और उन्हें इतनी व्यावसायिक पटुता दिखाने के लिए अपना दरबारी बना दिया । मैं शर्त लगाता हूं कि अब जब कभी कैसर वस्तुतः बीमार पड़ेंगे वे इलाज के लिए ताऊ मैक्स को ही बुलायेंगे ।"

इसके बाद हफ्तों तक सोने से पहले मैं इस किस्से के बारे में सोचता रहा । मुझे बार-बार यह दृश्य दिखाई देता कि हिज़ मैजेस्टी कैसर अपन

राज्य के बड़े-बड़े डाक्टरों से घिरे हुए मृत्युशय्या पर पड़ हैं। वे कैसर की शोकमग्न जनता के लिए एक विज्ञप्ति तैयार कर चुके हैं जिसमें लैटिन शब्दों की भरमार है और जानकारी कम है। कटु सत्य यह था कि ये बड़े-बड़े डाक्टर हिज़ मैजेस्टी का जीवन बचाने में असमर्थ थे और तब कैसर सही मायनों में अपने अंतिम शाही प्रयत्न से हाथ उठाकर धीमी आवाज में कहते हैं। "ताऊ मैक्स को बुलाओ।" तभी सन्देशवाहक दोड़ पड़ते हैं और कुछ ही मिनट बाद ताऊ मैक्स का कैसर के शयन कक्ष में प्रवेश होता है। ताऊ मैक्स अभी अपेरा हाल में रात भर नाच कर आये हैं, अभी तक टेल, टाई और टौप कोट पहने हुए हैं और हाथों में सफेद दस्ताने पहने ुए चाँदी की मूंठ वाली छड़ी लिये हुए हैं।

वे शय्या के पास जाते हैं, मरणासल कैसर पर क्षण भर के लिए अपनी पैत्री दृष्टि डालते हैं, नाड़ी का मुआयना करते हैं और तब वहाँ जमा हुए बड़े-बड़े डाक्टरों और विद्वान् ोफेसरों पर निगाह डालते हैं जो ताऊ मैक्स की घोषणा की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते हुए आदरपूर्वक पीछे हट कर दीवार से सटकर खड़े हो गये हैं।

"श्रीमानों, ताऊ मैक्स कहते हैं" "हम तुरन्त इनका आपरेशन करेंगे" वे नफासत से अपने सफेद दस्ताने उतार देते हैं।

मैं आपरेशन की विस्तृत बातों के बारे में कभी नहीं सोचता था क्योंकि छुरियों, रुई के गट्ठरों और खून का दृश्य मेरे सामने आ जाता था और खून के नजारे से मुझे सदा ही बड़ा डर लगा करता था। पर इसके बाद मेरी कल्पना यह होती थी कि कुछ घण्टों में कैसर खतरे से बाहर हो गये हैं। उसके दो सप्ताह बाद वे प्राटर में घूम फिर रहे हैं और हिज़ मैजेस्टी चामत्कारिक ढंग से ठीक हो जाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के नक्ति गिरजाघरों और यहूदियों के पूलागृहों में विशेष प्रार्थनायें की जा रही हैं। ताऊ मैक्स अब बैरन बना दिये जायेंगे। "बैरन वान विलर्ट कैसर एण्ड कोनिग्लिचर हाफंगाइना कौलौजी।" हिज़ मैजेस्टी के आदेश से।

मां ने हमारी कक्षा में आये नये विद्यार्थी के बारे में पूछा "स्टर्नब्रूनो के बारे में ? मैंने कहा। गणित में वह भीषणरूप से अच्छा है, स्वयं प्रो० फ्रैंक से बढ़कर। जहाँ से वह आया है, वहां के लोगों ने गणित में विद्वता हासिल कर रखा होगी। एक दिन जब तीन अज्ञात राशियों के समीकरण का सवाल प्रा० फ्रैंक ने उससे पूछा।"

"वह कहाँ से आया है ?" मेरी माँ ने टोक कर कहा।

"मुझे नहीं मालूम।"

"उसके माँ बाप कौन हैं ?" मेरी मां ने पूछा। "क्या वे पार्क के किनारे रहते हैं ?।"

व्यक्तिशः मुझे इन बातों से कोई सरोकार नहीं था। परन्तु मेरी माँ सदा मुझ से यह पूछा करती थी कि कोई लड़का कहाँ से आया है, क्या उसका परिवार पार्क के किनारे रहता है ? हमारा शहर मध्य यूरोप में य· ोत्तर काल के तीन बिल्कुल नये देशों की सीमाओं से कुछ किलोमीटर की दूरी के अन्दर ही अवस्थित था। यह पूछने का रिवाज सा था कि अमुक व्यक्ति कहाँ से आया है। उत्तर रहस्योद्‌घाटक हो सकता था। 'पूर्व से' जिसमें पोलैंड, स्लोवाकिया, चेकोस्मानिया, बल्गारिया और रूस शामिल किये जाते थे, आने वाले लोग गरीब थे जो युद्ध और तज्जन्य विनाश के बाद अपने घरों से भाग कर आ गये थे। वे निराश्रित शरणार्थियों की तरह आये थे, जिनके पास कोई साज़-सामान नहीं था। वे असुखकर औद्योगिक उपनगर में जहां से सारी रात पिघले हुए इस्पात के लावे की भट्ठियों में से निकलती धारायें देखी जा सकती थी। हवा में गन्धक की बू आती थी। स्टीम पाइपों से सदा सी-सी की आवाज निकलती रहती थी और इस्पात के मल को भट्ठियों से कूड़ा फेंकने के ढेर तक ले जाने वाली गाड़ियों की खड़-खड़ाहट होती रहती थी। उपनगर के अन्तिम घरों के पीछे ये ढेर क्रमशः ऊपर उठते हुए पर्वत श्रृंखला सी बनाते जा रहे थे जिस पर कुछ उग नहीं सकता

था। घर भी गन्दे लगते थे और कुछ अरसे बाद उसका भी रंग वातु मख के पर्वतों की तरह राख का सा नीला हो जाता था। इसी प्रकार उन घरों में रहने वाले व्यक्तियों का रंग भी वैसा ही हो जाता था।

और शहर में पश्चिम से—आस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रांस, स्वीटजरलैण्ड और अमरीका से आये हुए आदमी भी थे जो समृद्ध थे और व्यापार के लिए शहर में आये थे। उनमें बहुत बड़ी-बड़ी विदेशी फर्मों के प्रतिनिधि थे।

'पूर्व' और 'पश्चिम' की भौगोलिक परिभाषाओं का अपना स्थानीय मतलब था। उदाहरणार्थ विएना, साल्गबर्ग और टाइरोल पश्चिम के समझे जाते थे परन्तु आस्ट्रिया के कैरिन्थिया और बर्गनलैंड जैसे हिस्से पूर्व के समीप दोनों क्षेत्रों के मिलन-स्थल पर थे, यद्यपि वे हमारे देश के पश्चिम में थे। पोलैंड पूर्व में समझा जाता था किन्तु वारसा और क्रैको जैसे बड़े नगरों को लगभग पश्चिमी समझा जाता था। कुछ दक्षिणी देश जैसे स्पेन, कोर्सिका, इटली पश्चिमी समझे जाते थे और तुर्की तथा यूनान पूर्वी प्रदेश समझे जाते थे। हंगरी पूर्व में था, पर बूडापेस्ट तत्कालीन हंगेरीयन नाटककारों के कारण जिनके व्यभिचारात्मक सुखान्त किस्से पढ़ने में हमारे माता-पिताओं को बड़ा आनन्द आता था, निश्चित रूप से पश्चिमी समझा जाता था। कोई व्यक्ति हमारे शहर में काफी दिनों तक रह कर ही इस सूक्ष्म भौगोलिक फर्क को समझ सकता था।

हमारे प्रमुख पश्चिमी व्यक्तियों में तीन अंग्रेज थे जो ब्रिटिश व्यापारिक फर्मोंका प्रतिनिधित्व करते थे। उनकी पत्नियाँ आतुर माता-पिताओं के बच्चों को जो यह समझते थे कि 'स्कूल में अंग्रेजी अच्छी नहीं पढ़ाई जाती' अंग्रेजी पढ़ाती थीं। बहुत से फ्राँसीसी और स्विस भी शहर में रहते थे जो स्वनीडर क्रूसोट कम्पनी के इस्पात-कारखानों में काम करते थे। और मिस्टर ओ'नेल नाम का एक अमरीकी भी था जिसके नाम का उच्चारण

'टोनेल्ल' के समान 'ग्राह्‌नेल' होता था जिसमें जोर नाम के प्रथम अंश पर होता था। उनका लड़का केन मेरे साथ स्कूल जाता था और हमारी फुटबाल की ए टीम का दायीं तरफ का हाफ बैक था। श्री ओ'नेल भी पूर्ण स्वभाव के आलसी पुरुष थे। वे ओहियों में एक बड़ी अमरीकी फर्म द्वारा बनायी गई जोड़ की मशीनें और कैश रजिस्टर वेचा करते थे।

मुझे बड़ा अचम्भा होता था कि वे ये खर्चीली मशीनें इतनी अधिक संख्या में कैसे वेच लेते हैं। एक कुशल अमरीकी व्यापारी के बारे में मेरी धारणाओं की वे प्रतिमूर्ति नहीं थे। जब मैं केन के साथ खेलने उनके घर जाता था तो ग्रो' नेल बहुत बोलते नहीं थे, कुर्सी पर चुपचाप बैठे हमारे स्थानीय पत्र से दुगन पृष्ट वाले 'न्यूयार्क टाइम्स' अखबार पढ़ते रहते थे। ग्रो' नेल परिवार पार्क के पार्श्व में एक सुन्दर मकान में रहता था। 'पश्चिम से आये हुए' अधिकांश लोग पार्क के किनारे बसे शहर के न्यू स्कीस-स्टेट नाम के नये क्षेत्र में रहते थे। इसे 'ओल्ड राइफल रेंज' से अलग बोध कराने के लिए 'न्यू राइफल रेंज' भी कहा जाता था। रिजर्व अफसरों की चांदमारी प्रतियोगिता नदी के पार ओल्ड राइफल रेंज में हुआ करती थी जो हम लड़कों की प्रिय क्रीडा स्थल था। पुराने पार्क के बीच बिगड़ी हालत में एक बदनाम यदि रालप था जहां हम, जब हमें स्कूल नहीं जाना होता था, छुप जाया करते थे। किसी को न्यू राइफल रिज में, जिसमें सुन्दर सुन्दर चसनट के पेड़ रखे थे, बड़ा साफ सुथरा घास का मैदान था, और लोगों को घास पर न चलने की चेतावनी देने की तख्तियां लगी हुई थीं; छिपने का किसी को साहस नहीं होता था। वहां घास पर चलना और पकड़ा न जाना हमारे लिए एक गर्वपूर्ण खेल बन गया था। पार्क के रखवाले सेवा निवृत्त पुलिस कर्मचारी होते थे जा हमारे जितना तेज नहीं भाग सकते थे।

हम लड़कों को इस बात की परवाह नहीं थी कि हमारा कोई सहपाठी पार्क के किनारे रहता है या कूड़े के पर्वत के समीप, हमें अपने परिवारों की सामाजिक हैसियत की अथवा हमारे मकान किस स्थान पर हैं

इस बात की कोई परवाह न थी। हमारी कक्षा में केन्द्रीय यूरोप के उस हिस्से के सभी राष्ट्रों, जातियों और धर्मों के विद्यार्थी काफी संख्या में थे। मेरे सहपाठियों में चेक, जर्मन, सूडेटन जर्मन, आस्ट्रियन, पोलिश स्लोवाक, हंगेरियन, यूगोस्लाव, रूसी, रुमानियन और इटालियन सभी थे और अमरीका से आया हुआ केन आ' नेल भी था। इनमें कैथोलिक, प्रोटेस्टैण्ट, यहूदी, स्टेट चर्च व ग्रीक आर्थोडाक्स चर्च के सदस्य सभी थे और लिपो काफका भी था जिसके मां-बाप ने उसे अपने को नास्तिक बताने के लिये कह रखा था।

इन विषमताओं के बावजूद कक्षा में हम में खूब मेल रहता था। वसन्त ऋतु की फुटबाल चैम्पियनशिप किसी जातीय, राजनीतिक या धार्मिक प्रश्न से अधिक महत्वपूर्ण समझी जाती थी। हम यहूदी लड़कों से ईसाइयों को इस बात में ईर्ष्या थी कि हमें यहूदी छुट्टियों रोश हाशो नोह तथा योम किपूर में स्कूल नहीं जाना पड़ता था। हमारी देखा-देखी बहुत से गैर-यहूदी लड़के भी क्योंकि स्कूल से उन्हें घृणा थी हमारी छुट्टियों में स्कूल नहीं जाते थे। हमारी फुटबाल की ए टीम का कप्तान ऐन्टोनिन वासेक जिसे हम 'टोंडा' कहते थे और जो कैथोलिक था, यहूदी नव वर्ष के दिन सदा स्कूल से अनुपस्थित रहता था। यह नव वर्ष वसन्त ऋतु की फुटबाल चैम्पियनशिप के अंतिम खेल से कुछ पहले पड़ता था। दोनों में से पहली छुट्टी के तीसरे पहर ओल्ड राइफल रेंज के पीछे फुटबाल खेलने का काफी अभ्यास किया जाता था जिसमें सब यहूदी फुटबाल खिलाड़ी टोंडा वासेक के निर्देशन में भाग लेते थे। हम सब अपने छुट्टियों के कपड़े और टोप पहनते थे। धार्मिक यामूर्चारे की प्रति मूर्ति टोंडा वासेक भी अपना गहरे नीले रंग का सूट और टोप पहनता था, यद्यपि निश्चय ही कोई उससे आर्थोडाक्स चर्च में जाने की आशा नहीं करता था। अपने टोप एक के ऊपर एक रख कर हम उन्हें गोल की बल्लियां बना देते थे। अगर कोई गोलकीपर कभी गेंद को हैटों में टकराने से न रोक सकता, जिससे वे सारे मैदान में फैल जाते

थे, तो यह एक दुर्भाग्य की बात होता था; विशेष कर तब जब वर्षा हुई हो और मैदान में कीचड़ हो रही हो।

जब हम लड़के कीचड़ म अपने सुन्दर कपड़े पहने, जिनकी कीचड़ चुपचाप कितने भी ब्रश मारने पर दूर नहीं होती थी, शाम को अपने घर आते थे तो बहुत से यहूदी घरों म संकट पैदा हा जाता था, हंगामा मच जाता था। हमारी मातायें तुरन्त जान जाती थीं कि प्रार्थना करने के बजाय हम फुटबाल खेलते रहे हैं। उन्हें यह विश्वास थोड़े ही दिलाया जा सकता था कि प्रार्थना हों में वर्षा हो रही थी। स्वयं मूसा ने भी कभी ऐसा चमत्कार नहीं दिखाया। अगले दिन स्कूल में टोंडा वासेक को मुसीबत का सामना करना पड़ता, पर वह कहा करता था कि "मैं उसकी परवाह नहीं करता। उस मुसीबत को झेल कर भी फुटबाल खेलना कोई महंगा सौदा नहीं है; मैं प्रोफेसर फ्रैंक से निबट लूंगा।

"बड़ी खराब बात है कि तुम लोग 'नया वर्ष' साल में सिर्फ एक बार मनाते हो। इस में तो बड़ा आनन्द आता है" वह कहा करता था।

टोंडा हमारी कक्षा का नायक था। पढ़ाई के कमरे में वह सब से सुस्त लड़का था किन्तु फुटबाल के फील्ड पर वह सब से तेज आउटसाइड लैफ्ट था। वह औद्योगिक उपनगर हेमार्केट में रहता था और पहले पीरियड में जो ८ बज कर ५ मिनट पर आरम्भ होता था, शायद ही कभी ठीक समय पर पहुंचा होगा। जब आता दिखाई देता तो हम सब, प्रसन्न और मुग्ध, काम छोड़ कर यह प्रतीक्षा किया करते थे कि अपने आलस्य के लिए वह कौनसा नया बहाना बनाता है।

टोंडा के पास बहानों की कभी कमी नहीं हुई। वह यातायात दुर्घटनाओं की बात कहता और उनको ऐसा घिनौना चित्रण उपस्थित करता था जो शायद कहीं देखने में न आये अथवा अपने रिश्तेदारों में ऐसी-

ऐसी बीमारियों का वखान करता था जिनका चिकित्सा विज्ञान को भी पता नहीं था। प्रतिदिन नया वहाना पेश करना एक मुश्किल काम है और अगला वहाना सोचने में उस के दिमाग पर काफी जोर पड़ता था और काफी समय लगता था इसलिये यह युक्तियुक्त ही था कि अभिनय के वाद जैसे कोई अभिनेता थक कर चूर चूर हो जाता है उसी तरह टोबा वहाना वनाने के वाद विल्कुल थक कर अपनी वेंच पर चला जाता था। स्कूल में वाकी समय वह आराम से ध्यानविस्थित मुद्रा में विताता था। आंखें उसकी खुली रहती थीं मगर वह सो रहा होता था। परन्तु जैसे ही स्कूल से छुट्टी होती और हम फुटवाल के मैदान में पहुँच जाते त्या ही उसमें चामत्कारिक रूप से जीवन आ जाता था और वह सब विरोवी खिलाड़ियों को मात कर देता था।

प्रति वुधवार का दो घण्टे तक हमें अलग अलग ग्रुपों में हमारे अपने अपने धर्मों के अध्यापक धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। भाग्यशाली नास्तिक लियो काफका की उस समय छुट्टी रहती थी। ये दो घण्टे वह पास के काफी हाऊस में जिसकी प्रतिष्ठा वहुत संदिग्ध थी, विताया करता था। इसमें चोर वाजारी वहुत आया करते थे जो आपको कोई भी चीज यहां तक कि कोयला भी दिला सकते थे, वशत कि आप उनके चोर वाजार की कीमत दे सकें। और गलरियों में पड़े रहने वाले, दाढ़ी-मूंछ वढ़ाये वदनाम चरित्र के वे लोग भी यहां वहुतायत से आते थे जो सारे दिन काफी हाउस की निचली मंजिल के आगे निकली हुई तीसरी मंजिल की गैलरी में वैठे रहते थे। वे 'ट्वेंटी वन' या 'ताशका गाड्स व्लैसिंग इन कौइन्स हाउस' खेल खेल कर जुआ खेलते रहते थे या सिर्फ वहां वैठे रहकर पश्चिम से चोर छिपे सैक्करीन, पादकद्रव्य, सोने के सिक्के या कैमरे पूर्व में लाने और पूर्व से अलकोहल व चीनी पश्चिम में ले जाने की योजनायें वनाते रहते थे।

पीछे विलियर्ड खेलने के कमरे थे जहां कुछ महीनों की कठोर ट्रेनिंग के वाद लियो विलियर्ड खेलने में काफी उस्ताद हो गया था और उससे भी

पीछे तथा एक गलियारे द्वारा शेष संस्थान से अलग किया हुआ एक मदिरालय था। गलियारे में दो वड़े लाल मखमली पर्दे लगे हुए थे । यह मदिरालय पाप के लिए सवसे वढ़िया जगय थी। मैं १७ वर्ष का होने तक वहां कभी नहीं गया और वर्षों तक मैं और मेरे अन्य सहपाठी लियो की आंखों देखी वातों पर ही विश्वास किया करते थे। जव हम धार्मिक शिक्षा ले रहे होते थे वह व्यावसायिक प्रेम में अपनी प्राथमिक शिक्षा ले रहा होता था। लियो एक उदार हृदय लड़का था और धार्मिक शिक्षा के प्रत्येक पीरियड के वाद अन्य सहपाठियों को वह मदिरालय के अपने अनुभव सुनाया करता था।

लियो के कथानुसार मदिरालय में अंधेरा सा रहता था । वत्तियाँ गहरे लाल रंग के केप कपड़े से ढक दी जाती थीं। कमरे की एक दीवार काउण्टर से ही घिरी हुई थी जिसपर रम, व्राण्डी और वीयर की वोतलें रखी रहती थीं। अन्य तीन दीवारों के साथ साथ छोटे कमरे (सेपारी) थे जो पर्दों द्वारा मदिरालय से अदृश्य रहते थे। पर्दों में से होकर घुसना पड़ता था किन्तु लियो ने यह स्पष्ट कर दिया था कि कोई आदमी उन कमरों में घुस तभी सकता है, जव पर्दे उठे हुए हों अन्यथा किसी को भी घुसने नहीं दिया जाता यहाँ तक कि वेटर को भी नहीं।

कारण स्पष्ट था क्योंकि कोई अकेला तो उन कमरों में घुसता नहीं था, वल्कि वैसी महिलाओं के साथ घुसता था जैसी पैरिकल्स के स्वर्गीय युग मे एथेंस में भी विद्यमान थीं। प्रत्येक सेपारी में एक छोटा पलंग, एक मेज, दो कुर्सियाँ और शराव की वोतल के लिए एक खाली वाल्टी होती थी परन्तु उनके अस्थायी निवासी स्थान की कमी की कोई परवाह नहीं करते थे वल्कि जितने ही वे सट कर वैठते उतना ही उन्हें आनन्द आता था।

उन कमरों में जाने वाली लड़कियों के विषय में हम नाना प्रकार की कल्पनायें किया करते थे। लियो स्पश्टतापूर्वक कहा करता था कि वे सव सुन्दर हैं, आकर्षक हैं और सुडोल आकार की हैं लेकिन एक दिन दुपहर वाद

जब उसने हमें व्यायामशाला के सामने उन लड़कियों में से एक को दिखलाया जिसका नाम रीता रीता था और व्यायामशाला के सामने जिसके आने से धूम मच जाती थी। तो वह हमें बड़ी दुर्बल तथा पतली जान पड़ी। उसके बड़े लम्बे पैर थे और उसकी आँखों के नीचे के भाग में कुछ काले धब्बे थे। यह तो निश्चित था कि उसका घाघरा ऊंचा था और वह अपने नितम्बों को इस प्रकार हिलाती थी जिससे दर्शक उसकी ओर आकर्षित होते थे, यद्यपि वह अधेड़ अवस्था की थी, लगभग ३० वर्ष से ऊपर की रही होगी।

लियो हमें मूर्ख बताया करता था और कहा करता था कि "तुम्हें उसे दिन में नहीं देखना चाहिए मदिरालय में प्रकाश धीमा होता है और उसमें वह बहुत सुन्दर दिखाई पड़ती है और तुमने उसकी टाँगे तो देखी ही नहीं हैं।

लियो दुर्बल तथा सुन्दर लड़का था, कक्षा में सबसे छोटा था। उसकी अंगुलियां सुन्दर थीं, चेहरा मुलायम और बाल बिल्कुल काले थे। वह कहा करता था कि रीता रीता तथा उसकी सहेलियाँ उसके लिये पागल रहा करती थीं। वे उसे 'बेबी' पुकारा करतीं और उसे बिना पैसा लिये ही चीजें दे दिया करतीं। जब कि अन्य मनुष्यों को जो लियो की तुलना में कम आकर्षक थे उन्हें उसका दाम बहुत अधिक देना पड़ता था। एक बार रीता-रीता ने एक बोतल उसे यों ही दे दी इस पर मालिक ने उसे इसके लिए उसे बुरी तरह फटकारा। इस घटना से जो इस सम्भवतः असत्य थी लियो की प्रसिद्धता में चार चांद लग गये, और उसे देखकर मेरी कक्षा के कुछ साथियों की भी यह इच्छा हुई कि काश! उनके माता-पिता भ. नास्तिक होते तो उन्हें भी धार्मिक शिक्षा के पीरियड से छुट्टी मिल जाती।

हमारी कक्षा में अमीर व गरीब सभी तरह के विद्यार्थी थे। उनमें से वाल्डो कैलर नाम का छात्र था जिसके पिता एक लोहे के एक कारखाने के जनरल मैनेजर थे। वह शहर से बाहर एक सुन्दर बंगले में रहा करता था और प्रतिदिन दो काले घोड़े वाली लैण्डाऊ गाड़ी में बैठकर आया करता था।

मेक्स रोजेन्ज विग एक दूसरा छात्र था जो वड़ा दुर्वल था किन्तु वड़ा विचार, शील था। यहूदी धर्म शास्त्रों का विद्वान् वनने का स्वप्न देखा करता था, कुछ गज दौड़ने पर ही उसके गाल लाल हो जाते थे। वह इतना गरीव था कि दस वजे की खेल घंटी में केवल रोटी व सेव ही खाकर रह जाता और कभी-कभी वह सेव भी उसे नसीव न होता था।

इस प्रकार की भिन्नताओं का हमारी कक्षा में कोई महत्व नहीं था। हम अधिकतर फुटवाल तथा अध्यापकों के वारे में वहस किया करते थे किन्तु इससे हम में कोई भेदभाव पैदा नहीं होता था। उन दिनों स्कूल जाना साधारण वात नहीं थी। योग्यता का मांगे ऊंची थीं और अनुशासन वड़ा कड़ा था। अध्यापक समझाने की अपेक्षा डण्डे का प्रयोग अधिक करते थे। कक्षा फैकल्टी (विश्व विद्यालय के विषयों का एक विशेष विभाग) का प्रतिरोध एक होकर किया करती थी। यह एकता जिस किसी तरह भी वढ़े उस पर कोई प्रतिवन्ध नहीं था। टौंड़ा और केन-ओ-नेल ने प्रोफेसर फ्रैन्क के दफ्तर का दो वार ताला तोड़ कर दूसरे दिन परीक्षा में आने वाले प्रश्न पत्रों की चोरी की केन ने अमरीका के चोरों के आधुनिकतम तरीकों का अध्ययन किया था और यही कारण था कि वह किसी भी ताले को खोल सकता था। उन दिनों इमानदारी थी ही नहीं और धोखा देना तथा चालाकियों का प्रथम निपुणता का द्योतक माना जाता था। कक्षा में स्टर्न के दुर्भाग्यपूर्ण प्रवन्ध प्रवेश के वाद के कुछ महीनों में छात्रों ने उसकी मुलयामी से उपेक्षा की। प्रतीत होता था कि स्टर्न को इसकी परवाह नहीं थी। उसने अपनी ओर से भी छात्रों से दोस्ती करने की कोई कोशिश नहीं की। वह अकेला रहना पसन्द करता था और उसकी इच्छा पूरी हुई। जव यह पता लगाकि वह प्रो० फ्रैन्क की कृपापात्र वनने की कोशिश नहीं कर रहा जैसा कि हमें पहले संदेह था, तव उसके प्रति हमारी दुर्भावना कम हो गई। इसके विपरीत सत्रावसान से पहले की गणित की परीक्षा में जिसपर टौंडा और हमारी फुट-

वाल की ए टीम के अन्य दो कुशल खिलाड़ियों का भाग्य निर्भर था, स्टर्न रक्षक साबित हुआ।

हमेशा की तरह प्रो० फ्रैन्क ने अपने काँपते हुए हाथों से शनैः शनैः ब्लैकबोर्ड पर सवाल लिख दिए। तब उन्होंने हमारी ओर घूम कर कहा —

"कोई प्रश्न ?"

इस तरह पूछने का उनका यह एक आलंकारिक ढंग था। किसी को भी कोई प्रश्न पूछने का साहस न होता था। मैं ब्लैकबोर्ड की तरफ जिस पर शून्य, मूल, अक्षर, समीकरण और लघुगण की एक गंगा सी बह रही थी, तब तक घूर कर देखता रहा जब तक कि मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि मेरा सिर तैर रहा है और शून्य और मूल ब्लैकबोर्ड से हट कर एक हास्या-स्पद नृत्य करते हुए मेरा उपहास कर रहें हैं।

मालूम होता था कि प्रो० फ्रन्क यह नहीं समझ पा रहे थे कि उहांने हमें कितनी बड़ा मुसीबत में डाल दिया था। उन्होंने अपनी जेब घड़ी निकाल कर जो एक इंजन ड्राईवर की घड़ी थी, देखा और कहा —"तुम्हें ठीक ४२ मिनट देता हूं। इतने में इन सवालों का उत्तर मिल जाना चाहिए।" इतना कह कर वह चबूतरे से उतर आए और हमारी बेंचों के बीच में घूमने लगे। वे हम पर निगरानी रख रहे थे, और बीच बीच में घड़ी खोल कर फिर बन्द कर देते थे, हमें यह याद दिलाने के लिये कि नियत अवधि बहुत तेजी से गुजरती जा रही हैं।

उस दिन चार प्रश्नों ने जिन में दो प्रश्न चलन-कलन तथा दो त्रियामित के थे हर एक को चक्कर में डाल दिया। सिर्फ स्टर्न इसका अपवाद था। उसके लिए कोई भी सवाल मुश्किल नहीं था क्योंकि वह गणित में बहुत तेज था। विक्षेप, मूल तथा समीकरण के प्रश्न हल कर लेना उसके बायें हाथ का खेल था। उसने २० मिनट से भी कम समय में चारों प्रश्न हल कर लिये। तब वह बैन्च से ढासना लगा कर जंभाई लेने लगा और अपने दूसरे साथियों को देखने लगा।

तव स्टर्न अपनी कापी प्रो० फ्रैन्क को दे कर कक्षा से वाहर जा सकता था, परन्तु जव उसने टोंडा को जिसका चेहरा भय से निवर्ण हो रहा था, देखा तो उसने एक अप्रत्याशित काम किया। वह तव तक तो प्रतीक्षा करता रहा जव तक प्रो० फ्रैन्क ने उसकी ओर पीठ न कर ली। तव उसने कागज का एक छोटा सा टुकड़ा निकाल कर उस पर चारों सवालों के हल लिख दिए और उसे चुपके से अपने पीछे वैठे टोंडा के पास सरका दिया।

"जव तुम उन्हें नोट कर लो तो अगले छात्र को दे देना" उसने धीमे से टोंडा से कहा।

टोंडा व अन्य सव छात्र उस नाजुक परीक्षा में पास हो गए।

सव छात्रों ने यह स्वीकार किया कि स्टर्न ने टोंडा और कक्षा की फुटवाल चैम्पियनशिप वचा ली। टोंडा के विना कक्षा की टीम को 'रीयलशूल' से जीतने की कोइ आशा नहीं थी। पर जव टोंडा स्टर्न को धन्यवाद देने आया तो उसने संकोचपूर्वक कहा —"मुझे तो फ्रैन्क को वेवकूफ वनाने में मजा आया। वह वड़ा दिखावटी गधा है।"

उसने टोंडा की मदद सहपाठी होने के नाते नहीं, वल्कि इस लिए की कि वह प्रोफेसर से घृणा करता था। कुछ लड़कों ने कहा कि इस घटना से जाहिर होता है कि स्टर्न ऐसा है, वैसा है, पर यह तो सव मानते थे कि उसने मदद की थी और यही हमारे लिए मुख्य वात थी।

स्टर्न को वहुत से विशिष्ट विषयों में दिलचस्पी थी। उसे किसी अन्य काम में व्यस्त रहना ज्यादा पसन्द था। दस वजे की खेल घण्टी में हर कोई गलियारे या कक्षा के कमरे में फुटवाल खेला करते थे परन्तु स्टर्न अपनी डैक्स पर ही वैठा-वैठा फारसी व्याकरण पढ़ता रहता था। वह कहा करता था शायद किसी दिन मैं फारस जाऊं, इस लिए मैं फारसी पढ़ लेना चाहता हूं या वह जापान में नकली मोतियों के उत्पादन पर एक पुस्तक पढ़ रहा होता था। एक वार मैंने उस से पूछा कि क्या उसे मोती

अच्छे लगते हैं ? और तब उसने कहा था कि वह मातियों में नहीं परन्तु उस उद्योग में काम करने वालों की काम करने की गंदी हालत में दिलचस्पी रखता है।

उसने कहा—"वे दिन में १८ घण्टे और हफ्ते में सात दिन काम करते हैं, और फिर भी थोड़ा सा चावल और बिना पकी मछली खरीद सकने लायक ही पैसा कमा पाते हैं।"

"उन्हें क्या बिना पकी मछली पसन्द है ?" मैं ने पूछा।

उसने मुझे मौन असहमति के भाव से जिसने कि मुझे बेचैन बना दिया घूर कर देखा।

"तुम ठीक बात नहीं समझ रहे हो। उसने अन्त में कहा, "जापानी मजदूर बिना पकी मछली खाना पसन्द करते हैं, पर वे भूखों मर रहे हैं।' निर्दयी मनुष्य उनका शोषण कर रहे हैं और वे जीवन की न्यूनतम आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर सकते।"

उसने मेरी आंखों में अपनी बात न समझने का भाव देख लिया होगा क्योंकि उसने कंधा हिलाया मानो उसने यह महसूस कर लिया हो कि मुझ से बातें करने में कोई लाभ नहीं और फिर वह अपनी किताब पढ़ने लग गया। मैं उसे छोड़कर अपनी कक्षा के कमरे में हो रहे फुटबाल के खेल में शामिल हो गया। यह खेल पूरे आकार की गेंद से नहीं खेला जा रहा था उस के लिए एक टेनिस की गेंद भी बहुत बड़ी थी। एक बार यह गेंद एक शीशे के बक्से से जा लगी जिस में शाही वैभव की प्रतीक—एक चील की मूर्ति रखी हुई थी। यह चील राजतन्त्र की प्रतीक थी जिसे जीव-विज्ञान के प्रोफेसर ने जो अब भी एक निडर राजतन्त्रवादी था, गणराज्य के प्रति अपनी नापसन्दगी जाहिर करने के लिये वहाँ रख छोड़ी थी। बक्स का शीशा टूट गया और गेंद के धक्के से वह चील शैल्फ से नीचे गिर पड़ी। चील की चोंच टूट गई। जीव-विज्ञान के प्रोफेसर ने इसे अपना व्यक्तिगत अपमान

समझा। उसने चील की मुरम्मत कराई और शीशे के नये वक्स की कीमत हम से वसूल की।

अगले दिन टोंडा ने कई अखबारों की एक गेंद बना ली और उसे एक धागे से बाँध दिया। इस प्रकार की गेंद को तीन गज दूर तक भी फेंकने के लिए वहुत ज्यादा ताकत लगानी पड़ती थी। इसे गोली चलाने का वहुत अच्छा अभ्यास समझा जाता था। जीव-विज्ञान के वक्से की खिड़की को या शीशे के दरवाजे को तोड़ना असम्भव था।

लकड़ी के फर्श पर धूल जमी रहती थी, और कुछ मिनट खेलने के वाद ही कक्षा का कमरा धूल से भर जाता था और हमारी पुस्तकों, वेंचों तथा हमारे चेहरों पर धूल की पतली परत जम जाती थी। कुछ लड़के समझते थे कि यह हमारे स्वास्थ्य के लिये वुरा है, परन्तु क्लाडो कैलर कहा करता था कि हमारे फेफड़ों के लिये यह एक अच्छा व्यायाम है। यह विल्कुल गोवी मरुभूमि में से गुजरने के समान है। कैलर स्वयं तो कभी गोवी मरुस्थल नहीं गया था परन्तु शंघाई में उसका चाचा रहता था और उसे दूर पूर्व के मामलों में प्रभाविक समझा जाता था। छुट्टी के दौरान में स्टर्न अपनी डैक्स से ढासना लगा कर और अपने हाथ अपने सीने के सामने रख कर वैठा रहता और वड़प्पन की तथा विनोद पूर्ण मुद्रा से फुटवाल का खेल देखता रहता था मानो यह सारा काम उसे एक वेवकूफी लगती हो। उसे न तो डाक टिकट या खनिज पदार्थ संग्रह करने में कोई दिलचस्पी थी न पियानो या वायोलिन वजानें में और न रासायनिक प्रयोग शाला में विस्फोटिक परीक्षण करने में जिस में कि महीने में कम से कम एक वार फैराडे और न्यूटन के उत्साही नकलचियों की वदोलत विस्फोट हो जाता था। वह वसन्त ऋतु में 'रियलशूल' के साथ हमारा 'चैम्पियनशिप' खेल देखने अवश्य आया था जिसमें हम दो एक गोल से जीते थे। पर यह देखा गया और वाद में उस पर टीका-टिप्पणी भी हुई कि जब टोंडा वासेक ने विजयी गोल किया तो उसने तालियां नहीं वजाईं। कुछ लड़कों ने कहा कि वह शायद मन ही

मन में विपक्षी टीम की विजय चाहता हो। खेल समाप्त हो जाने के बाद ब्लाडो कैलर के माता-पिता बंगले पर आयोजित विजय सामारोह में भी वह आया। उसने टोंडा वासेक को वधाई दी, एक कप कोका पिया, ओवरकोट पहना और चला गया। बाकी हम सब उषा काल तक उस सामारोह में मौजूद रहे।

मेरी मां में जितनी अधिक उत्सुकता थी उतनी ही अधिक शक्ति भी थी। जब मैं स्टर्न के बारे में उसे ठीक ठीक जानकारी नहीं दे पाता था तो उसकी प्राप्ति में वह स्वयं निकल पड़ती थी। उसके बहुत से भाई बहिन, चचेर भाई तथा भाबियाँ, दोस्त और परिचित थे और उन्होंने जासूसी का एक व्यापक जाल फैला रक्खा था। वे हर बात का पता लगा लेते थे।

शीघ्र ही स्टर्न के बारे में आरम्भिक रिपोर्टें आने लगीं। शहर के तीन बैंकों में से एक के सहायक मैनेजर मामा एडी ने चुपचाप मेरी मां को बताया कि स्टर्न का बाप काफी धनी आदमी है यद्यपि उनके धन विषय में कुछ विशेष बातें नहीं बताईं। मामा एडी ने कहा कि मैं तो इतना ही बता सकता हूँ। उन्हें बैंक की बातें गुप्त रखनी ही पड़ती थी। मामा मारिक ने जो सिटी हाल में बड़े बड़े आदमियों से अच्छा सम्पर्क रखने वाले एक वकील थे, बताया कि स्टर्न न तो पश्चिम से आया है और न पूर्व से बल्कि उत्तर से आया है।

"लिथवानिया से, लिव लैन्ड से या लेटाविया से" मेरी मां ने अस्पष्टता से कहा—"मैं इन देशों में कभी फर्क नहीं कर पाऊंगी"।

स्टर्न के पिता विधुर थे और उनके घर में काम स्टर्न की बहिन लोला चलाती थी। मैं उसे नहीं जानता था, वह शर्मीली थी और कभी भी शहर में किसी जगह नहीं जाती थी, परन्तु मैंने उसे बाजार में सामान खरीदते हुए देखा था और मेरा दिल उसे देखकर सदा तेजी से धड़कने लगता था। वह मुझसे एक वर्ष छोटी थी फिर भी बड़ी मालूम होती थी। वह लम्बी

थी और हाथ हिला हिला कर बड़े सुन्दर ढंग से चलती थी। उसकी आवाज जो मैंने एक बार दुकान पर सुनी था, बिल्कुल एक संगीत की तरह थी और उसे सुनकर मुझे कविता लिखने की प्रेरणा मिली। मैंने यह कविता लिखने के बाद फाड़ डाली किन्तु मुझे इतना याद है कि मैंने इस में उसकी तुलना एक अफ्रीकी हिरण से की थी यद्यपि मैंने उसे कभी देखा नहीं था। एक बार मैंने साहस करके स्टर्न से लोला के बारे में पूछा। मैं आशा रखता था कि स्टर्न मुझे कभी अपने घर बुलायेगा और मुझे उसकी बहिन से मिलने का मौका मिलेगा किन्तु वह टाल देता था और उसके बारे में कोई बात नहीं करता था मानो वह कोई गैर हो। मुझे बड़ी निराशा हुई। मैंने सारे हफ्ते प्रत्यक रात लोला के स्वप्न लिये। स्टर्न परिवार शहर के नये हिस्से में जो पार्क के किनारे नहीं बल्कि उसके नजदीक था, रहता था। इस स्थान को 'पश्चिम' का अंग समझा जाता था यद्यपि पूर्ण रूपेण नहीं।

"कोयला खानों से वहां हवाएं पहुंचती हैं" मेरी मां कहा करती थी, "पाँच मिनट के लिये भी खिड़की खुली छोड़ दो तो घर धूल से भर जायगा। मैं वहां नहीं रहना चाहूंगी"।

कोयले के कणों पर हमारे शहर में बहस कभी खतम होती ही नहीं थी। कुछ कुछ उसी प्रकार जैसे ब्रिटेन में मौसम पर या अमरीका में राजनीति पर। कोयले की धूल से बहुत सी घरेलू मुसीबतें पैदा हो जाती थीं। पति अपने नये धुले सफेद कपड़ों पर काले धब्बे पड़ जाने की शिकायत किया करते थे और गृहणीयाँ अपनी साग भाजी में धूल के कण गिर जाने से परेशान रहती थीं और नौकर काम छोड़ कर चले जाते थे क्योंकि कमरे बिल्कुल साफ रखने की अपने मालिकों की मांग को पूरा नहीं कर पाते थे।

स्टर्न परिवार के बारे में जानकारी बराबर मिलती रही। मामी मेला ने जिसका बहनोई शहर में सबसे बड़े 'डेलीकेट एसेन' के मालिक थे, हमें बताया कि स्टर्न की बहन अपना साज सामान वहीं से खरीदती हैं। वह

आयातिक 'रनिलैक्स' और उत्तरी सागर की मछली खरीदती थी जिसे अमीरी का चिन्ह समझा जाता था। मामा विली ने जो अपनी असल जागीर में रहते थे, वताया कि स्टर्न के पिता शहर के विल्कुल मध्य में 'पैलेस होटेल' के उस पार अत्याधिक कीमती जगह के लिए सौदा कर रहे थे, वहाँ उनका इरादा शहर का पहला 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' वनाने का था।

मै ने अपनी मां से पूछा यह 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' क्या होता है ? उस ने कहा, "वहाँ तुम सब कुछ पा सकते हो। विएना में ऐसे तीन स्टोर हैं।"

मुझे इस पर विश्वाश नहीं होता था कि ऐसे भी स्टोर हो सकते हैं जहाँ हर चीज मिल जावे।

"आइस-हौकी' का सामान भी ?" मैं ने पूछा, "अलवानिया के डाक टिकट और चीनी घोड़ी भी ?"

"निसन्देह" मेरी माँ ने जवाव दिया।

दुवले पतले स्टर्न ने जिस के कन्धे झुके हुए थे और जिस की निर्जीव व स्फेद आँखों में उच्चता भाव झलकता था, नया ही रास्ता पकड़ा। उसके पिता अपने असीम साधनों से अलवानियन टिकट खरीद और वेच सकते थे लेकिन यहां स्टर्न अपना समय जापान के मोती उद्योग में मजदूरों की हालतों और फारसी व्याकरण की जटिलताओं के अध्ययन में वरवाद कर रहा था यह अजीव वात थी। में जानता था कि अगर मेरी मां के पास विक्री के लिए 'आईस-हौकी' के वल्ले और अलवानियन टिकट होते तो मैं क्या करता।

"युद्ध काल में उस ने वहुत पैसा कमाया होगा," मेरी मां ने कुछ सोचते हुए कहा।

"किसने ?" स्टर्न ब्रनो ने ?"

"उसके पिता ने ! हमने जवकि अपना पैसा वेवकफी से युद्ध के वोल्डों में लगाया और एक एक कोड़ी खो दिया। इन लोगों ने सेना को बुरे जूते मुहय्या किये और 'वर्डी विक्स' के समान दौलत पैदा की।"

श्री वर्डी विक्स मेरी माँ की आँखों में सदा एक काँटे की तरह थे। वह सन् १९१६ ई० में एक दिन अपने "हाथ में जूते लेकर" पैदल चलता हुआ नंगे पैर शहर में दिखाई दिया था। इसका मतलब यह तो नहीं था कि उसे वस्तुतः किसी ने जूते हाथ में लेकेर नंगे पैर चलते देखा था, परन्तु हम ऐसा उसकी गरीवी को देख कर कहा करते थे। उसके पास केवल एक सूट था जो पहने हुए थे। यह सूट गंदा और कोहनियों पर से फटा हुआ था और अब पचास महीने तथा सेना को कई बार माल मुहय्या करने के बाद श्री वर्डी विक्स ने पार्क के किनारे अपना एक आधुनिक ढंग का मकान बना लिया था। एक रसोइया, दो नौकर, एक शौफर और अपने बच्चों के लिए एक प्राईवेट टयूटर रख लिया था तथा अपना नाम बदल कर 'वर्डी' रख लिया था।

हम लड़के समझते थे कि यह कितना अच्छा हो कि हमारे लिए भी टयूटर रख दिये जाएं और हम प्रा० फ़ैन्क तथा फैकल्टी के अन्य सदस्यों के कठोर अनुशासन से बच जाएं परन्तु वर्डी के बच्चे ऐसा नहीं सोचते थे। वे हमसे स्थान बदलना पसन्द करते । वेनो वर्डी, मेरी आयु का पीला, लम्बा लड़का हमारी फुटबाल टीम का मैच देखने आता और भीड़ से अलग खड़ा होकर अकेले में ध्यान से देखता रहता था। उस की बहिन हैलगा एक सुन्दर चुस्त, चलबुली लड़की थी जो हर चीज के बारे में बहुत कुछ जानती प्रतीत होती थी और जिसे टयूटर की आवश्यकता न थी। मुझे वैनों से बातें करने में आनन्द आता थो। लड़कियों से में अब भी ऊब जाता था लेकिन मेरी माँ को वैनो से मेरी दोस्ती बढ़ाना अच्छा नहीं लगता था। वह कहा करती थी कि एक वर्डी विक्स और एक विलर्ट का मेल जोल कैसा (वह वर्डी विक्स का 'बेनो' नाम मानने को तैयार नहीं थीं)। मेरी माँ में कोई बड़प्पन का भाव नहीं था ! उपनगरों के अनेक गरीब दोस्त मैक्स रोजेन्जविग और टोंडा वासेक उसे अच्छे लगते थ किन्तु उसने वर्डी विक्स परिवार के साथ व्यवहार रखने से इन्कार कर दिया ।

"वहाँ विक्स 'हैजल' पेड़ के फल के समान बड़ी हीरे की अंगूठी पहनता है।" उसने कहा " एक निर्दयी आदमी अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और उसके शरीर से सदा सुगन्ध निकलती रहती थी । सम्भवत: वह साबुन के बजाय इत्र का इस्तेमाल करता था। तुम स्टर्न के साथ दोस्ती क्यों नहीं करते ? उसके पिता बहुत अच्छे आदमी मालूम पड़ते हैं।"

बाद के हफ्तों में मैं ने स्टर्न के पिता के बारे में बहुत कुछ सुना। बैंक के मैनेजर और मामा एडी ने उसे दावत दी और सबसे बड़े इस्पात कारखाने के प्रेसीडेण्ट के साथ उसने खाना खाया । उसे रोयल होटल में ताश खेलने के लिये बुलाया जाता था और प्रति दिन तीसरे पहर दो से साढ़े तीन बजे तक वह प्रतिष्ठित वकीलों, डाक्टरों और व्यापारियों के साथ 'टरोकी' खेल खेला करता था । यहूदियों के पूजा गृह की तीसरी पंक्ति में उसने एक अच्छी सीट किराये पर ली हुई थी। वह दान से चलने वाली अनेक संस्थाओं को पैसा दिया करता था। स्थानीय थियेटर में वह 'पीले वर्ग' में सीट खरीदता था ।

थियेटर में सीटों के चार वर्ग थे और उनके रंग शहर में व्यक्तियों की सामाजिक हैसियत के द्योतक थे। सोमवार को लाल वर्ग में इस्पात कारखानों, और खानों के मैनेजर, बैंक के डाइरेक्टर आर व्यापारी जैसे स्वयं भाग्य निर्माता व्यक्ति आया करते थे। इसके मुकाबले शुक्रवार को भूरे वर्ग में उच्च घरानों की महिलाएं और कलाविज्ञ, चैम्बर, संगीत-गायक, डाक्टर और शौकिया पेन्टर आया करते थे। व्यक्तिगत रूप से मुझे शुक्रवार का हरा वर्ग पसन्द था जिस में नौजवान हंसी खुशी में अपना समय बिताने आते थे। मेरी माँ और उसके दोस्त मंगलवार के पीले वर्ग में जाया करते थे।

मेरी माँ खासतौर से कहा करती थी कि इस वर्ग में जाने वाले वे आदमी हैं जिन को धन विरासत में मिला है, अपनी मेहनत से नहीं कमाया। लेकिन वह यह कभी नहीं कह सकती थी कि इस बीच बहुत से लोग अपना

सा धन खो चुकते हैं। इस में शक नहीं कि जा इस वर्ग के लोग थे वे मंगल को थियेटर जाया करते थे। उस दिन बड़ी भीड़ रहती थी। मेरे सब रिश्तेदार और मेरे दोस्तों के माँ-बाप वहाँ मौजूद रहते थे। हमें हर समय उन्हें झुक कर अभिवादन करना पड़ता था। स्टर्न के पिता मंगलवार के ग्राहक बन गए थे।

मेरी माँ ने कहा—"किसी दिन दोपहर बाद स्टर्न को घर क्यों नहीं लाते ?"

यह विचार मेरे दिमाग में कभी नहीं आया।"किस लिए ?"

"अच्छा, तुम दूसरे लड़कों को भी बुलाते हो, क्या नहीं बुलाते ?"

"हां, लेकिन वे मेरे दोस्त हैं," मैं ने कहा "स्टर्न से मैं क्या बात करूंगा ?"

"तुम भी उसी कक्षा में हो ? क्या नहीं हो ?" मेरी मां ने कहा।

कुछ ऐसी बातें थीं जिन्हें माँ कभी नहीं समझ पाती।

"स्टर्न गणित में अच्छा है और ग्रीक उसे पसन्द नहीं" मैं ने कहा "मैं इतिहास, ग्रीक और लेटिन भाषाएं पसन्द करता हूं।" अभी हमने होमर नहीं पड़ा था लेकिन मैं चुपके से उसका अनुवाद ले आता और उसे पढ़ रहा होता।

"ठीक परन्तु कुछ बातें तो तुम दोनों में एक सी होंगी ही" मेरी मां ने कहा।

मैं ने कंधे हिला कर विरोध प्रकट किया। "वह फुटबाल नहीं खेलता है और सोचता है कि इस में समय बरबाद होता है।"

"उसे अपने टिकटों का संग्रह दिखाओ।"

"वह टिकटों का संग्रह नहीं करता है।"

"अच्छा, उसे अपना वायोलिन दिखाओ।"

मैं ने वायोलिन की तीन साल शिक्षा पाई और अब मैं ऐसी भद्दी स्थिति में था कि मुझे यह भ्रम था कि मैं वायोलिन वजासकूंगा—ऐसा भ्रम जिसे कोई दूसरा नहीं मान सकता था। मैं अपने वो को दवा कर वजाता था तो परिणाम यह होता कि उससे एक ऐसी आवाज आती मानों कोई सड़क पर आती हुई पुरानी कार एक दम रुक गई हो। इसके वावजूद शायद ही कभ। मैं ने कोई स्वर ठीक वजाया हो। जब मैं अभ्यास कर रहा होता तो ग्रेटा रसोईया अपना काम छोड़ने की धमकी देता और शिकायत करता कि मैं "एक ऐसे छोटे सुअर के वच्चे की तरह चीख रहा हूं जिस की पूंछ मेज की दराज़ में फंस गई हो।"

मैं ने अपनी माँ से कहा, "कोई लाभ नहीं, स्टर्न गाने की परवाह नहीं करता।"

मेरी मां धीरे-धीरे अधीर हो रही थी। "अरे वावा, कुछ तो ऐसी वातें अवश्य होंगी जिन में उसकी दिलचस्पी होगी।"

"हाँ, जापान के मोती उद्योग में काम करने की हालत। में तथा फारसी व्याकरण और कितावों में।"

"अच्छा तो तुम्हारे पास ब त सी कितावें हैं। उसे कालिज का अपना संग्रह दिखलाओ। उस लड़के के प्रति तुम्हें अच्छा होना चाहिये, वह शहर के लिए नया है, उसके कोई दोस्त नहीं है, मान लो कि तुम एक नई जगह में आ गए होते जहाँ कि तुम्हें कोई नहीं जानता।"

"वह क्यों आया ?"

"उन्हें अपना घर छोड़ना पड़ा," मेरी मां ने कहा, "वह—" इतना कह कर वह रुक गई और कहने लगी, "यह वच्चों से कहने की वात नहीं है। तुम उसे नहीं समझ सकते।"

मेरी इच्छा स्टर्न पर अच्छा असर डालने की हुई और उसे मैं ने अपनी किताबें दिखाने का निश्चय कर लिया। मुझे अपनी किताबों पर गर्व था। जब मैं तेरह वर्ष का हुआ तो मेरा बार मिजवाह (एक विशेष संस्कार) यहूदी पूजा गृह में तीन हफ्ते बाद होने वाला था तो मेरी कई मामा मामियों ने समय से बहुत पहले ही मेरे घर अपने उपहार भेजे। एक सप्ताह में मुझे तीन गेटे और शिलर की रचनाओं के संग्रह के दो सेट मिले जिन में से एक सेट को मैं ने 'आइस-हौकी' गोल कीपर की पूरी किताबों से जिनमें शेक्सपियर, डिकिन्स तथा रेसीन की रचनाएं थीं, बदलने का निश्चय कर लिया। मेरे पास साहासिक कहानियों के लोकप्रिय जर्मन लेखक कार्लमे की सताईस किताबें थीं। कार्लमे के प्रशंसक उसे जर्मन जेम्स फेनी मोर कूपर कहा करते थे और उसके निन्दक उसे ऐसी मूर्खता-पूर्ण कृतियों का लेखक कहा करते थे जैसी कि पहले किसी ने नहीं लिखी थीं। 'मे' के नायक जो मजबूत शरीर वाले सज्जन और ठेठ आर्यन आकृति वाले थे, 'ओल्ड फायर हैंड' और 'ओल्ड शेटर हैन्ड' नामों से सारे अमरीकी वाइल्ड वैस्टमें घूमा करते थे। वे दुखी रेड इण्डियनों आर शैतान अमरीकिनों द्वारा सताये हुए अन्य लोगों की मदद करने आते थे। यद्यपि 'मे' कभी भी अमरीका नहीं गया था और उसने अपनी बहुत सी किताबें रकमें गबन करने के अभियोग में जर्मनी के ड्रेसडेन नगर की जेल सजा काटते हुए लिखीं थीं तो भी उसकी कल्पना की शक्ति और आशंकाओं का प्रवाह मुझे और लाखों अन्य लड़कों को दूर लम्बे चौड़े प्रेरजि घास के मैदानों में ले जाता था और हम अपने आपको अमरीकन वैस्ट का अच्छा जानकार समझते थे।

अगले दिन दस बजे की छुट्टी में मैं फुटबाल खेलना छोड़ कर स्टर्न के पास गया और उसे तीसरे पहर अपने घर आने का निमन्त्रण दिया।

उसने वह किताब जिसे वह पढ़ रहा था, एक ओर रखदी और मेरी ओर घूर कर देखा। मैंने देखा कि यह किताब कार्ल मार्क्स की

'कैपीटल' थी। जैसा कि हमेशा होता था, उसके घूर घूर कर देखने से मैं बेचैनी अनुभव करने लगा। कोई यह नहीं जान सकता था कि उसकी आँखों के परदे के पीछे क्या हो रहा है? अन्य लोगों की आंखें तो खिड़की की तरह होती थीं जिन में से झांक कर सब कुछ देखा जा सकता था किन्तु स्टर्न की आँखें ऐसे किवाड़ थे जो उसकी भावनाओं को छिपा देते थे। उसकी आँखों ने मुझे 'न्यू राइफल रेंज' में "घास पर मत चलो और लॉन से दूर रहो" साइन बोर्डों के बारे में सोचने के लिये विवश कर दिया।

"मैंने सोचा कि शायद तुम मेरी किताबें देखना पसन्द करो" मैंने दबे स्वर में कहा। मुझे उसकी डरावनी चुप्पी तोड़ने और उसकी आँखों की रहस्यमय दृष्टि से बचने के लिये कुछ कहना ही पड़ा। इस वक्त मुझे अपनी माँ का सुझाव मान लेने पर अपने आप से घृणा हो रही थी।

लेकिन अब जो कुछ होना था हो चुका था। मुझे तो किसी तरह अब यह काम करना ही था।

तब उसने मुझे चकित कर दिया।

"वास्तव में तुम्हारी यह बड़ी कृपा है, विलर्ट" उसने कहा। उसने अपनी आंखें बन्द कर ली और उन्हें अपने अँगूठे और तर्जनी उंगली से रगड़ने लगा और तब उसने एनक हटा कर क्षण भर मेरी तरफ इस तरह से देखा जैसे पास की कमज़ोर नज़र वाला आदमी देखता है। कुछ क्षण तक मैंने यह समझा कि "दूर रहो" साइन बोर्ड उसकी आँखों से हट गया है। मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि मैं मैदान में फुटबाल का खेल देखना तक भूल गया जहाँ हाल ही में टोंडा ने गोल किया था।

उसने हाथ से अपना माथा दबाते हुए कहा—"मैं किस समय आऊं?" उसकी आँखें फिर वैसी भी निर्जीव और कठोर हो गई।

"चार बजे"

उसने सिर हिलाया। मैं मुड़ा और जाने ही वाला था।

"विलर्ट ?"

"हां ?"

मेरी ओर न देखते हुए ही उसने कहा—"क्या तुम्हें घर के लिये दिये गणित के सवालों के बारे में कुछ कठिनाई है ? तीन अज्ञात राशि वाले वे समीकरण चक्कर में डाल सकते हैं। सम्भव है जब मैं तुम्हारे घर आऊं तो मैं तुम्हारी मदद कर सकूं" उसने शीघ्रता से इतना और कहा—"मैं पलक मारते ही उन्हें हल कर सकता हूं। मेरे लिये वे वस्तुतः कुछ भी कठिन नहीं है।"

"धन्यवाद, स्टर्न," मैंने कहा। सम्भव है मेरी मां ने ठीक ही किया हो। हमें उसे एक मौका देना चाहिए था कुछ घण्टों तक मैंने स्टर्न ब्रूनों के प्रति सच्ची प्रीति अनुभव की। उस वक्त मैं उस के बारे में अन्य लड़कों से बातचीत भी कर सकता था।

आम तौर पर जब मेरे दोस्तों में से कोई एक दोस्त मुझसे मिलने मेरे घर पर आता तो हम कमरे में ठहर जाते जहां कि मेरी किताबें, संगीत, वायोलिन तथा रसायन शास्त्र की किताबें और मेरा संग्रह-डाक टिकट, वैदेशिक पत्थर, होटल की चिटें रक्खी हुई थीं। चार बजे के आसपास बरटा रसोइयन कोको और मक्खन लगे हुए सलाइस की एक तश्तरी लाया करती। लेकिन जब मैंने अपनी मां से कहा कि तीसरे पहर स्टर्न हमारे घर हम से मिलने आयेगा, तो उसने कहा कि बड़े डाइनिंग रूम में उस को 'जौस' परोसा जावे।

डाइनिंग रूम हमेशा ठण्डा रहता था। गर्मी के दिनों में भी, जाड़े के मौसम में बर्फ पड़ती थी! यहां तक कि मेरी सांस की हवा सफेद कुहरे में बदल जाती थी, दूसरे कमरों को टाइलों से बनी अंगीठी द्वारा गर्म किया जाता था परन्तु डाइनिंग रूम में एक नये ढंग का गैस का स्टोव था जो बहुत कम गर्मी देता था और गैस पर अधिक खर्च पड़ने के कारण बहुत कम

प्रयोग में लाया जाता था। मेरी मां सदा प्रकाश की आकांक्षा में यह वहाना किया करती थी कि ठण्डी हवा तेल-चित्रों के संरक्षण के लिये तथा शीशे के वक्सों के लिये जो वोहीमिया और वेलजियम के स्फटिक, फ्रान्स और बवेरिया के चीनी मिट्टी के सामान, वेनिस के चाँदी का काम, टर्की की पुरानी काफी माशीन और कई पुरानी विरासत में मिली वस्तुओं से भरे हुए थे, अच्छी है, एक कोने में एक पुराना ग्रामोफोन पीतल के हार्न वाला रखा था जो एक ऐसे ग्रामोफोन से मिलता था जिस पर हिज मास्टर्स वाग्रस की लेविल पर एक कुत्ते का चित्र वना हुआ हो। ग्रामोफोन की खास कमानी टूट गई थी और उस की मरम्मत ठीक ढंग से नहीं की गई थी इस कारण उस की गति में अन्तर पड़ जाता। हमारे ग्रामोफोन पर एनरिको कारुसों के गाये हुए एक-नी-पोलिटन लोक-गीत की आवाज यहूदी पूजा घर के मुख्य गायक के समान आती थी, जिसकी आवाज ऐसी थी मानो विलाप कर रहा हो और हाशी वेनु गा रहा हो। मेरा चचेरा भाई रोल्डी जिसे स्टीम शिप का कप्तान होने की इच्छा थी, जव मुझसे मिलने आया तो उसने पीतल के हार्न को लाउड स्पीकर की तरह इस्तेमाल करना पसन्द किया। इसके द्वारा वह अपनी आज्ञाएं उन मल्लाहों को सुनाता जो दिखाई नहीं देते थे। कुछ देर वाद वरटा रसोइयन यह शिकायत करती थीं कि तमाम पीतल के ऊपर उसके उंगलियों के निशान वन गये हैं।

गैस स्टोव केवल विशेप मौकों पर ही गर्म किया जाता था। मंगल-वार की शाम को जव मेरी मां थियेटर के वाद कुछ दोस्तों को दावत देती थी अथवा जव हमारे घर कोई असाधारण प्रसिद्ध मुलाकाती आता था मेरी मां ने प्रतिज्ञा की थी कि ताऊ मैक्स के लिये स्टोव को काम में लाएँगे परन्तु इस वात ने भी ताऊ मैक्स को हमसे मुलाकात करने को विएना से आने के लिये नहीं उकसाया।

मैंने डाइनिंग रूप को कभी पसन्द नहीं किया, शीशे के वक्स को

खट-खटाने से हमेशा डरता था। मैंने अपनी मां से पूछा, "क्या हम अपने कमरे में कोको पी सकेंगे ?" मेरी मां ने भी कहा कि ऐसा नहीं हो सकता।

"यह बहुत बुरा लगेगा" उसने कहा "यह लड़का हमारे घर कभी नहीं आया।" और उसने अपने सुन्दर नीली प्याज वाले मेसियनसेट का उपयोग करते हुए स्वयं डाइनिंग रूप में मेज रख दी।

मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। मेरी मां शिकायत किया करती थी कि बरटा बड़ी फूहड होती जा रही है और उसके सुन्दर चीनी के बर्तनों को तोड़ती जा रही है। युद्ध के खतम होने के बाद भी जब कि खाने की चीजों का बड़ा अभाव हो गया था, और मेरी मां एक पौण्ड बटर अथवा सूअर के मांस के टुकड़े के लिये अपनी प्यारी पुरानी चीजों में से कुछ को बेचने के लिए विवश हो गई थी तब भी उसने अपनी नीला मीसेन किसानों को नहीं दिखलाया था और वह एक गन्दे अस्तबल में घास के ढेर में दबे हुए प्यारे मैसीनों को देखने की अपेक्षा भूखों मर जाना पसन्द करती थी और अब उसने स्टर्न के लिये अपने सुन्दर मैसीन का इस्तेमाल किया। यह बड़ी अचम्भे की बात थी, मैंने सोचा। माताओं को समझना बड़ा मुश्किल है।

स्टर्न ठीक समय पर आया। वह हैट नहीं पहने था केवल एक पुराना कोट पहने था यद्यपि बाहर वर्षा हो रही थी। ओले पड़ने के समय भी वह सड़कों पर बिना हैट पहने घूमा करता था। बिना इधर-उधर देखे बगल में कुछ किताबें दबाए वह तेजी से चलता उसके कन्धे आगे को झुक जाते; उसका सिर जमीन की ओर मुड़ जाता था। वह मनुष्यों को कभी अभिवादन करने का कष्ट नहीं उठाता था, उसके सहपाठी सोचा करते थे कि वह बड़ा असभ्य है। दूसरे कहा करते थे कि वह एक ऐसा अजीब प्राणी है जो दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचाता है।

जैसे ही उसने मेरे कमरे में कदम रखा उसने अपने हाथ जेबों में रख लिये, और अपनी बगल में से कुछ किताबें मेरी चारपाई पर डाल दीं और चारों ओर देखता हुआ खड़ा रहा।

"तुम्हारी किताबें ?" उसने पूछा और शैल्पस की ओर कदम रखा।

मैंने स्वीकृति सूचिक सिर हिलाया। उसने अपना ओवर कोट उतारा और बड़ी लापरवाही से कुर्सी के उस ओर फेंक दिया और लाइब्रेरियन की प्रशिक्षित आंखों के समान तेजी से शैल्फ पर रखी हुई सब किताबों के शीर्षकों को देख गया। मैंने उससे कहा कि कॉफी परोसी जा चुकी है। मेरी मां ने, इस घटना के महत्त्व को अधिक बढ़ावा देने के लिये, प्रथानुसार कोको के स्थान पर कॉफी का हुक्म दे दिया था, लेकिन स्टर्न मेरी किताबों को देखता रहा और ऐसा मालूम पड़ा कि उसे मेरे कमरे को छोड़ने की इच्छा नहीं थी।

उसने कहा—"मैं तुम्हारे लिये कुछ किताबें लाया था, जल्दी नहीं है, जब तुम उन्हें पढ़ चुकोगे तो हम उनके बारे में बहस करेंगे।"

मुझे बड़ा अचम्भा आ और शीर्षक देखने लगा। एक फ्रैडरिक एन्जिल्स की लिखी हुई 'दी डवलपमेण्ड आफ सोशलिस्म् फ्रॉम योटापिया इन साइन्स' थी। दूसरी कार्लमार्क्स की 'मैनीफ़ेस्टो आफ दी कम्यूनिस्ट पार्टी" तीसरी कार्लमार्क्स की 'कैपीटल वोल्यूम फर्स्ट' थी।

मैंने उससे पूछा कि किताबें किस विषय की हैं।

उसने मुझ पर अविश्वास से भरी दृष्टि डाली। "क्या तुमने मार्क्स की कोई भी किताब नहीं पढ़ी ? क्या तुम एन्जिल्स की 'दी कन्डीशन आफ दी वर्किंग क्लास इन इंगलैण्ड इन १८४४' नहीं जानते हो ?"

मैं झूठ बोलने से डरता था। मैंने चचेरे भाई रोल्डी या टोंडा मासेक और यहां तक कि काफकालियो से भी झूठ बोल दिया होता परन्तु मैं स्टर्न को मूर्ख न बना सकता था। मैंने क्षमा के भाव से कहा कि हम स्कूल में अभी ही बेल और शिलर का अध्ययन कर रहे हैं, शायद अगले वर्ष मार्क्स और एन्जिल्स पढ़ेंगे।

"स्कूल के बारे में भूल जाओ !" अपने हाथ से घृणा का भाव प्रगट करते हुए स्टर्न ने कहा, "अरे यह जीवन है, स्कूल नहीं"।

किसी ने भी मुझे कभी नहीं कहा था । मैं इसे पसन्द किये वगैर नहीं रह सका। इसने मुझमें बड़प्पन का भाव पैदा कर दिया यद्यपि मैं उतनी अवस्था का नहीं था। मैंने स्टर्न की किताबों को पढ़ने का निश्चय कर लिया। इतने ही में मेरी मां अन्दर आई। उसने मुझसे यह प्रतिज्ञा की थी कि वह हमें 'जौस' की समाप्ति तक अकेला छोड़ देगी परन्तु नये लड़के के बारे में अपनी तीव्र इच्छा को न रोक सकी। मैंने उसका (स्टर्न का) परिचय कराया। स्टर्न ने मेरी मां से हाथ मिलाया लेकिन वह प्रथानुसार झुका नहीं। मैं अपनी मां के चेहरे से यह समझ गया कि उसने उसके व्यवहार की अधिक परवाह नहीं की।

"मुझे आशा है कि तुम दोनों का समय अच्छा बीत रहा है।" उसने कहा।

हम चुप थे। यदि वे हमें अकेला छोड़ देती तो शायद हमारा समय अच्छा बीतता।

मैंने कहा, "स्टर्न मेरे लिये कुछ किताबें लाया था। एक कार्ल मार्क्स की थी।"

"यह बड़ी अच्छी है" मेरी मां ने स्टर्न से कहा "तुम जैक्बोस से कुछ किताबें क्यों नहीं मांग लेते ? उसके पास कार्लमे की सत्ताइस किताबें हैं। उसके मित्रों में से केवल दो के पास कुछ अधिक हैं।"

मुझे अपने कार्लमे के संग्रह पर गर्व था। मैं अपने सहपाठियों के सामने इस के बारे में बड़ी शेखी मारा करता था। अब मैंने स्टर्न के चेहरे पर घृणा के भाव देखे और मैं चाहता था कि मेरी मां उस विषय को न छेड़ती। कार्लमे की लिखी हुई सत्ताईस किताबों का मालिक बनने का मुझे स्वयं को पहली बार अनुभव हुआ।

स्टर्न ने अपना सिर हिलाया, अपनी आंखों को अंगूठे तथा आगे की उंगली से रगड़ा।

"श्रीमती विलर्ट" एक असीम विनीत भाव से उसने कहा। "कार्ल को पढ़ कर मैं अपना समय बरबाद नहीं करना चाहता। वह गंवारों के लिये लिखता है। वह यथार्थता से अलग है"। उसने मेरी ओर बड़ी जोर से घूर कर देखा और अन्तिम जोर दे कर कहा—"मैं सोचता हूं वह सिड़ी ही है"।

मैं बड़ी तेजी से डाइनिंग रूम में गया और खिड़की के बाहर देखने लगा। मेरा चेहरा शर्म के मारे जल रहा था। मुझे डर था कि स्टर्न को कहीं इस का पता न लगजावे और यह और भी बुरी बात होगी। मुझे उसे आने के लिये नहीं कहना चाहिए था।

थोड़ी देर बाद स्टर्न भी डाइनिंग रूम में आ गया। वह बैठ गया और मेज को देख देख कर कुछ सोचने लगा "लो पहले सैन्डविच खाओ" मेरी मां ने उससे कहा।

"धन्यवाद, श्रीमती विलर्ट, सैण्डविच नहीं चाहिए"

"स्ट्रूडल का एक टुकड़ा ?"मेरी मां ने कहा। इसे बर्टा ने विशेपरूप से अच्छा बनाया है, खाओ, चक्खो तो ?"

उसने फिर भी अपना सिर हिला कर मना कर दिया, "मैं तीसरे पहर भोजन छूता भी नहीं हूं।"

"क्या तुम घर पर 'जौस' नहीं खाते हो ?" मेरी मां ने कुछ रूखे स्वर से पूछा। यदि स्टर्न उसकी पुरानी चीजों में से किसी को चुरा लेता तो मेरी मां शायद उसे क्षमा कर देती लेकिन 'जौस' लेने से इन्कार करने पर वह उसे कभी क्षमा न करती। उसके लिये तीसरे पहर का जलपान दिन का सबसे महत्व पूर्ण बात होती थी, इसमें कई कप कॉफी परोसी जाती थी जिसके ऊपर दूध को विलोकर निकाली हुई क्रीम डाल दी जाती थी। इनके

साथ स्ट्रूडल, केक और टोर्टे भी होते थे। तब हम गोलाई में बैठ जाते थे, दिन की घटनाओं के बारे में बात चीत करते रहते थे और शाम के लिये योजनाएँ बनाते थे। 'जौस' कोई भोजन नहीं होता था बल्कि एक विश्राम काल था। पेट भरने के बजाय एक रिवाज का परिपालन था। मेरी मां 'जौस' में उतना ही अनन्द लेती थी जितना कोई अंग्रेज अपनी तीसरे पहर की चाय पीने में लेता है। सिर्फ नास्तिक और जंगली ही 'जौस' के बिना रह सकते थे।

स्टर्न ने मेरी मां का दुखी चेहरा देख लिया होगा क्योंकि उसने कहा "कृपया, मेरे लिये एक प्याला कॉफी ला दीजिये"

पर यह बात उसने बहुत देर से कही। हानि हो चुकी थी। जब कभी कोई मेरी मां का खाद्य या पेय पदार्थ लौटा देता था तो वह व्यक्तिशः अपमानित अनुभव करती थी। सर्दियों में एक दिन चाचा एडी, जब उनकी पत्नी अस्पताल में थी, हमारे घर दुपहर का खाना खाने आये थे। वे मेरी मां के बार बार और खाने के आग्रह से इतना तंग आगये कि वे इसे सहन नहीं कर सके और चचेरे भाई रोल्डी की मां, चाची आन्ना के यहाँ खाना खाने चले गये जो मक्खन की बचत करती थी और किसी से किसी भी चीज के लिए दो बार नहीं पूछती थी।

"तुम्हें तो घर में बहुत अच्छा खाना मिलता होगा" मेरी मां ने स्टर्न से कहा। उसकी आवाज बर्फ के टुकड़ों से भर्रा गई। यह एक तीव्र भर्त्सना थी जिसे स्टर्न समझा नहीं और यदि समझ भा लेता तो उसने उसकी परवाह न की होती। उसने अन्य लोगों की और इस बात की कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं, कभी परवाह नहीं की।

"भोजन मेरे लिये बिल्कुल तुच्छ सी बात है" उसने कहा "जब तक मैं भूख अनुभव न करूं और सोने के लिए स्थान मिला रहे तब तक काम ही मेरे लिये सब कुछ है। वस्तुओं का मूल्य सिर्फ इसी लिये है कि उनके

उत्पादन में मनुष्य का श्रम लगा है।" उसने मुझे देखा और कहा—"यह मैंने तुम्हें मार्क्स की कही हुई बात बताई है।"

मेरी मां ने गुस्से में मुझे घूर कर देखा। वह नहीं जान पाई कि स्टर्न किस बारे में बातें कर रहा है और न मैं ही समझ पाया। कभी कभी स्टर्न की बातोंसे ऐसा लगता था कि किसी पुस्तकालय की किताबों में से जहाँ तहाँ से उसने विचार इकट्ठे कर लिये हैं और उन्हें वह पचा नहीं पाया है।

"मुझे किसी ने बताया है कि तुम्हारे पिता बैंक के उस पार एक बड़ा 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' बनाने जा रहे हैं" मेरी मां ने कहा। अब वह बिल्कुल सुस्थिर हो चुकी थी।

"हाँ" उसने कहा। उसने उपेक्षा का भाव दिखाया।

"क्या तुम्हें इसकी खुशी नहीं है?" मैंने उससे पूछा।

"खुशी? क्यों?"

"सब बढ़िया बढ़िया चीजें उस स्टोर में बेची जायेंगी। अलवानी—"

उसने स्पष्टता से कहा—"मुझे इसकी परवाह नहीं। मुझे अपने पिता की पूंजीवादी योजनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं। मेरे पिता बिना परिश्रम किए पैसा बनाना चाहते हैं।"

ऐसा लगा कि मेरी मां को कुछ चोट पहुंची। वह कहा करती थी कि पूंजीवादी होने पर न केवल वह शर्मिंदा नहीं है बल्कि उसे उसका गर्व है।

"किसी दिन स्टोर का मालिक बन कर तुम्हें खुशी होगी" उसने कहा।

"मैं कभी इसका मालिक नहीं बनूंगा। मुझे इससे और इसके विचार तर्कों से घृणा है। बिक्री बहुत, कर्मचारियों को कम वेतन और मुनाफा ही मुनाफा। नहीं, बिल्कुल नहीं" उसने अपना सिर हिलाया "मैंने अपने पिता से कह दिया है कि मेरा स्टोर से कोई वास्ता न हो।"

"तुम अभी बहुत अबोध हो और यह नहीं समझ सकते कि तुम क्या कह रहे हो" मेरी मां ने कहा "तुम्हारे पिता बहुत अच्छी तरह समझते हैं।"

"मेरे पिता मुझे नहीं समझते। उन्हें सिर्फ पैसे का ेर लगाने की चिन्ता है।"

इस बात पर तो मैं स्टर्न के साथ सहानूभूति रखता था यद्यपि वह सहानूभूति अनचाही थी। हमारे मां-बाप हमें नहीं समझते थे। वही सब कुछ नहीं जानते थे। जब मैंने अपनी मां से यह कहा था कि मैं इधर उधर चहल कदमी करता हुआ जीवन के तात्पर्य के बारे में सोचता हुआ एक दार्शनिक और प्लेटो का शिष्य बनना चाहता हूं तो उसने कहा था कि मैं अभी बच्चा हूं और वस्तुतः मैं क्या चाहता हूं यह जानने की योग्यता मुझमें नहीं है।

"जब तुम बड़े होगे तो क्या करना चाहोगे", मैंने उससे पूछा। "पहली बात तो यह है," स्टर्न ने मुझ से कहा "मैं बड़ा हो चुका हूं और दूसरी बात यह है कि मैं बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर संघर्ष करूंगा।"

"संघर्ष करोगे ?"

"हां, सामाजिक न्याय के लिए" मेरी मां ने आश्चर्य पर काबू कर लिया था और उसका दिमाग सन्तुलित हो गया था। कोई भी चीज उसे ज्यादा देर तक डांवाडोल नहीं रखती थी।

"सामाजिक न्याय," उसने सहमति से सिर हिलाते हुए कहा। "यह अच्छी बात है" मैं सोचती हूं कि उन लोगों के लिए अधिक वकील होने चाहियें जो खर्चीले ऐडवोकेट नहीं कर सकते। मेरे भाई मारिक के बहुत से गरीब मुवक्किल हैं। वह उनसे कभी कुछ नहीं लेता है और डा० काफ्का मजदूरों से, जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है, कभी कुछ नहीं लेता। वह बहुत ही सामाजिक प्रकृति का है।"

"सामाजिक न्याय" स्टर्न ने कहा "दयालु हृदय के लिये शान्ति देने वाली है। बेकार सी, भृष्ट और लोगों का अपना अपना उल्लू सीधा करने

वाला नहीं जैसा कि समृद्ध वकील और धूल धूसरित कानून की किताबें उसे बतलाती हैं।

हर्क मैनिस बहुत से छोटे गांवों में से एक था। ये गांव बस्तियां कहलाते थे। ये कोयला खानों के आसपास थे, जहाँ खनिक खानों से कुछ ही दूर पर गन्दे और भयानक मकानों में रहते थे। ये बस्तियां गत शताब्दी के अंत में बनाई गई थीं जब कि इस क्षत्र में कोयला बड़े पैमाने पर मौजूद होने का पता लगा था और पहली खान खोदी गई थी। वे बस्तियां १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विद्यमान सफाई और सामाजिक विचारों को प्रतिक्षिप्त करती थीं।

हर्क मैनिस शहर से बाहर कुछ मील की दूरी पर था। एक तारकोल की सड़क जंगल युक्त पहाड़ी को पार करके वहां जाती थी। सर्दियों में हम अपनी बर्फ में चलने वाली गाड़ी में बैठ कर वहां जाते थे और कुछ बहादुर लड़के स्काइंग खेलने का सामान ले कर आ जाते थे। यद्यपि वहां की जमीन बहुत ढालू थी और जंगल के कारण स्काइंग खेलने के उपयुक्त नहीं थी। गर्मियों में एकांतवास चाहने वाले युवक दम्पतियों के लिए यह स्थान बड़ा लोकप्रिय था। वहां बड़े और घने ओक, चसनट, फर और चीड़ के वृक्ष थे। जमीन चीड़ के नुकीले पत्तों और काई से ढकी रहती थी, मानों एक मुलायम गहरे हरे रंग का गलीचा बिछा हो। अब तक भी मुझे चीड़ के नुकीलें पत्तों और बिरोजा के तेज गन्ध की याद आती है।

जंगल एकदम से खत्म हो जाते थे, सड़क नीचे उतरती थी तब खानों का अद्‌भुत दृश्य कूड़ेकरकट और सुलगती हुई राख के पहाड़ के पहाड़ दिखाई देते थे। हवा में गन्धक का धुआं भरा रहता था और जहरीली गैसों की बरी गन्ध आती थी। ऐसा लगता था मानों कोई स्टाइक्स का बिना पार किये हेड्स में उतर आया हो। यकायक सुनसान नजर आता था न कोई पेड़ था, न घास और न आवाज यहां तक कि चिड़ियों का गान भी नहीं

सुनाई पड़ता था। यह दूर के एक ग्रह में इस प्रकार की एक निछिद्र क्षेत्र के समान प्रतीत होता था जिस प्रकार का मैंने एक वार मेनस्ट्रीट के पैनोरमा में देखा था जिसमें स्टीरियो स्कोप स्लाइड द्वारा चन्द्रमा व अन्य ग्रहों के अद्‌भुत ज्वालामुखी और वड़ी-वड़ी नहरों के चित्र दिखाये गये थे। प्रोफेसर फ्रंक कहा करते थे कि प्रत्येक छात्र को कम से कम महीने में एक वार पैनोरमा जरूर जाना चाहिये। इसलिये स्वभावतः हम वहां वहुत कम जाते थे।

इस मौत की घाटी के वीच में खनिकों के भद्दे सिर्फ इंटों के वने हुए तिकोनी छत वाले और चौकार चिमनी वाले मकान थे। ये मकान अपनी नीरसता और भद्दपन में एक जैसे थे तथा एक दूसरे से इस प्रकार सटे हुए थे जैसे दिन भर की कठिन लड़ाई के वाद थके हुए सैनिक एक दूसरे का सहारा लिये पड़े हों। ये घर खनिकों के लिए ही थे और उनका किराया उनके वेतन में से काट लिया जाता था। मैंने शायद ही कभी किसी खनिक को देखा हो। या तो वे खानों में काम कर रहे होते थे या घर पर सो रहे होते थे लेकिन उनकी स्त्रियां सड़क पर होतीं और वे भी उतनी ही नीरस और भद्दी जैसे उनके मकान थे। उनकी शकलें भी वड़ी भद्दी होती थी और उनके सिर पर पड़े रूमाल मैले होते थे। घरों के ये पीछे जव वे धोये हुये कपड़े सुखा रही होती थी तो उनके पैर नंगे होते थे। कपड़े धोना एक वड़ा निराशापूर्ण कार्य था क्योंकि वे उन्हें कितना ही रगड़-रगड़ कर साफ करतीं। उनकी कमीज और धोतियां सूखने से वहुत पहले ही फिर कोयले की राख और काजल से काली हो जाती थीं। घरों के सामने वच्चों के झुण्ड मूर्खतापूर्ण तथा भद्दे खेल खेलते हुए और चिथड़े पहने व नंगे पैर होते थे जो लगभग वैसे ही नीरस और भद्दे दिखाई देते थे जैसे वे पहाड़, घर और स्त्रियां दिखाई देती थीं।

गर्मी की मौसम में एक अच्छे दिन में वहां लियो काफका और टोंडा घासेक के साथ जाता। हम अन्वेजक और साहसी व्यक्ति होने का वहाना

करते थे। और कार्लमे के ग्रोल्ड शैटरहैण्ड तथा अन्य नायकों के समान, जो डरना जानते ही नहीं थे सुलगती हुई राख पर कदम रखते और गन्दी हवा में सांस लेते थे। इस यात्रा पर निकलते हुए हम अपने अत्यन्त असफ व नाम रख लेते थे। टोंडा हमेशा अपने लिए सब से अच्छा नाम रख लेता था। मुझे याद है कि एक बार उसने मैथियास कानियोल वान लिटफास नाम रखा था। लियो और मैं एक मदिरालय में जाते और मालिक से पूछते कि "क्या तुम ने मैथियास कानियोल वान लिटफास को देखा है?" वह कुछ गुनगुनाता और अविश्वासपूर्वक सिर हिला देता। ठीक तभी टोंडा आ जाता और हम उससे हाथ मिलाते और मालिक से मैथियाल कानियोल वान लिटफास का परिचय कराते। तब हम सोना तलाश करते थे। टोंडा कहा करता था कि खानों के कूड़े करकट के ढेर में कुछ सोना होता है। वह इसे अशुद्ध सोना बताया करता था। वह अपनी जेब इस कूड़े के नमूने से भर लेता था जिसका वह स्कूल की प्रयोग शाला में विश्लेषण किया करता था। लेकिन जहां तक मुझे मालूल है, वह उसने कभी सोना नहीं निकाला। टोंडा को शौक सदा नये ढंग की होती थी। दूसरे लड़के कार्लमे की पुस्तकें, टिकट, और तितलियां एकत्र किया करते थे। टोंडा उन कुत्तों की पूंछ के बाल इक्ट्ठे किया करता था जिन्होंने उसे काट लिया होता था। वहां सदा इस बात की कोशिश करता था कि कोई कुत्ता उसे काट ले।

जैसे ही हम बस्तियों के इन राख के रंग वाले मकानों के पास से गुजरते सड़क पर के लड़के एक दूसरे का पीछा करना छोड़ देते और हमारी ओर ऐसी शत्रुतापूर्ण दृष्टि से जो छिपाई नहीं जा सकती थी देखते थे और वे यह कानाफूसी करते थे कि वे हमारी उपेक्षा कर दें या हम पर हमला कर दें। एक वार एक कठोर स्वभाव के लड़के ने हम पर पत्थर फेंका और चिल्लाया "यहूदियो! यहां से चले जाओ।"

हमने इसे एक बड़ा भारी मजाक समझा क्योंकि टोंडा एक कैथोलिक था। टोंडा मुझे बताया कि वह ऐसे देहात में रहता था, जहां बहुत से लोग यह चिल्लाया करते थे "यहूदियो! निकल जाओ।" वह जानता था कि

वस्ती में इन वच्चों के साथ कसे निवटना चाहिए। वड़े से वड़ा पत्थर जो उसे मिल सका उसने उठा लिया और उन पर फैंका।

"वे कठोरता का व्यवहार इस लिये कर रहे है क्योंकि हम तीन है और वे १५ हैं।" उसने कहा। "हमें उन्हें वता देना चाहिये कि हम उनसे डरते नहीं"

कुछ देर तक हम तीनों ने महान् कार्लमे की रीति के अनुसार आचरण किया, निर्भीक आदमियों की तरह परिस्थितियों के अत्यन्त खिलाफ होते हुए भी हम काफी देर तक डटे रहे। तव वे हमारे नजदीक आ गये और हम डर कर भाग खड़े हुए। हम तव तक दौड़े चले गये जव तक जंगल के सिरे तक नहीं आ गये जहां पेड़ फिर दिखाई देने लगे और चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देने लगी। इस दुर्घटना से वचकर निकल आने पर हमें खुशी हुई। हमें अपने उन साहसिक कार्यों पर हंसी आई और अपने साहस के लिए एक दूसरे को धन्यवाद देने लगे। लेकिन थोड़ी-थोड़ी देर में हम मुड़कर यह देखते थे कि कहीं कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा। पहाड़ी की चोटी पर पहुंच कर हमने चैन की सांस ली जहां से कोई भी—सड़कें गिरजे की मीनारें, शहर के घर, न्यू राइफल रेंज, नदी और व्रिजस्ट्रीट वाला हमारा घर देख सकता था।

मेरी मां ने प्याले भरे और दूसरी केक दी। मैंने स्टर्न से कहा, "किसी दिन तीसरे पहर जव गर्म मौसम हो हर्कमैनिस चलें और हाल्डी का पता लगाएं।"

"इसके वजाय खनिकों के घरों का पता क्यों नहीं लगाते?" उसने कहा वह उत्तेजित था, उसके गाल लाल हो गये थे। मैंने कभी यह आशा भी नहीं की थी कि वह किसी भी वात पर इतना उत्तेजित हो सकता है।

"वे घर" उसने कहा "उन जमीदारों ने वनाये थे जो उन खानों के मालिक थे। इन लोगों को इस में कोई औचित्य ही प्रतीत नहीं होता था कि

0 6292

खनिकों को इनके जीवन के लिए आवश्यक, न्यूनतम सुविधाओं से अधिक सुविधाएं दी जायं। प्रत्येक मकान में चार परिवार रह रहे हैं, उन में से कुछ के आधे दर्जन बच्चे हैं। मैंने एक कमरा ऐसा देखा जिसमें एक रात आठ आदमी सोये थे।"

"तुम उन घरों के अन्दर गये थे?" मैंने चकित हो कर पूछा।

उसने मेरी ओर नहीं देखा और मेरी मां से कहा, "प्रत्येक गलियारे में घर के सब निवासियों के लिये एक नल है, सिर्फ एक श्रीमती विलर्ट ? रसोइघर सारे काले हो रहे हैं और घर में सदा कष्ट का वातावरण रहता है, सड़ी हुई गोभी, धूल, सड़ी रोटी और सिरके की दुर्गन्ध आती है। मैंने वहाँ बच्चों से बात चीत की थी, उन्हें कभी भी पर्याप्त खाना नहीं मिलता।"

मेरी मां बोली, "युद्ध के बाद से किसी को भी पर्याप्त खाना नहीं मिल रहा है। मुझे थैला लेकर किसानों के पास जाना पड़ता था और उनसे एक पौण्ड मक्खन लेने के लिये अपने सुन्दर लिनन कपड़े देने पड़ते थे।"

"हर्कमैनिस के बच्चों ने मक्खन देखा भी नहीं" स्टर्न ने व्यंग से कहा "उन्हें साल में दो बार सिर्फ ईस्टर और क्रिसमस के रविवार को मांस मिलता है। यह सारा भोजन—" सुन्दर सजी हुई मेज के दूसरी तरफ अपने हाथ से हाव भाव दर्शित करते हुए उसने कहा—"हर्कमैनिस में तीन परिवारों का पेट भर सकता है। जब वे बीमार पड़ते हैं तो उनकी कोई डाक्टरी देख भाल नहीं की जाती।"

"यह झूठ है" मेरी मां ने गुस्से से कहा "मेरा भाई फिलिक्स डाक्टर है। वह आधे दिन 'क्रानकन कासे' के लिये काम करता है।"

"क्रानकन कासे" स्टर्न ने कहा "गणराज्य ने स्थापित किया। जब तक राजतंत्र रहा किसी ने भी मजदूरों के लिये कुछ करने का

बात नहीं सोचा। उस वक्त कोई सामाजिक चेतनता नहीं थी। सिर्फ फ़िलॉसफरों के ऐसे ख्याल थे जिन्हें कैसर की पुलिस पागल कह कर जेल भेज देती थी।"

उसने चिनौती के भाव से कंधा हिलाया और कहा—"मुझे अपने आदर्शों की रक्षा के लिये जेल में जाने पर गर्व अनुभव होगा।"

"एकबार स्ट्रूडल और लो" यह कहते हुए मेरी मां ने मेरा प्याला दुबारा भर दिया। अब में देख रहा था कि मेरी मां ने स्टर्न को पागल समझ कर उस की परवाह करना छोड़ दिया था।

"अगली बार शहर में जब तुम खनिकों का देखो तो उनके चेहरों को गौर से देखना" स्टर्न ने कहा।

खनिकों के चेहरे देखना कठिन था। खनिक बहुत कम दिखाई देते थे। जब वे खानों में काम नहीं कर रहे होते थे तो मदिरालयों में बैठ कर ताश खलते और राजनीति के बारे में बातचीत करते रहते थे। छोटी से छोटी और भयानक से भयानक बस्ती म भी एक मदिरालय होता था। यह सबसे बड़ी इमारत होती थी जहां खूब भीड़भाड़ रहती थी। शनिवार को तीसरे पहर खनिकों को पत्नियाँ काले जूते और काले सूती मोजे तथा काली पोषाकें पहनकर और अपने सिर पर हाल के धुले काले रूमाल बांधे हुए शहर में आया करती थीं। वे चिन्तित और बेचैन नज़र आतीं थीं और इतनी तेज़ी से सड़कों पर से गुजर जाती थीं मानों उन्हें यह डर हो कि कोई उनका पीछा कर रहा है। ऊंची ऊंची इमारतों और दुकानों के बीच ।जनमें सुन्दर सुन्दर खिड़कियाँ थीं और जो रोशनी से जगमगा रही थीं अपने आपको स्वस्थ अनुभव नहीं करती थीं। वे 'मेन स्ट्रीट' पर टावर्स एण्ड ब्रानर्स की दुकान का अलमारियों पर जहां बाहर से मंगाये फ्रान्स के रेशमी और इंगलेंड के ऊनी कपड़े प्रदर्शनार्थ रखे रहते थे, निगाह डालने के लिय शायद

ही कभी रुकती थीं। वे पार्क की तंग गलियों में मुड़ जाती थीं जहाँ महरावों के नीचे सस्ती दुकानें थीं। इन दुकानों के फर्श पर कोई गलीचा नहीं बिछा होता था। दीवारों पर जगमगाने वाली बत्तियां नहीं थीं। क्लर्कों को यह कहने की कोई परवाह नहीं थी—"मैडम, नमस्कार, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?" इसके बजाय वे ग्राहकों पर नाराजगी से देखते और कोई दूसरा ग्राहक न होने पर भी उनसे खड़े खड़े प्रतीक्षा कराते तब तक ग्राहक नर्म पड़ जाते थे और जो कुछ भी उन्हें दिया जाता उसे खरीदने को तैयार हो जाते थे। एक बार जब खनिक की पत्नी ने पूछा कि क्या मैं दो दिन पहले खरीदे हुए दस्ताने बदलवा सकती हूं क्योंकि ये बहुत बड़े हैं तो क्लर्क चिल्ला कर बोला,"नहीं, ये नहीं बदले जा सकते, क्या तुम इसे 'मेन स्ट्रीट' समझती हो ?"

जब एक ग्राहक ने एक सस्ता, बना बनाया सूट मांगा—अच्छे सूट सब दर्जियों के सिले हुए होते थे—और वह बहुत बड़ा निकला तो क्लर्क ने इस बात की कोशिश भी नहीं की कि वह उस के बजाय दूसरा छोटा सूट निकाल कर लाता। इसके बजाय उसने अपने हाथ से सूट का पिछला हिस्सा पकड़ कर खींच लिया। दर्पण के सामने खड़े हुए ग्राहक को सूट का सिर्फ अगला भाग ही नजर आता था जो अब चिकना और सीधा दिखाई दे रहा था।

"यह तो बिल्कुल ठीक है," क्लर्क ने कहा। ग्राहक ने सन्तुष्ट हो कर सूट खरीद लिया। घर आने पर उसकी पत्नी चिल्लाई कि यह सूट तो बहुत बड़ा है और इसे पहन कर वह आलू की बोरी की तरह लगता है। पर अब कुछ नहीं हो सकता था। दुकानदार उसे नहीं बदलेगा।

कुछ व्यापारी नये सूट की जेब में कुछ पैसा रख देते थे यदि ग्राहक को उसमें कुछ कमी नजर आती तब क्लर्क कहा करता, "अच्छा, जरा इसकी जेब में हाथ डालो और तब सूट को परखो।" गाहक उसके निर्देश का पालन

करता तो उसकी उंगलियां पैसेसे स्पर्श करतीं। वह चोरी की नजरों से देखता और उसे निश्चय हो जाता कि किसी ने जेब में पैसे छोड़ दिये हैं। तब वह जल्दी से क्लर्क से कहता "यह बिल्कुल ठीक है मैं इसे ही लूंगा" और तब इस से पूर्व कि किसी को इस पैसे के बारे में पता लगे, वह सूट की कीमत दे देता था। बाहर जाकर उसे यह पता लगता कि जेब में तो कुछ ही क्राउन हैं। वह यह कभी नहीं सोचता था कि अपना बुरा माल निकालने के लिये व्यापारी ने ही उसमें कुछ पैसे रख दिये हैं।

खनिकों की पत्नियां भी अपना दमनीय सौदा खरीदती थीं। यह सौदा होता था—गर्म मोजों का जोड़ा, एक नया रूमाल, बच्चों के सस्ते स्लीपर और तब कीमत अदा करके, क्योंकि ये सस्ती दुकानें उधार नहीं देती थीं, तेज़ी से बस्ती के अपने गंदे घरों में लौट जाता थीं। वे पुल को पार करतीं और इस बात की उन्हें खुशी होती थी कि फुटपाथ वाली सड़कों और अच्छी वेषभूषा के लोगों को वे पीछे छोड़ आई हैं।

खनिक साल में एक बार ही एक मई को शहर में आया करते थे क्योंकि उनके लिये यही हुक्म था। एक मई मजदूरों के लिए छुट्टी का दिन होता था और इस दिन की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सुबह मई दिवस परेड होता था।

हमारे परिवार में एक मई का व्यक्तिशः अधिक महत्व था। यह मेरी नानी का जन्म दिन था। मेरी नानी शान शौकत तथा तीव्र दृष्टिवाली थी और शहर के लोग उसे उस की शाही स्थिति के कारण 'मेरिया थरसा' पुकारा करते थे लेकिन वे उस की उपस्थिति में ऐसा कभी नहीं करते थे। सत्य बात तो यह है कि मेरी नानी से हर एक व्यक्ति डरता था। अपने पति की मृत्यु के बाद उसने तेरह बच्चों का पालन पोषण किया था—मामा एडी उस समय पन्द्रह साल का तथा मासी डौरा जो सबसे छोटी थी, केवल एक साल की थी। अपने लम्बे परिवार पर उस का निरंकुश राजा के समान कड़ा

अनुशासन था। अपने जन्म दिवस पर वह प्रत्येक से यह आशा रखती थी कि सुबह नौ बजे तक सब उस के घर आजावें और दस बजे बाद वह किसी की भी बधाइयाँ स्वीकार नहीं करती थी। कई वर्षों तक वह डाक्टर मामा फैलिक्स से इस लिये नाराज रही कि वे उसके जन्म दिवस पर बधाइयाँ देने ग्यारह बजे के बाद आया करते थे। वे अधिक रात तक मरीजों को देखने में घर से बाहर रहा करते थे और अधिक सोया करते थे।

साढ़े आठ बजे के करीब उसके शुभचिन्तकों की पहली टोली उसके घर में अन्दर आती और साढ़े नौ बजे तक तमाम परिवार बड़े, रहने के उस कमरे में इकट्ठा हो जाता था जहाँ से कि पुल को अपने वाली सड़क देखी जा सकती थीं। वहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य होता था यहाँ तक कि मेरी नानी के भाई बुडडे मामा लियो पोल्ड भी जो रिटायर्ड न्यायाधीश थे और जिनका उस समय नानी के साथ मनमुटाव था परन्तु फिर भी उस के जन्म दिवस पर वे सुबह मेरी नानी के यहाँ आना कभी नहीं भूलते थे।

'हैब्स कोर्ट उत्सव' की तरह वहाँ भी एक विशेष नियम बद्ध समारोह होता था; हम बच्चे अपनी नानी के हाथ चूमते और एक कविता-पाठ करते जिसको हमें याद करने को पहले ही कह दिया जाता था। बाद के वर्षों में हम एक गाना गाया करते थे, कई लगातार वर्षों तक मैंने बैच का 'एअर ऑन दी जी स्ट्रिंग' बीथोविन का 'जी माइनर रोमान्स' और सरसते का 'जोटा नवारा' गाया। इसके बाद बीस साल की आयु तक मैंने मामा फैलिक्स तथा मामी आना के साथ मोजर्ट का 'सिम्योनी कन्सेन्ट्रेट' पियानो वायोलिन और बेला पर गाया करता था। गाने के समय में नानी, मेरी मां तथा कई मामियों की आंखों में प्रायः आँसू आ जाया करते थे। वे सूंघने की सी आवाज करतीं और अपनी नाकों को पोंछतीं ठीक उसी तरह जिस तरह हम एक मधुर गीत मधुर बाजे पर गा रहे होते थे। रोने से गाने में बाधा पड़ने के कारण एक बार मामा फैलिक्स इतने नाराज हुए कि उन्होंने

मामियों की ओर अपनी उठाई और स्टैंड पर दे मारी और उसे ताड़ दिया। मेरे मामा ऊब गये थे और वे समझते थे कि बुरे फंसे वे बाहर जाकर सिगरेट पीना चाहते थे परन्तु मेरी नानी नहीं चाहती थी कि कोई बाहर जावे। उत्सव के समाप्त होने के समय तक कोई भी कमरे के बाहर नहीं जा सकता था।

दस बजे के लगभग गाने तथा उत्सव के शुष्क कार्य क्रम के पश्चात् हम बच्चों को ब्रिज स्ट्रीट देखने के लिए खिड़की की देहलियों पर बैठने की स्वीकृति दे दी जाती थी। खिड़कियों के सामने लोहे की छड़े लगीं थीं और खिड़कियाँ बन्द रहती थीं। इन सब बातों के होते हुए भी चचेरा भाई रोल्डी दूसरे मंजिल की खिड़की से बाहर निकलने में कामयाब हो गया। वह खिड़का के सहारे नीचे को बड़े जोर से झुका और शीशा टूट गया। रोल्डी मोटा लड़का था। नीचे की ओर गिरते समय जिसकी कि आशा ही नहीं थी, उसके हाथ में जंग लगी हुई लोहे की छ रह गई। मेरी मामियाँ डर से चीख पड़ी, रोल्डी की मां मूर्छित हो गई लेकिन रोल्डी का कोई चोट नहीं पहुंची क्योंकि वह मामा मोरिज की चमड़े की दुकान के ऊपर एक शामियाने पर गिर पड़ा था जो ठीक नीचे ही लगा हुआ था। शामियाने का कुछ भाग फूट गया। मामा मोरिज बहुत नाराज हुए और बड़बड़ाने लगे कि शामयाने की हानि की कीमत वसूल करने के लिये रोल्डी के मां-बाप पर नालिश करेंगे। नानी के चचेरे भाई रोल्डी को चरापाई पर लिटाये जाने का आदेश दिया और उसे शराब मिश्रित गर्म काफी पिला दी। मामा फैलिक्स ने उसकी सी हड्डियों को देखा और मामा मोरिज ने अपने शामियाने का परिवार का हर एक आदमी शान्त हो गया था। तब चाची आन्ना रोल्डी की माता दुवारा फिर मूर्छित हो गई। रोल्डी उस दिन का नायक था और उसे बड़ा यश प्राप्त हुआ। हमें उसके खिड़की से बाहर गिर पड़ने की ईर्षा थी।

मई दिवस पेरेड दस बजे शुरू हुई जब कि पीतल के बैंड की पहली आवाज पुल के पार से सुनाई पड़ी। हम बच्चों के लिए मई दिवस का सबसे बड़ा आकर्षण पीतल का बैंड था। प्रत्येक खान का एक अलग बैंड था। इसके अतिरिक्त पुलिस के फायर मैनों के और अन्त में फौजी बैंड था जो सबसे अच्छे थे। इतने बैंड बाजे होते हुए भी मार्चिंग करते हुए इनकी आवाज एक तुरही बाजे की आवाज के कारण जो पीछे से आ रहा था, सुनाई नहीं पड़ रही थी। बैंड बाजे वालों में एक अच्छी खासी होड़ चल पड़ी थी। हर एक दूसरे से ऊंचा आवाज से बजाने की कोशिश कर रहा था। इस प्रयत्न में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ बैंड अपने कारनेट, ट्रामबोन तथा बोम बार्डनों को पूरे जोर से बजा रहे थे जब कि दूसरे इतने ही बाजे तथा तीन ढोल और झांझ मंजीरों के तीन जोड़े बजा रहे थे।

(झांझ मंजीरों की आवाज मेरे बचपन के महान क्षणों में से एक थी। झांझ मंजीरे बजाने वाले जो बिल्कुल कदम मिलाए तथा गाना गाते हुए चले जा रहे थे मुझे बड़े अच्छे लगते थे; उनके कान बैंड की आवाज सुनकर खड़े हो जाते थे और वे अपने झांझ मंजीरों की धातु की प्लेटों को एक दूसरे से टकरा कर प्रसन्नता पूर्वक बजाना छोड़ देते थे। मई दिवस के बाद कुछ दिनों तक चचेरा भाई रोल्डी और मैं रसोई घरों से बर्तनों के ढकने ले लेकर परिवार के सदस्यों को अघर उठा लेते और हम उन की टकराने की आवाज करते हुए सारे कमरे में तब तक घूमते जब तक कि बेरटा रसोइया हमें बाहर नहीं निकाल देता।)

खिड़की में बैठ कर मैं बैंड बाजों को गिनता और रोल्डी उनकी आवाज के अनुसार उनका हिसाब लगाता। उस बैंड ने जो अभी निकला था, 'कोलिन' 'कोलिन' गाया, एक जो अभी निकल रहा है शायद 'वाशिंगटन पोस्ट' गाया हो और पीछे से 'कारमन' से सांड से लड़ाई के समय के गाने की आवाजें आती थीं। ओल्ड राइफल रेन्ज के पीछे चौरस जमीन पर लगे हुए चरख तथा उसके हिस्सों की आवाज के समान यह एक अजीब बेसुरा राग था।

स्टर्न ने हम से कहा था कि खनिकों के चेहरों को गौर से देखना लेकिन जब कोई बैंड बाजों के गिनने में ही व्यस्त हो रहा हो तो उन के चेहरे गौर से कैसे देख सकता था ? चमकते हुए पीतल के तुर ही बाजे तथा चांदी की चमकीली बांसुरियों के सामने खनिकों के चेहरे धुंधले धब्बों के मानिन्द थे जैसे कि एक प्रभावोत्पादक चित्र पर दिखाई देते हैं और दूसरी अधिक मोहक चीजें थीं। खनिक स्कूलों के अपनी भड़कीली पोषाकें पहने हुए नौसिखिए तथा स्नातक प्रत्येक खान के झण्डे और ध्वजाएं,कोई लाल और सुनहरी रंग की,या लाल और सफेद या काले और लाल रंग की; प्रत्येक खानों के अपने ट्रीमर जिन पर उनका नाम लिखा था पारदर्शक यन्त्र जिन पर भयानक तारे बने थे। झण्डे ले जाने वाले इस प्रतिष्ठित कार्य के लिए कुछ गिलास पिलसन शराब पीकर स्वयं तैयार रहते थे और वे झण्डों को उनके भारी होने पर भी आसानी से इस तरह नियन्त्रित रख सकते थे जैसे मल्लाह तूफान के समय भी अपने जहाजों को बाहर समुद्र में सम्भाले रखते हैं। तब खानों के अधिकारी होते थे जो अपनी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करते हुए अपने को बड़ा समझ कर अकड़ कर चलते थे और वैसी योग्यता झलकाते थे जैसी सार्वजनिक कार्य के लिए चुने हुए आदमियों से आशा की जाती है। उनके पीछे बैंड बाजे, झण्डे और खान अधिकारियों से बहुत दूर पर खनिक होते थे। वे तीन तीन की कतारों में चलते थे। पहली चार या पांच कतारें बड के साथ कदम मिला कर चलने की कोशिश करती थीं लेकिन अन्तिम तीन कतारे उनके पीछे मार्चिंग करते हुए बैंड के साथ बिना कदम मिलायें चल रही होती थीं लेकिन बीच में चलने वाले शेष सब अपने पैरों को घसीट कर चलते थे, उदास और थके दीख पड़ते थे मानो वे सब एक झुण्ड में इकट्ठे हो गये हैं और उन्हें परेड में चलने के लिये विवश किया गया है। वे अपने घरों के पीछे छोटे-छोटे आंगनों में धूप का आनन्द लेना अथवा मदिरालय में ताश खेलना अधिक सन्द करते थे।

मुझे उनके चेहरों के वारे में तव तक कुछ भी नहीं मालूम हुआ जब तक कि स्टर्न ने उनका जिक्र नहीं किया। लेकिन अब जब मैं पिछली घटनाओं पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे उनकी खाल का भयानक पीलापन याद आ जाता है। कभी कभी उन में से कोई एक दूसरी मंजिल की खिड़की पर जहां हम वच्चे वैठे हुए थे चुपके से दृष्टि डाल लेता और वह अपनी आंखें मिचकाता था माना वे सूर्य की तेज रोशनी में देखने के अभ्यस्त न हों। एक बार मैंने पूछा वे इतने पीले क्यों दिखाई पड़ते हैं। वैंक के मैनेजर मामा एंडी ने जो मेरे पीछे खड़े थे वताया कि दिन के अधिक समय वे जमीन के अन्दर गलियारों में कार्य करते हैं और सूर्य की रोशनी में रहने के अभ्यस्त नहीं हैं। यह समझ में आने वाली वात मालूम पड़ी।

खनिक गहरे रंग के सूट और काले हैट पहना करते थे जो उन्हें फिर आते प्रतीत नहीं होते थे और अपने कोटों के कालर पर भिन्न भिन्न फूल लगाते थे। मुझे वताया गया कि कैथोलिक पार्टी के सदस्य सफेद रंग के, सोसल डेमोक्रेटक गुलावी रंग के और कम्यूनिस्ट नाम का एक छोटा समूह लाल रंग के फूल लगाया करता था और कुछ थोड़े से ऐसे थे जो अपने वटनों में अन्त के खेतों में उग आने वाले नीले रंग के फूल लगाते थे, वे 'नेशनलिस्ट' कहलाते थे।

शहर के केन्द्र में स्थित पुराने वाजार के चौराहे 'रीनेक' पर पहुंच कर परेड तितर-वितर हो जाती थी, खनिक भिन्न भिन्न दिशाओं में अपनी अपनी पार्टियों के अनुसार चले जाते। सवसे वड़ा तथा आदर प्राप्त समूह सोशल डेमोक्रेटकों का था और उन्हीं को 'रीनेक' चौराहे पर मीटिंग करने का हक मिला हुआ था। चौराहे के वीच में एक 'पेस्टीलेन्स' स्तम्भ था जो भयानक प्लेग की वीमारी की यादगार में वनाया गया था और जिसने सन् १६३२ में शहरके दो तिहाई निवासियों को काल कवलित कर दिया था। 'पेस्टीलेन्स' स्तम्भ के पार्श्व में दो पुराने पत्थर के फव्वारे थे जो हमेशा खाली रहते थे।

हम लड़के उनके ऊपर जाना और नीचे कूदना पसन्द करते थे। पहली मई को हमारे शहर के मेयर, एक सोशल डेमोक्रेट फव्वारे के गोल भाग को भाषण के लिए प्लेट फार्म के बतौर इस्तेमाल किया करते थे। मेयर जो पहले मोची थे बड़े गम्भीर आदमी थे। इन्हें कभी कभी उठाना पड़ता था। एक वार, राजनैतिक बहस करते हुए और फव्वारे के किनारे के उस पार कदम रखते हुए पूरा वाक्य भी खतम न कर पाये थे कि गिर पड़े लेकिन सोशल डेमोक्रेट अच्छे स्वभाव के थे जो समय समय पर मेयर की बात पर ताली बजा देते थे। मीटिंग के अन्त में बैंडों ने राष्ट्रीय गीत गाया और हर एक सावधान का दशामें खड़ा हो गया और गीत गाने लगा। मेयर की प्रतिष्ठा में कोई अन्तर नहीं आया और वह फिर दुबारा चुन लिया गया। मीटिंग के बाद बैंड इतने जोर से शोर करता हुआ अपने घर चला गया जितना पहले कभी नहीं किया था। खनिक स्वयं दो-दो तीन-तीन की टोलियों में अपनी बस्तियों में वापस चले गये।

कैथोलिक पार्टी के सदस्यों ने अपनी सभा न्यू चर्च के सामने गिरजा घर के चौराहे पर की। चर्च की सीढ़ियों पर एक मंच खड़ा कर लिया गया और एक पादरी ने उपदेश दिया। इसके बाद खनिकों ने एक धार्मिक गीत गाया। एक बार मैंने रीनेक और 'चर्च स्कवायर' के कई चक्कर यह जानने की लगाये कि क्या खनिकों के चेहरे भिन्न भिन्न राजनैतिक विश्वासों को प्रगट करते हैं जैसा कि मेरा अनुमान था। लेकिन उन सबके चेहरे मुझे एक से पीले, थके हुए और उदासीन दिखाई पड़े। उनकी आंखों की पलकों में, कानों में और नाक के नथुनों में कोयले की धूल भरी हुई थी जिसे कितना ही धोया जाय साफ नहीं हो सकती थी। मनुष्य वहां से खिसक रहे थे और जब सब कुछ समाप्त हो गया तो वे बड़े खुश थे।

कम्यूनिस्टों ने अपनी सभा औद्योगिक उपनगर के केन्द्र हे मारकेट के चौराहे पर की जो बंगलों और कोयलों के ढेरों से घिरा हुआ था। मैं वहां

कभी नहीं गया लेकिन टोंडा वासेक और मैक्स रोज़ेन्जविग ने जो पास ही रहते थे मुझे बताया कि वह सब सुनने लायक नहीं था। बोलने वालों ने सरकार, खानों के मालिक, मेयर तथा शहर के प्रत्येक निवासी की कटु आलोचना की। अन्त में उन्होंने 'इण्टर नेशनल' गाया। मैं नहीं जानता कि वह क्या होता है और मैंने उसकी परवाह भी नहीं की।

मेरी मां यह सोच कर बड़ी दुखी हुई कि हमने स्टर्न को अपने घर बुलाया।

"यदि मैं यह जानती होती कि वह इतना खतरनाक है", उसके चले जाने पर मेरी मां ने कहा "तो मैं उसे घर बुला लाने को तुम से नहीं कहती।"

"गणित के प्रश्न हल करने में उसने मेरी मदद की" मैंने कहा।

मेरी मां ने नहीं सुना। "और मैं डाइनिंग रूम में 'जौस' तैयार की और नीले-प्याजी मैसीन का इस्तेमाल किया" अपने आपको धिक्कारते हुए उसने कहा, "अब मुझे चीनी मिट्टी के बर्तन अपने आप धोने पड़ेंगे क्योंकि मैं नहीं चाहती हूं कि बेरटा औरों को तोड़ दे।"

वह चली गई। मुझे दया आई। मैं मन ही मन यह आशा करता था कि स्टर्न और मैं शायद दोस्त हो जायेंगे, परन्तु अब मुझे पूरा विश्वास हो गया था जैसा पहले कभी नहीं हुआ था कि वह मुझ से घृणा करता था। सबसे बुरी बात तो यह थी कि मैं यह सोचने लगा था कि शायद वह ठीक हो। जैसा कि उसने कहा था शायद कार्लमे की किताबें वास्तविकता से दूर कर देती हों। इसके बारे में सोचने पर भी शहर में मेरी जान पहचान का ऐसा कोई ओल्ड शैटर हैन्ड के समान आचरण वाला कोई नहीं था और जब उसने यह कहा था कि उसके पिता के 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' से वह कोई सरोकार नहीं रखेगा तो मैं उसकी तारीफ़ किये बगैर नहीं रह सका। निश्चय ही ऐसी बात कोई चरित्रवान पुरुष ही कह सकता था। कोई भी

बुद्धिहीन मनुष्य एक बड़े स्टोर को चला सकता था। शहर के सबसे सफल दो सौदागर वर्तनी की बहुत सी अशुद्धियाँ किए बिना एक साधारण पत्र भी नहीं लिख सकते थे परन्तु सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करना। जेल में डाल दिये जाने का खतरा मोल लेना दूसरी बात थी।

उस रात मेरी मां ने मामा एडी से कहा कि स्टर्न की बातों से उसे बहुत धक्का पहुंचा।

"वह अभी बहुत कच्चा है" उसने कहा "वह किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं जानता। उसने मुझे ठीक तरह से नमस्कार भी नहीं किया और हमारा खाना छूने से इन्कार कर दिया। बिना मां के बच्चे का यही हाल होता है। उसके पिता कभी घर पर नहीं रहते, कोई भी न तो उस लड़के की ओर न उस के आचार विचारों की परवाह करता है। वह स्टोर नहीं चलाना चाहता, घर से निकल कर सिर्फ समाज-वाद के लिये संघर्ष करना चाहता है।"

"नहीं, समाजवाद के लिये नहीं" मैंने कहा "सामाजिक न्याय के लिए।"

"इसे कुछ भी कह लो" मेरी मां ने कहा "यह है बेवकूफी।" मामा एडी मुस्कराये। "तेरह साल का लड़का!" उन्होंने दयार्द्रता से कहा। "वह यह नहीं जानता कि किस बारे में बातें कर रहा है। देखते हैं दस वर्ष बाद वह कैसी बातें करता है।"

उस रात मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह मुझे जल्दी ही बड़ा करके तेईस साल का कर दे।

मैं कुछ हफ्ते बाद रॉयल होटल में स्टर्न के पिता से मिला। हम लड़कों को अपने मां-बाप या संरक्षकों को साथ लिए बिना 'काफी हाउस' में जाने की इजाजत नहीं थी। यह स्कूल का नियम था किन्तु आज इतवार का तीसरा

पहर था और मामा एड। और उनकी पत्नी 'डिनर' के लिए घर आये थे और वाद में जव मेरी मामी और मां 'कौनडी टोरी' चले गये तो मामा मुझे होटल में ले गये।

मिस्टर स्टर्न मेज के पास से गुजरे और मेरे मामा खड़े हुए। उन्होंने हाथ मिलाये और मि० स्टर्न से मेरा परिचय कराया गया। मिस्टर स्टर्न हमारे साथ वैठ गये परन्तु उन्होंने अपना टोप नहीं उतारा। शहर में कुछ पुराने आदमी कमरे के अन्दर आकर भी अपना टोप नहीं उतारते थे यद्यपि मुख्य 'वेटर' उन्हें वड़ी नापसन्दगी की दृष्टि से देख रहा होता किन्तु मि० स्टर्न को सम्भवतः मुख्य 'वेटर' की राय की कोई परवाह नहीं थी। वह नाटे और गंजे थे, मुंह पर झुर्रियां पड़ी थीं, दांत खराव थे और उन्होंने ऐसा सूट पहन रक्खा था जिसमें सलवटें पड़ी हुई थी। वे एक एक कर और धीमी आवाज में वोलते थे और उनकी आवाज का उतार जढ़ाव मेरी समझ में नहीं आता था। वे कुर्सी के विल्कुल अगले सिरे पर वैठ गये मानो किसी भी क्षण उठ खड़े होने को तैयार हो। मैं तो उनके वारे में यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वे एक ऐसे वड़े स्पेर के मालिक होंगे जहां सव कुछ मिल सकेगा।

मेरे मामा ने उनसे पूछा कि उनके स्टोर की योजना कैसी चल रही है। मेरे मामा सीधे तन कर वैठे हुए थे मानों वे वैंक में अपनी डैस्क के पीछे वैठे हुए हों। उनकी आवाज के आदरपूर्ण स्वर से मैंने यह अनुमान लगाया कि मिस्टर स्टर्न उनके महत्वपूर्ण ग्राहक थ। शहर में ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा नहीं थी जिनके प्रति मामा एडी ऐसा आदर-भाव दिखाते।

"मैंने हाल ही में 'करवेंका' के साथ योजना तैयार की है" मि० स्टर्न ने कहा, "करवेंका शहर में सवसे महंका शिल्पी था, उसने श्री वर्डी विक्स का आधुनिक वगला वनाया था और उसे वहुत प्रतिभाशाली समझा जाता था।"

"मैं पांच मन्जिला स्टोर वनवाऊंगा जो शीशे और इस्पात का वना

गा।" मि० स्टर्न ने कंधा हिलाते हुए खेद पूर्वक कहा, "सिटी हाल के आदमियों ने मुझे ज्यादा मंजिलें बनाने से इन्कार कर दिया"। स्पष्ट ही मि० स्टर्न ने स्वयं को अपनी इमारत के साथ एकाकार कर लिया था।

मामा एडी ने कहा कि हमारा शहर में जमीन के नीचे गैलरियों, गढ्ढों और धाराओं का जाल सा बिछा हुआ है। जब कोई भारी ट्रक खड़खड़ाता हुआ हमारे घर के पास से गुजरता तो दीवारें हिलने लगती थीं। अन्य शहरों के लोग हमारे शहर के तीव्र विकास और औद्योगिक समृद्धि के प्रति ईर्षा के भाव से खुशी खुशी यह भविष्य वाणी किया करते थे कि किसी शुभ दिन सारा शहर जमीन में धंस जायगा और मुक्ति हो जायगी।

'यह तो बुरी बात है' मि० स्टर्न ने कहा "मेरी तो एक गगन-चुम्बी इमारत बनाने की योजना थी।"

"एक गगन चुम्बी इमारत। जैसी अमरीका में हैं।" मैंने आश्चर्य से कहा।

"हां, दस और बारह मंजिल की। इस देश में इतने मंजिल की यह पहली इमारत होती" मेरे चेहरे पर उत्साह के भाव देख कर मि० स्टर्न मुस्कराए। उनकी आंखें कोमल और दयापूर्ण थीं ऐसे आदमियों की आंखों की तरह नहीं जिन्हें सिर्फ पैसा जमा करने की धुन होती है।

"ब्रूनो ने मुझे बताया है कि तुम्हारे घर में उसका कैसा अच्छा समय बीता।" उन्होंने मुझ से कहा।

"तुमने साथ साथ अच्छी तरह समय बिताया?"

मुझे झूठ बोलना पड़ा। "हां" मैंने कहा।

"किसी दिन तुम मेरे कमरे में आना। गुण्डों द्वारा तोड़ फोड़ करने के बाद जो कुछ बच गया था वह फर्नीचर अभी आया है।"

"क्या उन्होंने अधिक नुकसान किया ?" मेरे मामा ने पूछा वे यह जानते प्रतीत होते थे कि यह सब कैसे हुआ।

"स्टोर की पहली मंजिल में यह सब उन्होंने शुरू किया" मि० स्टर्न ने कहा 'शीशे की बड़ी खिड़की को तोड़ा, काउण्टरों को उलट पुलट कर दिया। दुकान का सामान सड़क पर फेंक दिया, बिजली की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया और फर्श के तख्तों को तोड़ डाला। कोई नहीं कह सकता कि भीड़ क्या कर दे जबकि एक बार नियन्त्रण से बाहर हो जाय।" उन्होंने सीधे अपने सामने वाली जगह को देखा। "बहुत वर्षों तक उन्हीं आदमियों से मेरी मित्रता रही थी। वे स्टोर आते, हमारे सामान को पसन्द करते, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता और वे हम से बात चीत करने अन्दर आ जाते थे। क्रिसमस और ईस्टर पर मेरी पत्नी, भगवान उसका भला करे, केक पकाती और शहर के सबसे गरीब आदमियों को उन्हें देती। जब मेरे पास कोई आता और कहता कि पैसा नहीं दे सकता, मैं वर्षों इन्तजार करता। बस एक दिन भगवान् जाने इन्हीं आदमियों का न जाने क्या हो गया कि वे सब जंगली बन गए। हम लोहे की चटखनियां बन्द भी न कर सके थे कि वे लोग अन्दर स्टोर में घुस आये और हर चीज को तोड़ना फोड़ना शुरू कर दिया।"

"और पुलिस ?" मेरे मामा ने पूछा।

"पुलिस बाहर खड़ी रही और आने जाने वाली सवारियों को निर्देश देती रही" मिस्टर स्टर्न ने धीमी तथा मुलायम आवाज से कहा। "वे पुलिस के मुखिया को लिजाने गये। वह हमेशा हमारे घर प्रति रविवार को तीसरे पहर आता और हमारी अच्छी सिलीवोविज की बोतल लिए बिना कभी घर को नहीं छोड़ता। वह आया, भीड़ को घूर घर कर देखता रहा और उसने कुछ नहीं किया। वह मेरी 'सिलीवोविज' पसन्द करता

था लेकिन मेरा अनुमान है कि उससे भी ज्यादा वह थोड़ी पोग्नम पसन्द करता था।"

मैं ठीक तौर से नहीं जानता था कि पोग्नम क्या होती थी। मुझे ख्याल था लेकिन मैं उसकी सारी सच्चाई जानने से डरता था। मैंने कहा, "क्या वहां ब्रूनो था ?"

"लड़के के बारे में एक मजेदार बात सुनिये, मि० स्टर्न ने कहते हुए अपना सिर हिलाया। अब भी निगाहें उसी स्थान पर थीं।

"वह मजबूत नहीं है और मेरा अमुमान है कि उसका उम्र के बहुत लड़के उसे मात दे सकते हैं लेकिन ब्रूनो में कुछ ऐसी शक्तियां हैं जिन्हें हम व्यापारी गुप्त शक्तियां कह सकते हैं।"

मेरे मामा ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया। 'ब्रूनो की शक्ति उसके अन्दर निहित है' मि० स्टर्न ने कहा, "उस दिन वह डरा नहीं। जब यह सब कुछ शुरू हुआ तो वह दूसरा मन्जिल पर था और मेरी पत्नी को देखने गया जो कि बुरी तरह डर गई थी और जिसका हृदय बड़ा कमजोर था, उसने कहा,"कोई चिन्ता नहीं मां, वे तुम्हें उन्हें छूने भी नहीं दूंगा,तब उसने मेरी पत्नी (भगवान उसका भला करे) के सोने के कमरे का मार्ग रोकने लगा। उसने दरवाजे में आस-पास चारों ओर कुर्सियां, मेजें, बक्स तथा पलंग रख दिये। मैं कभी नहीं सोच सकता था कि लड़का अकेले इतनी भारी-भारी चीजों को भी उठा सकेगा, यहां तक कि अपने पलंग को भी। भीड़ ऊपरी मंजिल की ओर झपटी और डाईनिंग रूम के फर्नीचर को तोड़ने लगी। ब्रूना डरा नहीं। उसने अपनी मातासे कहा कि डरिये नहीं। तब सैनिक आगये और उन्होंने भीड़ को तितर बितर कर दिया लेकिन देर काफी हो चुकी थी। मेरी पत्नी को डर मारे डालता था। रात को उस पर दूसरा आक्रमण हुआ और वह कुछ घण्टों बाद मर गई।"

मि० स्टर्न ने अन्यमनस्कता चित से काफी में दो टुकड़े चीनी डाल ली जिसे 'वेटर' लाया था और उसे चम्मच से धीरे-धीरे हिलाने लगे।

"यह एक बड़ा अच्छा स्टोर था। हम अपनी फक्टरी का बना हुआ नीली छपाई के बहुत से कपड़े बेचा करते थे। एस्थोनियां और पोलेंड के बहुत से ग्राहक थे। लोग ब्रेस्ट-लिटोल्स्क तक से स्टर्न का सामान खरीदने आया करते थे। फैक्टरी ८५ वर्ष पुरानी थी और मेरे पितामह ने बनवायी थी। हम बड़े मशहूर थे। हर एक आदमी अमेरिकन डालर अदा करता था। वहाँ के लोगा को खुद अपनी ही मुद्रा में विश्वास नहीं था। कभा-कभी हफ्ते के अन्त में शु वार को तीसरे पहर में अपनी जेब में डौलर बिलों का इतना बड़ा बंडल ले जाता।" वक के बंडल को फुटबाल की आकार का बताते हुए मि० स्टर्न ने अपन हाथों का गोलाकार घुमाया। "फैक्टरी आंगन के उस पार थी। रासायनिक पदार्थ और रंगों का खट्टी गंध में कभी भी नहीं भूलूंगा, एक माठी सुगंध, वास्तव में। यह घर ही था।" उन्होंने एक आह भरा।

"यहां छपे हुए सामान के लिए कोई बाजार नहीं है।" मामा एडी ने पूछा।

"नहीं। यहाँ के लोगों का जीवन स्तर कुछ अधिक ऊंचा है। लाग अच्छा माल खरीदते हैं। यही कारण है कि मैंने व्यापार करने का निश्चय किया। मैं बड़े 'स्टोर' पसन्द नहीं करता, लेकिन जमाने से आगे चलना पड़ता है।

"दस साल में' मेरे मामा ने कहा 'इस देश में यह सबसे बड़ा शहर हो जायगा। नए नए उद्याग यहां हर समय खुलते रहते हैं। मुकाबिला करने की स्वस्थ प्रवृत्ति मौजूद है ही। हमें मजदूरों की कोई दिक्कत नहीं है। यह ग्राहका के सामान के लिए बहुत बड़ा बाजार है ही।"

मैं आश्चर्य से उसकी ओर घूर घूर कर देखने लगा। वह मेरी कहानी की कितावों में आये काल्पनिक पात्रों के समान वात चीत करता था और मैं हमेशा समझता था कि मामा एडी एक शान्त और गम्भीर बेंकर हैं।

"मैं कम वेतन पाने वाले लोगों के साथ अधिक व्यापार करना चाहता हूं, मि० स्टर्न ने कहा। "गाड़ी व्यापार के लिए एक ऊंचे दर्जे का 'डिपार्टमेण्ट होगा' लेकिन विशेष रूप से मेरी दिलचस्पी बिक्री के बढ़ाने में है। मैं चाहता हूं कि खनिकों को और मजदूरों को सारा सामान मेरे ही स्टोर से खरीदने की आदत पड़ जाय ताकि वे ठगे न जा सकें जैसा कि उनके साथ महरावों के नीचे वाली दुकानों पर होता है। कोई धोकेबाजी न होगी, हर एक के साथ ईमानदारी वरती जावेगी और नम्र व्यवहार होगा। मेरे लिए एक ग्राहक ग्राहक ही है चाहे वह एक खनिक हो अथवा बैंक का प्रेसीडेण्ट। शनिवार के दिन मेरी दुकान आठ वजे तक खुली रहेगी।'

'आठ वजे तक' मेरे मामा आश्चर्य में भर कर बोले "क्रान्ति मच जायगी। तुम जानते हो कि स्थानीय दुकानदार लम्बे अरसे तक दुकान खुला रहने के वारे में क्या अनुभव करेंगे। व्यापारियों का संगठन बड़ा मजबूत है और पुलिस और उनके सम्बन्ध इस प्रकार के हैं।" यह कहते हुए उसने उंगली पर उंगली रखी।

"मैंने पुलिस से पहले ही वात चीत करली है," मि० स्टर्न ने कुछ घृणा के भाव से कहा। "वे कोई मसीवत खड़ी नहीं करेंगे सब कुछ तै कर लिया है।"

मेरे ऊपर वड़ा भारी असर पड़ा। इस में कोई सन्देह नहीं था कि वह तुच्छ छोटा आदम जिस की आवाज वड़ी मधुर थी यदि चाहता तो सबसे लम्बी गगन चुम्बी इमारत वना सकता था।

वह मेरी ओर घूमा 'ब्रूनो स्कूल में कैसा चल रहा है ?"

"वह गणित में सबसे अच्छा है।"

"मैं जानता हूं। मेरी इच्छा है कि वह हंसी खुशी की बातों में अधिक भाग ले। वह लड़का कभी खाली नहीं रहता है। हर समय पढ़ता रहता है। क्या तुम भी अधिक पढ़ते हो ?"

मैंने कहा "हाँ मैं भी।"

मिस्टर स्टर्न ने कंधा हिलाया और कहा "मैं आधी रात के बाद घर वापस आता हूं तो देखता हूं कि लड़का अब भी पढ़ रहा है। मैं उससे कहता रहता कि वह बिजली का बिल बहुत अधिक बढ़ा रहा है लेकिन वह परवाह नहीं करता। आधी रात तक पढ़ता रहता है।"

"वह क्या पढ़ रहा है ?" मेरे मामा ने नम्रता परन्तु अधिक दिलचस्पी न लेते हुए पूछा।

"मार्क्स को" बड़ों की बातचीत में कुछ योग देने की गर्व अनुभव करते हुए मैंने कहा "कैपीटल।"

मेरे मामा आश्चर्य से देखने लगे। मैं यह कहने ही वाला था कि किताब अभी मेरे कमरे में है लेकिन मैंने सोचा कि चुप रहना अधिक अच्छा है।

'कार्ल मार्क्स ?' अपना सिर हिलाते हुए मामा एडी ने कहा "इस उम्र में ?"

"आजकल मार्क्स ही है," मि० स्टर्न ने कहा 'पिछले महीने में वोलटायर और लार्ड समर्थिंग था। भगवान जाने कल क्या होगा। अनेक प्रकार की खुराफातें अपने दिमाग में घुसाता रहता है। स्टोर आना पसन्द ही नहीं करता। मजदूरों की उन्नति तथा अन्य बेकार की बातचीतों में लगा रहता है।"

मेरे मामा हंसे, "इस बारे में क्या चिन्ता करते हो, मि० स्टर्न। ब्रूनो अभी लड़का ही तो है। जब हम नौजवान थे तब हम क्या कहा करते ज़रा उन बातों को याद करिये। हमारे भी उस समय कैसे वाहियात और क्रान्तिकारी विचार थे ?"

मुझे अपने मामा की यह बात पसन्द नहीं आई। मानों हम लड़के या तो जूलू थे या सर्कस के विदूषक। नौजवान होना भी एक मुसीबत थी।

"ऐसे विचार मेरे कभी नहीं रहे" मि• स्टर्न ने कहा "मुझे काम करना पड़ता था। जब कि मैं ब्रूनों की उम्र का था तो मुझसे ऊपर नीचे सामान की गांठे ले जाने को कहा जाता था। मैं दस साल की उम्र तक स्कूल पढ़ने गया। मुझे किताबें पढ़ने को समय नहीं मिलता था। मेरे पिता मेरे साथ बड़ी सख्ती रखते थे। उन्होंने व्यापार मुझे बिल्कुल शुरू से ही सिखाया। मुझे विशेष अधिकार नहीं थे। दूसरे एप्रिन्टसों की अपेक्षा मेरे साथ भी अधिक अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था।"

मि० स्टर्न खड़े हो गये। "मुझे मेयर से मिलने जल्दी जाना है। अच्छा, बुरा न मानियेगा," उसने कहा, मानों अपने आपको शान्तवना देने की कोशिश कर रहे हों "ब्रूनो बदल जायगा। अभी उसके मन में विचारों का द्वन्द्व रहता है। मुसीबत यह है कि लड़का बहुत ज्यादा जानता है। कभी कभी मैं सोचता हूं कि वह इतना अधिक जानता है कि जो उसके भले के लिए नहीं है।"

मैं उनके शब्दों को कभी नहीं भूल पाया। वे भविष्य वाणी की तरह सच निकले।

मैंने मार्क्स की 'कैपीटल' पढ़ना शुरू किया। बाद में मामा एडी ने बताया कि यह ख़तरनाक किताब है और विलर्ट वंश के उपयुक्त नहीं, लेकिन कुछ सफे पढ़ने के बाद मुझे उसे छोड़ना पड़ा। स्टर्न ने मुझे बतलाया था कि मार्क्स की शैली बड़ी स्पष्ट तथा सीधी सादी है परन्तु मेरे लिये यह कठिन थी।

स्टर्न ने मुझ से स्कूल में कई बार पूछा कि किताब पढ़ रहे हो या नहीं। यदि मैं उससे सच सच कह देता, तो मुझे शर्म आती। मैंने उससे कहा कि मैं उसे धीरे धीरे पढ़ रहा हूं। कुछ हफ्तों बाद स्टर्न ने कहा कि उसने लियो को किताब देने की प्रतिज्ञा की है। मैं नहीं चाहता था कि लियो मुझसे आगे बढ़ जाय अतः मैं एक शाम को किताब के पहले दो अध्याय 'कमोडिटी, प्राइस, प्रॉफिट्स, प्रॉफिट्स और वैल्यूज़ इन सरक्यूलेशन' पढ़ गया। लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया। बिना समझे मैं वाक्यों को पढ़ता जाता था।

मैंने पुस्तकें स्टर्न को लौटा दी, उसने वे पुस्तकें लियो काफका को दे दीं। कुछ दिनों बाद मैंने जानबूझ कर लियो से पूछा क्या उसने 'कैपीटल' पढ़ली ?

लियो ने अपना सिर हिलाया "मैंने पढ़ने की कोशिश की थी परन्तु छोड़नी पड़ी। मेरे पिता ने भ। कई बार मुझे इसे पढ़ने को कहा था और कहा था कि यह एक बहुत अच्छी किताब है।" उसने कंधे हिलाए। "शायद दो साल में पढ़ लूं। अभी बहुत समय है।"

मैंने कहा "स्टर्न समझता है कि यह एक बहुत बढ़िया किताब है।"

"वास्तव में" लियो ने कहा और प्रसन्नता से मुस्कराया "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मेरे पिता और स्टर्न हर मामले में एक राय रखते हैं ?"

यह एक आश्चर्यजनक बात थी कि डा० काफका और स्टर्न को हर बात में एक राय हो। उनमें अधिक भिन्नता नहीं हो सकती थी। डा० काफका शहर के सबसे मशहूर फौजदारी के वकील थे। वे मनुष्य भी—जो उन्हें पसन्द नहीं करते थे और ऐसे लोगों की संख्या बहुत थी। यह स्वीकार करते थे कि डा० काफका होशियार वकील हैं। उनका नाम स्थानीय समाचार पत्र में हमेशा होता था और कभी कभी पहले ही सफे पर होता था। जब ग्रान्ड जूरी का सेशन होता था तो डा०काफका की बातें मोटे मोटे अक्षरोंमें छपतीं। दूसरे वकील, हत्यारों और चोरों के नीरस और अनाकर्षक मुकद्दमों की पैरवी किया

करते थे। लेकिन डा० काफ्का के नर-हत्या करने वाले मुवक्किलों में प्राय: सुन्दर पैरों वाली और लाल बालों वाली वासना युक्त ऐसी स्त्रीयां होती थीं जिन्होंने अपने प्रेमियों से उन्हें चोकोलेट केक में पिसा हुआ शीशा मिला कर या दूसरे उपायों से उन्हें कुछ खिला कर उनकी हत्या करके छुटकारा पाया हो। गबन करने वाले उन व्यक्तियों से उन्हें पूर्ण सहानुभूति थी जो चुराये हुए धन को लोक कल्याणकारी कार्यों के प्रसार में लगाते थे। इस लिये वे वश भी हो जाते थे। प्राय: काफ्का फोटो उनके शान शौकत वाले मुवक्किलों के साथ उतारा जाता था। वह फोटों में जरा पीछे हट कर खड़े होते थे जैसा कि एक वकील को शोभा देता है लेकिन फिर भी देखने में वह सबसे प्रभावशाली मालूम देते थे। वह एक लम्बे, तेज आदमी दिखाई पड़ते थे। और सुचारू रूप से पोषाक पहने हुए तथा बटन छिद्रों में लाल रंग के फूल लगाये हुए होते थे।

लाल फूल सजावट के लिए नहीं था बल्कि 'वैल्टेन्स चांउग को प्रगट करने के लिए एक चिन्ह था। डा० काफका एक पक्के कम्युनिस्ट थे। मुकदमों के दौरान में उन्होंने व्यापारी वर्ग की जिससे कि स्पष्ट रूप से वे भी सम्बंधित थे कटु आलोचना करके ज्यादा नाम कमाया था।

काफका परिवार बड़े दो कमरे वाले एक शानदार मकान में पार्क के किनारे रहता था। यहां इतना अच्छा प्रबन्ध था जिससे डा० काफका और उनकी पत्नी को तलाक की बात सोचे बिना ही अलग अलग रहने का अवसर मिला था। जब कि शहर के थोड़े से ही आदमियों के पास कार थी, उस समय भी इनके यहां दो नौकर थे और एक कार थी। यह कार 'स्टुत्ज' परिवर्तनीय थी। रविवार के दिन काफका परिवार के सदस्य अपने सफेद डस्ट कोट, टोपियां और गहरे रंग के एनक पहन कर सारे देहात का भ्रमण करने जाया करते। डा० काफका को जवान औरतें तथा पुरानी शराब पसन्द थी। वह थियेटर में हर सोमवार को लाल श्रेणी की टिकट लेते और इस्पात कारखानों

के उन मैनेजरों के पास बैठते जिनकी उसी दिन इस्पात कारखानों के मजदूरों के सामने अपने विषैले राजनैतिक भाषणों में कुट आलोचना किए हुए होते। जब लोग उनसे पूछते कि आप पूंजीवाद के पीछे क्यों पड़े हैं यद्यपि आप स्वयं भी उसी का उपभोग कर रहे हैं, तो वे कहते, "जब मैं विएना के सेंट्रल होटल में लेनिन के साथ शतरंज खेल रहा था तो एक बार मैंने भी लेनिन से यही प्रश्न किया था। वह मुस्कराया और मुझ से कहने लगा— "क्यों एक संगीत समालोचक भी क्या उन गीतों का आनन्द नहीं लेता है जिनकी वह आलोचना करता है।"

डा० काफ़्का अपने दोस्तों और जान पहचान वालों में से कुछ भिन्न मत वाले तुच्छ लोगों को खुश करने की कला में बड़े प्रवीण थे। वे हफ्ते के दो दिन बस्तियों में खनिकों के साथ बिताते थे और जिनको उनकी सहायता की आवश्यकता थी उन्हें अपनी राय दिया करते थे। उनसे वे पैसा कभी नहीं लेते थे। कामके हफ्ते के शेष दिन वे उन धनाढ्य मुवक्किलों बैंक मैनेजर इस्पात कारखानों के डाइरेक्टर और व्यापारिक वर्ग के साथ बिताते थे जिनको उनकी सलाह की आवश्यकता होती थी क्योंकि वे कानून के बारे में तथा शहर के दूसरे वकीलों की अपेक्षा उसकी खामियों के बारे में अधिक जानते थे। इसके लिए वे उनसे बहुत ज्यादा वसूल करते थे। एक बार उन्होंने इस्पात कारखाने के दो मैनेजरों के मुकद्दमे में जिनको इनकम टैक्स सम्बन्धी परेशानी थी, एक साथ ले लिए और खानों के अधिकारियों को जो इनके मुवक्किल मैनेजरों के खिलाफ मुकदमे में शामिल थे अपनी सलाह दी। इसे व्यवसायिक सदाचार नहीं कहा जा सकता और वकीलों की संस्था हमेशा डा० काफ्का के पीछे पड़ी रहती थी लेकिन वे इस की परवाह नहीं करते और लोगों की आलोचना की परवाह न करते हुए अपने में पूर्ण विश्वास का अनुभव करते हुए अपना काम करते चले जाते।

मेरी मां कहा करती थी कि जिस 'डिनर पार्टी' में काफ्का होते थे वह कभी असफल नहीं होती थी।

"जिस समय तक वे रहते, कोई नहीं ऊबता था" वह कहती थीं।

मामा एडी ने सतर्कता पूर्वक इस मत से असहमति प्रगट की। मामा एडी हमेशा लोगों की बात पर—सहमत होने या असहमति प्रगट करने में बेंकर की सी सावधानी बरतते थे।

"लेकिन फिर भी" उसने कहा "डा० काफका के राजनैतिक विचार—"

"एडी पागल मत बनो" मेरी मां ने कहा। "एक आदमी की कोई न कोई तो हॉबी होती है।"

डा० काफका अपने लड़के से बड़ा लाड करते थे और उसे बुरी तरह बिगाड़ दिया। लियो के पास कार्लमे की पुस्तकें, नकटाई और सूट हमारी कक्षा के प्रत्येक लड़के से ज्यादा थे। अपनी लड़कियों को हलवाइयों की दुकान पर अथवा सिनेमा ले जाने के लिए उसके पास हमेशा बहुत धन रहता था। शहर के बहुत से लोग भविष्य वाणी किया करते थे कि लियो का भविष्य भयानक है परन्तु मैं उसका भक्त था। जब वह धार्मिक शिक्षा के पीरियड में मतिरालय जाकर वापस आता था तो वह मुझे हमेशा कुछ ऐसी अतिरिक्त गुप्त बातें बतलाता जो कक्षा के शेष विद्यार्थियों को नहीं बतलायी जाती थीं। ५ ब में दूसरों की अपेक्षा रीता-रीता के बारे में मैं अधिक जानता था, मैं बस्ती की कुछ सुन्दर लड़कियों का नाम जानता था। लियो कहा करता था—"सब से सुन्दर लड़कियां बस्ती के सब से भद्दे मकानों से आती हैं।"

बस्तियों की सबसे सुन्दर दो लड़कियां 'क्लीकैन्डा बहिनें' मार्ता और जार्मिला थीं। वे शहर और हर्कमेनिस के बीच आबीबुर पर जहां कि उनका पिता खान में फोरमैन था, एक छोटे से घर में रहती थीं। जार्मिला

चुलबुली लाल सिर वाली थी, मार्ता काली तथा भावुक थी । उनकी खूबसूरती शहर और बस्ती के सामाजिक अन्तर को दूर कर देती थी । टोंडा उन दोनों को ही प्यार करता था ।

पढ़ाई के वर्ष की समाप्ति पर एक दिन तीसरे पहर स्टर्न ने लियो और मुझको काँफी और केक के लिए आमान्त्रित किया । लियो ने यह निमन्त्रण स्थिर चित्त से स्वीकार कर लिया परन्तु इस निमन्त्रण के बारे में वह भी उतना ही हर्षित था जितना कि मैं । इससे पहले हम में से किसी भी लड़के को स्टर्न ने अपने घर आने के लिए नहीं बुलाया था ।

अपने सहपाठियों के साथ उसके सम्बन्ध अब भी अजीब किस्म के थे । वे स्टर्न को पसन्द नहीं करते थे किन्तु वे असमंजस में पड़ जाते थे । वह बिल्कुल उदासीन रहता था और उसके बारे में नाना कल्पनाएं की जाती थीं । उस दिन तीसरे पहर जब मैं उसके घर गया तो मैंने ऐसा महसूस किया मानों कोई जासूस एक जटिल गुत्थी के समाधान पर पहुंच रहा हो । वह एक नए घर की चौथी मंजिल पर रहता था । इसे एक बड़ी इस्पात मिल के प्रबन्ध विभाग ने अपने लिए बनवाया था । फर्म का व्यापारिक चिन्ह जो एक दूसरे पर आर-पार रखे हुए दो हथौड़े था, प्रवेश द्वार के आगे काले संगमरमर की प्लेट पर खुदा हुआ था । इस द्वार पर एक वर्दीधारी चौकीदार रहता था । यह शहर के उन थोड़े से मकानों में से था जिसमें एक चौकीदार रहता था और एक लिफ्ट लगा हुआ था ।

चौकादार ने मेरे लिए दरवाजा खोल दिया किन्तु जब इसने यह सुना कि मैं स्टर्न के पास जा रहा हूं तो उसने अपना सारा अदब खतम कर दिया, और अपनी भौंहें तानकर घृणापूर्ण दृष्टि से लिफ्ट खोल दिया । वह मुझे नापसन्द करता प्रतीत हो रहा था क्योंकि मैं दूसरी और तीसरी मंजिल पर इस्पात मिल के मैनेजरों से मिलने नहीं जा रहा था ।

स्टर्न का कमरा चौथी मंजिल पर था। बाहर एक छोटी सी पीतल की प्लेट पर 'स्टर्न' नाम लिखा हुआ था। म ने घण्टी बजायी। काली पोशाक में सफेद एप्रन लगाए हुए एक नौकर ने आकर दरवाजा खोल दिया और मेरा हैट ले लिया। तब स्टर्न की बहन बाहर आई।

"मैं लोला स्टर्न हूं," उसने कहा। उसका स्वर 'ओचो वी फ्लैट मा इन्नर पियानिस सिमो' जसा मीठा था। तुम जे के विलर्ट हो ? क्या तुम नहीं हो ? ब्रूनो ने तुम्हारे बारे में मुझ से कहा था। वह अब तक यहां नहीं आया है। मुझे खेद है । मैं समझती हूं कि वह यह बात भूला न होगा कि उसने तुम्हें आमान्त्रित किया था।"

मैं ने कहा कि मुझे आश्चर्य न होगा यदि ब्रूनो भूल भी जाये।

"हां "आह भरते हुए उसने कहा। "ब्रूनो के साथ कोई समय तै करना आसान नहीं। कृपया अन्दर आइए"

वह आगे आगे रहने के कमरे में चल दी और मैं उसके पीछे पीछे चला। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। लोला के स्वभाव में कोई कठोर और चुभने वाली बात नहीं थी। उस में स्त्री सुलभ मृदुता और सहृदयता भरी हुई थी और जैसी लड़कियों को मैं जानता था यह बिल्कुल भी वैसी नहीं थी। मुझे निश्चय था कि वह सिनेमा, थियेटर के बाक्स में बैठे हुए हंसी मजाक करने और आलिंगन करने वाली स्त्रियों जैसी नहीं है किन्तु फिर भी वहां उससे बात चीत करने की बात भी नहीं सोची जा सकती थी। वह परिपक्व आयु की थी परन्त ऐसा अनुभव नहीं करने देती थी और उसके व्यवहार में ऐसी मूक प्रीति भरी हुई थी कि उसका असर पड़े बिना नही रहता था। मेरी आयु तब इन सब बातों को समझने लायक नहीं थी। मैं ने समझा कि मैं उसके वैस्टनट के से रंग के बालोंसे प्यार करने लगा हूं जो उसके अपना सिर दाएं बाएं हिलाने पर लाल लाल चमकते थे। उसकी आंखें हरे रंग की

थीं वैसे हरे रंग की जैसे बरसात के दिन पहाड़ी झील में पड़ी काई का लगता था।

"ब्रूनो ने मुझे बताया है कि तुम वायोलिन बजाते हो।" उसने कहा "मैं प्यानों बजाती हूं। किसी दिन हमें दोनों की संगत करनी चाहिए।"

उसने प्यानो की तरफ संकेत किया। वह एक बड़ा 'बेखस्टीन' था जिसने सामान से भरे कमरे का एक हिस्सा घेर रखा था। कमरे में कुर्सियां थीं, बक्से, मेज और दराज थीं। मुझे कमरा पसन्द नहीं आया किन्तु मैं वहां तब और भविष्य में कभी भी लोला के साथ मिल कर वायोलिन और प्यानो बजाना पसन्द करता। मामा फैलिक्स कहा करते थे कि औरतें संगीत में अच्छा साथ नहीं दे सकतीं क्योंकि वे बातें बहुत करती हैं और संगीत को गंभीरता से नहीं लेतीं लेकिन मुझे उनसे लोला के साथ संगीत का आनन्द लेने की बात नहीं कहनी पड़ी। मैं उस को प्यार के कारण उस के नाम का पहला अंश लेकर ही पुकार रहा हूं।

बाहर दरवाजे की घंटी बज उठी, उसने माफी मांगी और चली गई। उसके बिना कमरा असह्य रूप से नीरस और भरा भरा लगने लगे। मैंने फारसी गलीचे, सजे हुए काले मखमली परदे जिन से चौंद अन्दर नहीं आने दी जाती थी और भारी ओक का फर्नीचर देखा। बड़ी मेज एक कढ़े हुए मेज-पोश से ढकी थी जो उन्हें निश्चय ही वसीहत में मिला हो। बर्तन रखने की अलमारी पर दो भद्दे चीनी के बर्तन रखे थे। दीवारें प्रतिष्ठित दिखाई देने वाले व्यक्तियों के जिनकी लम्बी दाढ़ियाँ थीं और जिनके गले में भारी-भारी जंजीरें थी, हाथ से बनाये गये चित्रों से सजी हुईं थीं। यह सम्भवतः ब्रूनो स्टर्न के पूर्वज और कपड़े के कारखाने के संस्थापक थे। कमरे में गुलदस्ते रखे हुए थे जिनमें फूल नहीं थे और भारी भारी कुर्सियों पर धूल जम रही थी मानो उनका प्रयोग बहुत कम होता हो। मैं इस मध्यम वर्ग की सुख-सुविधा के लायक भद्दे साज सामान को देख कर हतोत्साह हो गया।

लोला लियो के साथ आई। लियो ने जिस तरह से उसे टांगों से लेकर ऊपर तक देखा तो मैं समझ गया कि लियो ने एक और खोज की है। मेरा दिल बैठने लगा। लियो के साथ मुकाबला करना असम्भव था। उसके पास पैसा था और धार्मिक शिक्षा के पीरियड में मदिरालय में प्राप्त किये हुए अनुभवों का सहारा था। मेरा सन्देह तब पुष्ट हो गया जब मैंने यह देखा कि लियो कॉफी तैयार करने के लिये कमरे से बाहर जाती हुई लोला को किस विचित्रता से घूर कर देख रहा है।

"मैं रीता-रीता के साथ रह कर क्यों अपना समय बरबाद कर रहा हूं, जब शहर में लोला लड़की मौजूद है?" उसने मानों स्वयं से पूछते हुए कहा।

"क्यों कि तुम यह अच्छी तरह जानते हो कि इस के यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गल सकती।"

मेरी आवाज की ती ता से वह चौंका "क्या तुम लोला से प्रेम करते हो?"

मेरे गाल लाल हो गये। वे लाल हमेशा गलत समय पर ही होते थे।
लियो हंसा, "तो यह मर्ज तुम्हें भी लग गया है?" उसने कहा।

"बस बकवास बन्द करो," मैंने कहा।

"मैं तुम्हें कासानोवा के संस्मरण दूंगा" उसने कहा "उससे तुम सीख सकोगे, विशेषतः मैं तुम्हें उसकी छटी या सातवीं जिल्द दूंगा।"

"छटी और सातवीं क्यों?"

"उनमें प्रणय के सबसे अच्छे दृश्य हैं"

इतने में लोला अन्दर आ गई। उसने कहा "मुझे समझ नहीं आता कि ब्रूनो बाहर किस काम में फंस गया है।"

"मैं जानता हूं कि वह कहाँ है ?" लियो ने कहा, "मेरे पिता के दफ्तर में।"

"दुवारा वहीं चला गया ?" उसने कहा और शर्मा गई।

"कुछ परवाह मत करो" लियो ने कहा और हंसा, "क्या तुम्हें मेरे पिता की राजनीति पसन्द नहीं ?"

"नहीं," वह झूंठ नहीं वोल सकी।

"नहीं मैं पसन्द करता हूं" लियो ने कहा।

लोला ने उसकी वात पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, "मेरे पिता ब्रनो के बारे में चिन्तित हो रहे हैं" मुझे वह भी चिन्तित दिखाई दे रही थी। लोला ने कहा "ब्रूनो अपनी उम्र के अन्य लड़कों से वहुत अधिक भिन्न है, उसे कोई शौक नहीं, कोई मनोरंजन नहीं, इधर देखो हमेशा इन्हीं डरावनी कितावों में लगा रहता है।"

उसने दरवाजा खोल कर हमें स्टर्न का कमरा दिखलाया। वहाँ सव चीजें इतनी अस्त व्यस्त पड़ी थी कि यह अस्त व्यस्तता ही उसका नियम नजर आता था। कितावें सव जगह विखरी पड़ीं थीं, मेजों पर, कुर्सियों पर और चारपाई के नीचे। कागज का कवर चढ़ी हुई पुस्तक, पुस्तिकाएं थीं और विदेशी अखवार थे। मैंने उन में से एक उठा लिया।

"यह क्या है ?" मैंने कहा।

"इज वेस्तिया, एक रूसी अखवार," लोला ने कहा। "क्या वह रूसी भाषा वोल लेता है ?"

"हम सव वोल लेते हैं," उसने कहा "जहाँ से हम आये हैं वहां अन्य भाषाओं के अलावा रूसी भी वोलनी पड़ती है। वह अखवार प्रतिदिन रात को पढ़ता है और तीसरे पहर वस्तियों में जा कर खनिकों से वातचीत करता है। वह पहली मई को 'हे मार्केट' की सभा में भी गया था। वह

खनिकों में भाषण देना चाहता है इस लिये कोई आश्चर्य नहीं कि मेरा पिता उसे देख कर चिन्तित है।"

लियो मुस्कराया। उसने कहा "मेरे पिता प्रति वर्ष हेमार्केट की सभा में जाते हैं और एक जोशीला भाषण देते हैं। बाद में वे घर आते हैं और हम भुना हुआ हंस और सावर क्राट खाते हैं। स्टर्न भी मेरे बुड्ढे बाप जैसा हा हो जायगा उसे लड़कियों में भी दिलचस्पी पैदा हो सकती है।"

"नहीं, ब्रूनों ऐसा नहीं हो सकता," लोला ने कहा।

"मुझे उसका कुछ अपने युवती मित्रों से परिचय कराना चाहिए।" लियो ने कहा।

लोला आसमान में देख रही थी और मालूम होता था कि बात सुन नहीं रही है।

मैंने कहा, "स्टर्न के बारे में तुम्हारी यह योजना कामयाब नहीं होगी।"

"शर्त लगाते हो, एक-एक क्राउन की" लियो ने कहा।

"अच्छा, सही।" मैंने लापरवाही से कहा।

तब यकायक दरवाजा खुल गया और स्टर्न अन्दर आया; वह हमारे अभिवादन में जरा सा सिर हिलाकर बैठ गया। लोला ने कहा कि अपने दोस्तों को प्रतीक्षा में बैठाये रखना अशिष्टता है परन्तु सिर्फ उसने अपना कंधा हिला दिया।

"डा० काफ्का ने मुझे विएना में लेनिन के बारे में बताया था। मैं उनके साथ बुद्धवार को 'बारबोरा' खान में जा रहा हूँ।"

"किस लिए?" लोला ने त्यौरी चढ़ा कर कहा।

"खनिकों में भाषण देने के लिए।"

"बुद्धवार को तुम नहीं जा सकते" मैंने कहा "वह तो हमारी कक्षा के पिकनिक का दिन है।"

वर्ष में एक वार जून के महीने में कक्षा के विद्यार्थी प्रोफेसरों के साथ बाहर पिकनिक को जाया करते थे। उसका प्रयोजन प्रोफेसरों के साथ मजाक करना होता था लेकिन प्रोफेसर फ्रेन्क के होते हुए किसी को मजाक करने का साहस नहीं होता था, वे अपनी हेठी सहन नहीं कर सकते थे।

"मुझे पिकनिक छोड़ देनी होगी" स्टर्न ने कहा।

लोला ने आह भरी और कहा "आओ कॉफी पीएं।"

'तुम्हीं पीओ' स्टर्न ने कहा, "मैं यहीं वैठा हूं और जव तुम कॉफी पी चुकोगी तो तुम्हारे साथ आ मिलूंगा।"

लोला दांत पीस कर रह गई और कुछ कहा नहीं। भोजन के कमरे में उसने हमसे कहा—"तुम उसे क्षमा कर देना, उसको शिष्टाचार नहीं आता।"

हम में से किसी ने कुछ नहीं कहा। हम चुपचाप खाते रहे; कुछ देर बाद लियो ने कहा कि उसे घर के कुछ काम के लिये जाना है। मैं भी उसका इशारा समझ कर उठ खड़ा हुआ।

"मैं तुम से रुकने के लिए नहीं कहूंगी", लोला ने कहा 'स्टर्न अव भी अपने कमरे में वैठा हुआ क अखवार पढ़ रहा था मानो इन सव वातों से उसे कोई सरोकार ही नहीं। "जव वह चला जायगा तव मैं तुम्हें फिर वुलाऊंगी और तव तुम मेरे महमान होगे।"

लियो कुछ दिनों वाद कक्षा में मेरे पास आया। उसने मुझे एक क्राउन यह कहते हुए दिया "तुम शर्त जीत गये।"

"क्या हुआ ?"

"वह एक लड़की के साथ 'सिपारी' में गया उसका नाम था युवेने जिसकी टांगें कामुक थीं।"

मैं नहीं समझ पाया कि वह किस के बारे में बातचीत कर रहा था। लियो उनकी शारीरिक सुन्दरता का इतनी जल्दी जल्दी बखान करता था कि उसका समझाना मुश्किल हो जाता था।

"स्टर्न ने वहां कोई भयानक काम कर दिया होगा। मदिरालय के मैनेजर ने मुझे एसा लड़का भेजने के लिए फटकारा जिसने इतनी मुसीबत पैदा की।"

"क्या युवती ने उसे पथ भ्रष्ट किया?" मैंने पूछा।

कुछ लड़के मदिरालय में इस लिए जाते थे कि वे वहां अपना पौरुष दिखाने की शेखियाँ बघार सकें। वे हमें बेवकूफ नहीं बना सके। लियो लड़कियों से सब सच-सच बात जान लेता था और मुझे उससे मालूम हो जाता था।

"तुम पथ भ्रष्ट होने की बात करते हो?" लियो ने घृणापूर्वक कहा, "उसने भाषण दिया।"

"भाषण दिया!"

"उसने उसे वेश्या वृत्ति या ऐसी ही किसी चीज के सामाजिक पहलू पर व्याख्यान दिया। वह इतनी पागल हो उठी कि उसने उसके सिर पर बोतल मार देनी चाही।" लियो ने उत्तेजित भाव से कंधा हिलाया और चला गया।

ऐसे क्षण भी थे जब स्टर्न कक्षा का नायक था। वह किसी न किसी प्रोफेसर से बहस करने के लिए तैयार रहता था। जब ऐसा हो जाता तो हम सब पीछे बैठ जाते और प्रसन्नता से सुनते।

प्रो० फ्रैन्क के साथ वहस करने के लिए साहसी हृदय और तेज दिमाग की जरूरत थी। एक वार कक्षा के सामने उसने ब्लैक वोर्ड पर यह सिद्ध कर दिया कि त्रिज्यामित के एक मामूली प्रश्न के वारे में वह सही था और प्रो० फ्रैन्क गलती पर थे। इस घटना के वाद प्रो० फ्रैन्क की प्रतिष्ठा नष्ट हो गई। फिर यह नोटिस में आया कि स्टर्न से वहस के मौकों को वेदर गुजर कर दिया करते थे। स्टर्न की वहस अध्यापकों के साथ काफी भोले-पन से शुरु होती थी लेकिन अपने तर्कपूर्ण भाषण की विदहता पूर्ण अभिव्यक्ति के वाद उन्हें वह कुछ समय में ही हरा देता था। एक दिखावटी अध्यापक का हास्य का पात्र वनते देख कर हमें वड़ा सन्तोष होता था।

एक वार कैमिस्ट्री के प्रोफेसर ने स्टर्न से 'चुप रहो, बैठ जाओ' कहते हुए अपनी ही तरफ से वहस समाप्त कर दी।

इससे वड़ी गलती वह नहीं कर सकता था। कक्षा वहुत ज्यादा खुश हुई। टोंडा झुका और स्टर्न ने अभिनयात्मक ढंग से हाथ मिलाया। कैमिस्ट्री के प्रोफेसर ने अब टोंडा को सजा देकर दूसरी गलती कर डाली जिससे टोंडा शहीद समझा जाने लगा। इस घटना का फैकल्टी को पता लग गया होगा क्योंकि उसके वाद प्रोफेसरों ने स्टर्न के साथ और वहस करना वन्द कर दिया।

मैंने उससे पूछा कि वहस करने की कला कहाँ से सीखी ? उसने कहा, "तर्क शास्त्र से। इसके वारे में पहले तुमने सुना है ?" "यह यूनानियों की तर्क विद्या नहीं हो सकती", मैंने कहा। हमने ग्रीक फिलॉसफर जेनो और स्कूल आफ सोफिस्ट्री का अभी अध्ययन किया था।

"ग्रीक लोगों को भूल जाओ" उसने घृणा से कहा "यह तर्क पर आश्रित भौतिकवाद है। मार्क्स, यदि तुम उन किताबों को जिन को मैंने तुम्हें दिया था पढ़ने का कष्ट करते तो इस के वारे में तुम ज्यादा जान जाते यही कारण है कि मैं किसी के भी सामने काले को सफेद और सफेद को काला वना सकता हूं।"

"तुम किसी को भी चक्कर में डाल सकते हो।"

"मैं चक्कर ही में डाल कर उसे विश्वास दिलाता हूं।"

मैंने कहा कि मैं यह सोचना पसन्द करता हूं कि काला काला है और सफेद सफेद।

उसने इस प्रकार सिर हिलाया मानो वह मुझसे इसी तरह की आशा रखता था।

"तुम एक निकम्मे बुजुआ हो," उसने कहा "मार्क्स ने लिखा है—बुजुआ वर्ग स्वयं ही अपने वर्ग से लड़ने के लिये श्रम जीवी वर्ग को स्वयं ही हथियार देता है।"

स्टर्न एक लम्बे अरसे तक कक्षा का नायक नहीं रहा। वह नायक रहना चाहता भी नहीं था। वह वहस के लिए वहस करना पसन्द करता था, लोक-प्रियता के कारण से नहीं जो उसे उनके द्वारा मिलती थी। जब उसे यह अनुभव होता था कि वे उसे पसन्द करने लगे हैं तो वह कोई ऐसा कार्य कर वैठता जिससे लड़के उससे अवश्य चिढ़ जाते। वह कक्षा के पिकनिक में शामिल होने से मना कर देता अथवा कक्षा के वारे में कोई तीखी कड़वी वात कह देता। हर एक कहा करता था कि स्टर्न हरामजादा है और वह बड़ा प्रसन्न होता। वह इस वात को नापसन्द करता था कि कोई उसे पसन्द करे।

कक्षा के कमरे में फुटवाल खेलना हमने वन्द कर दिया। हम लड़कियों में दिलचस्पी लेने लग गये। ऐसी चार हमारी कक्षा में थीं। तीन बहुत सुन्दर थीं। ३९ लड़कों के वीच में उनकी उपस्थिति कक्षा के अन्दर असंख्य भावुकता पूर्ण उलझनें पैदा कर देती थी और कक्षा के वाहर वहुत सी टीका टिप्पणियां।

मेरी मां जिमनासियम जाने वाली लड़कियों से घृणा करती थीं। वह कहा करती थीं कि हर एक लड़की की शादी हो जानी चाहिए। उसके पति के लिये यह एक सुन्दर सहायता होती यदि उसकी पत्नी उसके घर के प्रबन्ध के बजाय उसको होमर सुनाती। लेकिन मेरी नानी जिसने तेरह बच्चों का पालन पोषण किया था और जिसने घर का प्रबन्ध भली भांति किया था सोचती थी कि एक लड़की के लिए यह अच्छी बात है कि घर प्रबन्ध के अलावा कुछ और बातें साखे, यदि वह कहीं फिर जवान हो जाती तो वह जिमनासियम जाती और लेटिन और ग्रीक सीखती। यह ऐसा विषय था जिस पर मेरी नानी शहर के काफी क्लैश दल के बीच बैठ कर बातचीत करने में कभी थकती नहीं थी।

कक्षा के कमरे में तीन खूबसूरत लड़कियों को देखना अच्छा लगता था विशेषतः इतिहास का पाठ पढ़ते समय। हमारे इतिहास के अध्यापक बासिल के तूफान वाली घटना को भी अत्यन्त ऊबा देने वाली घटना बना देते थे। स्वभावतः कोई भी लड़कियों के प्रति गम्भीर नहीं रह सकता। वे होमर को इस प्रकार गाती मानों भोजन बनाने के गुरु पढ़ रही हों। ग्रीक पौराणिक कथाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाएं बड़ी क्षोभपूर्ण थी। पेल्लीप्लेन के मूर्खता पूर्ण व्यवहार से उनकी आंखों में आँसुओं की धारा बहने लगती थी लेकिन अलसीज और उसके शानदार साहसिक कार्यों के प्रति उन्हें कोई उत्साह नहीं था। लियो नें इस सब का बुद्धिमानी से यह सार निकाला, "लड़कियों की बातों पर ध्यान न दो उनकी टांगों की ओर देखो।"

सब सुन्दर टांग वाली थीं यहां तक कि चौथी लड़की वेरोनिका भी जिसका साधा चेहरा था। मार्गरेट थी, काले बालों वाली औरत। हैल्गा वर्डी या वर्डी विक्ज थी जैसा कि मेरी मां उसे पुकारने में हठ किया करती थी और जिसने वर्षों प्राइवेट पढ़ने के बाद कक्षा में अपना नाम लिखाया था। हैल्गा के सुनहरी बाल थे। जब उन पर सूर्य विशेष अवस्था में चमकता था तो वे

तांबे की रंग में बदल जाते थे और वह गले में बहुत नीचे अजीब सी आवाज करती हुई हंसती थी जो कुछ कुछ घबरा देने वाली होती थी परन्तु उसके गले के स्पर्श मेरे हाथों के पीछे के बालों को बुरा नहीं लगता था। और मैरीन थी जो गोरी, चुलबुली और बहुत खूबसूरत थी।

करीब करीब प्रत्येक लड़का प्रायः कई कई लड़कियों के प्रेम में पूरी तरह से फंस गया था। वसन्त के मौसम में एक दिन मैरीन के मन्द आकर्षण ने मुझे मोहित कर लिया। वह मेरे साथ कक्षा के एक ही कमरे में वर्षों से बैठ रही थी लेकिन मेरा ध्यान उसकी ओर कभी नहीं गया—लड़की के बतौर नहीं? लड़के कहा करते थे कि प्रो० फ्रैन्क उससे प्रेम करता है। मैं कहा करता ऐसा कहना बेवकूफी है। प्रो० फ्रैन्क तो गणित के सभी करणों से प्रेम करता है।

एक दिन मैरीन एक गणित के अभ्यास के दौरान में धोखा देते हुए पकड़ी गई। यह एक आकस्मिक घटना थी। लड़कियाँ धोखा देने में हम लड़कों की अपेक्षा बहुत अधिक होशियार थीं। अपनी बेंच के नीचे चोरी को छुपाते हुए भी वे शान्त रहतीं। मैरीन बिना पकड़ में आये वर्षों से बड़ी सफलता पूर्वक धोखा देती आ रही थीं। उसका चेहरा बॉटीसेली देवदत् के चेहरे के समान निर्दोष था और संकट के समय उसपर कोई भाव नहीं दिखलाई पड़ता था। वह अपने वंश की इज्जत बचाने की खातिर धोखा देने को विवश हो जाती थी। मैरीन अरिथमेटिक के साधारण प्रश्न भी हल नहीं कर पाती थी और यदि वह दूसरों से मदद न लेती तो बहुत पहले ही स्कूल से निकाल दी गई होती। यह उसकी जाति के लिए एक मुसीबत हो जाती। वे सोचते थे कि लड़के की मां बनने की अपेक्षा किसी लड़की का स्कूल से निकाला जाना बहुत बुरी बात है।

उसके अस्थायी मित्र लड़के का एक यह काम होता था कि वह स्कूल अभ्यास के बीच म गणित के प्रश्नों को हल करके उसे दे दे। यह उतना ही

आवश्यक था जितना उसे एक हलवाई की दुकान पर ले जाना अथवा पार्क के दरवाजे पर बुड्ढे चेस्टनट भूनने वाले से पहला चेस्टनट उसके लिए खरीदना और उसकी उपस्थिति इस बात की निशानी थी कि जाड़े की ऋतु शुरू हो गई है।

उस दिन उसका अस्थायी मित्र लड़का लियो था। जैसी उससे आशा की जाती थी उसके अनुसार उसने सवालों का जवाब एक रद्दी कागज़ पर लिखा और चोरीसे बगल के रास्ते के उस पार उसे मैरीन को दे दिया। छोटा कागज़ उसके हाथों से फिसल गया और गिर पड़ा। ठीक उसी समय प्रो० फ्रैन्क का मुड़ना हुआ।

वह बहुत चाहते थे परन्तु उसकी उपेक्षा न कर सके क्योंकि बहुतों ने उसे अपनी आंखों से देख लिया था।

"तुमने क्या लिया है ?" उसने कहा और इतने घबराये हुए दिखाई दिये मानों वे स्वयं धोखा देते हुये पकड़ लिये गये हों।

मैरीन निर्दोषिता की एक सुन्दर मूर्तिवत् खड़ी हो गई। "मैंने उसे इस्तेमाल नहीं किया" उसने पुरुषों के भावों के प्रति सूक्ष्म घृणा के भावों को प्रदर्शित करते हुए धीमे से कहा।

यदि कोई लड़का ऐसा कह देता तो क्या होता। इसके बारे में सोचकर मुझे ग्लानि होती है, लेकिन मैरीन ने इसका आनन्द लिया और उसने अपनी जाति के गुणों का अनुचित लाभ उठाया। प्रो० फ्रैन्क उसकी इतने अधिक सौन्दर्य और गुस्ताखी से अवाक होकर कागज़ पर देखने लगे।

"तुम्हें खुश नहीं होना चाहिए" उन्होंने कहा "यह सब गलत है। जिस किसी ने भी लिखा हो वह मूर्ख व्यक्ति है।" उन्होंने कागज़ को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और मामला खतम कर दिया।

हम ने समझा कि उन्होंने अपनी कदाचित की लेकिन खेल घंटी में एक मजाक की हमारे गणित विशेषज्ञ स्टर्न ने कागज़ को देखा और कहा कि

लियो का हाल गलत था। लियो के वहां राना जज्बात उसकी गणित की योग्यता के साथ मेल नहीं खाते थे।

मैरीन विना सजा के वच गई। यह अनहोनी वात थी। जव कभी वे उसके पास खड़े होते मैं प्रो० फ्रैन्क को वड़े ध्यान से देखा करता जव वह यह समझते कि वह नहीं देख रही है तो वह उसकी ओर गुप्त रूप से देखते। उनकी आँखों में जो साधारण तार पर ठण्डे वेसीमर इस्पात के रंग वाली होती था। मुझे प्रेम की कोमल दृष्टि होती थी। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि प्रो० फ्रैन्क मानुषीय भाव जाग सकते थे और मैं मैरीन से धोखा खा गया जिसने कि यह चमत्कार कर दिखाया और अपनी खोज वीन के दौरान में मैं भी उससे प्रेम करने लग गया।

मैरीन वहुत तेज नहीं थी और शायद ही कभी कुछ कहती हो परन्तु यह समझने के लिये उसमें पर्याप्त वुद्धि थी और उसने कभी ज्यादा वोलने की कोशिश नहीं की। कक्षा जव लेसिगं, शेक्सपीर और शिलर के नाटकों का अभिनय करती तो उसे सदैव उसकी प्यारी आकृति और उसकी पतली लम्बी टाँगों के कारण नायिका की भूमिका दी जाती थी वह अपना पाठ कभी याद नहीं करती थी, और अन्त में उसकी भूमिका एक वदसूरत लड़की वेरोनिका को जिसकी यादाश्त वहुत अच्छी थी देनी पड़ती थी।

उस सुन्दर वरसाती वसन्त के मौसम में मुझ पर मैरीन का जादू चढ़ा हुआ था। अव उसकी लियो के साथ नहीं पट रही था। कोई वात हो चुकी थी लियो के युवती मित्रों के एक के वाद एक वदलते जाने के कारणों का पता रखना आसान नहीं था। हम ऐसी वर्षा में दूर तक घूमने जाया करते थे जो हमें सफेद मखमल ओढ़ने के समान अच्छी लगती थी। मेरा प्यार अभी नया था और मैं कविता करने की सोचता था। मैरीन का छाता मैं पकड़े हुए होता था। यह वहुत छोटा छाता था इसलिये हमें एक दूसरे से सटकर चलना पड़ता था। वह अपनी वांह मेरी वांह के नीचे रख लेती और तव हम खुशी

से कदम मिलाते हुए जाते थे। खराब मौसम में बाहर निकलने का साहस बहुत कम लोगों को होता था इस लिये सड़क हमारे करीब करीब खाली ही पड़ी रहती थी।

हमारा शहर अपनी भद्दी इमारतों और नगर आयोजन के अभाव के लिये बदनाम था। इसमें ज्यादातर गंदी फेक्टरी गलियाँ और मजदूरों की भद्दी बस्तियों की पंक्तियाँ थीं। शहर के बिल्कुल बीचों बीच खानों के गड्ढे थे और वृक्षों तथा हरियाली के लिए कोई स्थान नहीं था परन्तु जिस बसन्त ऋतु में मैं मैरीन के साथ प्रणय पथ पर था यह भद्दा शहर मुझे ग्रीष्म ऋतु की कोमल रात में वेनिस की खाड़ी से भी ज्यादा सुन्दर लगता था। पार्श्व की शान्त गलियों में गैस की बत्तियाँ उस बरसाती मौसम में टिमटिमाती रहती थीं। चौराहों पर बिजली की नई गोल बत्तियाँ धीमे धीमे आगे पीछे हिलती रहती थीं। वर्षा चमकीले मोतियों के धार के रूप में नीचे पड़ती थी और प्रत्येक नुक्कड़ किसी पार्टी के आगे नाच घर के समान लगता था। मैं मैरीन को अपनी बाहों में लपेट कर ले जाता था और उसका चुम्बन लेता था। वह हमेशा यह शिकायत करती थी कि "तुम मेरे तभी चुम्बन लेते हो जब हम तेज रोशनी के नीचे आ जाते हैं, देखने वाले लोग क्या कहेंगे ?" वह यह नहीं समझ सकी कि बत्तियों के नीचे ही मैं उसका चुम्बन लेने के लिए उतावला हो जाता था। उन स्थानों पर इतने सुन्दर दृश्य होते हुए मैं उसका चुम्बन लिये बिना नहीं रह सकता था।

स्टर्न को लड़कियों में दिलचस्पी नहीं थी। लड़के जब उसे उकसाते तो वह सिर्फ कन्धा भर हिला देता। वह कहा करता था कि उसके पास ऐसी बेवकूफियों के लिए समय नहीं है और वह फारसी व्याकरण या जरमनी में 'स्पार्टाकस' क्रान्ति के इतिहास को पढ़ने में व त व्यस्त रहता था।

उस वर्ष वह मेरे से अगली बेंच पर बैठता था। छुट्टी के घण्टे में वह वहीं बैठा रहता था और कुछ पढ़ता या लिखता रहता था। एक बड़ा

नोट बुक के पन्ने पर पन्ने उसने काले कर डाले थे। मैंने कभी उससे यह नहीं पूछा कि वह क्या लिख रहा है। यद्यपि इसकी जानकारी रखना मैं पसन्द करता। हम में आपस में अदला बदली का राजीनामा था। वह मुझे गणित में मदद देता था और मैं ग्रीक तथा लेटिन में उसकी सहायता किया करता था। इस बात में हम स्पष्ट रूप से वचन बद्ध थे कि हम में से कोई दूसरे के काम में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

आप समझेंगे कि लड़कियाँ स्टर्न को नीरस व्यक्ति समझती होंगी किन्तु वस्तुतः उसकी दुरुहता से आकर्षित थीं। उन्होंने आपस में शर्त लगाई थी कि पहले कौन उसका चुम्बन ले। इसे बिलकुल गुप्त रखा गया था किन्तु मैरीन ने मुझे उसका संकेत दे दिया था।

मैं सन्न रह गया। मैं यह नहीं समझ सका कि कोई लड़की स्टर्न का चुम्बन लेना क्यों चाहेगी जब वह अपनी ऊंची पेण्ट पहने पहली बार कक्षा ३ वी में आया तब वह उतना बुरा नहीं लगता था परन्तु अब और बहुत से लड़के स्टर्न से अच्छे लगते थे जिनमें मैं अपने को भी समझता था।

मैरीन हंसी। 'तुम इस बात को नहीं समझ सकोगे' उसने कंधा हिलाते हुए कहा "लड़के कभी समझ नहीं सकते।"

"वह नीरस आदमी है," मैंने कहा, "जब वह तुम्हें बाहर ले जायगा तब तुम उसके साथ क्या करोगी? क्या जापानी मोती उद्योग पर बहस करोगी?"

मैरीन ने अपने होंठ दबाते हुए कहा "ओह! हमें उसके साथ बातें करने को काफी मसाला मिल जायगा।"

"तब तुम कोशिश क्यों नहीं करतीं?"

मैं यह कह तो गया पर मैं ऐसा चाहता नहीं था किन्तु मैरीन ने चुनौती स्वीकार कर ली।

"मैं कोशिश करूंगी" उसने कहा।

मैं मैरीन के हाथों पराजित हुए बिना अब अपनी बात से पीछे नहीं हट सकता था। सम्भव है तुम इस मुकाबले में जीत जाओ और उस का पहला चुम्बन प्राप्त कर सको मैंने आवेश में कहा।

"मैं भरसक कोशिश करूंगी।" उसने कहा।

यह हमारी पहली कहा सुनी थी। उस रात मैं सो नहीं सका, अंधेरे में आंखें खुली रखे, मैरीन की कल्पना करते हुए और बहुत दुखी होते हुए पड़ा रहा। उसने जो कुछ कहा था और मैंने उसका जो जवाब दिया और मेरे जवाब पर फिर उसने जो कुछ कहा उसे मैंने याद करने की कोशिश की और इसने मुझे और भी अधिक दुखी बना दिया।

अगले दिन उसने कक्षा में मेरी उपेक्षा की। मैं मैरीन के बिना नहीं रह सकता था अतः मैंने उससे सुलह कर लेने का निर्णय किया। छुट्टी के घंटे में दरवाजे वाली दुकान में नारियल की वे मिठाइयाँ खरीद लाया जो मैरीन को बहुत अच्छी लगतीं थीं। मैंने सोचा था कि मैं ये मिठाइयाँ उसकी डेस्क पर रख दूंगा किन्तु जब मैं मिठाइयाँ लेकर कक्षा के कमरे में आया तो मैंने देखा कि वह स्टर्न के पास बैठी है। मेरा दिल यकायक जोर से धड़कने लगा और मेरा चेहरा लाल होगया। मैं गलियारे के सबसे दूर के सिरे पर गया और वे मिठाइयाँ खिड़की से बाहर फेंक दीं।

बाद में मैंने स्टर्न से पूछा कि तीसरे पहर वह क्या कर रहा था। मेरी हथेलियाँ पसीने से तर थीं।

"मुझे कुछ पढ़ना है।"

"कुछ देर मेरे साथ घूमना चाहोगे ?" मैंने पूछा।

उसने मना कर दिया। अब मुझे निश्चय होगया था कि मैरीन के साथ कोई तारीख उसने नियत करली है।

कुछ और कष्टमय दिनों के बाद मैं दरवाजे वाली दुकान में ही था जब मैरीन भी वहाँ आई। उसने नारियल की मिठाइयों पर ललचाई निगाहों से देखा और अपना बटुआ खोला लेकिन वह खाली था। उसने दुबारा मिठाइयों को और तब मुझे देखा। जब नारियल की मिठाइयों की मैरीन की लालसा पूरी हो जाती थी तब वह सब विवेक और शिष्टाचार को ताक पर रख देती थी। मैंने मिठाइयों का एक पैकिट खरीदा और बिना एक शब्द बोले उसे दे दिया। उसने पैकिट में से एक मिठाई निकाल कर वे सब्री से खाई, मेरी ओर देख कर मुस्कराई, मेरे पास आई और मुझे चूम लिया। मैं अलग खड़ा रहा और कठोरता से उससे पूछा कि क्या वह अपनी शर्त जीत गई है।

एक उत्तर के रूप में मैरीन हंसी और उसने मुझे फिर चूम लिया। मुझे तब मालूम हो जाना चाहिए था कि उसका क्या अभिप्राय है किन्तु मैं बहुत छोटा था। मैंने उससे एक बार फिर पूछा। मेरे लिए लड़कियों के बारे में बहुत कुछ जानना बाकी था।

मैरीन ने सांस लेकर कहा "अरे बेवकूफ नहीं, मैं शर्त हार गई।" वह जो चाहे सो कह सकती थी, मैं उस पर विश्वास करता था। अब मैं विश्वास नहीं करूंगा किन्तु जब कोई जवान हो और बात भी मन मोहक हो तो बात दूसरी है।

"उसने मुझे बहुत सी बातें बताई।" मैरीन ने कहा। लगता था वह कुछ बातें छिपा रही है "उदाहरणार्थ मैं जानती हूं कि छुट्टी के समय में वह क्या लिख रहा होता है।"

"एक डायरी।"

"नहीं एक नाटक, उसने मुझे पहला अंक पढ़ कर सुनाया।" उसने अपना सिर एक तरफ झुका कर कहा "तुम किन है किसी रोज लोग स्टर्न के बारे में ही बातें किया करेंगे।"

यह एक उल्लेखनीय न्यून वक्तव्य था।

कुछ महीनों वाद स्टर्न का नाटक यहूदियों के एक वालचर ग्रुप में जिसे ब्लू वाहिटस् कहा जाता था खेला। ये वालचर साफ रहने तथा आनन्द यात्राएं करने के अस्पस्त थे और उन्हें यहूदी इतिहास के अध्ययन का और नाटकों के अभिनय का शौक था। मुझसे भी कई वार ब्लू वाहिटस् में शामिल होने के लिये कहा गया लेकिन मैंने सदा इन्कार कर दिया, ये मेरे संगीत के दिन थे। मैं एक महान वायोलिन वादक वनने के सुनहले स्वप्न लिया करता था। मैं दिन में दो तीन घण्टे वायोलिन का अभ्यास किया करता था जो हमारे रसोइया वेरटा को वहुत वुरा लगता था।

मेरे लिये ब्लू वाइटस् में कोई आकर्षण नहीं था। साफ सुथरे रहने के फायदों का मुझे पक्का निश्चय नहीं था और मैं दर्जनों लड़कों के साथ जो सब ऊंचे से ऊंचे स्वर से गा रहे होते थे घूमने से मैं घृणा करता था। उनका रुचि पुराने ढंग की थी और वे 'हाटिकवाह' से स्कूवर्ट के लिडनबाम' तक सब स्वर गाते थे। वे 'ओल्ड राइकल रेंज' के समीप एक वड़े परित्यक्त भवन में अपनी नियमित सभाएं किया करते थे। एक दिन शाम को स्टर्न के कहने पर मैं भी वहां गया था।

"आज रात मैं एक भाषण देने वाला हूं," उसने कहा "उन का चुनाव हो रहा है और उन्हें एक नये नेता की जरूरत है मैं अपने आपको एक उम्मेदवार के रूप में पेश करने जा रहा हूं।" नेता प्रति वर्ष चुना जाता था और शहर के लड़कों में उसकी काफी प्रतिष्ठा रहती थी।

मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, "मैं नहीं जानता था कि तुम इसके सदस्य हो"

"मैं पिछले तीन महीने से वहां जा रहा हूं," स्टर्न ने कहा। "संविधान का आदेश है कि कोई भी व्यक्ति तव तक नेता नहीं चुना जा

सकता जब तक कि वह कम से कम छः महीने तक सदस्य न रह चुका हो किन्तु मेरे लिये वे संविधान में ढील कर देंगे। उन्हें मेरी जरूरत है।"

वह मुझे 'बना' नहीं रहा था। वह कभी भी नहीं 'बनाता था'।

"उन का वर्तमान नेता वर्जर विश्वविद्यालय में पढ़ने जाता है और ऐसा प्रभावशाली कोई व्यक्ति नहीं है जो उनका नेता बन सके।"

उसका आत्म विश्वास आश्चर्यजनक था। मैं यह जानने के लिये उत्सुक था कि क्या होता है। मैं लोगों के भावी नेता का काम देखने के लिए स्टर्न के साथ चला गया।

सभा का हाल ठण्डा, खाली और अंधकार से भरा था। मेरी उपेक्षा किए हुए चालीस लड़के तीन लम्बी मेजों पर बैठे हुए थे। ज्यादातर वे दूसरे स्कूलों के थे लेकिन मैं कुछ छोटे लड़कों को जिमनासिम की छोटी कक्षाओं से जानता था। हम उन्हें बेवकूफ समझते थे और हमारा उनसे कोई सरोकार नहीं था। हमारे उम्र के लड़कों में दो साल का अन्तर बहुत होता है।

स्टर्न और दो अन्य लड़कों ने मेज के पीछे ऊंचे उठे हुए मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया। पिछली सभा की कार्रवाई पढ़ी गई, प्रस्ताव रक्खे गये और समर्थन किया गया और सम्बन्धित विषयों पर वाद-विवाद होने लगा जिसके बारे में कुछ नहीं जानता था और जो मुझे बेकार जान पड़े। मेरे दिमाग में सभा की कार्रवाई की बातें धुंधली छाया मात्र हैं लेकिन मुझे स्पष्टतः याद है कि क्या हुआ था जब स्टर्न मंच पर खड़ा हुआ और सुनने वालों की ओर उसने देखा।

लड़के बात चीत कर रहे थे, अपने पैरों को हिला रहे थे, जंभाई ले रहे थे और बैठे बैठे ऊब रहे थे लेकिन जब स्टर्न ने बोलना शुरू किया तो उस बड़े हाल में एक शान्ति छा गई। गत कुछ वर्षों में स्टर्न के चमत्कारिक

व्यक्तित्व, श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध करने की उसकी योग्यता तथा सुनने वालों पर उसके प्रभावोत्पादक चमत्कार के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और कुछ समाचार पत्र प्रतिनिधि इसी को उसकी सफलता की कुंजी कहते हैं। जब कभी भी मैं ऐसी टीका टिप्पणियों को पढ़ता तो मैं वाइटस् के ठंडे कमरे की सभा के बारे में सोचता।

स्टर्न अविश्वास से सताया हुआ और नापसन्दगी से कठोर बनाया हुआ ऊंची पेण्ट पहने एक डरपोक लड़का नहीं रह गया था जो स्कूल में मेरे आगे बैठा करता था, ऐसा लड़का जो कक्षा में घूमने में डरता था। वह अब अपने ही घर में था और उसे अपने पर पूरा विश्वास था।

उसने अपने ोताओं को प्रभावित किया। अपने भाषण में कभी याचना करता और धमकी देता, कभी उसका स्वर मोहक तथा करुणा से भरा होता अ.र कभी गम्भीर तथा विनोद पूर्ण होता था। उसका यह चमत्कारिक अभिनय था। मुझे यह याद नहीं कि उसने 'क्या' कहा परन्तु यह अच्छी तरह याद है कि सने 'कैसे' कहा। उसे प्रत्येक श्रोता पर यह भाव डालने का ढंग आता था कि वह सिर्फ उसी से बात कर रहा है। वह सीधा और आराम से खड़ा रहा और एक बार भी आगे नहीं झुका। स्कूल में व्यायाम शिक्षा के दौरान में स्टर्न का व्यायाम शिक्षक अक्सर अपमान कर देते थे। वे शिक्षक मजबूत पुट्ठों के लेकिन निर्बल मस्तिष्क के हृष्ट पुष्ट आदमी थे जिन्हें बीस गज ऊंचे चिकनें खम्भे पर एक मिनट से भी कम समय में चढ़ जाने की क्षमता रखने का गर्व था।

'स्टर्न' क्या तुम सीधे खड़े नहीं हो सकते ?" व्यायाम शिक्षक अपनी ऊंची आवाज में चिल्लाया करते थे। स्टर्न एकम बिल्कुल सीधा खड़ा हो जाता लेकिन क्षण भर बाद ही फिर झुक जाता। व्यायाम शिक्षक ने उसके इस मर्ज को असाध्य घो।पत कर दिया था। मैंने चाहा कि वे अब मंच पर स्टर्न का अभिनय देख सकते।

स्टर्न ने एक घण्टे से अधिक देर तक भाषण दिया होगा परन्तु उसके श्रोताओं को यह प्रतीत होते नहीं लगता था कि इतना समय गुजर गया है। यह एक विशेष बात थी कि भाषण के बाद लड़के यह तै नहीं कर पाते थे कि उसने क्या कहा। वह अस्पष्ट वादिता में बहुत प्रवीण था। वह सामान्य वचन दे दिया करता था लेकिन कोई विशेष वायदा नहीं करता था। जब वह आगामी चुनाव की बात करता तो वह हमेशा यही कहा करता था कि 'जब मैं चुन लिया जाऊंगा'। यह कभी नहीं कहता था 'अगर मैं चुन लिया जाऊं'।

उसका भाषण समाप्त होने के बाद कुछ सैकिन्ड तक चुप्पी रही और जो लोग सांस रोक बैठे हुए थे उन्होंने अब आराम से सांस ली। कुछ लड़कों ने टांग फैला दीं और अपनी अपनी गर्दनों को भी विश्राम दिया।

मैंने भी अपना गला तर किया। मेरा गला स्टर्न का भाषण सुनते-सुनते सूख गया था।

अभी जब वहां बैठा बैठा ऊंघ रहा था मैंने अपना नाम पुकारे जाते सुना। स्टर्न ने मेरी तरफ इशारा किया और श्रोताओं से मेरा परिचय कराया। किसी ने मुझे पकड़ कर उठा दिया और अभिवादन कराया। मेरा सिर घूम रहा था। जीवन में पहली बार प्रतिष्ठा के मीठे और मादक स्वाद का अनुभव कर रहा था। इससे पूर्व कि मैं एक शब्द भी बोल सकूं, मुझे तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सदस्य चुन लिया गया। उन्होंने मेरी स्वीकृति लेने का भी कष्ट नहीं उठाया। स्टर्न ने मेरा प्रस्ताव रखा था। उसके शब्द सर्वमान्य होते थे, और ज्यादा तालियां पिटीं मैंने फिर सिर झुकाया। स्टर्न मंच से नीचे उतर आया, और मेरे साथ उसने नाटकीय ढंग से हाथ मिलाया, उसने भीड़ की ओर मुंह किया, और अपने हाथ ऊपर करके और चेहरे पर पवित्रता और गम्भीरता का भाव लिये ताली बजाने लगा। वर्षों बाद मैंने

अखबारों में उसका एक दुर्लभ चित्र देखा जिसमें वह अपने दल के बड़े-बड़े आदमियों के वीच मास्को फैशन में अपने हाथ सिर से ऊपर उठा कर गम्भीरता से ताली वजा रहा था ।

उस रात जब मैं ठण्डी और अंधेरी गलिया में होता हुआ अपने घर जा रहा था तो मैंने अपन आपसे पूछा कि तुझे क्या हो गया है । आखिर कार वाइट्स में शामिल होने का मेरा कतई इरादा न था ।

स्टर्न ब्लू वाइट्स का नेता वन गया । उसका चुनाव जैसी कि उसने भविष्य वाणी की थी, सर्व-सम्मति से हुआ । उसने सव विधानों और संसदीय परिपाटियों को तोड़ते हुए मुझे अपना प्रथम सचिव बना लिया। विधान के अनुसार सचिव निर्वाचित होना चाहिए था । स्टर्न ने आदेश दिया कि विधान वदल दिया जाय और मुझे नियुक्त किया जावे । यह नियम विरुद्ध वात थी और उसका कड़ा विरोध भी हुआ लेकिन स्टर्न ने विरोधियों को मतदान से अलेग रख कर विरोध खतम कर दिया ।

विरोधी वर्ग विरोध में वाहर चला गया । हर कोई यह समझने लगा कि अब ब्लू वाइट्स का खातमा है किन्तु विरोधी पक्ष लौट आया और स्टर्न जीत गया । जो लड़के कुछ समय पहले यह कह रहे थे कि अब ब्लू वाइटस खतम है वे अब यह कहने लगे कि स्टर्न एक महान् लोकनायक है ।

सचिव के मेरे नये काम ने मुझे कई सायंकालों में व्यस्त रखा । मैं अपने घर के काम और वायोलिन की उपेक्षा करने लगा । प्रो० फ्रैंक ने मेरा ग्रेड खराव कर दिया और मुझे अपने कार्यालय में वुलाया ।

"तुम बहुत पिछड़ गए हो, विलर्ट, तुम्हें क्या हो गया है ?"

मैं पैर से जमीन कुरेदने लगा और कहने लगा कि कोई वात नहीं ।

उन्होंने गलत समझा । उन्होंने कहा "तुम्हें ज्यादा काम करना चाहिए और लड़कियों पर निगाह कम रखनी चाहिए ।" और मुझे भगा दिया ।

मुझे उनसे यह कहने का साहस नहीं हुआ कि मैं लड़कियों को नहीं देखता हूं। मैरीन से मेरा प्यार छूट गया है और किसी और लड़की से प्यार करने की फुरसत नहीं है। मैं अब भी लोला स्टर्न की बाबत बहुत कुछ सोचता था किन्तु वह असम्य और एक दूर के नक्षत्र के समान थी। मैं अपना शाम का समय सदस्यों की सूचियां बनाने और पिछली सभाओं का संक्षिप्त विवरण लिखने में बिताने लगा।

सचिव की अन्य ड्यूटियों में प्रत्येक भाषण को नोट करना भी शामिल था। मैंने स्कूल में शॉर्टहैन्ड सीखा था लेकिन स्टर्न के तेज भाषणों को मैं उसके सहारे नोट नहीं कर पाता था। स्टर्न को अपने अलावा और व्यक्तियों के भाषणों के संक्षिप्त नोट लिए जाने में तो कोई आपत्ति नहीं थी लेकिन वह अपने भाषणों के लिए आग्रह करता था कि वे शब्दशः नोट किए जायें।

मैंने उससे कहा कि मैं उसके धारा-प्रवाह भाषण को शब्दशः नोट करने में असमर्थ हूं और उसके भाषणों को भी संक्षिप्त करने की कोशिश करता था।

कठिनाई यह थी उन्हें संक्षिप्त किया ही नहीं जा सकता था। उनमें कुशल हाजिर जवाबियां, चतुराई पूर्ण आत्म विरोध, अप्रत्याघात असंगत बातें और परेशान कर देने वाली अस्पष्टताएं भरी होती थीं किन्तु सार उनमें कुछ नहीं होता था। स्टर्न थोड़ी सी बात कहने के लिए बहुत अधिक शब्दों का प्रयोग करने में चतुर था। मैं उसके भाषण को नोट करता और उसका संक्षिप्त विवरण तैयार कर लेता। अगली सभा में स्टर्न मेरे इस विवरण को पढ़ता और अपना सिर हिला कर कहता।

"यह वह नहीं है जो मैंने कहा था।"

"तुम्हारे भाषण की सब मुख्य मुख्य बातें इस में मौजद है।"

"हास्यास्पद मत वनो" उसने गुस्से से कहा। जव कभी भी उसके स्वाभिमान को चोट पहुंचती थी, वह गुस्से हो जाता था। "मैं भाषण इस तरह से नहीं दिया करता हूं। मैंने तुम्हें कितनी ही वार कहा है कि महत्व 'कैसे' का है 'क्या' का नहीं। तुम मुझे ऐसा जाहिर करते हो जैसे मैं एक स्वर में वोलने वाला वेवकूफ हूं। यह दलीय अनुशासन का भंग है।"

मैं 'दलीय अनुशासन' से तंग आने लगा था। मैंने कहा "मुमकिन है तुम वेवकूफ हो, मैंने कभी सचिव वनना नहीं चाहा, तुम मेरे से अच्छा क्यों नहीं रख लेते ?"

वह हंसा "क्योंकि मैं तुम्हारा विश्वास करता हूं, कम से कम तुम मेरी जगह प्राप्त करने का कोशिश नहीं करोगे।"

स्टर्न का नाटक ईस्थर कैथोलिक हाउस में खेला गया जो चर्च सोसाइटी का हाल था। हाल वड़ा था और किराया थोड़ा था। हमारे शहर के निवासी सहनशील थे और कैथोलिक हाउस में यहूदी वालचर लड़कों के ग्रुप द्वारा वाइविल सम्वन्धी नाटक खेले जाने को कोइ भी एक असाधारण वात अनुभव नहीं करता था। चर्च सोसाइटी को कोई एतराज नहीं था वशर्ते कि नाटक इसाई धर्म के वुनियादी सिद्धान्तों के खिलाफ न हो। गत दो लगातार सालों में व्लू ह्वाइट्स ने लेसिन का 'नाथनडेर वीज' और शेक्सपीयर का 'मरचेण्ट आफ वीनिस' नाटकों का अभिनय किया था। दोनों सहनशीलता का पाठ सिखाते थे। स्टर्न का नाटक सहिष्णुता के गुणों की प्रशंसा नहीं करता था लेकिन वह चर्च के लोगों को यह विश्वास दिलाता था कि भलाई की वुराई पर विजय होती है। कुछ लोगों ने कहा कि यह काफी नहीं है और उन्होंने नाटक के उद्देश्य यहूदियों के उत्पीडन, जो वहुत सामयिक था, पर एतराज किया लेकिन उनका एतराज माना नहीं गया। यह निश्चय किया गया कि व्लू ह्वाइटस यदि २५ प्रतिशत किराया अधिक देने पर राजी हों तो वे हाल ले

सकते हैं। चर्च के लोगों को छत की मरम्मत कराने के लिये पैसे की जरूरत थी।

स्टर्न ने 'बुक आफ ईस्थर' का नाटक बना लिया। उसका नाटक वास्तव में सामयिक था। यह मोरडेकाई, यहूदिनी जो मीडिया और फारस के राजा अहास्वेरस की पत्नी हो गई थी, की गोद ली हुई लड़की ईस्थर की कहानी बतलाता था। "मीडिया और फारस के राजा अहास्वेरस ने भारत से लेकर ईथोपिया तक के १२७ प्रान्तों पर राज्य किया था।" ईस्थर ने अपने परिवार और अपने लोगों की जानकारी राजा को नहीं होने दी लेकिन उसने अपने लोगों को राजा के अमात्य आसुरी हमान से बचा लिया जो उन्हें नष्ट करना चाहता था। हमान को उसी तख्ते पर फांसी दी गई जो उसने मोरडेकाई के लिये तैयार किया था और मोरडेकाई राजा की सलाहकार बन गई। पटाक्षेप —

हाल नाटक खेलने वाले सदस्यों के दोस्तों तथा रिश्तेदारों से भरा हुआ था। बहुत से हमारे सहपाठी और फैकल्टी के कुछ सदस्य आये थे। प्रो० फ्रैन्क छठवीं कतार में बैठे थे और ऐसी सख्त निगाह से देख रहे थे मानों वे ठीक वहां गणित की परीक्षा लेने जा रहे हों।

ईस्थर का पार्ट हैल्गा बर्डी ने खेला। उसमें अभिनेत्री के अधिक गुण नहीं थे लेकिन प्रत्येक ने यह मान लिया कि वह पार्ट के लायक दिखाई पड़ती है (स्त्री सुन्दर तथा प्यारी थी)। लियो ने अहास्वेरस राजा का तथा मैंने असुर हमान का पार्ट किया। स्टर्न, नाटक के लेखक, निर्देशक तथा निर्माता, ने स्वयं सबसे लम्बा तथा सबसे महत्वपूर्ण मोरडेकाई का अभिनय किया।

मैंने हफ्तों तक अपना पार्ट याद किया था यहां तक कि मुझे इतना अच्छा याद हो गया था कि नींद में भी मैं उन लाइनों को कह सकता था।

लेकिन मुझे इस बारे में तमाशा शुरू होने के ठीक पहले तीसरे पहर विश्वास नहीं था। मैं स्टेज पर आकर बहुत घबरा गया और उसके सब लक्षण मौजूद थे—दिल का धड़कना, ठण्डे पसीने और स्मृति का पूरी तरह से लुप्त हो जाना। मेरा सिर बिल्कुल खाली था।

मेरी मां ने मुझे हाल जाने से पहले स्वादिष्ट भोजन खिला कर मेरी स्थिति और बिगाड़ दी थी। मैंने कहा कि मैं अभिनय करने से पहले वीनर शिनीत्ज़ल और आलू सलाद नहीं खा सकता। मैं एक घूंट पानी भी नहीं पी सकता।

"लेकिन तुमको कुछ न कुछ अवश्य खाना चाहिए," मेरी मां ने कहा। मेरी मां का ऐसा विचार था कि मानसिक विपत्ति के समय में अधिक खाने से ताकत बनी रहती है, "वहाँ रात भर खड़े रहने के लिये तुम्हें इस की जरूरत होगी।"

मैंने कहा अभिनेता अभिनय करने से पहले कभी नहीं खाते हैं। "तुम एक अभिनेता नहीं हो," मेरी मां ने तड़ाक से कहा, "कम से कम कुछ फल और मिठाई ही खा लो।

स्टेज के पीछे भयानक शोर गुल था। हैल्गा वर्डी को स्वाभाविक दौरा आगया क्योंकि मैरीन ने जो मेक-अप विशेषज्ञ का कार्य कर रही थी, उसके बालों का बवंडर बना दिया था। प्रोम्पटर (पर्दे के पीछे से पार्ट बताने वाला) अपना प्रोम्पट करना भूल गया। कोरस समूहगान के सदस्यों ने बाहर जाने की धमकी दी क्योंकि उनकी सैन्डिल उनके जूतों के आकारों की तरह से ठीक नहीं आईं।

केवल स्टर्न ही शान्त और दृढ़ था। सी में एक ऐसे मनुष्य का सा आत्म विश्वास झलक रहा था जो यह समझता कि उसे सफलता प्राप्त होगी ही।

उसने ओटो वावर को परदा उठाने के बारे में आखिरी मिनट के आदेश दिए। कैथोलिक वावर ब्लू ह्वाइट्स का सदस्य नहीं था लेकिन उसकी पर्दे विषयक सहायता मांगी गई थी। वही केवल ऐसा आदमी था जो पेचीदी मशीन को सम्भाल सकता था।

मैंने दर्शकों को प र्दे के छेद में से झांक कर देखा। मैंने अपनी मां को नहीं देखा लेकिन उसके कंगनों की झनझनाहट सुन सका। प्रो० फ्रैन्क अपनी सीट पर आराम से बैठे हुए भी कठोर और नम्र दिखाई दे रहे थे, मेरे घुटने कमजोर पड़ रहे थे, घंटी वज रही थी।

मंच की सजावट बड़ी खराब थी। नये सेटों पर रंग कराने के लिए हमारे पास पैसा नहीं था और 'नाथन' और 'मरचेन्ट' से बचे हुए सेटों का ही प्रयोग कर रहे थे। स्टर्न ने यह भविष्य वाणी की था कि दर्शक उसके नाटक की पंक्तियों से ही इतने प्रभावित हो जायेंगे कि उनका ध्यान स्टेज पर के सैटिंग की ओर नहीं जायगा। जो सैटिंग बाइबिल के अनुसार इस प्रकार होना चाहिये था :—

सफेद सूती पर्दे, और नीला लटकने जिन पर बारीक लिनन लिपटी हुई हो, और जो बेंगनी से लेकर चांदी के रंग के छल्लों, और संगमरमर के खम्भों पर टिके हुए हों तथा रत्न, संगमरमर, सीप, और अन्य बहु-मूल्य पत्थरों से जड़े हुए फर्श पर सोने चांदी की आराम कुर्सियां हों।

गलत वेनीशियन, और आधे ओरियन्टल के खराब सैटिंग में शुरु हुआ। स्टर्न का इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। महान रूसी स्टेज डाइरेक्टर कभी भी सैटिंग की ओर ध्यान नहीं देते, उसने कहा—जन साधारण की भावनाएं ही नाटक की जीती जागती पृष्टि भूमि होती हैं। ग्रीक खान्तक कोरस का एक गाना गाकर ब्लू वाइट्स के सब सदस्यों ने जनसाधारण की भावना का प्रदर्शन किया।

नाटक बड़ा सफल रहा। हैल्गा वर्डी ने अपने सब से अच्छी पंक्तियों को कहने में गलती कर दी और औटो वावर ने दूसरे दृश्य में परदा जल्दी हीं डाल दिया जिससे मेरा प्रभावोत्पादक अन्तिम स्वागत भाषण अधूरा ही रह गया। "उस आदमी को अलंकृत करो जिसको इज्जत देने में राजा को खुशी होती है, और उसे घोड़े पर बिठा कर शहर के खुले चौराहों पर से होकर चलने और उसके आगे आगे यह घोषणा करते चलो 'जिसको राजा इज्जत देने में खुश होता है उस आदमी के साथ ऐसा व्यवहार किया जायगा। लेकिन कोई भी इसकी ओर ध्यान देता हुआ प्रतीत नहीं हुआ। स्वागत भाषण देते समय मेरी मां की कंगनों की झन-झन की आवाजों ने मुझे विचलित कर दिया। अच्छा होता यदि मैं उसकी बात मान लेता और घर पर कुछ फल खा लेता। मैं थकान और भूख अनुभव करने लगा था। दर्शकों की भावना पूरी तरह आर्कषित हो चुकी थी। समूहगान के सदस्य एक दूसरे को धक्का देकर चलने लगे। एक की सैंडिल खो गई। दर्शकों ने समझा कि यह बड़ा बढ़िया था।

अन्त में बड़ी तालियां पिटीं। तमाम नाटक खेलने वालों ने सिर झुकाया। स्टर्न ने अकेले ही सिर झुकाया। लोग खुश हुए और चिल्लाने लगे "शावाश"। यहां तक कि प्रो० फ्रैन्क भी धीमे-धीमे अपनी शान में फर्क लाये बिना तालियाँ बजा रहे थे।

पार्श्व के भाग से मैंने स्टर्न को देखा वह पर्दे के सामने खड़ा बड़े गर्व और उच्चता के भाव से देख रहा था मानों वह केवल उस उपहार को स्वीकार कर रहा हो जो बहुत समय से उसको मिलना चाहिए था।

उसको इसमें कभी भी सन्देह नहीं था कि उसका नाटक सफल होगा और वह ठीक निकला।

मि० स्टर्न और लोला पहली कतार में बैठे थे। मि० स्टर्न किसी उलझन में पड़े हुए प्रतीत होते थे। उन्होंने पहले तालियाँ नहीं बजाई

जबकि उनके पुत्र ने सिर झुकाया। वे बूनों को जो जय ध्वनि के बीच में खड़ा था, अविश्वास की दृष्टि से घूरते रहे। तब लोला ने अपने पिता को कोहनी मार कर संकेत किया और तब उन्होंने धीरे से तालियां बजाई लेकिन उनके चेहरे पर के घबराहट के भाव कभी नष्ट नहीं हुए।

जब मैंने स्टर्न को बधाई दी, तो उसने कहा, "धन्यवाद, प्रत्येक ने अपना पार्ट बड़ा अच्छा अदा किया।"

'परदा ऊपर जा रहा है' ओटो वावर चिल्लाया। स्टर्न शान्ति से बाहर चला गया और एक बार फिर सिर झुकाया।

कुछ दिनों तक शहर में स्टर्न की ही बात चीत होती रही। स्थानीय अखबार ने लिखा,"इस प्रखर साहित्यक प्रतिभा का आविर्भाव शहर के बाहर के आलोचकों का, जो सभ्यता के समुद्र में हमारे शहर को एक बुरे आंख के काँटे के समान कहा करते थे, खंडन करेगा।" अजनबी मि० स्टर्न के पास कॉफी हाउस में उसे बधाई देने के लिए पहुंचा करते थे। मेरे मामा एडी भी यह स्वीकार करते थे कि नौजवान स्टर्न एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है। पुराने ताश खेलने वाले, जो कॉफी हाउस के पीछे के कमरे में हमेशा सिगरेट का धुआं उड़ाते बैठे रहते थे और वे केवल सोने के और सबसे जरूरी शारीरिक कार्यों के लिए ही उससे बाहर निकलते थे, मि० स्टर्न से हाथ मिलाने आये।

मि० स्टर्न की परेशानी बढ़ गयी। प्रथानुसार ताश के खेल में कभी नहीं रोका जाता सिवाय उन मौकों के जब कभी आग लग जाती या बीमा पालिसियों के कथनानुसार कोई दैवीय प्रकोप हो जाता। मि० स्टर्न नहीं समझ पाये कि यह हंगामा किस लिए है।

"अपका लड़का अब मशहूर हो गया है" डा० काफ्का ने उनसे कहा "तुमको उस पर गर्व होना चाहिए।"

मि० स्टर्न ने एक लम्बी सांस ली "अच्छा होता कि वह स्टोर म काम करने आया करता।"

स्टोर पूरा हो चुका था और शहर को उस पर गर्व था। यह छः मँजिला था—मि० स्टर्न इमारत आयोग से एक वार और झगड़ पड़े थे और इसका आगे का भाग इस्पात और शीशे का था जो दोनों के मेल से खूब चमक रहा था। एक सारे ब्लीक में प्रदर्शन का खिड़कियां थीं। रात को आगे का सारा भाग प्रकाश से जगमगाता रहता था और सारे व्यापारिक प्रान्त को इससे एक विशेष स्थिति और विशेषता प्राप्त होती थी।

मेरे मामा एडी कहा करते थे कि मि० स्टर्न के कारण शहर की सब जायदादों की कीमत वास्तविक कीमतों से वढ़ती जा रही है। वे हर एक से कहा करते थे कि उनकी वैंक ने स्टर्न के 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' के वनाने में कितनी आर्थिक सहायता दी है, आर इस प्रकार वेंक का गुप्त वातों को भी लोगों से कह देते थ।

"तुम उस लड़के को ऐसा काम करने के लिए विवश नहीं कर सकते जिसे वह नहीं करना चाहता," डा० काफका ने मि० स्टर्न से कहा "क्या तुमने व्यक्ति के आत्म निश्चय तथा आधुनिक शिक्षा के सिद्धान्तों के वारे में नहीं सुना है?"

मेरे पिता ने फैक्टरा स्थापित की, मैंने स्टोर वनाया और मेरा लड़का नाटक लिखता है।" स्टर्न वंश की अवनति के वारे में बिल्कुल निराश होकर वड़े दुख के साथ मि० स्टर्न ने कहा "क्या वह आजीविका के लिए नाटक लिख रहा है?"

"क्यों नहीं?" डा० काफका ने कहा "एक फ्रांसीसी नाटककार जिसे मैं जानता हूं, अपने नाटकों से इतना धन कमाता है कि तीन भिन्न देशों में हर समय के लिए वह होटल में कमरे किराए पर लिए रहता है।"

मि० स्टर्न ने अपना सिर हिलाया "हर एक आदमी ऐसा क्यों करेगा ?" भौंहे तान कर उसने कहा "कोई एक समय में एक ही कमरे में सो सकता है।"

"लड़का होनहार है। उसको राजनैतिक दिमाग मिला है। वह शायद बहुत उन्नती करे।" डा० काफका ने धीरे से अपना मुक्का उठाया। यह उसका एक प्रसिद्ध संकेत था जिसे वह हठी न्यायाधीशों को अपनी बात स्वीकार करवाने के लिए डराया करता था, "उसे निरुत्साहित मत करो।"

"लेकिन वह 'जिन्दगी' के बारे में नहीं जानता है, वह अभी बच्चा है—" बुड्ढे स्टर्न ने एक गहरी साँस ली "मुझे खुशी है कि मेरी प्यारी स्त्री, भगवान उसका भला करे, अब इस संसार में नहीं है, वह ब्रूनो के बारे में बहुत चिल्ल पौं मचाती।"

स्मृति दोनों ओर रखे हुए उन बाल बनाने वाले दर्पणों की तरह काम करती है जिनमें से एक तो चेहरे की हू बहू तसवीर दिखाता है और दूसरा उसे बिगाड़ देता है। कोई हमेशा इस निश्चय पर नहीं पहुँचता है कि स्मृति की कौन सी सच्ची तसवीर है और कौन सी बिगड़ी हुई। जब मैं स्टर्न के बारे में सोचता हूं तो मैं छोटी छोटी घटनाओं को याद करता प्रतीत होता हूं और कुछ जो महत्वपूर्ण हैं, याद नहीं कर पाता हूं।

नाटक के अभिनय के बाद न्यू बाइट्स " मुझे कोई दिलचस्पी नहीं रही। मैं भाषणों और नेता से विवाद करते करते तंग आ गया था। मैंने सचिव के पद से त्याग पत्र दे दिया और अब मेरा वहां केवल आकस्मिक जाना होता था। हमारी कक्षा को एक नई धुन सवार हो गई थी। हम नाचना सीखते थे।

कस्बे का नाच स्कूल, नृत्य अध्यापक हर बात आमन्द के बंगले चला करता था। वह लम्बा, सच्चा, सुन्दर भूतपूर्व सैनिक अधिकारी था

जिसके आचरण निर्दोष थे, जिसकी कनपटी पर के बाल सफद हो गये थे और जिसकी पत्नी धोखेबाज थीं। 'धोखेबाज' शब्द इन महीनों में हमारा खास शब्द हो गया था। कुछ लड़के नाच के पाठों की परवाह ही नहीं करते थे लेकिन वे वहां बिल्कुल वैसे ही जाते थे क्योंकि वे फ्राउवन आमन द्वारा छले जाते थे।

फ्राउवान विएना में प्रसिद्ध वीडेन प्रान्त के एक निर्धन कुलीन वंश की थी या वह ऐसा कहा करती थी। उसका पहला नाम मारियेटा वान सेवशाउसेन था। वह कभी कभी अपने पूर्वजों के यश के बारे में बढ़ा चढ़ा कर कहा करती थी। उनमें से एक विएना तुर्की घेरे में काउण्ट रूडीजर वान स्ट्रे हेम्वर्ग के अधीनता में लड़ा था, उसने इसाई सभ्यता की रक्षा के लि अपने प्राण तक दिए थे। मानो नह काफी नहीं था। उसका पिता प्रथम विश्व युद्ध से पहले आस्ट्रेलिया के जहाजी वेड़े के अन्तिम पदाविकारियों में से एक पदाधिकारी बन गये थे ऐसा कहा जाता था जबकि हैन्जवर्ग साम्राज्य गैलीशिया के जंगलों से लेकर एड्रियाटिक के किनरों तक फैला हुआ था।

दूसरी ओर डा० काफका थे जो फ्राउवान आमन को जानते थे जब कि उसका नाम मित्जी शईवल ग्रान्डनर था और जब वह वैड गैसटीन (आस्ट्रिया) में एक आरामदायक वीयर स्ट्रवर्ल में नौकरानी का काम करती थी। इस बात को सिद्ध करने के लिये डा० काफका ने एक बार पैलेस होटल में डिनर के लिये फ्राउवान आमन का आमन्त्रित किया था जब कि कुछ दोस्त जूरी के तौर पर पास की मेज से देख रहे थे। उसने बहुत सी शराब की आज्ञा दी यहां तक कि फ्राउवान आमन को तन्द्री आ गई और उसका सिर उसकी छाती पर गिर पड़ा। तब डा० काफका ने पुकारा "मित्जी' कृपा करके बिल दो" फ्राउवान आमन उठ बैठी और चिल्लाई "आ रही हूं" और मेज से दौड़ गई, इस कार जूरी के सदस्यों ने डा० काफ केका

कथन की सत्यता को स्वीकार किया। वेंड गेंस्टीन के नौकर और नौकरानी सदैव दौड़कर आते थे जब कोई उनके चैक मांगता।

फाउवान आमन की आयु जैसा कि वह स्वयं भी मानती थी, ३० और ३५ वर्षों के बीच में थी लेकिन बहुत सी नौजवान लड़कियां उससे उसकी सुन्दर आकृति के कारण ईर्ष्या करती थीं। लियो नहाने के मौसम के शुरू तक इन्तजार नहीं कर सकता था क्योंकि वह फाउवान आमन को तंग वेटिंग सूट में देखने का बड़ा इच्छुक था। वास्तव में उसकी अधिकांश पोषाकें प्रच्छन्न रूप में वेटिंग सूट ही होती थीं। मेरा विश्वास है कि शहर की दूसरी औरतों की अपेक्षा लड़कों में वह सबसे अधिक कामुकता के भाव पैदा करती थी।

वह महिलाओं के व्यवहार जानती थी और उसकी वृत्तियां पालतू बिल्ली के समान थीं। वह विएना के उच्च वर्ग के लोगों की जर्मन भाषा बोलती थी जिसमें कहीं कहीं बोल चाल के फ्रान्सीसी शब्द भी होते थे। लेकिन वह उन फ्रान्सीसी शब्दों का जर्मन रूप कर देती थी। उदाहरणार्थ "इन कोमेडेर की जगह वह इन कोमोडीरेन कहा करती थी। उसके अंग ऐसे सुडौल और सुन्दर थे जो स्लाव, लैटिन और जरमन लोगों में पीढ़ियों से चले आ रहे प्यार से पैदा हुए थे और उसमें सौजन्यता के संस्कार भी थे। तब से मैं यह जान पाया हूं कि कोई औरत भूतपूर्व काउण्टेस की भूमिका उनसे अच्छा नहीं कर सकती जो कभी काउण्टेस न रही हो किन्तु तब मैं यह नहीं जानता था। मैं फाउवान आमन के विचलित कर देने वाले आकर्षण में बह गया। उसके आगे है लगा वर्दी भी नीरसता की मूर्ति लगती थी। नाच के पाठ में फाउवान आमन सदा एक छोटा टोप और एक काला बुरका ओढ़े रहती थी मानों वह अभी अभी थोड़ी देर के लिए वहां आई हो। उसका पति तो टांगो और इंगलिश वाल्ट्ज के कठिन कदमों की व्याख्या कर रहा होता और वह बारी बारी से लड़कों के साथ नाचती थी। वह अच्छे नर्तकों की ओर ध्यान नहीं देती थी परन्तु ऐसे भद्दे लड़कों पर ज्यादा ध्यान

देती जो अपने अंगूठों पर नाच रहे होते। लड़कों को शीघ्र ही इस बात का पता लग गया और तब हर कोई भद्दे से भद्दे ढंग से नाचने लगा। लियो टांगों नाच मदिरालय में तब भी अच्छी तरह नाच लेता था। जब हम में से बहुत से लड़के टांगां का अर्थ भी नहीं जानते थे। लेकिन वह फ्राउवान आमन पर मोहित हो गया था और वह गाय के बछड़े की तरह बुद्धू बना रहता था। वह हम सब की अपेक्षा ज्यादा देर तक उसे अपनी बांहों में लिए रहता था।

कुछ दिनों तक हमारी कक्षा का रोमान्टिक जीवन मंगलवार और शुक्रवार की शाम को ८ से १० तक सिखाए जाने वाले पाठ पर केन्द्रित रहा। जो चार लड़कियाँ हमारे साथ स्कूल जातीं थीं वे अन्य स्थानीय स्कूलों की कुछ लड़कियां और क्लेसान्डा बहिनें, मार्ता और जार्मिला वहाँ उपस्थित रहतीं थीं। अन्धकारमय नीच घर में मंदाग्नि का मरीज प्यानो वादक एक पुराने टूटे फूटे प्यानो पर जो शिष्यों की कई पीढ़ियों के काम आ चुका था वेलेनशिया और रमोना बजाया करता था। कौन किस लड़की को घर ले जाये इस में कटु बहस होती थी। मैं समझता हूं कि वियनीज़ ओपरेटा के दूसरे अंक की बजाय इस चीज में भावनाओं का ज्यादा संघर्ष होता था। और फ्राउवान आमन की क्षोभकारी समीपता सदा मौजूद रहती थी और उसकी आंखे काले बुरके में छिपी रहतीं थीं। एक बार उसके विषय में सोचना प्रारम्भ कर देने पर यह नहीं कहा जा सकता था कि इन कल्पनाओं का अन्त कहाँ होगा।

मेरी माँ और चाचियां फ्राउ वान आमन के आने पर यह कह कर आपत्ति किया करती थी कि कोई औरत अपने घर के अन्दर टोप और बुरका तब तक नहीं पहनती जब तक उसके लिये कोई पर्याप्त कारण न हो या उसका कोई विशेष उद्देश्य न हो मुझे समझ में नहीं आया कि पर्दे और पाप में क्या सम्बन्ध है और मैंने यह समझ लिया कि यह स्त्री जाति के मस्तिष्क की कोई रहस्यपूर्ण बात है। मेरी मां के परिचितों में यह अफवाह थी कि एक

बार फ्राउवान आमन अपने परिवार में गई जहां से वह थकी, और श्यामल होकर तथा नये जेवर पहन कर आई थी। मुझे यह स्वभाविक ही लगा कि अपने रिश्तेदारों में एक हफ्ता बिता देने के बाद वह थक जावे और उसके शरीर पर जो श्यामलता आ गई थी उसका कारण सहज में ही यह समझ में आता है कि वह अपने परिवार की जागीरों के पार दूर तक चली होगी। जेवरात सम्भवत: एक पारिवारिक वसीहत थी।

"पारिवारिक वसीहत" मेरी चाची आन्ना ने अपनी ईर्षालु मुस्कान से कहा "मैंने कुछ महीने पूर्व बिल्कुल उसके जैसा एक कड़ा ग्रीन्टे कालों में देखा था। यह पेरिस में बनाया गया था जहाँ इसका आधुनिकतम फैशन है।"

चाची आन्ना ने मुझे देर तक घूर कर देखा, और मेरी मां से कहा "तुम्हे उस आमन महिला के बारे मे जैके से बात करनी चाहिए। एक अच्छे परिवार के लड़के के लिये उसकी संगत अच्छी नहीं है। जैके, तुम अपनी ही उमर की उन प्यारी लड़कियों में से एक के साथ क्यों नहीं नाचते ? जैसे ग्रेटल क्रामेर के साथ ?

मुझे एक बार फिर यह अपनी चाची की एक बड़ी ना समझी प्रतीत हुई ग्रेटल क्रामेर शहर के सब से मालदार उद्योगपति की एक मात्र पुत्री थी। उसका चेहरा पीला था और नाक उसकी बहती बहती थी। मेरी चाची ने रियलशूल के मेरे चचेरे भाई रोल्दी में ग्रेटर के प्रति दिलचस्पी पैदा करने की भरसक कोशिश की थी लेकिन सफल नहीं हुई। रोल्डी की रुचि इससे कहीं अधिक उन्नति थी। उसका प्रसिद्ध भारी भरकम पहलवान फ्रौनटेन्सका की लड़कीसे रोमान्स चल रहा था। कुमारी फ्रास टेन्स का स्वास्थ्य की प्रति मूर्ति थी। और वह अपने पिता के समान ही भारी थी।

"मैं खूब समझती हूं कि फ्राउवान आमन क्यों हमेशा पर्दा डाले रहती है," मेरी चाची ने कहा। "उसकी आयु सम्भवत: ३० वर्ष के आस-पास नहीं बल्कि ५० के करीब है और वह इसे जाहिर नहीं होने देना चाहती।"

हमारी कक्षा में सिर्फ स्टर्न ही ऐसा लड़का था जो मंगलवार और शुक्रवार के नाच के पाठ में शामिल नहीं होता था। ऐसी 'हास्यास्पद' वेहूदा वातों के लिए उसके पास समय नहीं था। हम जो कुछ करते थे वह उसके 'हास्यास्पद' होता था।

"संम्भव है यह हास्यास्पद हो" मैंने कहा "किन्तु इसमें मजा अवश्य आता है।"

"मजा" उसने कहा, "वस तुम मजे की ही वात सोच सकते हो।"

"क्या तुम एक वार भी इसका आनन्द नहीं लेना चाहते ?"

"मैं पूरा आन्नद ले रहा हूं," उसने कहा।

"अपने तेताओं को काला सफेद है यह विश्वास करा के ?" मैंने पूछा।

उसने त्यौरी चढ़ा कर कहा, "तुम पिछली तीन सभाओं में नहीं आये।"

"मुझे घर में वहुत काम था।"

"कहां ?" उसने व्यंग से कहा "नाच घर की स्टेज पर फाउवान आमन के साथ ?"

उसके स्वर ने मुझे कुपित कर दिया। उसने यह चुभने वाले शब्द वहुत ज़ोर से कहे थे। ये मेरे वहादुरी के दिन थे। "क्या तुम मुझ पर जासूसी कर रहे हो ?" मैंने कहा।

"निश्चय ही" उसने साफ कहा। "मेरे आदमी किस समय क्या काम करते हैं इसकी जानकारी रखना मैंने अपना काम वना लिया है।"

मुझे उसकी मालिकाना वृत्ति पसन्द नहीं आई, मैंने कहा।

"मैं तुम्हारे आदमियों में से नहीं हूँ।"

"बात यह है" उसने कहा, "कि तुम पिछली बार सभाओं में नहीं आये और तुम्हारे पास कोई बहाना भी नहीं है। तुम दलीय अनुशासन तोड़ने के अपराधी हो।"

"भाड़ में जाय दलीय अनुशासन।"

"तुम मुझे निराश कर रहे हो" उसने मुझे इस प्रकार से पकड़ते हुए कहा जैसे वह अदालत में मेरी परीक्षा लेने वाला डाक्टर हो। "एक बार का बुजुआ हमेशा बुजुआ ही रहता है, तुम कभी कोई उन्नति नहीं करोगे।"

"हर कोई होन-हान नहीं हो सकता," मैंने कहा। परन्तु उस पर मेरे व्यंग का वार खाली गया। उसने सुना ही नहीं। जब वह नहीं चाहता तब कभी भी नहीं सुनता था।

"कुछ दिनों तक मुझे तुमसे बड़ी आशाएं रहीं।" उसने इस प्रकार खेद पूर्वक कहा जैसे वह अपने आप से कह रहा हो। 'तुम्हें लोगों की समस्याओं का पता था। तुम उन समस्याओं के प्रति सनवेदन शील प्रतीत होते थे। तुम्हें प्रगतिशील विचारों में दिलचस्पी थी।"

मुझे अपना इस प्रकार बखान किये जाने से घृणा हुई मानो मैं मर गया हूं लेकिन मुझे अभी दफनाया न गया हो।

"किन्तु" अपनी बात जारी रखते हुए उसने कहा "तुम्हारे आसपास का वातावरण तुम्हारे खिलाफ है। तुम इतने निर्बल हो कि इस छोटे से शहर के बुजुआ लोगों से अलग नहीं हो सकते। तुम पैसा कमाना चाहते हो, सफल बन कर दिखाना चाहते हो, तुम जमाने के प्रवाह में बहना चाहते हो।"

"हां" मैंने उदासीनता से कहा "मैं जमाने के साथ चलना चाहता हूं। मैं स्टर्न जैसा नहीं बनना चाहता जिससे गलती से होनहार समझ लिया गया है। स्टर्न अपने पिता के स्टोर में काम करना पसन्द नहीं करता।

स्टर्न नाचता नहीं, फुटवाल नहीं खेलता। स्टर्न कक्षा की पिकनिक में भाग नहीं लेता। स्टर्न लोक-प्रिय वनना चाहता है।"

"कम से कम मेरी तुम्हारे, ओटो वावर और दूसरे अन्य लड़कों के समान उपेक्षा नहीं की जा रही।"

मैं उसके ओटो वावर का नाम लेने से गुस्सा हो गया। ओटो का सव पसन्द करते थे और वह कभी किसी से वहस नहीं करता था और फुटवाल की टीभ में खेलता था। उसके वीच के दरजे के ग्रेड आते थे, वीच के दर्जे की लड़कियाँ उसकी दोस्त थीं और वीच के दर्जे की उसकी राय होती थी। उसे सदा छोटे काम सौंपे जाते थे जैसे नाटकों में परदे गिराना या सींचना। वह वहाँ सदा मौजूद रहता लेकिन यदि वह गायव भी रहता तव भी उस पर किसी का ध्यान न जाता। जव एक वार वह दो दिन तक जानबूझ कर स्कूल से गैरहाजिर रहा, 'तव हमने प्रो० फ्रैंक द्वारा उसका नाम पुकारे जाने पर 'उपस्थित है' ही कहा और उसकी अनुपस्थिति का किसी को पता न चला। उसे जीव विज्ञान के अध्यापक के शीशे के वक्से में रखी हुई शाही चीन की मूर्ति के समान सदा मौजूद समझ लिया जाता था। मैं ओटो वावर को पसन्द करता था कि मेरी उससे तुलना की जाय।

"मैं उपेक्षित नही हूं" मैंने गुस्से से कहा "मेरे तुम से ज्यादा दोस्त हैं, पूछो क्यों? क्योंकि तुम किसी की भी परवाह नहीं करते, स्टर्न सदा स्टर्न की महानता को ही वढ़ाने में लगा रहता है और वह सदा गम्भीर वना रहता है।"

क्षण भर के लिये मुझे यह खयाल हुआ कि वह मुझे मारेगा। उसकी पुतलियाँ इतनी सिकुड़ गईं कि आंखे सफेद ही सफेद नजर आने लगीं। वर्षों वाद जव वह एक महान शक्ति सम्पन्न व्यक्ति वन गया तव मैंने उसके वारे में कुछ ऐसे व्यक्तियों का विवरण पढ़ा जिन्होंने उसे गुस्सा होते देखा था। "जव वह गुस्सा होता है तो उसकी आंखें सफेद हो जाती है जिनमें निरी

घृणा भरी होती है।" मैं उनकी वह भयानक दृष्टि कभी नहीं भूलूंगा। मैं बहुत डर गया था और अपने पेट में सिकुड़न अनुभव करने लगा।

"तुम नहीं समझोगे" गहरी घृणा के भाव से उसने कहा और चला गया।

"हममें परस्पर और कोई बातचीत नहीं हुई। वर्षों तक कोई बातचीत नहीं हुई! मैंने अब क्लू हाउस में जाना बन्द कर दिया और कक्षा के कमरे में स्टर्न अब मेरे से बहुत पीछे की बेंच पर बैठने लगा जहाँ से वह मुझे नहीं देख सकता था। हम छः साल वर्ष प्रतिदिन साथ साथ उस कमरे में रहे परन्तु हम ऐसा दिखाते थे कि एक दूसरे को बिल्कुल देखते नहीं हैं किन्तु व्यायाम शिक्षा के समय या स्ट्रीट कार की पिछली सीट पर हम एक दूसरे के शारीरिक स्पर्श से नहीं बच सके लेकिन जब कभी भी ऐसा हो जाता था तो हम एक दूसरे को पैनी दृष्टि से देखते मानो हम शीशे के बने हुए हों।

आंग बुद्धवार के आने पर, हमारे नाच-पाठों के अन्त में हर और फाउचान आमन ने एक 'कोलोने' नृत्य समारोह का आयोजन किया जिसमें सब शिष्य और अपने महमानों को आमन्त्रित किया। लड़कियों के बारे में यह अनुमान था कि वे अपनी माताओं अथवा संरक्षिकाओं के साथ आयें। कोलोने (नृत्य समारोह) आधी रात के बाद तक चलेगा—कुछ लड़कों ने तमाम रात वेश्याओं के घरों में ठहरने का और वहीं से सीधे स्कूल जाने का विचार कर लिया था और यह ठीक नहीं समझा गया कि ऐसे समय लड़का लड़की को उसके घर ले जाये। शहर में अब भी यह आम ख्याल था कि व्यभिचार के अधिकांश मामले आधी रात के बाद ही होते हैं।

कोलोने के लिये आमन परिवार के सदस्यों ने अपना तमाम बंगला दे दिया था और बहुत ज्यादा प्रवेश फीस वसूल की। बंगला बगल में जाने वाली सड़क पर कब्रों खानों के पास भद्दा बनावट का था। इसके पहले

मालिक के आधुनिकतम शिल्पकारी के प्रति कुछ धुंधले विचार थे–कुछ कुछ हाल केली कोर्न्नसीयर के ढंग के से लेकिन मकान समाप्त होने से पहले ही दिवालिया होने के कारण वह उन्हें कार्य रूप में परिणित नहीं कर सका। केवल प्रथम दो मंजिल ही पूरी कर पाया था। दूसरा मालिक आधुनिकतम शैली से घृणा करता था और उसने उसके संपूर्ण बाहिरी भाग को कुछ आलंकारिक चीजों से सजवाया था जो हैब्जबर्ग साम्राज्य की अवनति के दिनों में दूर के स्थानों जैसे विएना, जैग्रेब, ट्रीस्टे और क्रेकाड के घरों पर बनी हुए पायी जाती थीं। तीसरी मंजिल और छत्त अपनी विशेष रूचि के अनुसार बनवाये गये थे।

कई शैलियों की इस खिचड़ी के कारण बंगला बिल्कुल भद्दा लगता था। दूसरे मालिक ने इसे बैंक के पास गिरवी रख दिया और तब प्रथम विश्व युद्ध के बाद उससे खाली करा लिया गया। हरवान आमन ने इसे खरीद लिया क्योंकि यह एक अच्छा सौदा था। आमन परिवार ने भद्दे बाहिरी भाग में कोई परिवर्तन न कराने का निर्णय किया किन्तु फ्राउवान आमन ने दीवार में और दरवाजों के ऊपर छोटे-छोटे आले, तथा आरामदायक कोने बनवाकर कमरों में धुंधली रोशनी करके, फर्श पर गद्दे बिछवा कर और गुसलखानों और अन्य कम प्रयोग में आने वाले स्थानों पर आवरणमय बत्तीयाँ लगवा कर इस कमी को पूरा कर लिया था, फ्राउवान आमन रंगीन छपाई और हीरोशिगे की सस्ती नकलें पसन्द करती थीं। इन सबका रंग लाल रखा गया। बहुत से कोनों में सोई हुई मुद्रा में देवदूतों की पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ थीं। कोलोने नृत्य समारोह की रात को जब मैं आया तो आॅरकैस्ट्रा वेलेन्शिया बजा रहा था और वह बड़ा भवन नृत्य करने वाली जोड़ीयों से भरा हुआ था। बत्तियाँ रंगीन झण्डों से सजाई गईं थीं और खिड़कियां रंगीन कागज़ों से यह स्थान किसी बड़े स्टीमर के रवाना होन से पूर्व समुद्र तट के घाट के समान लगता था किन्तु कुछ लड़कों को यह स्वर्ग की ड्योढ़ी जैसा प्रतीत होता होगा। लड़कियों ने गुलाबी या सफेद रेशमी जाली के कपड़े पहने

हुए थे । दोनों क्लैसान्डा वहिनों ने लाल पोषाकें पहन रखी थी जिनमें उनके अंग स्पष्ट रूप से झलकते थे और उन्होंने एक हंगामा खड़ा कर दिया । टोंडा की उनके साथ नाचने की बारी आई। बेचारा टोंडा ! वह दोनों से प्यार करता था और कुछ तै नहीं कर सका ।

यह असम्भव प्रतीत होता था कि ये दोनों सुन्दर लड़कियाँ अपनी माताओं जैसी भारी भरकम; मोटी बाहों वाली, कठोर गर्दन वाली, और बिना किसी आकर्षण की मूर्तियां बन जायेंगी । लड़कों ने गहरे नीले रंग के सूट पहने हुए थे और कुछ ने नये जूते पहन रखे थ जो 'चर मर' आवाज करते थे ।

किन्तु सब से ज्यादा सनसनी फ्राउलान आमन पर हुई जो सुनेहरी अधूरी पोषाक पहने हुए थी जिसने वस्तुतः उसका कोई अंग नहीं छुपा हुआ था । उसने कुछ माताओं के लिये उस सायंकाल का आनन्द खराब कर दिया, उसने एक छोटा सायंकालीन हैट और एक सुनहरा बुरका ओढ़ रखा था। उसका पति काले और सफेद वस्त्रों में पुराने ढंग की सुन्दरता के साथ अपनी टेल पहले हुए काले और सफेद वस्त्रों में बहुत फुरतीला लगता था और जब वह भवन में चलता और नया नृत्य आरम्भ करने का संकेत देने के लिये ताली बजाता तो महिलाएं कामना भरी आह निकालतीं । मंदाग्नि के मरीज उस प्यानो वादक के बजाय छः व्यक्तियों का एक आरकेस्ट्रा किराये पर लिया गया था । वे चांदी के रंग के कोट पहने हुए थे जिनके कालर गहरे नीले रंग के थे ।

छोटी सी ड्योढ़ी में लियो का वस्ती से आई हुई एक सुन्दर लड़की के साथ जो होटल के काउण्टर के काम करती थी रोमान्स चल रहा था । उसी समय टोंडा भी इनमें आ मिला ।

"नृत्य भवन में एक बड़ी घटना हो गई" अपना माथा पोंछते हुए उसने कहा । क्ली सैन्डा लड़कियों ने उसे वस्तुतः थका दिया था "क्या तुमने हमारे

आदरणीय अतिथि को देखा है ?" उसने पिछली दीवार की ओर संकेत किया। मैंने पीछे की ओर घूम कर देखा और करीब करीब चिल्ला पड़ा। एक ऊंची कुर्सी पर हैल्गा वर्डी और उसकी मां के बाद स्टर्न बैठा था।

मेरा चकित चेहरा देख कर टोंडा और लियो हंसे। उन्हें मालूम था कि स्टर्न की और मेरी बोलचाल नहीं है और हमारा काफी मजाक उड़ाया जाता था। स्पष्ट ही लड़के इस बात को नहीं समझ सके कि स्टर्न और मैंने अपने अपने चरित्रों की कितनी शक्ति दिखलाई है।

"हैल्गा उसे अपने महमान के तौर पर साथ ले आई है" लियो ने कहा।

"वह क्यों लाई है ?"

"क्या तुम नहीं जानते कि दोनों में क्या चल रहा है ?"

मैंने अविश्वास पूर्वक सिर हिला दिया "हैल्गा और स्टर्न ?"

"तुम किस दुनियां में रहते हो, मिस्टर ?" टोंडा ने मुझ से पूछा।

"हां, आखिरकार प्यार ने उसे जकड़ ही लिया" लियो ने कहा, "यह एक तूफानी प्यार रहा है।"

"मैंने कल रात उन्हें हलवाई की दुकान पर देखा था," टोंडा ने कहा।

"बेचारा स्टर्न, उसने हैल्गा को इस तरह घूर कर देखा मानों उसकी आंखे चाकलेट क्रीम से भरी हों।"

"वह सके पीछे पागल है" लियो ने कहा, "वरना वह यहां आने का कष्ट क्यों करता ?"

यह एक बेहूदा बात है, हैल्गा १२० पौं की एक ठेठ औरत और आदमियों का नेता वह स्टर्न जो लड़कियों को 'हास्यास्पद' समझता था।

"यह तो होना ही था" लियो ने संक्षेप में कहा। "और जब ऐसा व्यक्ति गिरता है तो बुरी तरह गिरता है।"

"वह बहुत जल्दी ही उससे ऊब जायगी" टोंडा ने कहा।

लड़कियां विचित्र होती हैं। "तुम पूछोगे कि कोई लड़की स्टर्न की परवाह ही क्यों करेगी ? वह एक नीरस आदमी है लेकिन वह कभी भी किसी लड़की के साथ नहीं रहा और हैल्गा स्टर्न के गुणों से उत्तेजित है या यह हो सकता है कि स्टर्न के लिये उसके मन में दया का भाव हो।

"दया का भाव ?" टोंडा ने कहा। "वह उसके प्रति दया का भाव क्यों रखे ?"

लियो ने स्टर्न की ओर देखा जो हैल्गा पर से अपनी आँखें हटाता ही नहीं। हैल्गा की मांग बहुत थी और जब बारी बारी से लड़के उसके साथ नाचते तो उसे सिर्फ बैठा रहकर देखते ही रहना पड़ता। ईर्षा से उसकी हालत दयनीय हो गई थी

"उस बेचारे जारज के प्रति क्या तुम्हें कभी अफसोस नहीं हुआ ?" लियों ने कहा।

तमाम शाम बहुत देर तक स्टर्न अपने स्थान पर ही चिपका बैठा रहा और हैल्गा को घूरता रहा जिसका समय बड़ा बढ़िया बीत रहा था। लड़के उसे बड़ी उत्सुकता से देखते थे। कुछ उस पर बेवकूफाना व्यंग कसते थे। उसने कभी किसी को दोस्त बनाने की कोशिश नहीं की और अब भी उसका कोई दोस्त नहीं था जब कि उसे इसकी बड़ी आवश्यकता थी।

मैंने हैल्गा के साथ टांगों नाच नाचने का उपक्रम बनाया लेकिन यह शिष्टाचार के अलिखित नियमों के विरुद्ध होता। यह एक रिवाज था कि कोलोने नृत्य समारोह में लड़के के नाचने के लिये उसके साथ एक 'मुख्य नर्तकी' हो। पहले उसका तीसरे पहर फूल भेजने पड़ते, उसे और उसकी मां को लिवाने के लिये घोड़ा गाड़ी में आना पड़ता और सुबह उन्हें घर लाना पड़ता। 'मुख्य नर्तकी' को पहले साथ में वालत्ज (एक जर्मनी नाच) नाचना पड़ता और इस सबके बाद चार जोड़ों

का वर्गाकार नृत्य, तथा भौतिक और सामाजिक शाम का समारोह होता था। एक मात्र लड़की जिसे मैं अपनी 'मुख्य नर्तकी' के लिये पसन्द करता था, स्टर्न लोला थी, लेकिन वह 'पेन्सियोनेट' में स्विटज़रलैंड में थी। मैंने लड़की के चुनने में उपेक्षा की क्योंकि मैं निश्चय नहीं कर पाया किसे चुनूं। यहाँ तक सभी खूबसूरत लड़कियों से इसके लिये मैंने पूछा लिया था और केवल कुछ सीधी साधी लड़कियाँ छोड़ दी गई थीं। मैंने छोटी ग्रेटल क्रेमर से पूछा जा अप्रसन्नता से अपनी मां के बाद में बैठी हुई थी, जिसकी नाक पहले से भी बुरी तरह बह रही थी और कभी नहीं मुस्करायी थी।

मैंने सोचा कि मैं चार जोड़ों के वर्गाकार नृत्य से रह गया और प्रतीक्षा कक्ष में चला गया। विनोद पूर्ण लड़की ने अपने काउण्टर को छोड़ दिया और प्रवेश द्वार पर खड़ी हो कर नृत्य-घर को देखने लगी। लड़के और लड़कियाँ दोनों ओर पंक्ति में थे। हरवान आमन ने सफेद दस्ताने पहने हुए प्रवेश किया और वह बहुत से असली राजदूतों की अपेक्षा कहीं अधिक राजदूत दिखाई पड़ता था।

फ्राउवान आमन छोटे कमरे रिफ्रैशमेंण्ट काउण्टर के पीछे मेज़ पर बैठी हुई बिलों के बंडल को गिन रही थी।

"और केस्ट्रा का हर साल खर्च बढ़ता जा रहा है" उसने कहा। उसने लिफाफे में कुछ बिलों को रखा और उस पर लिखा "संगीत के लिये।" तब उसने लिफाफे को और बाक़ी रुपये को दराज में रख दिया और उसका ताला लगा दिया।

"क्या तुम चार जोड़ी वाला वर्गाकार नाच नहीं नाचोगे ?"

मैंने कहा कि मेरे पास कोई लड़की नहीं है।

"तुम्हारे साथ चार जोड़ों वाला वर्गाकार नृत्य मैं नाचूंगी," उसने कहा। मैं अपने कंधों पर पीछे देखने लगा। नृत्य के कमरे में जोड़े एक दूसरे

के आमने सामने खड़े हो गये और पहले कौन शुरू करे इसका इन्तजार करने लगे। स्टर्न अपने कोने में अप्रसन्न बैठा हैल्गा को देख रहा था जिसने लियो के साथ चार जोड़े वाला वर्गाकार नृत्य किया था। मैंने कहा अच्छा होता कि मैं फाउवान आमन के पास बैठता और उससे बातचीत करता।

"मेरा खयाल है कि तुम चार जोड़े वाले वर्गाकार नृत्य को सदैव पसन्द किया करते थे?" उसने कहा।

"मैं करता हूं, लेकिन—" मैं रुक गया। मैं अस्पष्टता के लिये कृतज्ञ था। फाउवान आमन के सामने खड़े हुए दिखाई दिये जाने मे मुझे घृणा होती थी, मेरा चेहरा लाल हो गया था।

उसने अपने बुरके में से मुझे रहस्य भरी निगाह से देखा। अच्छा होता यदि मैं उसकी आँखों को देख पाता। मैं उसकी आंखों के रंग को भी नहीं जान पाया।

'ओह' उसने कहा, उसकी आवाज अधिक रूखी और धीमी थी जैसी कि मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी।

मैं चाहता था कि म उसे बिना बुरके के देख सकता केवल चाची आना को यह बतलाने के लिए कि फाउवान आमन के विषय में उसका विचार गलत था। उसने पूछने की मुझ में साहस नहीं था यदि मैं ऐसा करता। इसके बजाय मैंने पूछा, "क्या वह कुछ पीना पसन्द करती है?"

फाउवान आमन रिफ्रेशमेण्ट काउण्टर पर अरुचि से देखने लगी जहां कि केवल पीने की शराब रहित चीजें बेचीं जाती थीं—जो मिचलाने वाले रंगों की सोडा-पेय की बोतलें।

"ओह, वह नहीं!" अपने हाथ की प्रावाज करते हुए, उसने कहा।

उसके इन शब्दों में इस समय अभिमान की मात्रा बहुत कम थी। उस समय से जब कि वह हाल में टांगों नाच दिखा रही थीं।

मैं अधीर हो उठा "अच्छा होता यदि मैं आपको वास्तविक पेय पदार्थ दे सकता।" मैंने कहा।

ऑरकेस्ट्रा ने चार जोड़े वाला वर्गाकार नाच शुरू कर दिया। हमारी ओर किसी का ध्यान नहीं था। मैं झुका और मैंने उनकी अंगुलियों और हाथ की हथेली को चूम लिया।

"क्यों,जैकेज!" उसने बड़ी धीमे से और बिल्कुल नाराज न होकर कहा। वह नृत्य के हाल में दृष्टि गड़ाये हुए थी। अब जोड़े एक दूसरे की ओर बढ़े, नीचे को सिर झुकाया और वापस अपनी अपनी जगहों पर चले गये। वे अपने कदमों को देखने में बड़े लवलीन थे। लड़कियां बड़ी सुन्दर थीं। लड़कों ने लड़की के सिपाहियों के समान व्यवहार किया जो यकायक जिन्दे हो उठे हों। दो माताएं बड़ी प्रसन्नता से चिल्ला रही थीं।

"ऊपर के कमरे में मेरे पास कुछ फ्रान्सीसी शराब है" फाउवान आमन से धीमी आवाज से कहा। वह उठ खड़ी हुई, और उसने मेरा हाथ पकड़ा। एक संकरी लड़की की सीढ़ी सीधे छोटे कमरे से दूसरी मंजिल तक जाती थी। फाउवान आमन आगे आगे चली। मेरे हाथ ठण्डे थे और घुटने करीब करीब उतने ही दुर्बल हो रहे थे जितने उस रात को नाटक का अभिनय करने के लिये रंग मंच पर आने से पूर्व। फाउवान आमन के सोने का कमरा गर्म और छोटे छोटे फारसी गलीचों से सजाया हुआ था। बीच में एक बड़ा गोलाकार पलंग था जिस पर गद्दे रखे हुए थे। अनेक प्राच्य ढंग की बत्तियां धुन्धला प्रकाश बिखेर रही थीं। मैं यह जानने के लिये बहुत उत्सुक था कि यह चीनी है या जपानी। कार्निस पर आदमियों के जिनमें से कुछ वर्दियों में थे, कई चित्र रखे हुए थे। दीवार पर बड़ी बड़ी मूछों वाले एक आदमी के सीने

झुकी हुई एक लड़की का चित्र था। इस आदमी की दृष्टि उष्ण कटिबंध के प्रदेश में होने वाले सूर्यास्त के दृश्य की ओर थी। हमारे रसोइया वेरटा के कमरे में भी ऐसा ही चित्र था। वेरटा के चित्र में यह प्रेमी पीले चन्द्रमा की ओर देख रहे थे।

फाउवान आमन ने शराब उंड़ेली। मैंने उससे पूछा कि क्या उनमें से एक चित्र एडमिरल का है।

"रेस्ट" उसने कहा। अपने गिलास को ऊपर नीच करते हुए वह सारी शराब पी गई लेकिन इस प्रकार पीने के कारण उसकी अन्तिम बून्दें फर्श पर गिर गईं।

"कौन ?"

"एडमिरल, तुम्हारे पिता।"

"नहीं, एक पेग और पीओ।" उसने मुझे गिलास पकड़ा दिया और मेरे नजदीक आ गई।

"क्या मैं तुम्हारा बुरका उतार सकता हूं।" मैंने कहा, मेरी अंगुलियां कांप रही थी। वह रुखेपन से हंसी। हमने शराब का एक और पेग पिया। उसने अपना बुरका हटाने में मेरी मदद की। "जैके, इसे फाड़ना नहीं" उसने कहा। "मुझे दूसरा बुरका यहां नहीं मिल सकेगा। यह फ्रान्स से मंगाया है।"

पर्दा उतर गया। उसकी आंखे वैसी पीली हरी थीं जैसी वेरटा के चित्र में चन्द्रमा की। उसकी रंग पूर्णतः अच्छा। चाची आना हमेशा की तरह गलत थी। मुझे निश्चय हो गया कि फाउवान आमन मुश्किल से चालीस साल की है।

यह पहला मौका था जब मामा एडी ने मुझे बैंक में मिलने के लिये बुलाया। मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि उन्होंने मुझे किस लिये बुलाया

है। जब मैं बैंक के अन्दर गया तो वे एक विशाल डेस्क के पीछे बैठे हुए थे। मि० स्टर्न उनके सामने बैठे थे। उन्होंने मुझे देख कर प्रेम से सिर हिलाया।

"बहुत अरसे से तुम हमसे मिलने नहीं आये, विलर्ट ?" उन्होंने कहा।

मैंने उनसे धीरे से कहा कि मैं बहुत व्यस्त था। स्पष्ट था कि मि०स्टर्न को अपने पुत्र और मेरी अनबन के बारे में कुछ पता नहीं था। उन्हें मालूम भी कैसे पड़ता। हममें शालीनता जो थी।

मि० स्टर्न ने बड़ी खिड़की में से देखा। सड़क के उस पार स्टर्न के डिपार्टमेण्ट स्टोर का इस्पात और शीशे का बना हुआ बाहिरी भाग दिखाई दे रहा था लेकिन मैं निश्चय से यह नहीं कह सकता कि उनकी दृष्टि उसी पर थी।

"पहले बच्चों का पालन पोषन करो, फिर उनकी चिन्ता करो और तब एक दिन यह अनुभव होता है कि पहले से भी ज्यादा अकेले हैं," उसने किसी विशेष को लक्ष्य करके कहा।

मेरे मामा एडी अपनी अंगुलियों को सिकोड़े हुए बैठे थे जो इस बात का चिन्ह था कि वे नहीं समझ पा रहे थे कि क्या कहें। मैंने मि० स्टर्न से पूछा कि लोला स्विटजरलैन्ड से कब वापस आयेगी। जब से वह शहर छोड़ कर गई थी, तब से मैं उसके बारे में उस समय से अधिक सोच रहा था जब वह यहां थी। एक तरह से यह राहत की ही बात थी कि वह चली गई थी। यदि वह यहाँ होती तो मैं उससे अपने साथ घूमने फिरने के लिए नहीं कह सकता था। कोई उस लड़के की बहिन से कह ही कैसे सकता है जिसके साथ उसकी बोल चाल न हो। यह आत्म सम्मान के विरुद्ध होता। किशोरावस्था के अभिमान से बढ़ कर और कोई मूर्खतापूर्ण चीज नहीं है सिवाय पौरुष के गर्व के जो उससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण होता है।

"वह लुसाने में एक सत्र और ठहरेगी" मि० स्टर्न ने कहा "मुझे खुशी है कि वह 'पैशनाट' पसन्द करती है। लोला एक बूढ़े की परिचारिका रहने के वजाय अधिक आनन्द का जीवन विताने की पात्र है।"

"तुम्हें उसे वापस वुलाना होगा" मेरे मामा ने कहा "ब्रूनो के चले जाने के वाद तुम अकेले नहीं रह सकते।"

"क्या वह कहीं जा रहा है?" मैंने पूछा।

मेरे मामा ऐसे दिखाई दिए कि वे अब अपनी वात वदलना चाहते हैं। उन्होंने मि० स्टर्न को एक क्षमा-याचना की दृष्टि से देखा।

"हम सिर्फ वात कर रहे थे" उन्होंने मुझ से कहा "मैंने जो कुछ कहा भूल जाओ, जैके। वह एक गुप्त वात है। वैंकिंग का रहस्य है।"

उनके विश्वास को देख कर मुझे खुशी हुई और उनके टाल-मटोल रवैये से चक्कर में पड़ गया। मि० स्टर्न आह भर कर उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा कि वे वापस स्टोर में जा रहे हैं। उन्होंने हम से नमस्कार किया और वाहर चले गये। एक अकेला वूढ़ा आदमी?

"वेचारे मि० स्टर्न" मेरे मामा ने खेद पूर्वक कहा "अपने जीवन में उन्होंने कितना कठोर परिश्रम किया है और अब उन्हें यह सन्देह होने लगा है कि क्या उन्होंने ऐसा परिश्रम कर के अच्छा किया।"

वे अपनी डेस्क से उठ कर चलने लगे। उनके पैरों की आवाज मोटे गलीचों में ही गुप्त हो जाती थी। मैं सोचने लगा कि जब मैं वड़ा हो जाऊंगा तो यह कितना अच्छा होगा कि मेरा भी एक ऐसा कार्यालय हो जिसमें मोटे गलीचे हों। एक वड़ी डेस्क हो और लकड़ी का चौखटा हो। यह कल्पना करते हुए भी मैं एक वैन्कर वनने का स्वप्न नहीं देखता था जो आंकड़ों में ही व्यस्त रहता हो। आंकड़ों से ही मुझे प्रो० फ्रैन्क की याद आ जाती थी।

"जैके" मेरे मामा ने कहा जो अब भी कदम बढ़ा रहे थे। "मैंने तुम्हें यहाँ एक गप्त बातचीत के लिए बुलाया है। तुम्हारी मां तुम्हारे बारे में बहुत चिन्तित है।" उन्होंने मुझे एक टक देखा।

मैं सोचने लगा कि क्या बात हो गई है। "क्या प्रो० फ्रैन्क के बारे में कोई बात है ?" मैंने पूछा।

मामा एडी ने सिर हिला दिया और कहा"यह कुछ व्यक्तिगत हैं" एक सेक्रेटरी एक चिट्ठी लिए अन्दर आया।

"अभी नहीं, निली" मेरे मामा ने अधिकार के आकर्षक ढंग मे कहा "और तब तक कोई फोन भी मत करना जब तक मैं तुम से कह न दूं।" मामा ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक सेक्रेटरी के चले जाने के बाद दरवाजा बन्द नहीं हो गया। मैं बहुत घबराने लगा।

मेरे मामा तन कर मेरे सामने खड़े हो गये "य नाच के पाठ जैके !" उन्होंने कहा "क्या वे ठीक हैं, क्या वे अब खतम हो गए हैं ?"

मैंने अनुभव किया कि मेरा चेहरा लाल हो रहा है। मुश्किल यह थी कि मैं उसे लाल होने से रोक नहीं पा रहा था।"हां" मैंने कहा। मेरी आवाज लड़खड़ा गई और मुझे गला साफ करना पड़ा।

"कल रात का यह कोलोने नृत्य, क्या वह उसकी समाप्ति थी ?"

"हाँ" मैंने कहा "यह उसकी समाप्ति थी।"

मेरे मामा फिर चलने लगे। उन्होंने खिड़कीसे बाहर देखा और वापिस आ गये और मुझे देख कर कहा "ऐसी बात है तो मैं समझता हूं अब सब कुछ ठीक है और मैं तुम्हारी मां को यह विश्वास दिला सकता हूं कि उसे चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।"

मेरा गला संध रहा था और म कुछ कह नहीं पा रहा था।

"अपनी मां की बात की चिन्ता न करो" उन्होंने कहा "माताएं तो ऐसी बातों के बारे में चिन्ता किया ही करती हैं। यह तुम विश्वास रक्खो कि हमारी बातचीत बिल्कुल गुप्त रहेगी और जो कुछ भी इस कमरे में कहा गया है, यहां तक कि जब मि० स्टर्न यहां मौजूद थे तब जो कुछ गया था, उसे भी गुप्त रक्खा जाएगा।"

मैंने सिर हिला दिया।

"मि० स्टर्न एक बहुत महत्वपूर्ण ग्राहक है।" मेरे मामा ने मेरे लिये दरवाजा खोल कर कहा। जब मैं दरवाजे में से गुजरा तो उन्होंने मुझ से हाथ मिलाया और ऐसी दिलचस्पी की निगाह से देखा मानों उन्होंने मुझे पहले कभी न देखा हो और अब देखने पर बहुत आकर्षक लगा होऊं।

"मैं घबराया हुआ जल्दी से बाहर जा रहा था।"

"जैके, मैंने यह अनुभव नहीं किया" उन्होंने कहा "तुम बड़े होते जा रहे हो। कम से कम आज तक नहीं" वे बहुत खुश नजर आ रहे थे और उन्होंने मेरे कंधो पर थपकी दी।

कुछ हफ्तों तक स्टर्न हैल्गा के साथ हर एक स्थान पर दिखाई पड़ने लगा। वे साथ-साथ सिनेमा, नाटक देखने हलवाई की दुकान पर तथा कोरसो जाते। कोरसो मुख्य सड़क का एक भाग था जहां हर एक आदमी तीसरे पहर देर तक जाता था। उनकी यह खबर मिलती थी कि जब अन्धेरा हो जाता था तो वे न्यू राइफल रेन्ज के पीछे बांहों में बांहें डाल कर चलते। फरवरी का माह था, अन्धेरा जल्दी हो जाता था लेकिन हमारे शहर में कोई बात बहुत दिनों तक गुप्त नहीं रहती थी। स्टर्न और हैल्गा कक्षा की बातचीत के विषय हो गये थे। ऐसी खबर मिला करती थी कि वे पार्क में एक बेंच पर बैठे रहा करते थे। हैल्गा उसे चूम लिया करती थी।

"वास्तव में हैल्गा ही थी जिसने उसका चुम्बन किया था" लियो ने कहा "उसकी हिम्मत नहीं पड़ती।"

मैं खुश हुआ लेकिन मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। आत्म सम्मान की बात थी न।

ठण्डा जाड़े का मौसम था। जब हैल्गा स्केटिंग खेलने के बर्फीले मैदान में जाती तो स्टर्न उसके स्केट और जूते लिए हुए उसके साथ जाता। इससे वास्तव में मुझे एक धक्का सा लगता। मैं भी प्रायः एक लड़की के स्केट प्राय: ले जाया करता था परन्तु मनुष्यों के नेता स्टर्न से ऐसी उम्मेद नहीं की जाती थीं।

वह स्केट नहीं खेलता था। 'इन बेकार की बातों' के लिए उसके पास समय नहीं था। उसने एक बार मुझे ऐसा बतलाया था—स्केटिंग एक 'हास्यस्पद' अभ्यास है जब कि ऐसी बहुत दूसरी जरूरी चीजें हैं जिनकी चिन्ता करनी है। लेकिन अब वह उसके साथ वहां जाता और उसके पूरे जूतों के फीते बांधने के लिए उसके सामने घुटनों के बल बैठ जाता था। जब वह अपने स्केटों पर चलती, वह वर्फ से जमे हुए खेल मैदान की ओर ध्यान न देता और खड़ा रहता।

बड़ी ठण्ड थी और बर्फीली हवा उसके चेहरे पर थप्पड़ की तरह लगती थी। वह वहाँ तब तक खड़ा रहता जब तक उस का चेहरा नीला नहीं हो जाता। वह जन्म से लेकर मृत्यु तक स्वयं ऊपर नीचे कूदता रहता। लकड़ी के मंच का फर्श वर्फ से ढका हुआ था और वह या तो मंच में लगे हुए डण्डे को पकड़े रहता या नीचे गिर पड़ता। लोग उसके पास से लकड़ी के फर्श पर अपने स्केटों की आवाज करते हुए निकल जाते और उसको धक्का देते कुछ भी उसका पीछा नहीं करता और जब हैल्गा मैदान के पीछे की तरफ जहाँ कि अंधेरा था, गायब हो जाती तब वह वर्फ के तेज झोंकों में हो कर उसके रास्ते की रक्षा करने के लिये, उसका लाल स्वेटर और सफेद टोपी की खोज करता हुआ झांका करता।

मैंने उसे वहाँ कई शाम को देखा। मुझ से कहा गया कि हैल्गा के

साथ अधिक समय विताने के लिये ब्लू वाइट्स की नेतागीरी छोड़ दी है। कक्षा बातचीत से गूंज रही थी।

और तव एक दिन यकायक विना किसी विशेष कारण यह उसी प्रकार सव समाप्त हो गया जिस प्रकार यह शुरू हुआ था। हैल्गा कक्षा में उसकी उपेक्षा करने लगी मानो जैसे उसने पहले उसे कभी देखा ही न हो। उसमें और लियो में आपस में प्रेम हो गया था। वे दोनों प्रसन्न और असाधारण रूप से प्रेम में फंसे हाथ में हाथ देकर इधर-उधर घूमा करते थे। लियो उसे नाच घर और सिनेमा ले जाता। कभी-कभी मैं अश्रुपूर्ण भावों के अभिमय के वीच प्रसन्न ठीक उस समय उनकी प्रसन्नता की हंसी सुनता जबकि नायिका व्यक्ति को उस को धोखा देने का अपराधी बतलाती। लोग अपनी आँखों के आँसुओं को पोंछना बन्द कर देते थे और कुछ सिनेमा प्रेमी उन्हें हंसना वन्द करने के लिये 'शश-शश' संकेत करते थे तो भी उस समय हैल्गा और लियो हंसना वन्द नहीं करते थे।

एक वार मालिक ने महरवानी करके उस स्थान से चले जाने के लिये कहा।

हैल्गा के रोमान्स से अलग होकर स्टर्न फिर अपनी किताबों में ही रम गया। वह पहले से भी अधिक झुका हुआ और दुर्वल दिखाई देता था। मैं कभी कभी उसे सड़क पर देखता था। हाथ उसने अपनी वरसाती की जेव में गहराई तक घुसा रखे होते थे। अपने अगल-वगल आने जाने वालों की ओर उनकी दृष्टि से वचने के लिये नीचे की ओर झुक कर देख रहा होता था और एक एकाकी और भयभीत मूर्ति दिखाई देता था। जव मैं गर्मियों की छुट्टियों से वापिस आया तो वह शहर में मौजूद नहीं था। मुझे मालूम हुआ कि वह अपनी पढ़ाई समाप्त करने के लिये वर्लिन चला गया है।

कुछ महीनों वाद वार्षिक प्यानो वादन समारोह की अन्त वेला में मैं लोला से मिला। हर सर्दियों में संगीत के तीन समारोह होते थे, एक

वाइलिन का,एक प्यानोका और एक ओरकैस्ट्रा का । यह तीनों संगीत समारोह बस्ती की संगीत की आवश्यकताएं पूरी कर देते थे और शहर तथा पश्चिमी सभ्यता के बीच एक सांस्कृतिक सम्बंध बना रखते थे । आगे की पंक्तियों की सीटें कोयले की खानों व इस्पात कारखानों के मैनेजर तथा समृद्धि व्यापारी खरीद लेते थे । वे इन संगीत समारोहों में आना एक कष्टदायक काम जमझते थे और उनकी पत्नियाँ उन्हें वहाँ खींच लातीं थीं । संगीत प्रेमी अल्प संख्यक लोग पीछे बैठते थे जहाँ आवाज अच्छी आती थी । हम लड़के पीछे खड़े रहते थे और सामने बैठे हुए असभ्य लोगों के प्रति हम अपने हृदयों में घृणा का भाव लिये रहते थे ।

घण्टी बज रही थी और एक एक करके लौबी से पुनः संगीत भवन में आ रहे थे, तभी मैंने लोला को देखा । उसने बताया कि वह स्विटजरलैंड में पैन्शनाट से कुछ ही दिन पहले लौटी है ।

"हम तीन महाद्वीपों और ग्यारह अलग अलग देशों की चौदह लड़कियाँ थीं," उसने कहा "हमारी आपस में गहरी दोस्ती हो गई ।"

"तुम को उन्होंने क्या पढ़ाया ?" मैंने पूछा ।

"भाषा, इतिहास और शिष्टाचार" ।

यह मुझे बेहूदी बात प्रतीत हुई कि लोला को शिष्टाचार सीखना पड़ा । शहर की अन्य लड़कियों की अपेक्षा ज्यादा शालीनता थी । वह स्वभावतः ठीक काम करती थी । शिष्टाचार स्वतः उसके अन्दर से ही उद्‌भुत होता था । वह पहले किसी भी समय से ज्यादा सुन्दर दिखाई देती थी । मुझे उससे प्रेम हो गया । वह एकाकी लड़की थी । शहर में उसकी कोई सखी नहीं थी । वह लड़कों के साथ कभी बाहर नहीं जाती थी । हर कोई कहा करता था कि लोला बहुत सुन्दर है परन्तु अगर उसे कोई बाहर ले जाये तो उसके साथ क्या बातें करेगा ? वह साधारण बातचीत की परवाह नहीं करती थी ।

शहर में वह सिर्फ कुछ वर्षों से रह रही है और अब भी कुछ अजनबी सी लगती है।

उससे अगले दिन अपने साथ घूमने के लिये या सिनेमा जाने के लिये या किसी भी जगह जाने के लिये कहना चाहता था किन्तु बजाय इसके मैं स्टर्न के बारे में पूछ बैठा।

"मुझे उसे देखे बहुत दिन हो गये," उसने कहा, "वह पत्र ही शायद ही कभी लिखता है।"

"वह बर्लिन क्यों गया है ?" मैंने उससे पूछा।

"तुम ब्रूनों को जानते हो",उसने कहा और इस तरह से धीमे से अपना कंधा उठाया कि वह असहाय सी दिखाई देने लगी। "ब्रूनो अपनी ही दुनियां में रहता है और वह पिता जी की दुनिया नहीं है। मां जब जिन्दा थी तब ज्यादा अच्छा था। ब्रूनो मां की बात सुना करता था। संसार में वह सिर्फ मां को ही प्यार करता और उसका आदर करता। उसकी मृत्यु के बाद वह खिचा खिचा सा रहने लगा और अब—" यह कहते हुए उसने आह भरी।

"पिता जी कहा करते हैं कि ब्रूनो स्टोर में तभी आता था जब उसे किसी चीज की जरूरत होती। वह सदा बहस किया करता था, वह सारी रात ऊपर पढ़ता रहता था, और पिता जी बिजली का इतना ज्यादा बिल आने की शिकायत किया करते थे। ब्रूनो ने पिता जी को समझने की कभी कोशिश नहीं की और पिता जी इतने बूढ़े हैं कि बदल नहीं सकते। हालत यहां तक बिगड़ गई कि मैंने चाचा आर्थर को चिट्ठी लिखी। वे पिता जी के एक मात्र भाई हैं और बर्लिन में रहते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि ब्रूनो कुछ दिनों के लिये वहां आ जाय। यह खयाल हमें अच्छा प्रतीत हुआ। यह बात निश्चित है कि ब्रूनो कुछ दिनों बाद अपने घर का वियोग अनुभव करेगा। जब मैं स्विटजरलैण्ड में थी तो मैंने न केवल पिता जी का बल्कि ब्रूनो का भी वियोग

महसूस किया लेकिन मैं गलती पर थी। ब्रूनो हमारा वियोग महसूस नहीं करता। वह अब कभी वापिस नहीं आयगा।"

उसके स्वर से मुझे धक्का लगा। उसमें अन्तिम निश्चय का भाव था। घण्टी फिर बजने लगी। उसने अपना हाथ मुझे दिया।

"नमस्कार, जैके," यह कह कर वह चली गई।

मैं कुछ डर सा रहा था। मैं चिल्लाया "लोला !"

वह मुड़ी कुछ भृकुटी तानों मानों आश्चर्य में हो। मेरा धैर्य का बांध टूट गया। मैंने हकला कर कहा "मैं—मैं तुम्हें किसी दिन फोन करना चाहूंगा।" यह बात वह नहीं थी जो मैं उससे कहना चाहता था और ूसरे दर्जे की भी बात नहीं थी। मैंने लोला को कभी नहीं बताया कि उस समय मैं उससे क्या कहना चाहता था।

"मैं पिता जी के साथ सेनीटोरीयम जा रही हूं" उसने कहा, "डाक्टर का कहना है कि वहां जाना उनके हृदय के लिये अच्छा है। हो सकता है कि जब मैं वापस आऊं तब तुमसे मिलना हो, जैके।"

तब वह चली गई और मैं खोया सा अकेलापन अनुभव करता हुआ वहां खड़ा रहा। हाल के अन्दर प्यानो वादक ने प्यानो बजाना शुरू कर दिया। वह 'चोपिन' बजा रहा था। 'चोपिन' एक स्वप्निल राग मुझे बहुत पसन्द था परन्तु मैंने देखा कि मैं संग.त सुनने की स्थिति में नहीं हूं, इसलिये मैं घर चला गया।

ईस्टर के बाद तक लोला मुझे दिखाई नहीं दी थी। हम गली में मिले। वह सदा की भांति तेजी से जा रही थी। वह सदा दौड़ती सी रहती मानों कोई लाचारी उसे हांक रही हो। उसने कहा कि वह और उसके पिता ब्रूनो को देखने बर्लिन गये थे।

"कैसा है वह ?" मैंने कहा। वह सदा उसे ब्रूनो कहती था।

"ओह, वह अब बिल्कुल ठीक है" एक गूढ़ हंसी के साथ उसने कहा । "अपनी कक्षा का गौरव है और उसके वाग्प्रदान श्रोता सदा उसे घेरे रहते हैं ।"

"मैं खब समझ सकता हूं ।," मैंने कटाक्ष से कहा ।

उसने मुझ पर एक तीव्र दृष्टि डाली और कहा, "तुम तो ब्रूनो का कभी पसन्द नहीं करते थे, क्या करते थे ?"

मैं बहुत परेशानी में पड़ गया । स्टर्न की अनुपस्थिति में भी उसके साथ मेरी बोलचाल नहीं थी और किसी से यह कल्पना नहीं की जाती कि वह अपने दुश्मन के बारे में बातचीत करेगा ।

"लड़के सदा उससे धोखा खा जाते थे," मैंने बात को घुमा फिरा कर कहा, "और उसने हमारे लिये यह बात आसान बनाने की कोशिश नहीं की कि हम उसे पसन्द करते ।"

"मैं जानती हूं," उसने दुखी मन से कहा । "उसे दुश्मन बनाने में ही मजा आता है और लेना ही जानता है कभी देना नहीं ।"

मैं स्टर्न की बाबत बात करते हुए बेचैनी महसूस करने लगा । "तुम्हारी बर्लिन यात्रा कैसी रही ?"

"ओह बड़ी भयंकर ।"

लोला और उसके पिता जब वे बर्लिन रेलवे स्टेशन पर पहुंचे तो उन्हें एक बुरा धक्का लगा । ब्रूनो वहां मौजूद नहीं था । सिर्फ चाचा आर्थर प्लेटफार्म पर प्रतीक्षा कर रहे थे । वे बेचैन नजर आते थे ।

मि० स्टर्न चिन्तित थे, "ब्रूनो कहाँ है ? क्या वह बीमार है ?"

"नहीं, नहीं, नहीं," चाचा आर्थर ने कहा । "परन्तु अन्तिम क्षण महत्वपूर्ण सभा आड़े आ गई, जिसे वह छोड़ नहीं सकता था ।"

"एक सभा," मि० स्टर्न ने कहा, "मैंन उसे आठ माह से नहीं देखा है आर उसे इसी समय ही सभा करनी थी।"

"पिता जी, शान्त," लोला ने कहा।

परन्तु बूढ़े आदमी की यात्रा खराब हो गई थी। लोला ने अनुभव किया कि पिता जी रूआसे से हो रहे हैं। वे सारी यात्रा में गाड़ी में अपने पुत्र ब्रनो को देखने और उस से बातचीत करने की कल्पना में खुश होते आ रहे थे।

चाचा आर्थर ने अपने भाई को शान्त्वना देने की कोशिश की। उन्होंने कहा "तुम्हें लड़के की इस बात को बुरा नहीं मानना चाहिए, वह अनेक कामों में फंसा रहता है, मुझे ब्रूनों पर आश्चर्य है। मैं बीस साल से बर्लिन में रह रहा हूं। ब्रूनो को यहाँ आये कुछ ही महीने हुए हैं लेकिन फिर भी वह मेरी अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण आदमियों को जानता है।"

चाचा आर्थर का 'डहलेन' उपनगर में एक आरामदायक मकान था जिसमें कि सुन्दर बगीचा था। उनके पास एक कार थी और 'चार लोटन वर्ग' में पुरुषों के वस्त्रों की समृद्ध दुकान थी। जीवन बीमा व्यवसाय भी उनका काफ़ी था, किन्तु वे महत्वपूर्ण लोगों को नहीं जानते थे और कभी नहीं जान पायेंगे। उन्हों ने मि० स्टर्न को कुछ 'कटिंग' दिखाये।

"क्या तुमने ये लेख देखे है ? यह हर किसी की चर्चा के विषय बने हुए हैं।"

मि० स्टर्न ने सिर हिला दिया।

"ब्रूनो हमें कभी कुछ नहीं भेजता," उन्हों ने तीखेपन से कहा "वह तभी पत्र लिखता है, जब उसे पैसे की आवश्यकता होती है।"

लेखों का शीर्षक था 'पूंजीवादी विचारधारा के हेत्वाभास'। इस शीर्षक के नीचे लिखा था "ब्रूनो स्टर्न द्वारा लिखित।" ब्रूनो स्टर्न द्वारा। उसी का लड़का बूढ़ा आदमी चला गया।

"वे मेरे लिये बहुत मुश्किल है," चाचा आर्थर ने कहा, "किन्तु 'क्रीगलमान' ने मेरे दोस्त से कहा है कि वह ब्रूनो के लेखों से बहुत प्रभावित हुआ और क्रीगलमान, तुम जानते हो पार्लियामेन्ट का एक सदस्य है। लोग कहते हैं कि ब्रूनो बहुत उन्नति करेगा। मेरा अनुमान है कि वह राजनीति में बहुत ऊंचा जायेगा।"

'राजनीति ?' मि० स्टर्न न कहा, वह अपमानित दिखाई दे रहे थ "पहले वह नाटकों में मशगूल रहा, अब राजनीति की बारी आई है और घर पर सारा शीशे और इस्पात का बना हुआ छः मंजिला स्टोर पड़ा है जिसमें हम एक और 'विंग' जोड़ देना चाहते हैं। यह सब किस लिये,में पूछता हूं, किस लिये ?"

"पिता जी ! शान्त" लोला ने कहा। किन्तु वह जानती थी कि इससे कोई लाभ नहीं है और उनका गुस्सा शान्त नहीं हुआ। दो दिन बाद वे बर्लिन से चले गये।

अगला वर्ष हमारे स्नातक होने का वर्ष था। पहले स्नातकों की पीढ़ियों द्वारा मातुरा—स्नातक-परीक्षाओं की कठिनाइयों के बारे में हमें बहुत सी डरावनी कहानियाँ बतलाई गई थीं। डर की अपेक्षा इसमें सत्यता अधिक मालूम होने लगी थी। 'मातुरा' में कई लिखित परीक्षाएं होती थीं और एक मौखिक परीक्षा जो आधे दिन तक होता रहती थी, परीक्षा आयोग के सामने हुई। दो परीक्षार्थी एक बड़ी मेज के पीछे प्रोफेसरों के आस पास बठे होते थे। हर एक गंभीर दिखाई देता और एक सफेद कमीज़ ग्रार काला सूट पहने होता। यह मृतक क्रिया के समान लगता था। यह तरीका, जो शाही आस्ट्रिया के स्कूल के दिनों से चला आता था, परीक्षार्थी की अध्यापकों के पक्षपात से रक्षा करता था, ऐसा कहा जाता था : वस्तुतः इसका भाव दोनों ओर पड़ता था और कभी-कभी अध्यापक को परीक्षार्थी की सहायता करने से भी रोकता था।

परीक्षा से पहले अन्तिम सप्ताह में, मैंने दिन-रात परिश्रम किया और अन्तिम क्षण तक वहुत अनावश्यक सूचनाएं रट कर अपने मस्तिष्क में भरने का प्रयत्न किया (और जैसी कि अनावश्यक सिद्ध हुई), और में तव तक रटता रहा जव तक मेरी कक्षा का पहला छात्र आयोग के सामने वुलाया गया। 'W' से आरम्भ होने वाले नामों के लिये एक भयानक असुविधा यह होती है कि आसान प्रश्न जिनकी कि पूछे जाने की गुप्त रूप से आशा होती है वे पहले ही विद्यार्थियों से पूछ लिये जाते हैं और उसे अपने साथियों की कठिनाइयों का साक्षात्कार करना होता है।

सार्वजनिक परीक्षाएं थीं और पहला सुवह ओटोवावर की जिसका नाम सवसे पहले था, प्रतीक्षा में विताया। एक घण्टे वाद में उसकी अधिक प्रतीक्षा न कर सका और मुझे वहाँ से चला जाना पड़ा।

आगे के चार दिन भयानक अनुभव के दिन थे। में प्रत्येक शाम को जिमनेज़ियम जाया करता, यह जानने के लिये कि दिन में क्या हुआ था। प्रो० फँक न गणित की परीक्षा में मैरीन की सहायता करने की कोशिश की थी लेकिन व्यायाम शिक्षक ने जो मैरीन को पसन्द नहीं करता था, इन दयालुतापूर्ण कार्यों से उसे रोक दिया। वह आयोग का सदस्य था और उसने आग्रह किया था कि मैरीन को अधिक कठिन प्रश्न दिये जायें। किसी न किसी प्रकार उसने इसे पास किया लेकिन प्रो० फँक की प्रतिष्ठा जो शिष्यों में तो पहले ही नष्ट हो गई थी अव उसके साथियों में भी समाप्त हो गई।

मेरी वारी पांचवें दिन तीसरे पहर आई। में टोंडा वासेक के वाद वैठा था जिस का नाम कक्षा की लिस्ट में मुझसे ठीक पहले था। हमारे सामने की ओर प्रोफेसर वैठे थे। व्यायाम शिक्षक भी काला सूट पहने अर्थी उठाने वाले के समान लगता था। मुझे उस समय का दुख याद है जिस समय मुझे गणित के प्रश्न दीये गये और वह ढंग भी याद है जिस ढंग से

लघु गणित के प्रश्न मानों मुझ पर व्यंग कस रहे थे, और टोंडा वासिक के जो मेरे वाद में ही वैठा था कांपते हुए और पसीने से तर हाथ की भी याद है। और तव वहुत देर वाद—यह सव कुछ समाप्त हो गया और प्रो० फ्रैंक ने जिनकी आवाज दूर से आती हुई प्रतीत होती थी, मुझे वुलाया और स्नातक परीक्षा की रिपोर्ट मुझे दे दी। मैं इसमें पास हो गया था। फिर कभी मुझे तीन अज्ञात राशि वाले समीकरणों तथा रोम सम्राटों की जन्म तिथियों के विषय में चिन्ता नहीं करनी पड़ी। लेकिन मेरी यह प्रसन्नता थोड़े दिन की थी। मैं अधिक थकान के कारण भारीपन तथा खिन्नता महसूस करने लगा। टोंडा गणित की परीक्षा में असफल रहा। उसे गर्मियों की छुट्टी के वाद वह परीक्षा फिर देनी पड़ी।

दूसरे दिन हमारी स्नातक परीक्षायें पास हो जाने की दावत थी। हफ्तों से हम इस पार्टी के विषय में वातचीत किया करते थे। यहाँ तक कि इसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म वातों पर वहस हुआ करती थी लेकिन प्रत्येक वात में विल्कुल भिन्नता आ गई। उसमें आनन्द का अनुभव नहीं होता था। हर एक थका हुआ था और अलग होने के खयाल दिल में आने से दुख अनुभव कर रहा था। हम आठ साल तक साथ-साथ रहे, इस अरसे में हमारी आपस में वहसें भी हुईं, लड़ाइयां भी हुईं किन्तु जव ये खतम हो जाती थीं तो हम एक दूसरे से फिर हिल-मिल कर रहते थे।

और अव यह सव समाप्त हो जाएगा। हम यह जायते थे फिर फी हमने दस पच्चीस साल वाद फिर मिलने का पक्का निश्चय कर लिया था।

औटो वावर के लिए जो डाक्टरी का अध्ययन करना चाहता था हम को दुख था लेकिन उसे तुरन्त ही टैक्स कलक्टर के दफ्तर में फायल क्लार्क के स्थान पर काम करना पड़ा और छोटा मैक्स रोजेंजवीग अस्पताल में था जहां कि वह कुछ हफ्ते पहले ही, तपेदिक हो जाने के कारण ले जाया गया था। प्राफेसर वहां गये थे और उसकी परीक्षा वहीं चारपाई पर ली गई थी।

प्रा० फ्रैंक ने अपने मानुषीय क्षणों में से एक दूसरे क्षण—वाद में ऐसे क्षण उसके जीवन में कई बार आये थे—मैक्स रोजेन्जवीग की प्रशंसा की जो अच्छे नम्वरों में पास हुआ था। लड़का खुशी के मारे चिल्ला उठा और उसके गालों पर लाल निशान दिखाई पड़े। जब हम अस्पताल में उसे देखने गये तो उसने दर्द की शिकायत नहीं वतलाई और उसने यह आशा प्रगट की कि कुछ महीनों में वह अच्छा हो जाएगा लेकिन डाक्टर ने यह भविष्यवाणी की थी कि वह गर्मियों की समाप्ति तक जिन्दा नहीं रहेगा और वह रहा भी नहीं।

कई पीढ़ियों से जिमनेसियम की स्नातकीय पार्टियाँ पैलेस होटल के दावत के कमरे में हुआ करतीं थीं लेकिन हम अपनी स्वतन्त्र इच्छा प्रगट करना और प्रथा को तोड़ना चाहते थे इसलिए मदिरालय में पार्टी करना निश्चय किया जिसको तै करने में हमको एक रात लगी थी। हमारे परिवारों को वस्तुतः धक्का लगा और शहर का प्रत्येक व्यक्ति हमारी स्नातकीय पार्टी के वारे में जो रात्रि क्लव में होने वाली थी चर्चा करने लगा—जिसकी कि विल्कुल हमने आशा की थी। हमने फैकल्टी के सदस्यों को आमन्त्रित किया लेकिन वे स्वीकार करने में हिचकिचाए परन्तु घोर प्रतिवाद करने के वाद उन्होंने सम्मिलित होने की प्रतिज्ञा की। एक रात्रि क्लव में पार्टी, कल्पना करो !

लियो इसका प्रवन्धक था। नाच के कमरेमें एक वड़ी 'यू' आकार वाली मेज लगाई गई। सफेद लट्टूओं की जगह कम रोशनी वाले लालिमा लिए हुए विजली के लट्टू लगाए थे ताकि स्थान अधिक सुन्दर तथा आदरणीय दिखाई पड़े लेकिन उन्होंने उस स्थान को असुन्दर वना दिया। इस दयनीय चमकीली विजली की रोशनी में आराम कुर्सियों पर जली हुई सिगरेट लाल प्लशकवरोंक घिसे हुए स्थान भी दिखाई पड़ने लगे। दीवारों का कागज मैला था और छत में दरारें पड़ रही थीं।

सिपारियों के द्वारा रस्सी लगा कर बन्द कर दिए गए थे और वहां जाने की मनाही कर दी गई थी क्योंकि फैकल्टी के सदस्यों ने पार्टी में शामिल होने के लिए यह शर्त लगा दी थी—लेकिन आधी रात के बाद व्यायाम शिक्षक ने हर व्यक्ति को इस बात से आश्चर्य में डाल दिया कि वे एक 'सिपारी' में एक सादा दिखाई देने वाली लड़की वेरोनिका के साथ गायब हो गए। टोंडा वासेक ने खूब शराब पी कर उन्मत्त हो उठा और अध्यापकों से कहने लगा कि वर्षों से वह उनके विषय में क्या सोचता रहा है। वहां बड़ी खलबली मच गई। प्रो० फ्रैंक वहाँ से फौरन चले जाना चाहते थे लेकिन कैसे ही न कैसे मैरीन ने उनसे वहां रहने के लिए राजी कर लिया। वह उनके पास बैठ गई और उनके हाथ पकड़े रही। खूब शराब पी गई, खूब गपशप हुई, बहुत से का णिक दृश्य देखने को मिले। किसी ने ब्रूनो स्टर्न का जो हमारे साथ कई साल रहा था जिक्र तक नहीं किया।

सुबह के चार बज चुके थे जब उसने मदिरालय को छोड़ा और चौड़ी सड़क पर चला गया। रात कोमल तथा गर्म थी और सड़क अन्धेरी तथा सुनसान थी।

हम अगल-बगल में चल रहे थे। हमारी बांहें एक दूसरे की बांहों में पड़ी हुई एक कतार उतनी लम्बी बना रही थीं जितनी चौड़ी कि सड़क थी, मैं हैल्गा और लियों के बाद, उन्हें लड़खड़ाने और गिरने से बचाये रखते हुए चल रहा था। वे नहीं जानते थे कि वे कहां जा रहे हैं। वे ब त प्रेम में मस्त थे।

एक टैक्सी हमारी ओर आई। ड्राइवर से ब त देर बकवास करने के बाद ही हमने उसे गुजरने दिया तब एक सिपाही आया। हमने उसे निकलने से मना किया। उसे हैल्गा और लियों की बांहों में हो कर चुपचाप खिसकना

पड़ा। मेरा खयाल है कि शराब पीने के बाद हम सब थोड़ी तेजी पर थ और यह विचार कर कि अब इसका अन्त है कुछ खामोश भी हो गए थे।

मने घर छोड़ा और राजधानी में विश्वविद्यालय में अपना नाम लिखा लिया। मेसी मां, चाचा और चाचियों ने यह निश्चय कर लिया था कि में एक वकील बनना हूँ। मेरी स्वयं की राय नहीं ली गई थी। ताऊ मैक्स ने विएना से मझे अपना सुझाव दिया कि मैं विएना चला जाऊं और डाक्टरी का अध्ययन करूं लेकिन में कभा डाक्टर नहीं बन सकता था। मैं अब भी खून को देख कर डर जाता था। इसके अतिरिक्त लियो काफका कानून का अध्ययन कर रहा था और हम दोनों साथ-साथ रहना चाहते थे।

मेरे कई साथी अपना अध्ययन जारी रखने के लिए शहर में चले गए थे। मैं उनसे मुहल्ले में नाटक घर में या विश्वविद्यालय के सामने अक्सर मिला करता था। हमारी मुलाकातें लापरवाही तथा उदासीनता से पूर्ण होती थीं। उस बड़े शहर में हम लोगों को कुछ हो गया था। हमारी नई बातों में दिलचस्पी हो गई थीं। जिमनेसियम हमें अतीत की बात प्रतीत हाता था। कुछ कुछ ऐसा कि उसे समाप्त कर चुके थे और पूर्णतः भूल चके थे। कोई भी अपनी जवानी के विषय में नहीं सोचता हैं जब कि वह जवान होता है। केवल अभी उन पीछे के दिनों की याद मुझे आती है और जैसे जैसे में बड़ा होता जाता हूं वैसे वैसे पहले दिनों की याद कम धुंधली हाती जाती है और वह तुरन्त ही मेरे दिमाग में आ जाती है।

मैंने लियो का बहुत कुछ देखा। हम दोनों ने एक कमरा लिया जिससे मेरी मां और लियों के माता-पिता को बड़ी प्रसन्नता हुई। उनका यह भ्रम न था कि हम एक दूसरे को बड़े शहर के प्रलोभनों से बचाते रहेंगे यदि वे हमारी परिस्थितियों के बारे में अधिक जानते, तो वे बहुत कम प्रसन्न होते।

शहर में मेरे आने के कुछ दिनों बाद लियो मेरे पास आया था। मैं एक सस्ते मकान में ठहरा हुआ था और फर्नीचर से सजे हुए कमरे की तलाश में था।

"मुझे एक बड़ी बढ़िया जगह मिली है", लियो ने कहा "घर की मालकिन को कोई एतराज नहीं है यदि हम लड़कियों को लायें। घर में एक लिफ्ट (ऊपर ले जाने वाला यन्त्र) भी है। यह सैण्ट जैकब मुहल्ले में है।"

सैण्ट जैकब शहर के सब से पुराने भाग में एक सुन्दर मुहल्ला था। मुहल्ला पुराने घरों के सुन्दर शिल्पकला युक्त सामने के भागों के लिए प्रसिद्ध था और बुडापेस्ट के उन्नतिशील फोटो ग्राफरों के संग्रहों में प्रमुख रूप से दिखाया जाता था। उनकी तस्वीरें घरों के सामने के भागों को सूर्यास्त के समय अथवा संध्या के समय धुंधरे कोहरे के परदे में दिखलाती थीं। वे संध्या के समय की फोटोग्राफरी के विशेषज्ञ थे। गन्दगी ले जाने वाली नालियाँ बड़ी खराब थीं और हवा में थोड़ी थोड़ी दुर्गन्ध आती थी विशेषतः बसन्त और गर्मी के दिनों में। गाइड किताबों में यह लिखा होता था कि यात्री को सैण्ट जैकब मोहल्ले में जरूर जाना चाहिए जो लोग सिर्फ आधे दिन की यात्रा के लिए आते थे उनके प्रोग्राम में भी उसे शामिल किया जाता था और यह सुझाव दिया जाता था कि यह यात्रा रात से पहले-पहले करली जाय। सैण्ट जैकब मोहल्ला सूर्यास्त तक सराहनीय और उसके बाद कलंकित रहता था। यह शहर के खराब लाल प्रकाश वाले भाग के किनारे से लगता था। रात को सुन्दर शिल्पकारी वाले मकानों के अगले भागों के सामने बगल की पगडण्डियों पर वेश्या घरों से आने वालों की एक बाढ़ सी फैल जाती थी।

लियो का कमरा तीसरी मंजिल पर था। ऐलीवेटर (ऊपर जाने की मशीन) पर छपा हुआ संकेत था: 'नीचे दूसरा पेन्सिल का लिखा हुआ

संकेत था : ऊपर जाना अस्थायी रूप से माना । लिफट (चढ़न व उतरने की मशीन) हमेशा खराब रहा करती थी।

ऊपर जाते समय पहले कपड़े बनाने वालों को दुकान पड़ती और सरे मंजिल में कम्यूनिस्ट पार्टी का स्थानीय जिला कार्यालय था। तीसरी मंजिल पर श्रीमती हिरुवा का कमरा था । यह एक सिद्धान्तवादी अधेड़ विधवा थी। श्रीमती हिरुवा रसोई में सोया करती थी और तीनों कमरे किराये पर उठा दिये थे जिससे उसको आराम से जीवन विताने के लिये एक आय हो जाती थी। उसके पास मिश्र की स्वप्न सम्बंधी किताबों का संग्रह था और वह अपने किरायेदारों के स्वप्नों की व्याख्या करने में अपना अधिक समय विताया करती थी।

श्रीमती हिरुवा ने अपने किरायेदारों को इस बात को ध्यान में रख कर चुना था कि कमरे के क मात्र स्थान गृह से प्रत्येक किरायेदार को पूरा पूरा लाभ हो सके। किरायेदार ऐसे थे जिनके काम के घंटे थोड़ी थोड़ी देर बाद पड़ते थे। एक कमरा एक अप्रसिद्ध स्थानीय अखबार में रात को कार्य करने वाले संपादक को किराये पर दे रखा था जो तमाम दिन सोता था और जब काई घर पर नहीं होता था तब शाम को जल्दी दाढ़ी बनाता और स्थान करता था। दूसरा कमरा एक वेटर को दे रखा था जो सैण्टजकाव मुहल्ले की रात की क्लव में काम करता था जहां कि संरक्षकों के थैले समय समय पर चुरा लिये जाते थे। वह शाम को दस वजे ठीक उस समय जिस समय में और लियो घर आते थे, घर से चला जाता। इस क्रियात्मक प्रवन्ध से हम स्नान गृह की भीड़ से मुक्ति पाये हुए थे और सब किरायेदार शान्त रहते थे, एक सरे के लिये आपस में आदर था और कोई न कोई कमरे में सदैव सोया रहता था। श्रीमती हिरुवा ने लियों से कह दिया था कि वह उसके किसी अच्छी लड़की के घर लाने को इस शर्त पर खयाल नहीं करेगी कि वह साथ रहेगी और फर्नीचर को नुकसान नहीं पहुचायेगी।

लेकिन लियो कभी भी किसी लड़की के साथ घर पर नहीं आया। एसके पलंग के पास वाली मेज पर हैल्गावर्डी का फोटो था वह उसे प्रति दिन पत्र लिखा करता और वह प्रति दूसरे दिन उसको लिखा करता। पहले की अपेक्षा अब उनमें प्रेम अधिक था। मैं उससे ईर्षा करता था। मैं भी `मी था परन्तु मेरी लड़की को मेरे प्रेम का कुछ भी पता नहीं था। कोई नहीं जानता था। मैंने लियो को भी यह नहीं बतलाया था कि मैंलोला से प्रेम करता हूं। मैंने उसके विषय में न सोचने की कोशिश की लेकिन उसके बारे में न सोचना हमेशा आसान बात न थी।

लियो सिद्ध झगड़ों का फैसला करने वाला वकील बनना चाहता था अधिक धन इकट्ठा कर हैल्गा से शादी करना चाहता था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके पिता का आग्रह था कि उसका जमाई अच्छी और ठोस आय वाला हो। लियो क्रिसमिस तक दिन गिनता रहता कि वह कब घर जाय और उसे देखे। वह हमेशा मजाक किया करता था लेकिन अब घण्टों तक हैल्गा के बारे में ही बातचीत करता रहता वह बिल्कुल उकता देने वाला हो गया था। एक दिन रात की क्लब वाले वेटर ने हमको अपने स्थान पर आमन्त्रित किया, और हमसे यह प्रतिज्ञा की वहां अच्छा समय बीतेगा और बिना पानी वाले पेय पदार्थ होंगे। उसने कहा कि वह इस बात का ध्यान रखेगा कि हमारे थैलों को कुछ नहीं होगा।

लियो हंसा। "जब मैं १५ साल का था, मैं मदिरालय गया था," उसने कहा "१६ वर्ष की आयु में मैं पानी वाले पेय पदार्थों के बारे में सब कुछ जान गया था। एक साल बाद मैंने अपना पहला डिनर जाकट और पेटेण्ट चमड़ेके जूते पहने। कक्षा के अध्यापक ने मुझे बुरा भला कहा और मेरी शीघ्र अवनति की भविष्य वाणी की। जैसा कि तुम देखते हो, मेरे अपने प्रलोभन हैं लेकिन इनके लिये भी धन्यवाद है।"

मैं क्रिसमस, ईस्टर और गर्मी की छुट्टियों में एक बार घर जाया करता था। घर सिकुड़ गये थे और अधिक छोटे हो गये थे और मुझे ऐसा

प्रतीत होता था कि लोगों के चहरे कुछ वदल गये थे। मुझे वड़ा धक्का लगा जव एक दिन में अपनी पुरानी प्रेमिका मैरीन से मिला। जिससे कि तीन साल पहले में वुरी तरह से प्रेम करता था। ये तीन वर्ष मुझे ३००साल मालूम होते थे। हमारे स्नातक होने के कूछ महिनों वाद उसने प्रो० फ्रैन्क के साथ शादी करली थी। जव में उससे पैस्टीलीन स्तम्भ के सामने पुराने चौराहे पर मिला वहां कि मेयर मई दिवस परेड के दिन भाषण देते हुए फव्वारे से गिर पड़े थे तो वह वच्चे की गाड़ी को ले जा रही थी।

गृहस्थ। होते हुए भी वह अव भी सुन्दर थी। उसका वजन वढ़ गया था, संतुष्ट और जीव में स्थिर दिखाई पड़ती थी।

"क्या उसकी दृष्टि पैत्री नहीं है?" अपने वच्चे की ओर मुस्कराते हुए उसने कहा "कभी कभी वह तुम्हें ठीक उसी प्रकार देखता है जिस प्रकार उसके पिता तुमें उस समय देखते थे जव वे काली किताव में लिखते होते।"

वच्चे ने अपनी आँखें खोलीं और एक विचारपूर्ण भाव से मुझे घूरने लगा। मानों वह एक गम्भीर गणित के प्रश्न पर विचार कर रहा हो। उसकी आकृति उसके पिता से मिलती थी। यह देख कर में चौंक गया और जल्दी से उस पर से दृष्टि हटा ली। मैंने मैरीन से कहा कि वच्चा पैनी दृष्टि वाला है।

"उसका नाम क्या है?" मैंने उससे पूछा और सोच रहा था "क्या यह वही लड़की है जो एक हा छाते में गर्म वसन्त की वर्षा में मेरे साथ घूमने गई थी, वह लड़की जिसका मैंने वत्तियों के नीचे चुम्वन लिया था?"

"टेडी", उसने कहा "ठीक अपने पिता के समान।"

मैंने शून्य भाव से उसको घूर कर देखा। मुझे यह ख्याल भी नहीं हुआ कि प्रा० फ्रैंक का पहला नाम 'टैडी' हो सकता था। उन्होंने सत्र भर के अध्ययन क्रम की रिपोर्टों पर 'प्रो० थियोडोर फ्रैंक' हस्ताक्षर किये थे।

"त" अक्षर के ऊपर की लाइन दोनों ओर उन्होंने इतनी फैला दी थी कि वह उनके शेष सारे नाम को छत की तरह ढक रही थी। मैं उसके हस्ताक्षरों को अच्छी तरह से पहचानता था क्योंकि कई घण्टों तक मैंने उनके हस्ताक्षरों की नकल करने की कोशिश की थी। मेरी कक्षा के सब साथियों में टोंडा वासिक ही जाली हस्ताक्षर बनाने में सब से निपुण था। वह संकट आ पड़ने पर प्रो० फ्रैंक के हस्ताक्षर कर लिया करता था जैसे जब कभी किसी लड़के के बारे में रिपोर्ट इतनी खराब होती था कि उसके माता-पिता को चिन्तित कर देती तब वह उनके हस्ताक्षरों का उपयोग किया करता था। एक जाली रिपोर्ट के नीचे "प्रोथियोडोर फ्रैंक" के हस्ताक्षर करके दूसरे लड़कों पर मेहरबानी करने में टोंडा वासिक को बड़ी खुशी होती थी।

"हम फार्म एक छोटे से छापेखाने से छपा लेते थे जिसका मालिक लियो के पिता का इस बात के लिए ऋणी था कि उन्होंने हत्या के एक मुकद्दमे में उसकी जान बचाई थी।"

और भी कई आपद्‌काल आते थे जब हमारे लिये स्कूल कार्य और कक्षा की किताबों की लिस्ट प्राप्त करना आवश्यक हो जाता था जो सभा भवन में प्रो० फ्रैन्क की ताले बन्द दराज में रक्खी रहतीं थी। सौभाग्य से हमारा अमरीकी सहपाठी केने 'ओ' नेल ताला तोड़ने में दक्ष था और उसके पास चावियों का एक अच्छा गुच्छा रहता था।

बच्चे ने अपनी गालों पर मुक्का मारा और मेरी आँखों में थूका।

"वह तुम्हें पसन्द करता है", मैरीन ने झुक कर बच्चे की आंखें चूमते हुए कहा "वह उन्हीं लोगों पर थूकता है जिन्हें वह पसन्द करता है।"

वह सीधी खड़ी हो गई और बातचीत करने के ढंग से बोली "तुम विश्वविद्यालय जा रहे हो, जा रहे हो न ?"

मैंने सिर हिला कर हामी भर ली।

"तुम्हें वह कैसा लगता है ?"

"बहुत अच्छा" मैंने कहा। इसके बाद हमारी बातचीत भद्दे तौर से रुक गई। हमने कई वर्ष साथ साथ बिताये थे और अब हम एक दूसरे के लिये अजनबी थे।

तब प्रो० फ्रैन्क हममें आ मिले। उन्होंने गम्भीरता से मैरीन का चुम्बन लिया मानो यह भी कक्षा के अध्यापक का कोई औपचारिक समारोह हो परन्तु जब वे बच्चे को देखने के लिये नीचे झुके तो उनका चेहरा नरम और प्रसन्न हो गया।

उन्होंने मेरे साथ हाथ मिलाया। मैंने कुछ घबराहट महसूस की जैसी कि मुझे गणित की परीक्षा से पहले अनुभव होती थी। वे मुस्कराये और कहा कि उन्हें इस बात पर खुशी है कि लियो और मैं विश्वविद्यालय में बहुत अच्छी तरह पढ़ रहे हैं। उन्होंने मेरी मां से बातचीत की थी।

"काफका लियो का दिमाग बहुत अच्छा है" उन्होंने कहा "अब चूंकि वह अपने पिता के हस्तक्षेप से दूर है इसलिये उसको वस्तुतः उन्नति करनी चाहिए। क्या तुमने स्टर्न की बाबत सुना है ? मिस्टर स्टर्न ने मुझे बताया है कि उनका लड़का एक वर्ष मास्को में रहा। वह निश्चय ही तुम सब लड़कों से ज्यादा दूर तक घूमने गया है।"

शहर में हर कोई स्टर्न के बारे में बातचीत करता था। मेरी मां ने कहा कि स्थानीय कम्यूनिस्ट अखबार ने वे चिट्ठियां छाप दी हैं जो उसने मास्को में लिखी थीं।

"मैंने उन्हें पढ़ा नहीं", उसने कहा "मैं उसकी लिखी कोई भी चीज नहीं पढ़ूंगी। राम ! राम ! उसके तरीके ही बहुत अजीब हैं। मैं सोचती हूं कि वह किस प्रकार हमारे घर 'जौस' खाने आया था और किस प्रकार उसने बेरटा का 'स्ट्रूडल' छूने से इनकार कर दिया था। नहीं,नहीं,नहीं और उसका

पिता इतना अच्छा है। मि० स्टर्न सदा तुम्हारे बारे में पूछते हैं, जाओ उनसे नमस्कार कर आओ।

मैं मि० स्टर्न से नमस्कार करने गया। यह किसमस से पहला दिन था जब उसके स्टोर में बहुत भीड़ भाड़ थी। वहां तेज रोशनी से जल रहीं थी और काउण्टर के पीछे अदृश्य लाउड स्पीकरों से संगीत की आवाज आ रही थी। मुझे 'हमारे स्टार' का बहुत गर्व था। राजधानी म भी उस जैसी कोई जगह नहीं थी।

मैंने मि० स्टर्न से मिलने के लिये कहा और मुझसे तीसरी मंजिल में जहां आधुनिक फैशन की पोशाकें थीं, ऊपर जाने को कहा गया। मेरी मां ने कहा कि ये पोशाक बिल्कुल उतनी ही अच्छी तो नहीं होती थीं परन्तु करीब करीब उतनी अच्छी होती थीं जैसी उसने विएना में बदली थीं। मां का यह कथन वस्तुतः एक बड़ी प्रशंसा थी।

लोला पेटी और जरूरी चीजों को लिए हुए काउण्टर के सामने खड़ी थी। उसने एक सादी काली पोपाक पहन रखी थी जो बेचने वाली लड़कियों के लिए एक 'स्टेंडर्ड' पोपाक प्रतीत होती थी। वह स्टोर की मालिक भी है यह बात सिर्फ उसके हल्के नीले 'पुलोवर' से प्रतीत होती थी जो उसने एक 'स्कार्फ' के समान अपने कंधे पर लगा रक्खी थी। उसकी अस्तीन छाती के सामने बंधी हुई थीं। वह पहले से हल्की और दुबली हो गई थी। वह मेरी तरफ आई। उस दक्षपूर्ण अभिनेत्री की तरह सहज चाल से जिसकी चेष्टाओं से यह जाहिर नहीं होता कि वह अभिनय कर रही है।

मैंने उसका आलिंगन करना चाहा बजाय इसके म झुका और उसके हाथ का चुम्बन ले लिया। जब मैं लोला के साथ होता तो मैं वस्तुतः जो वह चाहता वह नहीं कह पाता या कर पाता था चुस्त दिखाई देने वाली सब लड़कियों ने हमें देखा और तब एक दूसरे को इस निगाह से मानों आपस में कह रही हों।

"मैंने जो देखा क्या तुमने भी देखा ?" किन्तु लोला बिल्कुल चैन से थी। लगता था कि उसे उनकी दृष्टियों की कोई परवाह नहीं है।

"मैं नहीं जानती थी कि तुम शहर में हो।" उसने कहा।

"और मैं यह नहीं जानता था कि तुम इस क्रिसमस की भीड़ में अपने पिता की मदद कर रही हो", मैंने कहा।

"पर अब मैं यहाँ एक नियमित कर्मचारी हूं, पिता जी की असिस्टेंट, मुझे भी तनख्वाह मिलती है, सामाजिक बामा है और पेन्शन फण्ड है। इससे मुझे पिता जी की देख भाल का अवसर मिलता है उन्हें अधिक काम नहीं करता चाहिए और उन्हें भी इस बात की खुशी है कि यहां उन्हें अकेला नहीं रहना पड़ता और कोई उनके साथ रहता है।"

इस प्रकार बात यह थी। लोला अपने भाई के लिये चुभने वाले शब्द कह रही थी।

उसने मेरा बाजू पकड़ लिया और कहा, 'मैं तुम्हें अपनी नई मिठाई की दुकान दिखाना चाहती हूं। तुम्हें मालूम है कि हमने अपना पूर्वी विंग बढ़ा लिया है।"

मिठाई की दुकान सबसे ऊपर की मंजिल पर थी। उसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियों में से खान के गड्ढा पर के इस्पात के बर्ज, गड्ढों के पासकी भट्टियाँ जो पिछले लावे का बार उगल रहीं थीं, चिमनियाँ और आकाश में छाया धुआँ और उनके बहुत पीछे कूढ़े के ढेर देखे जा सकते थे। यहाँ से हमारा भद्दा और दा शहर सुन्दर भव्य नजर आता था।

"कभी-कभी" लोला ने कहा, "मैं यहाँ अकेली बैठ कर बाहर देखा करती हूं।"

हमने कॉफी पीयी। धीमीं बत्तियाँ चौकोर चित्रों का आढ़ में थी और गलीचे मोटे थे।

"अच्छा होता कि जब हम अब से कुछ छोटे थे तब हमारे पास ऐसा स्थान होता," मैंने कहा, "मैं नहीं जानता था कि मैं किस स्थान के लिए दिन निश्चित करूं,"

वह मुस्करायी "तुम्हारा तो बहुत सी लड़कियों के साथ मिलना जुलना होता था ?"

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा "सदा गलत लड़की के साथ ।"

उसने मुझ पर प्यार भरी दृष्टि डाली । कुछ लोग अन्दर आये और अपने सामने बैठ गये और उसने अपना हाथ खींच लिया ।

"ब्रूनो ने यह स्थान देखा तक नहीं ।"

"फिर ब्रूनो की बात, क्या हम जब कभी अकेले में मिलेंगे तो सदा ब्रूनो की ही बात होगी ?" मैंने कहा ।

उसने जवाब नहीं दिया किन्तु मैंने देखा कि उसे चोट पहुंची है । मने कहा "मुझे खेद है लोला, पर म तुम्हारे बारे में बात करना चाहता हूं, ब्रूनो के बारे में नहीं ।"

"मैं नहीं जानती कि क्यों मैं ब्रूनो के बारे में सोचती रहती हूं" मानो अपने आप से बोलते हुए कहा । "वह निश्चय ही हमारे बारे में कुछ नहीं सोचता । वह चिट्ठी भी शायद ही कभी लिखता है । हम उसकी पार्टी के दोस्तों की अपेक्षा भी उसके बारे में कम जानते हैं । हाल ही में वह विएना और प्रेग गया था लेकिन उसने यहां रुकने का कष्ट भी नहीं किया । मैं समझती हूं कि पिता जी को उसका पता ही नहीं लगता ।"

उसने अंधेरे में देखा और कहा "वह यहां इसलिये नहीं आता कि वह डरता है ।"

मुझे यह बात समझ में नहीं आई ।

उसने कमरे की ओर इशारा किया। "ब्रूनो जहाँ तहाँ अपने वर्ग के ही लोगों के खिलाफ भाषण देता फिरता है। उन लोगों के खिलाफ जिन के पास पैसा है, घर हैं, दुकानें हैं; जिनका बैंक में खाता है, बीमा है या बुर्जुआ लोगों का। कल्पना करो किसी सभा में कोई खड़ा हो कर उससे यह पूछने लगे कि अपने पिता के 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' के बारे में क्या कहते हो तो उसके लिये परेशानी पैदा हो सकती है।"

मैंने कुछ नहीं कहा। मैं जानता था कि वह ठीक कह रही है।

"वह घर इस लिये नहीं आता कि हमारे से उसकी बनती नहीं है," यह बात उसने दो उंगलियों के मेजपोश पर एक दूसरे के आर पार रखते हुए कही। "जके, मैं ब्रूनों के बारे में बहुत चिन्तित हूं।"

"चिन्तित ?"

वह सारे योरूप में घूम रहा है, भाषण दे रहा है; ग्रुप संगठित कर रहा है; दलीय राजनीति में बुरी तरह फंसा हुआ है। मैं बहुत ज्यादा बुर्जुआ और रूढ़ि वादी हूं किन्तु मुझे चिन्ता है।

मैंने कहा "प्रो० फ्रक समझते हैं कि स्टर्न एक महान् आदमी बनने जा रहा है।"

लोला ने अपना सिर हिला दिया। उसने कहा, "वह ब्रूनो के बारे में कुछ नहीं जानता या कोई नहीं जानता कि ब्रूनो क्या कर रहा है। उसके राजनैतिक उद्देश्य और गुप्त मिशन हैं। वह राजसत्ता के विरुद्ध षडयन्त्र करता है। पिछली गर्मियों में वह बाल्कन, फिनलैण्ड और मध्य पूर्व में था" उसने आह भरी। "मैं समझती हूं कि मैं मूर्ख हूं। मैं ब्रूनो के रहन सहन का तरीका नहीं समझती, मैं दुनियां को बदलना नहीं चाहती। मुझे अपने दैनिक कृत्य बुरे नहीं लगते। मैं नियमित समय पर काम करना पसन्द करती हूं, अपने बिल चुकाती हूं, घृणा और हिंसा से घृणा करती हूं। चलो अब पिता जी के पास चलें।"

मि० स्टर्न दस्ताने और वैसी छोटी-छोटी वस्तुओं के विभाग में थे और एक खनिक की पत्नी को हाथ में पकड़ने का थैला बेचने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने तड़ाक से उसका ताला खोला और थैले में उसे पैसा, दर्पण और रूमाल रखने के अलग अलग स्थान दिखाए।

"इसके आलावा यह सारा अन्दर से भी चमड़े से मढ़ा हुआ है।" उन्हों ने कहा और अन्दर उस फीते को देखा जिस पर कीमत लिखी हुई थी।

"क्यों इतनी कीमत म तो यह सस्ता है न ? इसे लो और अपने आप को दर्पण में देखो।"

उनके पीछे के क्लर्क की त्यौरी चढ़ गई। क्लर्कों को मि० स्टर्न का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था। उनका अव्युत्साह कभी-कभी गड़-बड़ पैदा कर देता था। वे गलत कीमत बता जाते। छोटे-छोटे ग्राहकों के लिये ज्यादा समय बिता देते और बिक्री के सामान्य ढंग में व्यति क्रम पैदा कर देते थे। क्लर्कों ने वाणिज्य के स्थानीय स्कूल में किताबों से बिक्री के तौर तरीके सीखे थे। मि० स्टर्न उनकी किताबों के अनुसार कभी काम नहीं करते थे। क्लर्कों को यह मानना पड़ता था कि मि० स्टर्न स्टोर में किसी से भी ज्यादा माल बेच सकते हैं तो भी उनकी उपस्थिति उनके लिये विशोभ कारी थी।

"पिता जी," लोला ने कहा।

वे ग्राहक को क्लर्क के हाथों में छोड़ देने की अनिच्छा दखाते हुए मुड़े परन्तु जब उन्हों ने मुझे देखा तो उनकी आंखें चमक

"अच्छा, तुम हो विलर्ट, स्वागत है तुम्हारा। तुम्हारे मामा ने मुझे आज सुबह बतलाया कि तुम शहर ही में हो। तुम्हारे मामा बहुत अच्छे आदमी हैं। मुझे खुशी है कि उन्हें बैंक का मैनेजर बना दिया गया है। अब यह बताओ कि तुम्हें हमारा स्टोर कैसा लगा ?

मैंने कहा कि यह एक बढ़िया स्टोर है जो राजधानी के किसी भी 'डिपार्टमेण्ट स्टोर' से अधिक अच्छा है। वे गर्व पूर्वक मुस्कराये।

"क्या तुमने इसे नया विंग दिखाया है जिस में मिठाई की दुकान है ?" उन्होंने लोला से पूछा।

मैंने कहा कि यह बड़े शहरों का सा है, मनमोहक है। मि० स्टर्न की बाछें खिल गईं।

"हमने महरावों के नीचे गलियों के अन्दर वाली दूकानों को खत्म कर दिया है" उन्हों ने कहा "अब वहाँ कोई नहीं जाता। एक बात तो यह है कि हम सस्ता बेचते हैं, हम किसी की भी अपेक्षा अपना माल सस्ती कीमत पर बेच सकते हैं। दूसरी बात यह है कि हमारे पास सामान भी बहुत रहता है। जानते हो एक दिन डा० काफका ने खनिकों से अपने भाषण में कहा था कि स्टर्न के डिपार्टमेण्ट स्टोर ने शहर में मजदूरों का जीवन स्तर ऊंचा कर दिया है। उसने गलत बात तो नहीं कही। ब्रूनो को भी यह बात अवश्य स्वीकार करनी पड़ती।"

वे हमेशा ब्रूनो की ही बात सोचते रहते जो अपने पिता और अपनी बहिन को अब याद भी नहीं करता है।

मैंने कहा, "ब्रूनो अपना जीवन अच्छी तरह बिता रहा है एक दिन वह मन्त्री बनेगा।"

"वह प्रधान मन्त्री बनेगा" मि० स्टर्न ने कहा "या एक दिन उसे अकल आ जायेगी और वह स्टोर में वापिस आ जायेगा।"

एक क्लर्क उनके पास आया और उनके कान में कुछ कहा। मि० स्टर्न ने कहा "खेद है उन्हें एक मिनट के लिये जाना पड़ेगा।"

लोला उनकी देख भाल करती थी।

दूसरी रात में थियेटर से घर आया। घर में शान्ति थी परन्तु ब्रूनो के कमरे में बत्ती जल रही थी। मि० स्टर्न ब्रूनो की कुर्सी पर बैठे थे। शैल्फ पर रखी हुई ब्रूनो की किताबें देख रहे थे और बहुत एकाकी दिखाई दे रहे थे। इससे मेरा दिल टूट गया। मैं बाहर आ गया और रो पड़ा।

दूसरा भाग

सैण्ट जेकब मोहल्ले वाले हमारे घर के प्रवेश द्वार के आगे कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रान्तीय कार्यालय ने एक छोटा-सा बोर्ड लगा रखा था जिस पर सभाओं के नोटिस और पार्टी अखबार 'रड राइट' का दैनिक पहला सफा लगा दिया जाता था। घर आते समय, लियो और मैं उसके शीर्षकों पर एक दृष्टि डाल लेते थे। वे कभी भी अनाकर्षक नहीं होते थे। अखबारउन मामलों की वकालत विशेष रूप से किया करता था जिन्हें लोग अस्वीकार कर चुके होते थे। डिक्टेटर आये और चले गए, युद्ध हुए, अकाल पड़े और विपत्तियाँ आ परन्तु 'रैड राइट' रेलवे कर्मचारी के हृदय द्रावक मामलों को मोटे मोटे अक्षरों में शीर्षकों में छापता। जिस कर्मचारी को सरकारी रेलवे के प्रति-क्रिया वादी प्रबन्ध विभाग ने बरखास्त कर दिया हो या पहले सफे के एक तिहाई भाग में 'सरकारी पेटेण्ट आफिस के सबसे हाल के काले कारनामें छपे होते थे।

अखबार की भाषा गूढ़ कानूनी मुहाविरे दार होती थी जो हमें अपनी कानून किताबों की याद दिलाती थी। कम्यूनिस्ट पार्टी एक अखबार शाम को भ. प्रकाशित करता थी जो कि बहुत ज्यादा पढ़ने लायक हाता था और जो स्त्री पुरुषों के षड्यन्त्रों की घटनाओं, लंगड़े लूलों तथा प्रबल विनाशवाद की खबरों से भरा होता था। बोर्ड और अखबार एक चौखटे से ढका रहता था

जो भारी इस्पात के लोहे के तारों का बना हुआ था। शायद इसलिए कि कोई शौकीन पाठक पहले सफे को लेकर चला न जावे। कुछ शीर्षक अपने आप में स्पष्ट थे ; मुझे एक याद है—पूंजीवादी कुरो द्वारा काटा गया शोषित श्रमजीवी वर्ग, जिसको लियो ने नकल कर लिया और घर अपने पिता को भेज दिया। डा० काफका प्रसन्न हुए ; वे कम्यूनिस्ट थे और उनमें मजाक का भाव था।

वसन्त ऋतु में एक रात को हमने पहले सफे पर स्टर्न का चित्र देखा। उसके नीचे यह विवरण था, "कामरेड वी० स्टर्न जो अभी अभी रूस की यात्रा से बहुत सी बातें मालूम करके लौटे हैं, श्रमिक-गृह के हाल में बृहस्पति की रात को भाषण देंगे। उनके भाषण का विषय है 'पूंजीवाद की घेरा-बन्दी और पूंजीवादी तथा समाजवादी प्रणालियों के सम्बन्ध।'

स्टर्न की आत्म कथा से जिसमें उसकी बुर्जुआ परिवार की पृष्ठ भूमि तथा उसके पिता के डिपार्टमेण्ट स्टोर का कोई जिक्र नहीं था, घटना का महत्व अधिक बढ़ गया था। 'कामरेड स्टर्न' हमने पढ़ा 'कायले की खानों के प्रान्त में पैदा हुआ है जहाँ कि उसे अपनी छोटी आयु में खनिकों की दयनीय-रहने की हालतों में दिलचस्पी हो गई थी। पिछले दो साल मास्को में उसने अध्ययन किया और राजनैतिक तथा वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार के लिये सोसाइटी द्वारा निश्चित किए हुए कार्यक्रम के विषय में बहुत से भाषण दिये। रूस में मार्क्स और लेलिन के सिद्धान्त पर सोसाइटी के सदस्यों द्वारा बहुत से भाषण जन साधारण में दिये जाते हैं। कामरेड स्टर्न ने भी 'क्रान्तिकारी जागृति रूस के लोगों का एक अविच्छेद्य गुण है"। 'इतिहास में व्यक्ति और जनता की भूमिका पर मार्क्सवाद और लेलिनवाद', 'पार्टी का सब से ऊंचा नियम और सरकारी कार्यालय आम जनता की उन्नति करना है" विषयों पर भाषण दिये हैं। कामरेड स्टर्न ने हजारों मजदूरों, किसानों और खनिकों के सामने एक सभा में जो कि मास्को में शिष्टाचार तथा आराम के लिए प्रयोग में आने वाले सेंट्रल पार्क के बाहर वाले थियेटर में हुई थी 'अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति' पर एक व्याख्यान दिया था..."

मैं सभा में गया। लियो ने मेरे साथ जाने से मना कर दिया। उसने

हैल्गा को एक लम्बा पत्र लिखना पसन्द किया। जब मैं श्रमिक गृह पहुंचा तो शहर के केन्द्र में बड़ी और समारोह की शैली वाली यह इमारत, बड़ा हाल पूरी तरह भर गया था। मैं पीछे बैठ गया। तत्पर दिखाई पड़ने वाले लड़के और लड़कियाँ 'रैड राइट' को बेच रहे थे और राजनैतिक परचे बांट रहे थे। स्थानीय कानून के अनुसार एक सिपाही मंच के पास खड़ा था। मंच के ऊपर एक बड़ा झण्डा लगा था जिस पर लिखा था "सब देशों के श्रमजीवी एक हो जाओ।' लेकिन बहुत कम श्रोता श्रमजीवी वर्ग के दिखाई पड़ते थे। ज्यादातर उनमें मध्य वर्ग के लोग, विद्यार्थी, अध्यापक और गृह पत्नियाँ थीं। वे इसलिए आये थे क्योंकि वे रूस उसके और टाल्सटाय, पुशकिन तथा चेखोवस्की को और सब से बढ़ कर रूसी लोगों ने संगीत और लोक नृत्यों को,मैत्री भावना और हास्य को पसन्द करते थे। हमारे देश ने रूस और रूस निवासियों से सदैव दिलचस्पी रहती थी। 'रूस निवासी भी आदमी हैं'यह एक कहावत हो गयी थी। इसका तात्पर्य था "कि साम्यवाद नष्ट हो जाएगा लेकिन रूसी लोगों के वंशानुगत मानुपी गुण उनमें हमेशा रहेंगे।"

मेरे सामने दो लड़के बेठे थे जिनको मैं विश्वविद्यालय से जानता था। एक समृद्ध शहर से आया था जहां उसका परिवार एक सूती मिल का मालिक था। दूसरे लड़के का पिता जमींदार था और प्रसिद्ध घुड़ दौड़ के लिये अश्व पालक था। विश्वविद्यालय में वे 'आदर्श कम्युनिस्ट' के रूप में प्रसिद्ध थे जो हमेशा जाति की भलाई के लिये किसी न किसी प्रकार की काल्पनिक योजनाओं में फंसे रहते थे।

वहाँ बड़ा शोर गुल हो रहा था और तब हाल में स्टर्न आया, मंच पर खड़ा हुआ। उसके पीछे पीछे दो आदमी और थे। वह आगे को झुका हुआ खड़ा था; उसके बाल उसके माथे बर आ रहे थे, उसमें कोई परिवर्तन हो गया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता था। वह चित्रलिखित सा खड़ा था और हमारी ओर इस प्रकार घूर रहा था मानों कुछ सोच रहा हो। लापरवाही से तालियाँ बजी। मंच पर के दो आदमियों में से एक ने जो प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट डिप्टी था और जिसके भाषणों से सदन में कम्यूनिस्ट और मिला

जुली सरकार के सदस्यों में मुक्के बाजी हो जाती थी कामरेड स्टर्न का परिचय देते हुए कहा "हमारे अविकारों के लिये लड़ने वाले ये एक होनहार और प्रसिद्ध नौ जवान हैं जिन्होंने मास्को के बाहर और अन्दर बहुत सा अनुभव प्राप्त कर लिया है। एक बार फिर मन्द मन्द तालियां बजीं और तब स्टर्न बोलने लगा।

अपने पीछे वाले स्थान से मैं स्टर्न की आवाज कठिनाई से सुन पा रहा था लेकिन जैसे-जैसे वह बोलता गया वैसे-वैसे उसकी आवाज ऊंची होती गई और श्रोता लोग पहले से अधिक शान्त हो गये।

"......पूंजीवाद के साम्राज्यवादी दृष्टि कोण का पूरी तरह से विश्लेषण करने के बाद वी० आई० लेनिन इस परिणाम पर पहुंचा कि तमाम देशों में समाजवादी क्रान्ति की एक साथ विजय असम्भव है और उन्होंने यह बताया कि उन्नति की विषमता तथा क्रान्ति की भिन्न-भिन्न समयों में की गई जागृति के कारण श्रम जीवी वर्ग एक या कुछ देशों में पहले विजय हो सकेगा......"

बहुत से श्रोता अपनी कुर्सियों के किनारों पर बैठे हुए आगे को झुके जा रहे थे इस इच्छा से कि कोई शब्द सुनने से न रह जाये। किसी ने भी न तो खांसा और न अपने पैरों को हिलाया।

"......इन ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण इन दो विरोधी प्रणालियों की बहुत लम्बे समय तक साथ-साथ मौजूदगी अनिवार्य है। रूस के विरुद्ध अपनी लड़ाई में साम्राज्यवादी हर उपाय को काम में लाये। हथियारों से सुसज्जित हो कर आक्रमण किया, आर्थिक नाकाबन्दी की; षड्यन्त्र, विध्वंस और जासूसी का सहारा लिया......"

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह सब मैं पहले देख चुका हूं और तब मुझे ब्लू वाइटस के हाल की पहली शाम याद आ गई। वहां भी उसके श्रोताओं का ऐसा ही लगातार ध्यान था मानों मंच पर के इस नौ जवान में से जादू की किरणें निकल रहीं हों। जब मैं स्टर्न की बातों को सुन रहा

होता तो जैसा हमेशा होता था मेरा ध्यान इस वात की ओर कम जाता था कि वह क्या कह रहा है वल्कि इस वात पर अधिक जाता था कि वह कैसे कह रहा है।

"......पंजीवाद का घेरा मौजूद है और कार्य करता है। इस का प्रमाण यह है कि यूनाटेड स्टेटस और दूसरे देशों में प्रति क्रियावादी पार्टियों द्वारा इस प्रकार की कोशिशें होती रहती हैं। रूसी में कोई सामाजिक सहारा न होने पर, साम्राज्यवादी वाहर से जासूस संपत्ति नष्ट करने वाले व्यक्तियों को भेज रहे हैं और हर प्रकार के खराव तत्वों तथा पाखण्डों में उन्हें भरती करने की कोशिश कर रहे हैं ......"

कुछ श्रोता वेचैन हो गए और वे राजनैतिक व्याख्यान की उपेक्षा रूस की यात्राओं के सचित्र वर्णन की आशा रखते थे। स्टर्न वोलता चला गया लेकिन उसे यह अनुभव अवश्य हो गया कि लोगों का ध्यान उसकी ओर कम हो गया है क्योंकि उसने अपने व्याख्यान की वोतों को वदलन शुरू कर दिया था। उसने हमारे देश के प्रति व्यंगपूर्ण वातें तथा इसका जनतन्त्रात्मक संस्थाओं पर व्यंगपूर्ण संकेत दिए। कुछ लोगों ने ताली वजाना शुरू किया। कम से कम कुछ थोड़े से श्रोताओं का समय अच्छा वीत रहा था। मेरे सामने के दो लड़के एक दूसरे को कोहनी मारते थे जव स्टर्न कोई ऐसी वात कहता जो उन्हें खासतौर पर चतुराई की प्रतीत होती थी और उनमें से एक एक पैड पर नोट करता जाता था। सदाशयी अवोव लोगों के लिए उसने ऐसी वातें कहीं जैसे कोई राजनैतिक डायरी पढ़ रहा हो जिसमें कि कहीं-कहीं मार्क्स तथा वी० आई० लेनिन के उदाहरण थे।

व्लू वाइट्स के दिनों के वाद से स्टर्न की हैसियत वहुत वढ़ गई थी। उसका तरीका इतना परिष्कृत हो गया था कि इस पर ध्यान ही नहीं जाता था। एक कुशल व्याख्याता की तरह जिसे उतना ही मजा आता प्रतीत होता है जितना उसके श्रोताओं को उसने व्याख्यान देने में दक्षता प्राप्त कर ली

थी। वह पुराने राजनैतिक स्कूल के बहुत दिखावा करने वाले भाषण कर्ताओं की तरह भाषण नहीं देता था। वह अपनी बात बहुत हल्केपन से कहता था जिस में उसके श्रोताओं को मजा आ जाता था। साथ ही वह अपनी युक्तियां भी रखता जाता और जब वह यह देखता कि उसने अपना नुकसान पूरा कर लिया है तो फिर अपना तरीका बदल देता और भारी तोपखाना ले आता।

"...जैसे जैसे समय बीतता जायगा, बहुत देश पूंजीवादी प्रणाली को छोड़ते चले जायेंगे और समाजवादी कैम्प में शामिल हो जायेंगे। रूस साम्राज्यवादी आक्रमणों को न केवल झेल गया बल्कि अपनी सब गम्भीर परीक्षाओं में से अधिक मजबूत तथा अधिक शक्तिशाली हो कर निकला है।

समय के बारे में उसकी सूझ कमाल की थी। उसने कभी अपने श्रोताओं को विश्वास दिलाने का प्रयत्न नहीं किया। वह यह अनुभव कराता था कि उसे अपने श्रोताओं की स्वस्थ अन्तप्रवृत्तियों पर विश्वास है। श्रोतगण अनुभव करते थे कि उनकी खुशामद की जा रही है। इसलिए उसने सहानुभूति पैदा हो जाती थी। रूस में उसने अपनी सामूहिक यात्राओं के बारे में उन्हें बताया और अन्तर दिखाने के उद्देश्य से हमारे ही देश में एक पूंजीवादी जमींदार की जागीर पर अपनी हाल की यात्रा का वर्णन सुनाया। वहां उस ने कहा किसान गुलामी की दशा में रहते थे।

श्रोताओं में बहुत सी औरतें थीं। उनके लिए उसने रूस के बच्चों की कहानियां सुनाई और दूसरी ओर नेपिल्स की गन्दी बस्तियों के बच्चों की कहानियां रक्खी जहां कि ये बच्चे "उपेक्षित तथा गन्दे वातावरण में पड़े होते हैं और उन्हें बुरी बातों की शिक्षा दी जाती थी।" कुछ औरतें भयभीत दिखाई पड़ती थीं। हां, यह एक बहुत चतुराई से भरा व्याख्यान था।

"...तमाम रूसी राज्यों में कम्यूनिस्ट पार्टी और सरकार विश्व के सब लोगों में दोस्ती और शान्ति की नीति का अटल रूप से पालन कर रही है।'

उसके भाषण की समाप्ति पर बड़े जोर से तालियां पीटी गईं।

कम्यूनिस्ट डिप्टी ने स्टर्न से नाटकीय ढंग से हाथ मिलाया। लोग सब जगह पीठ थपथपा रहे थे और हाथ मिला रहे थे। कई लोग मन्च की ओर गये।

वहाँ जाना आसान नहीं था। एक वड़ी भारी भीड़ ने स्टर्न को चारों ओरसे घेर रक्खा था। सव लोग एक दूसरे को एक वड़े और धनी परिवार के जानते प्रतात होते थे। में ने उन में होकर अपना रास्ता लिया, यहाँ तक कि मैं उसके नजदीक पहुंच गया। वह एक आदमी से रूसी भाषा में वातचीत कर रहा था। तव उसने मुझे देखा और मेरी ओर मुड़ा।

'विलर्ट ! " उसने मुझे आश्चर्य से देखा "जव तुम अन्त में मार्क्स से सहमति हो ?" उसे कहा। वह प्रसन्न दिखाई पड़ता था।

"मैं आया था क्योंकि मैं तुम्हारा भाषण सुनना चाहता था," म ने कहा "मैं अव भी एक पक्का वुर्जुआ हूं।"

वह चिढ़ गया। 'भीतर न आने देने के चिन्ह' उसकी आँखों में झलक रहे थे। में ने कहा "मैं समझता हूँ तुम ने खूव धुआंधार भाषण दिया, स्टर्न। श्रोता भी ऐसा ही समझते प्रतीत होते थे।"

"तुम्हें धन्यवाद" अपने तिरस्कार पूर्ण भाव को छिपाने की कोशिश न करते ए उसने कहा " मैं आगे वढ़ने के लिए अपनें को उत्साहित अनुभव करता हूं। वया तुम अव शहर में रह रहे हो ?"

मैं ने कहा मैं विश्वविद्यालय में जा रहा हूँ। "और तुम ?"

"ओह, मैं तो हमेशा व्यस्त रहता हूं" उसने अस्पष्टता से कहा "मैं वहुत घूममा हूं। मैं भाषण देता हूं और कुछ लिखने का क्षुद्र प्रयत्न करता हूं और चीजों का आयोजन करता हूं।"

"क्या तुम वापस घर गए हो ?"

"नहीं, नहीं" उसने कंधा हिला कर कहा "मुझे समय नहीं मिला है। किसी दिन, शायद जाऊं।"

तब दो उत्सुक नौजवान लड़कियां छोटे बने हुए बालों वाली तथा सींग के फ्रेम वाला चश्मा लगाये उसके पास आईं। वह घूमा और उसने उनसे हाथ मिलाया। उसने मेरी ओर अब और ध्यान नहीं दिया। मैं मंच से उतर आया और चला गया।

अगले दो साल में मैंने स्टर्न से शायद ही कभी कुछ थोड़े शब्दों से अधिक कुछ कहा हो यद्यपि मैं उसे एक बार मिला था। वह गंभीर तथा तत्पर दिखाई देने वाले लड़कों और लड़कियों से घिरा हुआ कॉफी हाउस में दिखलाई पड़ा था और वह उनकी बहुत अधिक प्रशंसा का केन्द्र बना हुआ था। वह चापलूसों को रखना पसन्द करता था। वह कस्बे के शराब के कमरों में और फैक्ट्रीयों में मजदूरों की सभाओं के सामने भाषण दिया करता था। और तब कई महीनों के लिये गायब हो जाता था और कोई नहीं जान पाता था कि वह कहां गया है और क्या कर रहा है। जब कभी मैं अपने किसी सहपाठी से सड़क पर मिलता तो हम अपने स्कूल के दिनों की बातों को याद किया करते थे। लेकिन स्टर्न का नाम कभी नहीं लिया जाता था। हम उन दिनों में उसके बारे में नहीं सोच सकते थे। वह हमारे लिये तुच्छ तथा निरापद बाह्यमुखापेक्षी था। किसी दिन वह बड़ा होगा और बाकी हम सब जैसा ही बुजुआ बन जायगा।

हम अपनी पढ़ाई खतम करके स्नातक बने। हमने पहले पहल काम पाया और पहले पहल पैसा कमाया। समय गुजरता गया जिसमें आनन्द भी थे और समस्याएं भी थीं। हम किसी से प्यार करते और किसी से हमारा प्यार छूट जाता। प्रतिदिन नये नये काम होते और नये नये लोगों से बात चीत करते। आज की स्वल्प चिन्ताएं कल की बड़ी बड़ी समस्याओं से ज्यादा महत्वपूर्ण होती थीं।

वर्ष गुजरते गये, एक दिन जब सड़क पर मेरा अपने एक भूतपूर्व सहपाठी से सामना हो गया तो मैं कठिनाई से ही रुका। हमारी बात चीत

नीरस हो गई था और हम परेशानी अनुभव कर रहे थे। हमें एक दूसरे से कुछ नहीं कहना था और काफी देर के बाद जब हाथ हम मिलाकर नमस्कार करके अलग हो जाते तो हमें मन ही मन बहुत प्रसन्नता होती थी।

दूसरा विश्व युद्ध प्रारम्भ होने से पहले के ये अन्तिम वर्ष अब इतने अतीत के प्रतीत हुए मानो कभी आये ही न हों। यह याद करना असम्भव सा लगता है कि जीवन में सामान्यता आ गई है। मैं अपनी मां और दोस्तों का देख सकता हूं और वे सब जिन्दा हैं। हमेशा किसी-न-किसी प्रकार का युद्ध जारी रहता था परन्तु हमें इससे वास्ता नहीं था। स्पेन, अफ्रीका या दूर पूर्व के सुदूर क्षेत्र में होता आ युद्ध विश्व की सामान्य अवस्था का ही एक रूप प्रतीत होता था।

उसके बाद डिक्टेटर की सेनाओं ने योरुप के कई देशों को रौंद डाला किन्तु हमारे शहर के लोग कुछ और ही समझते थे। वे अपनी रोजमर्रा की कठिनाइयों में इतने मस्त थे कि उनके पास बड़ी बड़ी समस्याओं की परवाह करने का समय ही नहीं था। हर कोई कहा करता था कि हमारे देश की यह हालत नहीं हो सकती। हमारे लोग बहुत अच्छी तरह शिक्षित हैं, उनका प्रवृत्तियां दृढ़ हैं, अपनी परम्पराओं से अच्छी तरह चिपके हुए हैं या बहुत अधिक ऐसे हैं वैसे हैं। जब पास के देशों से हमारे शहर में प्रथम शरणार्थियों का आगमन शुरू हुआ जिनकी आंखों में भय और वेदना झलकती थी तब भी लोगों ने स्वयं को बहलाने की कोशिश की कि उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा। ये हमारी अपराधपूर्ण मूर्खता के दिन थे।

थोड़े थोड़े दिनों में एक बार जैसे क्रिसमस और ईस्टर की छुट्टियों में तथा गर्मियों में मैं वापस अपने शहर जाता था। मेरे सहपाठियों में से कुछ अब भी वहां मौजूद थे। केन 'ओ' नेल अपने परिवार के साथ अमरीका चला गया था। व्लाडो कैलर अपने चाचा की फर्म के लिये शंघाई में काम कर रहा था। प्रो० फ्रैन्क अब जिमनेजियम के डाइरेक्टर बन गये थे।

वे अब पार्क-क्षत्र के एक बड़े मकान में चले गये थ । उनकी पत्नी मैरीन एक गम्भीर मैट्रन बन गई थी जिसे सिर्फ बच्चों और नौकरों में ही दिलचस्पी थी। उनके अब तक तीन बच्चे हो चुके थे। लियो काफका और टोंडा वासिक को छोड़ कर शेष मेरे सारे सहपाठी अपरिचित हो गये थे।

लियो ने हैलगावर्डो से मेरी मां के लिये वह सदा 'वर्डो विग्ज' ही रहेगी, इसके बारे में उसका बहुत हठ था—शादी करली थी और गृहस्थी में बिल्कुल रम गया था। शाम का समय वह सलीपर पहने हुए और घर पर पढ़ते हुए बिताता था। साढ़े दस बजे जाकर बत्ती बुझाता था। वह और हैल्गा खूब सुखी थे। अगर दुख था तो सिर्फ हैल्गा के पिता को जो अपने कॉफी हाउस के दोस्तों से कहा करते थे कि उनकी लड़की बैरन हासमान के एक मात्र पुत्र में शादी कर सकती थी। हासमान कई कोयला खानों के मालिक थे और इतने धनी थे कि उन्हें शहर में नहीं रहना पड़ता था। वे स्विटजरलैण्ड में रहते थे। मेरी मां को लियो और हैल्गा अच्छे लगते थे और वह हैल्गा के पिता से नाराज थी।

"मि० वर्डो विग्ज को अपना मुंह बन्द रखना चाहिए। यहाँ है कोई जो जानता है कि स्विटज़रलेन्ड के एक सेनीटोरियम में हासमान के पुत्र का ज्यादा शराब पी लेने का इलाज हुआ था।"

मैंने कहा मुझे इस बात का पता नहीं था।

"यह बिल्कुल सच है, अगर मि० वर्डो विग्ज को अपनी लड़की प्यारी है तो उन्हें खुश होना चाहिए कि उनकी लड़की ने लियो काफका से शादी की।"

लियो काफका एक घरेलू व्यवस्था के अन्तर्गत अपने पिता की कानून की फर्म में शामिल हो गया था। वह फर्म के पूंजीवादी मुवक्किलों के मामले हाथ में लेता था जब कि उसका पिता काफका स्थानीय साम्यवादियों का

झगड़ालू वकील कहलाता था। जो मुवक्किल इन दोनों में से किसी श्रेणी में नहीं आते जैसे मध्यम वर्ग के लोग, दुकानदार और डाक्टर। उनके मामले दोनों अपने हाथ में लेते थे। कभी-कभी जब काफ़का का पिता एक मजदूर या फोरमेन की पैरवी करता हुआ इस्पात के उस कारखाने पर मुकद्दमा चला रहा होता था जिसकी पैरवी उसी का पुत्र लियो काफ़्का कर रहा होता तो यह बात कानूनी क्षेत्रों में चर्चा का विषय बन जाती और कहा जाने लगता कि वकीलों का संघ मामले की जांच पड़ताल कर रहा है पर होता कुछ नहीं था। स्पष्ट है डा० काफ़का अपने आकर्षण से जिसे मेरी मां 'अप्रति रोध्य' कहा करती थी। वकील संघ पर जादू सा कर देते और उन्हें संतुष्ट कर देते थे।

लियो और मैंने टोंडा बासेक के बारे में बहुत कुछ देखा था। वह हासमान की एक खान के कार्यालय में एकाउटेण्ट था। उसने क्लीसान्डा लड़कियों में से अधिक बड़ी और कम आकर्षक मार्टा से शादी की थी इससे हमें आश्चर्य हुआ। हम सदा यही समझते थे कि उसे वस्तुतः छोटी और ज्यादा सुन्दर जार्मिला से प्यार है। जार्मिला चुलबुली, हठी और सुन्दर थी। मार्टा शान्त स्वभाव की और अनाकर्षक था। टोंडा ने यह सोचा होगा कि जार्मिला के साथ जो किसी न किसी मुसीबत में रहती थी जीवन ज्यादा ऊंच-नीच में से व्यतीत होगा वह दो बार स्कूल से निकाल दी गई थी और अभिनेत्री बनना चाहती थी।

कुछ भी हो टोंडा ने मार्टा से शादी की। लियो और मैं उसमे मौजूद थे। शादी के बाद शहर और ह मैनिस के जहाँ क्लीसान्डा पीयरे एक खान में फोरमैन था बीचो बीच स्थित क्लीसान्डा गृह में एक विशाल दावत हुई। बहुत से रिश्तेदार और दोस्त उसमें आये थे और जौ की शराब, अंगूरी शराब तथा स्लिवो विट्ज़ का खूब दौर चला। तीसरे पहर की समाप्ति तक वर और कई अतिथि मेज के नीचे पड़ रहे और दो राजनैतिक झड़पों में बीच बचाव

करने के लिये पुलिस बुलानी पड़ी। हर किसी ने यह स्वीकार किया कि वह बहुत सफल दावत रही जो एक सुखद विवाह के लिये अच्छा शकुन है।

टोंडा और मार्टा के दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की। जब कभी भी मैं घर आता टोंडा मुझे बड़े गर्व से अपने बच्चों की फोटो दिखाता था। जैसे वर्ष गुजरते गये बच्चे बड़े और उनके फोटो अच्छे होते चले गये। टोंडा फुटबाल अब भी खेलता था परन्तु अब ए टीम में नहीं रहा था। उसे 'ओल्ड मैन्स' टीम में रख दिया गया था जहाँ वह 'हाफबैक' था। ओल्ड मैन की टीम जिसके खिलाड़ियों की औसत आयु २६ वर्ष थी सिर्फ ६० मिनट का खेल खेलती थी किन्तु वे अधिक युवक खिलाड़ियों की अपेक्षा जो १½ घण्टे तक खेलते थे ज्यादा थक जाते थे।

कभी-कभी मैं टोंडा का खेल देखने लियो के साथ फुटबाल के मैदान में जाता था परन्तु अब बहुत मजा नहीं आता था। टोंडा की गति अब बहुत धीमी हो गई थी। मैं और लियो उन दिनों की याद बहुत आनन्द से किया करते थे जब टोंडा शहर में सबसे तेज 'आउट साइड लेफ्ट' था। खेल के बाद हम तीनों शराब घर में चले जाते और पुराने दिनों के बारे में बातें किया करते और अपने आप को बहुत बड़ी आयु का अनुभव किया करते थे। मुझे याद है कि एक बार स्टर्न के नाम का भी जिक्र किया गया था। कहा जाता था कि रूस में कहीं है। कोई नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। वह अभी प्रधान मन्त्री नहीं बना था और यदि वह बन भी जाता तब भी हमें कुछ परवाह न होती।

बैंक मैनेजर मेरे मामा एडी ने मुझ से कहा कि 'नौ जवान स्टर्न' के बारे में उसके पिता के सामने मैं बातचीत न किया करूं।

"मि० स्टर्न अपने लड़के का जिक्र आते ही बेचैन हो जाते हैं," मेरे मामा ने कहा "उनके हृदय रोग ने कुछ समय से उन्हें बड़ी भारी मुसीबत में डाल रखा है।"

जब से मामा एडी बैंक के मैनेजर हुए थे तब से वे अपने लिए 'हम' और 'हम को' प्रयोग में लाया करते थे और 'वह' शब्द उनके लिए बैंक मैनेजर के स्थान पर प्रयोग होता था। वे अपने ग्राहकों की भलाई में दिलचस्पी रखते थे।

"मृत व्यक्ति अपने देय का भुगतान नहीं किया करते," वे कहा करते थ "वास्तव में मि० स्टर्न के बारे में हमें कोई चिन्ता नहीं है। डिपार्टमेण्ट स्टोर खूब अच्छा चल रहा है। वास्तव में यह शर्म की बात है। किसी दिन मि० स्टर्न इस संसार में नहीं रहेंगे और उनके स्टोर का क्या होगा ? ऐसा कोई नहीं है जो उसे संभाल ले।"

"लोला?" मैंने कहा।

"कोई स्त्री ऐसे स्टोर को नहीं चला सकती," मेरे मामा ने विश्वास के साथ कहा "चाची आना के बारे में सोचो।"

चाची आना शहर के सबसे बड़े जूते के स्टोर की मालकिन थी जा परिवार की अनन्त झुंझलाहट का एक कारण थी। चाची आना अपने तमाम भाई-बहिनों तथा बहिनोइयों से यह आशा रखती थी कि वे सब अपने और अपने बच्चों के जूते उसके यहाँ से खरीदें लेकिन वह अन्य दुकानदारों की अपेक्षा ज्यादा मंहगे बेचती थी और अपने सम्बन्धियों को डिसकाउण्ट नहीं देती थी।

"आना के स्टोर में कोई बुरी बात हो जाती है तब वह क्या करती है ?" मेरे मामा ने कहा "वह रोती है"। उन्होंने घृणा से अपना सिर हिलाया। पिछले माह टैक्स कलक्टर ने उसे बुलाया और वहाँ उसने वैसा ही दृश्य उपस्थित किया नहीं, नहीं। व्यापार में कोई व्यक्ति स्त्रियों के बल पर काम काज नहीं चला सकता।

"लेकिन उसने अपना टैक्स कम करा लिया," मैंने कहा।

"यह दूसरी बात है," मेरे मामा ने कहा "वास्तविक बात यह है कि कोई भी अपने आँसुओं के बल पर अपने व्यापार को नहीं चला सकता।" उसके घर पर अपनी थोड़ी देर की मुलाकातों से मैंने लोला के बारे में बहुत कम देखा। मैं उसे बुलाता तो वह बहाना कर दिया करती कि स्टोर में उसे बहुत काम है। मैं उस से 'डिनर' के लिये कहता और वह कह देती कि उसे घर पर अपने पिता के पास रहना है। कोई न कोई बात उसे मुझ से हमेशा अलग रखती और कुछ समय बाद मैं नि त्साहित हो गया और मैंने उस से कहना बन्द कर दिया।

मेरी मां का ख्याल था कि लोला की शादी हो जानी चाहिये थी।

"उम्र के साथ लड़कियों की जवानी बढ़ती नहीं है" मेरी मां कहा करती थीं "मैंने दूसरे दिन शाम को लोला को संगीत गोष्ठी में देखा। उसके मुंह के किनारों के चारों ओर की रेखाएं कुछ अधिक गहरी हो गई हैं। वह अपने पिता पर अपना जीवन निछावर करती है। मि० स्टर्न को उसकी अपेक्षा अधिक समझ होनी चाहिए। क्यों, लोला एक बूढ़ी कुमारी की तरह अपना जीवन बिता रही है। बूढ़ी धनवान्, और अरुचिकारक, वह अपने स्टोर में अकेली रहजायेगी और सारा धन ही उसे प्रसन्न नहीं रख सकेगा। यदि तुम मुझ से पूछते हो तो यह सब तुम्हारे उसी दोस्त का अपराध है जिस लड़के ने बेरटा के स्ट्रूडल को खाने से इन्कार कर दिया था और जो सिर्फ समाज वाद के बारे में बातचीत किया करता था।

"स्टर्न मेरा कभी दोस्त नहीं रहा" मैंने कुछ अप्रसन्नता से कहा "वह घर वापिस आना नहीं चाहता है और व्यापार को संभालना नहीं चाहता है और बेचारी लड़की को काउण्टर के पीछे अपने सबसे अच्छे वर्ष बितान पड़ते हैं," मेरी मां ने कहा "तुम्हें किसी रात को यहाँ 'डिनर' के लिये उसे लाना चाहिए।"

मेरी मां ने किसी लड़की को 'डिनर' के लिये लाने को कभी नहीं कहा था। 'जौस' के लिये तो कहा था परन्तु 'डिनर' के लिये नहीं। डिनर का आयोजन बहुत भारी पड़ता। मैं जानता था कि मेरी मां के दिमाग में क्या विचार थे। दूसरी बार जब मैं लोला से मिला तो मैंने उससे कहा कि क्या वह मेरे साथ भोजन कर सकेगी।

उसने कहा नहीं, उसके पिता की दशा अधिक खराब थी और उन्हें ज्यादा आराम की जरूरत थी और वह उन्हें अकेला छोड़ना पसन्द नहीं करती थी।

"एक नर्स क्यों नहीं रख लेती हो ?" मैंने उससे कहा।

"तुम मेरे पिता को जानते हो। वे घर में अजनबियों को पसन्द नहीं करते। अजनबी उन्हें अधीर कर देते हैं। वे लोगों का विश्वास नहीं करते जब तक उन्होंने हमारे नये रसोइये को परख नहीं लिया तब तक उनके लिये यह एक समस्या बनी रही। वे सामान रखने की अलमारियों, चाँदीकी चीजों तथा हर एक वस्तु के ताला लगा दिया करते थे।" उसने सांस ली।

उसके लिये सदैव उसका पिता या स्टोर या और कुछ कार्य रहता था। मैंने उसे अन्तिम बार लड़ाई छिड़ने के कुछ महीनों पहले देखा था। मैं कुछ व्यक्तिगत मामलों को ठीक करने के लिये घर गया था। मैं एक बड़े अखबार के लिये दिए गये काम से अमरीका जा रहा था। यह चार या पाँच महीने की छोटी सी यात्रा थी लेकिन अमरीका देखने के विचार ने मुझे उत्साहित कर दिया था।

मैंने लोला को बुलाया। हमेशा की तरह से उसने व्यस्त रहने का बहाना किया। नहीं, वह मेरे साथ शाम नहीं बिता सकती। असम्भव ! वह बहुत देर तक काम करती रहती थी। उसके बाद उसे घर को दौड़ना पड़ता था। उसका पिता बहुत बीमार था। मैंने उससे पूछा कि क्या मैं आ सकता

हूं। नहीं, नहीं, उसने जल्दी से कहा। डाक्टरों ने मिलने आने वालों के लिए मना कर रखा था।

मैं अब कुछ नहीं कर सकता था। मामा एडी ने मुझे बतलाया कि लोला स्वयं ही स्टोर को चला रही थी।

"वह कभी नहीं रोती है," मामा एडी ने आदर के भाव से कहा "हां, लोला बिल्कुल एक औरत है। मेरा तात्पर्य यह है कि वह एक औरत की तरह से वस्तुतः काम नहीं करती है।"

और तब उसने मुझे अन्तिम शाम को आमन्त्रित किया।

"तुम्हारी गाड़ी कितने बजे जाती है?"

"नौ बज कर दस मिनट पर।"

क्या तुम्हारी मां भी तुम्हारे साथ स्टेशन जाएगी?"

"नहीं" मैं अपनी माता की अश्रुपूर्ण विदाइयों से थोड़ा सा हमेशा घबराता था। मैं रेलवे स्टेशन और जाने के दुख को पसन्द नहीं करता हूं। जितना जल्दी इससे छुटकारा मिले, उतना ही अच्छा।

"मैं तुम्हें वहां ले चलूंगी," उसने कहा "आठ बजे क्या तुम मेरे दफ्तर आ सकते हो," उसमें स्टर्न के डिपार्टमेण्ट स्टोर के मालिक होने की बहुत झलक दिखाई दी।

"अवश्य," मैंने कहा। मैं उसे आश्चर्यान्वित लगा हूंगा। उस ने भी मेरे आश्चर्य का भाव ताड़ लिया होगा लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और चली गई।

जब मैं दफ्तर आया, बिजली जली हुई थी लेकिन कमरे खाली थे। एक नौकरानी दालान साफ कर रही थी। वहां लोगों की, अलसी के तेल से पुते ए टाट (लिनो लियम) की तथा रुके हुए धुंये की गंध आती थी।

लोला मि० स्टर्न के प्राइवेट दफ्तर में डैस्क के पीछे बैठी थी और आर्डरों की एक लम्बी सूची को चैक कर रही थी। जब मैं अन्दर आया तो उसने अपने सींग के बने फ्रेम के चश्मे को उतार दिया। लेकिन यह काम उसने काफी देर से किया। मैं नहीं जानता था कि वह अब चश्मा पहन रही थी और यह मेरे लिये कोई महत्व की बात नहीं थी।

"मेरी आंखें खराब हो रही हैं" क्षमा याचना के भावसे उसने कहा।

"पढ़ते समय मुझे चश्मे की आवश्यकता पड़ती है।"

"चश्मा तुम्हें ठीक लगता है" मैंने कहा। लेकिन मेरा ख्याल है उसने मुझ पर विश्वास नहीं किया। वह पहले से अधिक दुबली थी और अपना काम काज भली भांति कर लेती थी परन्तु उसके चेहरे पर की रेखाएं गहरी हो गई थीं। मेरी माँ सच कहती थी। स्त्री सम्बंधी कुछ कोमलता लोला के चेहरे से नष्ट हो गई थी जिसे मैं बहुत प्यार करता था। उसके होंठ पतले थे उसके मुंह के किनारों के पास से दो रेखाएं जाती थीं। वह दुख पा रही थी और इतनी गर्वीली थी कि उसे जाहिर नहीं होने देती थी लेकिन उसकी आँखें और उसका चेहरा यह सब बतला देता था। अपनी भावनाओं को दबाने की वह बहुत कोशिश करती थी और इस कोशिश ने उसे नुकसान पहुंचाया होगा। मैं अब समझ सका कि मेरे मामा एड़ी लोला की शान्त कार्य-क्षमता के नये रूप से क्यों प्रभावित थे। 'वह कभी नहीं रोती है' उन्होंने कहा था। हां, यही तो उसके लिये एक मुसीबत थी। वह कभी भी अपने को रोने नहीं देती। कुछ और वर्ष बीतें तो वह और अधीर, बीमार और बेचैन होती जायगी। हमेशा अपना काम करती रहेगी क्योंकि अब उसे अपना काम बन्द करके अपनी परिस्थितियों का सामना करने का साहस ही नहीं होगा। अब उसकी आवाज बदल गई प्रतीत होती थी। संगीत अब भी उसके अन्दर था लेकिन उसमें कठोरता थी। यदि मैं उसे अपनी बाहों में लपेट सकता; उसे मजबूती से पकड़ सकता और उसे कभी नहीं जाने देता तो मैं शायद उसकी

कठोरता को तोड़ने में सफलता पा सकता था। काश मैं उसकी आंखों को चूम सकता और उससे कह सकता—

"मि० स्टर्न कैसे हैं ?" मैंने अपने आपको यह कहते हुए सुना

"डाक्टर का कहना है कि वे अब अधिक दिन तक जिन्दा नहीं रहेंगे" उसने कहा।

वह खिड़की के पास गई, बाहर झांका और अपनी डेस्क पर वापिस आ गई। उसने अपनी उँगलियों से एक सिगरेट शीघ्रता से जलाई मानो वह घबराई हुई हो 'मैंने ब्रूनो को लिखा था और उससे कहा था कि पिता मर रहे हैं और एक बार उसे और देखना चाहते हैं। पिताजी हमेशा उसी के बारे में बात किया करते हैं।"

"और ब्रूनों ने कोई जवाब नहीं दिया है ?"

"नहीं"। उसने अधीरता की सांस ली और सिगरेट को बुझा दिया। उसने कुछ ही कश खींचे थे तभी वह काफी उत्तेजित हो गई थी।

"अच्छा हो अब हम चलें। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारी गाड़ी छूट जाय।" अभी एक घण्टा समय और था, लेकिन मैंने उससे यह नहीं कहा। मैं लोला से सही बात कभी नहीं कहता था।

उसके पास एक तेज, दौड़ के काम की नीची इटैली की कैब्रोलियट हल्की गाड़ी थी और उसने उसे तेज चलाया। इतना ज्यादा तेज जो मुझे पसन्द नहीं था। दस मिनट के समय में जब हम कार में बैठे जा रहे थे उसने मुझ से कोई बातचीत नहीं की परन्तु सीधे सामने ही देखती रही। उसने कार को पेड़ के नीचे स्टेशन के उस पार जहाँ कि अंधेरा था रोक दिया।

"तुम कितने दिन के लिये जा रहे हो, जैके ?" मेरी ओर बिना देखे ए उसने कहा।

"चार, पांच महीने के लिये" मैंने कहा।

"जब तुम वापिस आओगे सम्भव है तुम्हें हर चीज़ में अन्तर मिले" उसने कहा।

मैंने कुछ नहीं कहा।

यकायक वह मेरी ओर मुड़ी "मुझे दुख है, जैके।"

"दुख किस बात का, लोला ?"

"तुम मेरे लिये बड़े अच्छे थे, जैके। ये सब लोग मेरा खून चूसे जा रहे हैं, मेरा कुटुम्ब, मेरे कर्मचारी, मेरे ग्राहक, हर एक आदमी, वे सब मुझ से कुछ न कुछ लेते हैं, मेरी सहायता, मेरा धन, मेरा समय और स्वयं मुझको। तुम ही एक ऐसे थे जिसने मुझ से कभी कुछ नहीं मांगा। तुम मुझे बहुत कुछ देना चाहते थे और मैं—ओह जैके !"

और तब वह मेरी बाहों में थी और मैंने उसे अपनी आँखों को, उसके बालों को तथा उसके मुंह को चूमा। उसके हृदय की धड़कन और गर्मी को मैं अनुभव करता था। मैंने उसे अपने बहुत पास खींच लिया। वह मुझसे जोर से चिपट गई। उसके आँसू मेरे गालों पर आ रहे थे। मैंने उससे त्वचा को सहलाया और उसके आँख के लम्बे बालों को चूमा। मैं उसे बहुत ज्यादा प्यार करता था। इस प्यार ने मुझे चोट भी बहुत पहुंचाई। मैं उसे बहुत प्यार किया करता था।

"ओह जैके, मेरे प्यारे।" वह सिसक रही थी। "मैं तुम्हें प्यार करती हूं, मैं तुम्हें प्यार करती हूं। मैंने तुम्हें हमेशा प्यार किया और मैं चाहती थी कि तुम भी मुझ से उतना ही प्यार करते। लेकिन मैं नहीं कर सकी, अब भी नहीं कर सकी, क्या तुम समझते हो प्रियतम।

हां, मैं समझता हूं, समझता हूं" मैंने उसके निकलते हुए आँसुओं को चूमा।

'तुम वापिस होगे, जैके।"

"हाँ, लोला। मैं तुम्हारी खातिर वापिस आऊंगा।"

उसने अपनी आंखें पोंछ लीं और वह वापिस बैठ गई।

"मैं तुम्हारा इन्तजार करती रहूंगी," उसने बड़े शान्त तथा दृढ़ संकल्प से कहा। मैं जानता था कि वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेगी।

मैं नहीं जानता कि कितनी देर हम वहाँ शान्त एक दूसरे को मजबूती से पकड़े हुए बैठे रहे और यह जानते हुए कि हम सट कर बैठे हैं। हम बोले नहीं। हर एक बात कही जा चुकी थी। तब वह हट गई।

"तुम्हें अब जाना है प्रियतम।"

"हाँ, लोला।"

"एक बार मुझे और चूमो, जैके, मुझे जोर से पकड़ो, अधिक जोर से प्रियतम—"

और तब उसने डरे हुए भाव से तेजी से दरवाजा खोला।

"तुम अब जाओ, प्रिय," उसने कहा, "कृपा जाओ।"

मैं बाहर हो गया। मुझे व त देर तक एकटक देखती रही मानो वह मेरे चेहरे के भाव को, उसकी सूक्ष्मता को याद रखना चाहती थी और तब उसने याकायक झटके से कार को चलाया और चली गई। मैं वहाँ मोटर की पीछे की दोनों लाल बत्तियों को देखता खड़ा रहा। मैं बत्तियां आंखों से ओझल हो जाने के बाद भी बहुत देर तक खड़ा रहा हूंगा।

मैंने दूसरे दिन उससे टेलीफोन पर बात चीत करने की कोशिश की परन्तु वह फोन पर नहीं आई। मैंने उसे तार दिया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। अमरीका पहुंचने के बाद मैं करीब करीब प्रतिदिन उसे लिखा करता था। मैं उससे पत्र लिखने को या तार देने की विनती किया करता था, लेकिन उसने कभी भी न तो मुझे पत्र लिखा न तार दिया। तो भी मैं वस्तुतः चिन्तित नहीं था। मैं जानता था कि वह मेरा इन्तजार कर रही होगी। मैं तीन चार महीने में लौट जाऊंगा।

यह वह महीना था जिसमें दूसरा विश्व युद्ध छिड़ा था।

मुझे इसकी अच्छी तरह याद है। न्यूयार्क में सितम्बर के माह का शाम का समय था जब मैं लेक्जिगटन एवेन्यू के सिनेमा घर में था। जब मैं थियेटर से वाहर आया, तो सुवह के अखवारों का फुटपाथ पर ढेर लगा हुआ था। एक अखवार के पहले सफे पर मैंने एक चित्र देखा। मेरे पेट के अन्दर मुझे धक्का सा अनुभव हुआ। तसवीर में वह वैन्क दिखलाया था जहाँ कि मामा एडी मैनेजर थे और उसके पार पैलेस होटल तथा स्टर्न का डिपार्टमेण्ट स्टोर दिखलाया था। विज्ञप्तियों में हमारे शहर का नाम वहुत आया करता था। मैं जानता था कि जैसा रूप उसका मेरा देखा हुआ है वैसा अव मुझे कभी नहीं मिलेगा और ना ही मिला।

लंदन के कैनाट होटल के मदिरालय में वड़ी भीड़ थी और शोरगुल था। सन् १९४२ का प्रारम्भ था और मे फेअर के तमाम मदिरालयों में दिन के अन्त में वड़ी भीड़ और शोरगुल रहा करता था। एक खुले चूल्हे में आग जल रही थी, लेकिन मैं अव घर से वाहर रह कर प्रसन्न हूं। ऐसा अनुभव नहीं करता था जैसा कि मैं युद्ध से पहले यहाँ किया करता था।

मैं उसके अन्दर चला गया। मुझे उस शाम को लंदन में इतनी जोर की पीने की आवश्यकता अनुभव हुई जितनी कि वहुत से दूसरे आदमियों को भी होती है। तव मैंने एक परिचित आवाज सुनी।

"वलर्ट !"

मैं मुड़ा। "स्टर्न !!"

हमने प्रसन्नता से एक दूसरे का अभिवादन किया। हर एक इस वात से वहुत प्रसन्न था कि दूसरा अभी तक जिन्दा है। स्टर्न थोड़ा सा आगे को झुका हुआ खड़ा था, ठीक वैसा ही जैसा मुझे याद पड़ता था। उसकेवाल उस के माथे पर आगये थे। यद्यपि उसकी आंखों में भिन्नता थी। 'अन्दर न आओ वाहर ही रहो' का निशान अव हट गये मालूम पड़ते थे और अव उसकी

अपरिचित की सी दृष्टि हो गई थी जिसे कि मैं बिल्कुल बतला नहीं सकता था।

"मैं नहीं जानता था कि तुम यहाँ हो," उसने कहा "मेरा ख्याल था कि तुम अमरीका में हो।"

"हां मैं था। मैं कुछ दिन पहले ही आया हूं।"

वह मेरी वर्दी के ब्लाउज पर के युद्ध संवाददाता चिन्ह को देखने लगा। 'मैं देखता हूं," मुस्कराते हुए उसने कहा' "मैंने तुम्हारी अन्तिम किताब पढ़ी थी, बुरी नहीं थी।"

मुझे बड़ी खुशी हुई। स्टर्न से मिली यह प्रशंसा मुझे बहुत दिन तक याद रही।

"क्या अब तुम एक अमरीकन हो?" उसने मुझ से पूछा।

"हां और तुम?"

"ओह, मैं वही हूं जो मैं हमेशा था। मैं वफादारी के बदलने में विश्वास नहीं रखता हूं," उसने ताने से कहा।

"तुम अपनी वफादारी कैसे बदल सकते थे जब तुम किसी के प्रति वफादार ही नहीं हो," मैंने मन ही मन में सोचा लेकिन मैंने यह कहा नहीं।

इसके बजाय मैंने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"वही जो हमेशा से करता हूँ", उसने अस्पष्टता के तरीके से कहा। "इधर उधर घूमना, लोगों से बातचीत करना. हर तरह के काम करना।" मझे लोला के शब्द याद आ गये, "कोई नहीं जानता है कि ब्रूनो क्या करता है। राजनैतिक कार्य और गुप्त मिशन, सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र और गुप्त सभाएं करना।" अच्छा इन दिनों बहुत से आदमी राजनैतिक कार्य तथा गुप्त मिशन में लगे हुए हैं। कम से कम स्टर्न हमारे पक्ष में था। या क्या वह था?

उसने मुझे वताया था कि हमारी जन्म-भूमी के स्थानीय दूतालय में उसका एक छोटा सा दफ्तर है। यह दूतालय विना देश के था। देश को एक विदेशी सेना ने अपने अधीन कर लिया था। विना देश के वहुत से आदमी तथा दूत थे। स्वतन्त्रता की आशा से वे देशभक्ति सम्वंवित कार्य करते थे।

यकायक मेरी समझ में आया कि स्टर्न भिन्न क्यों दिखाई पड़ता था। उसके कपड़ों के कारण। वह हमेशा शरीर से चिपकी हुई पोषाक पहने होता था, उसके पेण्ट में सिकुड़नें पड़ी हुई होता थीं, उसकी जेवों में कागज़ भरे पड़े रहते थे, नकटाई ठीक ढंग से नहीं होती थी। अव वह एक सफेद कमीज, एक पट्टीदार टाई,एक काला सैवाइनरी का सूट पहने था। वह अव भी एक क्रांति-कारी जैसा नजर आता था परन्तु अव उसमें सभ्यता आ गई थी।

"तुमने हमारे देश को कव छोड़ा ?" उसने मुझ से कहा।

"लड़ाई छिड़ने से चार महीने पहले। मैं अमरीका में था। अव वापिस जाने वाला हूं। लेकिन वास्तव में मैं गया नहीं।"

हम मदिरालय के वीच में खड़े हुए छोटे छोटे वाक्यों में वातचीत कर रहे थे। हमारी यह वातचीत ऐसेदो आदमियों की अविराम और असंगत वात-चीत थी जिन्होंने वर्षों से एक दूसरे को न देखा हो और अव अपनी सामान्य स्मृतियों के क्षीण धागों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हों।

"तुम्हारे परिवार की कोई खवर ?" मैंने कहा।

"दिल के दौरे से पिता की अगस्त १९३९ में मृत्यु हो गई। वे वड़े भाग्यशाली थे।" मैं जानता था उसके कहने का क्या अर्थ था—"मरते समय मेरे पिता को वहुत यन्त्रणा नहीं सहनी पड़ी। वे शान्ति से चारपाई पर पड़े थे।" हमने टोंडा, लियो और दूसरे दोस्तों तथा वहुत सी भयानक वातों के वारे में जो हुई थीं और कुछ अनोखी घटनाओं के वारे में वातचीत की। लोला के सिवाय हर व्यक्ति के वारे में वातचीत की, लेकिन मैं वस्तुतः उसी के वारे

में बातचीत करना चाहता था। वेटर हमें धक्के देकर चले जाते थे, लोग मेज की तलाश में थे लेकिन हमें इसका पता ही नहीं लगा। तब एक दाढ़ी वाले अंग्रेज कर्नल की कुपित दृष्टि को हमने देखा और तब स्टर्न ने अपने हाथ को अपने माथे पर खिसकाया जो उसके विशेष संकेतों में से एक संकेत था।

"हम एक जगह बैठ जावें" उसने कहा।

हम को एक छोटे से कमरे के पीछे के भाग में एक मेज मिल गई जहां शोर कुछ कुछ कम हो गया था।

वेटर आया।

"विस्की और सोडा," मैंने कहा।

"यही मेरे लिये," उसने कहा। लेकिन जब पेय पदार्थ आये उसने अपने पेय पदार्थों को छूआ ही नहीं। वह शून्य चित्त से ऊपर को देखता रहा।

जब लड़ाई छिड़ी थी तब मैं घर पर था। मेरे पिता की मृत्यु के कुछ दिनों बाद की बात थी। हर एक आदमी अपने सामाजिक कार्यों में व्यस्त और हमेशा की तरह किसी ने भी उसकी परवाह नहीं की। हर एक आदमी बातें और योजनायें बनाया करता था परन्तु उसका पालन कभी नहीं कर रहा होता था।

वह कुछ देर चुप चाप रहा मानो उचित शब्द पाना कठिन हो रहा हो।

"मैंने रूस पहुंचने की कोशिश करने का पक्का इरादा किया। मैं वहां अपनी पढ़ाई के लिये पहले जा चुका हूँ मास्को और लेलिन ग्रेड में मेरे दोस्त थे लेकिन वहां पहुंचना आसान नहीं था। जर्मन हर जगह पहले से ही थे। वहां पहुंचने में नदियां पार करनी पड़तीं थीं, जंगलों में सोना पड़ता था; सिपाहियों, पुलिस, सामान्य रक्षक, सशस्त्र घुड़सवारों, चुंगी के आदमियों तथा

बन्दूक लिये हुए लोगों और उन लोगों से जो विश्वास घात कर सकते थे, बच कर निकल भागना पड़ता था।"

कुछ दिनों वह ल्वोऊ में ठहरा जो कि कभी पोलैन्ड का शहर था और अब रूस का था। पच्छिम से शरणार्थियों के आने के कारण इस की आवादी शान्ति के समय की आवादी से तिगुनी हो गई थी। ज्यों ही उन्हें रहने का घर तथा पेट में डालने को गरम गरम शोरवा मिलने लगा था, वे वहाँ बसने लगे थे और अपने जीवन की उन्हीं पुरानी बातों के करने में लग गये थे।

"उन में से ज्यादातर" स्टर्न ने कहा, "चीजों के खरीदने और वेचने में व्यस्त रहते थे और उन छोटे छोटे कामों में जिन को वे हमेशा से करते आ रहे थे मानों कुछ भी परिवर्तन न हुआ हो।" यह दृश्य अरुचिकर था। अगर कोई उनसे पूछता कि वे वहाँ रहने का इरादा रखते हैं तो वे कहते: "वेशक हम कहाँ जायें–शायद रूस के अन्दरूनी हिस्से में जहाँ वे हम को कैम्पों में रख देंगे और भूखों मार देंगे ? लेकिन हुआ उल्टा। वे जो ठहर गये थे, कैम्पों में रख दिये गये। दूसरे जो अपनी इच्छा से इस कारण से नहीं कि जर्मनी ने उन्हें आगे जाने के लिये विवश किया, पूर्व में चले गये, मजदूरों के कैम्प। में कभी नहीं भेजे गये।"

"तुम सीधे मास्को क्यों नहीं गये ?"

कोई संपर्क स्थापित करने के साधन नहीं थे। जिन लोगों को मैं जानता था उन लोगों से मैं संबंध स्थापित नहीं कर सका लेकिन मैं उन महीनों को ल्वोऊ में नहीं बिताना चाहता था क्योंकि वे वहाँ बुरी तरह बीतते। उन्हों ने मुझे दुबारा विश्वास दिलाया कि जो कुछ मैं कर रहा था वह ठीक था। मेरे चारों ओर ये सब आदमी के, छोटे मोटे आपसी झगड़े थे, आपस में सौदा करते थे, लेन-देन करते थे, बातचीत करते थे। एक निश्चित कार्य क्रम सहित भविष्य का सामना करने में डरते थे। रूस का रेडियो

प्रतिदिन इन शरणार्थियों से रूस आने के लिये अपील किया करता था। अन्त में मैंने मास्को का रास्ता लिया। मैं कुछ दिन वहां ठहरा।

"और अब तुम पश्चिम में वापिस आये हो ?"

"कुछ दिनों के लिये," उसने अस्पष्टता से कहा। उसने मुझे वह सब बतलाया जो उसे बताना था और उसने दूसरा शब्द नहीं कहा लेकिन मुझे अधिक जानना था।

"क्या तुमने लोला के बारे में सुना है ?"

"ओह, लोला," उसने अपने माथे को रगड़ते हुए कहा। मानो अपनी बहिन के बारे में पूछा जाना उसके लिये बहुत दूर का विचार था जो उसके दिमाग में नहीं आ पाता था।

"वह कहां है ?"

"वापिस घर, मेरा अनुमान है। उसने साथ आना पसन्द नहीं किया, स्पष्ट बात यह है। मैं नहीं समझता कि मेरे साथ वह अपनी यात्रा यहां तक सही सलामत करके आ सकती थी, शायद वह डरती थी।"

"लोला," मैंने विश्वास के साथ कहा "कभी नहीं डरती थी।"

उसने कुछ आश्चर्य से मुझ पर दृष्टि डाली—मैंने अपनी आवाज को ऊंचा किया—लेकिन तब उसने कंधा हिला दिया। उसने घर पर ही रहना पसन्द किया। वह अब अपना निर्णय स्वयं करने के लिये काफी बड़ी हो गई है।'

"और अब ?"

"हमारे एक एजेण्ट ने कुछ महीनों पहले उसे वहां देखा था।"

मैं उत्साह में आगे को झुका "और—?"

"वह पुराने पते पर ही रहती है," उसने शान्ति से कहा। मानो वह किसी अजनबी के बारे में बातचीत कर रहा था।

में विक्षुब्ध हुआ। "क्या कोई ऐसी बात नहीं है जो तुम उस की मदद कर सकते हो ?"

उसने अपने आप को रोक लिया। 'भीतर न आओ, बाहर रहो' निशान उसकी आंखों में दिखाई पड़ा।

"उसकी मदद करना ? क्या यह भूल गये हो कि युद्ध जारी है ?"

"तुम हर कहीं लोगों को जानते हो। क्या तुम उसे खाना या पैसा नहीं भेज सकते ? क्या तुम उसे वहाँ से बाहर नहीं निकाल सकते ? लोग युद्ध के समय में भी रिश्वत दे कर वहाँ से बाहर आ गये हैं।"

उस की आंखें ठण्डी हो गई थीं। "तुम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, विलर्ट। हमेशा मुझ से कहते रहते थे कि मुझे क्या करना चाहिये था, क्या तुम ऐसा नहीं कह रहे थे ?"

उसने मुझे बहुत देर तक देखा तब मेरी समझ में आया कि वह हमारी मूर्खता पूर्ण लड़ाई को नहीं भूला है जब हम बीस साल पहले बच्चे थे। बीस भयानक, लम्बे वर्ष। एक दुनियाँ ही छिन्न-भिन्न हो चुकी थी स्टर्न रहस्यमय प्रसिद्धता का व्यक्ति हो गया था। लेकिन अब भी वह एक मूर्खता पूर्ण बहस को याद करता था। वह कभी नहीं भूल पायेगा या क्षमा कर पायेगा।

"तुम एक मूर्ख की तरह बातचीत कर रहे हो," उसने अपनी आवेश-शून्य आवाज में कहा। "यह असम्भव है।" मैंने उसके इन शब्दों को अन्तिम शब्द मानने से इन्कार कर दिया।

"तुम प्रयत्न भी नहीं करोगे। अपनी एक मात्र बहिन के लिये और तुम उस की मदद के लिये एक ऊंगली भी नहीं उठाओगे। तुमने लोला को कभी नहीं चाहा।"

"नहीं," उसने कहा "मैंने नहीं चाहा।"

मैं कुछ कह नहीं पाया ।

"लोला और मुझ में कभी भी घनिष्टता नहीं रही," उसने कहा "तुम यह जानते हो, क्या तुम नहीं जानते ?" वह मुझे हमेशा डाँट दिया करती थी क्योंकि पिता के प्रति मेरा व्यवहार अच्छा नहीं था । उसने कभी भी मेरे दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न नहीं किया । वह हमेशा अतीत में रहा करती थी जिसका अब कोई अस्तित्व नहीं है । हम मानव जाति के इतिहास की सबसे बड़ी क्रान्ति में से गुजर रहे हैं किन्तु लोला ने कुछ नहीं सीखा । उसे यह बात समझ में नहीं आती कि कोई भी प्रगति के विचारों को रोक नहीं सकता । कोई नियाग्रा प्रपात का प्रवाह मोड़ने की कोशिश भले ही कर ले, उसने मेरी बात समझने की कभी कोशिश नहीं की ।

वह तन कर अपने होंठ मींचे हुए बैठा रहा । उसकी पुतलियां सिकुड़ गईं और आँखें सफेद हो गईं जैसा कि हमेशा उसके अन्दर घृणा और क्रोध के भाव आ जाने पर हुआ करता था । लोला उसकी कोई परवाह करने नहीं जा रही थी ।

उसने उसे झिड़क दिया था ।

हम चुपचाप बैठे रहे जब तक मैंने शराब पीना समाप्त नहीं कर दिया । जब हम उठ खड़े हुए, तो फिर हम एक दूसरे के लिये अजनबी हो गये ।

मैंने लापरवाही से कहा कि हम किसी रात को साथ साथ भोजन करें और उसने कहा, "हाँ हम किसी दिन भोजन करेंगे ।" लेकिन हम कभी करना नहीं चाहते थे और हम फिर कभी लंदन में एक दूसरे से नहीं मिले ।

आगे आने वाले सप्ताहों में मैंने उसे कई बार देखा लेकिन मैंने उससे बातचीत नहीं की । वह एक बहुत सुन्दर औरत के साथ था जो भली भांति पोशाक पहने हुए थी और स्पष्टतः अंग्रेज औरत मालूम देती थी । मुझे याद है कि एक बार मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ था । कोई स्टर्न को स्त्री के साथ देखने की आशा नहीं कर सकता था, विशेषकर सुन्दर औरत के साथ । लेकिन मैं उसके

विपय में भूल गया और सिर्फ कुछ सालों वाद अत्यन्त भिन्न परिस्थितियों में मुझे उसकी याद आई।

तव वह चला गया और मैंने भी लन्दन छोड़ दिया। जव मैं १६४२ के अन्त में लौटा, मैं एक कर्नल से मिला जिसे मैं विश्वविद्यालय के दिनों से ही शहर से ही जानता था। वह एक राज दूतावास में कार्य करता था। मैंने उससे स्टर्न के वारे में पूछा।

"वह कुछ दिनों पहले छोड़ गया। तेहरान चला गया। मालूम होता है वह फारसी वोल लेता है।"

मुझे स्टर्न ब्रूनो का वह रूप याद आया जव वह पाँचवीं कक्षा में मेरे आगे वैठता था और जव हम फुटवाल खेल रहे होते थे तो वह खेल घंट में फारसी व्याकरण पढ़ता रहता था। उसे पहले से ही आभास हो गया होगा।

"तेहरान से वह मास्को चला गया। अफवाह है वहाँ वह छातावारी की एक युवक व्रिगेड आयोजित करने की कोशिश कर रहा है। यह मुझे अद्‌भुत लगता है।" कर्नल ने अपना कंधा हिला दिया। "लेकिन मैं स्टर्न को कभी समझ ही नहीं पाया हूं। वह उन आदमियों में से प्रतीत होता है जिसे वस्तुतः कोई नहीं जानता है।

"विल्कुल ठीक है," मैंने कहा। "उसे वस्तुतः कोई नहीं जानता है। यह भी हो सकता है वह स्वयं अपने आपको भी नहीं जानता हो।"

कोमसोमोल्सकाया प्रावदा से :

तिफलिस नवम्वर २(तास)—तीसरी पैराशूटिस्ट यूथ व्रिगेड की यूनिटों ने तिफलिस क्षेत्र म विस्तृत युद्ध अभ्यास पूरे कर लिये हैं जिनका कर्नल एन० वी० फैडोरोव ने निरीक्षण किया। पोलैण्ड, जैकोस्लोवाकिया, हंगेरी और वलगेरिया की विरोधी फासिस्ट यूनिटों को व्रूनो स्टर्न ने ही संगठित किया था। लेवेनिडज़ स्क्वायर में मेजर जनरल ए० आई० गुरोव के सामने रविवार की प्रातःकाल एक परेड होगी।

इजवेस्तिया से :

नवम्बर ३० (एल आई बी)—ब्रूनो स्टर्न अधीनस्थ तीसरी पैराशूटिस्ट यूथ ब्रिगेड की सेनाएँ गोरो दिशा के पूर्व में उतरीं और स्टेलिन ग्रेड रणक्षेत्र के जर्मन दायीं ओर की भाग की बड़ी टुकड़ियों से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। फौज की प्रथम टुकड़ी प्रातः पांच बजे उतरी । मोरटर और राइफिल की भारी गोलाबारी के बावजूद मोर्चे जमा लिये गये । जर्मनों के दो प्रत्याक्रमण असफल रहे। लेफ्टिनेन्ट जनरल वासिली चुई की बासठवीं सेना की टुकड़ियों की कुमुक पहुंच जाने के बाद दोपहर दो बजे तक दुश्मन का सफाया हो गया। उसके १८८४ आदमी मारे गये और १६७०६ कैदी बना लिये गये। तीसरी छाताधारी युवक ब्रिगेड के दस्तों ने १०९ मशीन गनें, साठ मिलीमीटर का २४ मोरटरें और राइफलों तथा अन्य सैनिक सामान की भारी तादाद हस्तगत की ।

कोमसोमोल्सकाया प्रावदा से :

दिसम्बर ४—आर्डर और रैड बैनर से विभूषित ब्रूनो स्टर्न स्टालिनग्राड मोर्चे पर तीसरी छाताधारी युवक ब्रिगेड का सेनापतित्व कर रहा है।

जारिया वोस्तोका से :

तिफलिस दिसम्बर २८ (तास)—तिफलिस की नगर सोवियट कार्य समिति के निर्णय से तिफलिस शहर में लेबाजिज स्क्वायर का नाम बदल कर ब्रूनो स्टर्न स्क्वायर रक्खा गया है।

प्रावदा से :

मास्को फरवरी १८ (तास)—६२वीं सेना के कमाण्डर लेफ्टीनेण्ट जनरल वासिली चुईकोव, स्टालिन ग्राड में तीसरी छाताधारी युवक ब्रिगेड के कमाण्डर ब्रूनो स्टर्न और मेजर जनरल.....रूस के प्रधान सेनापति जे॰ वी॰ स्टालिन से मिले।

युद्ध के वाद मुझे स्टर्न का कुछ पता नहीं चला। गोली चलनी बन्द हो गई और गड़वड़ पहल से भी ज्यादा थी। सिर्फ समय वीतते जाने के साथ ही अव तक की घटनाओं की विशालता का अनुभव हुआ। युद्ध काल में संचार साधन सव अस्त व्यस्त हो गये थे। खाइयों से परे रहने वाले लोगों के साथ संपर्क स्थापित करना सम्भव नहीं था। यह मालूम नहीं पड़ता था कि उनके साथ क्या वीत रही है। तव भी हम आशा संजोये रखते थे, अपने आप से कहते थे एक दिन यह युद्ध खतम हो जायगा और हम अपने प्रिय व्यक्तियों से मिल सकेंगे। अव युद्ध खतम हो गया था। नंगी तारों के वाड़े तोड़ दिये गये थे और आशानाम की चीज भी नहीं रही थी।

मेरे वड़े परिवार में से सिर्फ कुछ लोगों का ही पता चला जो सारी दुनियां में फैल गये थे। औरों का क्या हुआ यह कोई कभी नहीं जान पायेगा मेरी मां तथा लोला का क्या हुआ? भूख, कष्ट, वेदना और मृत्यु। वे कहाँ मरे? कव मरे? कैसे मरे? तुम लोगो से यह सवाल करोगे और वे जवाव में धीमे से, साभिप्राय कंधा हिला देंगे, जिसका मतलव होगा "व्यक्ति ला पता है, सम्भवतः मर गया है और कोई यह नहीं जान पायेगा कि उसका क्या हुआ?"

वर्षों वाद ही मुझे कुछ और लोगों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। मुझे पता लगा कि हमारी कक्षा के ३९ लड़के लड़कियों में से पाँच इंगलैण्ड में, दो अमरीका में, दो जर्मनी में, एक एक इजराइल, चीन, आस्ट्रेलिया और रूस में तथा चार अपने वतन में रह रहे थे। मैं ३९ में से सिर्फ १७ की ही गिनती कर सका। सन् २४ की अमरीकी क्लास के लिए यह एक खराव प्रतिशत होता परन्तु एक जमाने में हम जहाँ रहते थे, विश्व के उस भाग के विशेष वर्ग के लिए यह कोई आश्चर्यजनक वात नहीं थी।

मेरे चार साथी अपनी जन्म भूमि में ही रह रहे थे। ये थे लिया काफका, टोंडा वासेक औटोवावर और व्रनो स्टर्न (प्रो० फ्रैन्क के व्यक्तित्व का

मुझ पर इतना असर पड़ा था कि मैं अब भी लियो काफका का काफका लियो ही कह कर याद किया करता हूं।

स्टर्न का इन सबके साथ नाम लेना ठीक नहीं था। अखबारों की अस्पष्ट रिपोर्टों से मुझे पता लगा था कि वह युद्ध समाप्त होने के बाद रूस से लौट आया है। तब से मेरी जन्म भूमि में उसकी गिनती सबसे शक्तिशाली लोगों में होती है।

अखबार उसकी शक्ति के उद्‌गम और विस्तार की बाबत कुछ नहीं बताते थे। स्टर्न के बारे में प्रकाशित रिपोर्टें, राजनैतिक गप या अपुष्ट अफवाहें होती थीं। शरणार्थी उसके शैतानी कृत्यों की भयानक कहानियां लेकर पश्चिम में आते थे किन्तु उनकी कहानियों की जांच नहीं की जा सकती थी। उसके अपने देश के अखबार मानों किसी के आदेश से कभी उसके नाम का जिक्र नहीं करते थे और विदेशी कूटनीतिज्ञ भी उसके बारे में कुछ अधिक नहीं जानते थे।

राजधानी में दो वर्ष रह कर आने के बाद एक पश्चिमी प्रेक्षक ने मुझे बताया : "स्टर्न पृष्ठ भूमि में रहता है। तुम जानते हो यह रूसी शासन प्रणाली है जिसमें सारा प्रचार तो सामने के आदमी का होता लेकिन उसकी डोर पीछे अदृश्य रहने वाले आदमी के हाथ में होती है।"

कोई ठीक ठीक यह नहीं जानता था कि लंदन से लौट कर वापस रूस चले जाने के बाद स्टर्न का क्या हुआ। शायद उसके बारे में अनिश्चितता जान बूझ कर एक निश्चित उद्देश्य से फैलाई गई थी। अनिश्चितता डर पैदा करती है। उस की अज्ञात स्थिति विशेषज्ञों को गड़ बड़ में डाल देती थी और साथियों को परेशान करती थी। उसका औपचारिक पद साम्यवादी दल के महा सचिव के डिप्टी का था। इस का बहुत अधिक या बिल्कुल नहीं। ये दोनों अभिप्राय हो सकते हैं वह दल की केन्द्रीय समिति के बड़े अधिवेशनों में कभी भाषण नहीं देता था। सभाओं में वह मंच पर बलशाली लोगों के

साथ बैठता था और एकाध बार उसकी शक्ति का भयानक प्रमाण भी दिखाई दे जाता था। ऐसा भूतपूर्व सैनिक कार्यालय अध्यक्ष जनरल पिलर के सनसनी खेज़ मुकद्दमे में हुआ जिसे गद्दारी के अभियोग में फांसी की सजा मिली थी। रिपब्लिक के प्रेज़ीडेण्ट उनकी सजा आजीवन कारावास में बदलना चाहते थे। जनरल पिलर युद्ध काल में एक नायक समझे जाते थे जिन्होंने देश के पूर्वी भाग में स्वाधीनता संघर्ष का नेतृत्व किया था।

लंदन टाइम्स के संवाददाता ने लिखा: "साम्यवादी दल के महा सचिव के डिप्टी ब्रूनो स्टर्न ने इस बात का आग्रह किया। बताते हैं कि फाँसी की सजा कार्यान्वित की जाय और कोई दया न दिखाई जाय। जनरल पिलर आज सवेरे फाँसी के तख्ते पर झूल गए। स्पष्ट है कि स्टर्न की ताकत प्रेज़ीडेण्ट से भी ज्यादा है। स्टर्न को आम लोग नहीं जानते हैं। किन्तु अपने ही दल के सदस्यों में उसे 'जल्लाद' कहा जाता है। दल के नेता भी उसका नाम लेने से कतराते हैं। कुछ उसे दल का 'ग्रे एमीनेन्स' कहते हैं। देश में एक मात्र वही ऐसा आदमी है जिसे क्रेमलिन का पूरा विश्वास प्राप्त है।"

जब कभी भी कोई सफाया या षडयन्त्र का खातमा होता था जैसा कि साम्यवादी तानाशाही में समय समय पर होता रहता है तो स्टर्न का नाम उस में प्रमुखता से लिया जाता था। "खात्मे के उपायों" के सिलसिले में रैड लाइट में उसके नाम का जिक्र किया जाता था।

"उस का नाम रूस में बेरिया के समान मुकद्दमे और सजा का पर्यायवाची हो गया है।" यह 'न्यजुरचेरज़ीतुंग' के संवाददाता ने लिखा था।"

सात उच्च पदाधिकारी साम्यवादियों के दिखावटी मुकद्दमें में यह अफवाह निरन्तर बनी रही कि इस कार्यवाही का करता धरता स्टर्न है।

"कूटनीतिक क्षेत्रों में यह समझा जाता है।" न्यू यार्क टाइमस् ने लिखा "कि स्टेट कोर्ट की सीनेट के सदस्य और अभियोक्ता महा सचिव के डिप्टी ब्रना स्टर्न से संकेत लेते हैं। उसका चेहरा अदालत के कमरे में कभी नहीं दिखाई देता किन्तु उसकी शक्ति का छाया वहाँ एक भूत की तरह मंडराती प्रतीत होती है।"

तीसरा भाग

अगले दो वर्षों में मैंने लियो और टोंडा को कई पत्र लिखे परन्तु मुझे कभी उनका जवाब नहीं मिला। मैं निराश जरूर हुआ परन्तु चकित नहीं। उनका देश—जब मैंने जबरदस्ती यह अनुभव किया कि कुछ ही समय पूर्व वह मेरा भी देश था तो यह बेहूदापन प्रतीत होता है—अब एक पुलिस राज्य था। पश्चिम में लोगों के साथ सम्पर्क रखना खतरनाक था। पत्र सेन्सर किए जाते थे। विदेशों में विद्यमान व्यक्तियों को पत्र लिखने वाले लोगों को अपनी चिट्ठियाँ सबसे पास के डाकखाने में ले जानी पड़ती थीं जहाँ उन्हें भेजने के लिये स्वीकृत करने से पूर्व पढ़ा जाता था।

मैंने वापिस जाने की कई बार कोशिश की परन्तु पासपोर्ट के प्रतिबन्ध, वीसा की कठिनाइयाँ और लोहपरदे के प्रदेशों से यात्रा करने के नियम बाधा बन कर खड़े हो जाते थे। बहुत समय बाद अन्त में मैं आवश्यक कागजात प्राप्त करने में सफल हो गया तो भी यह सौभाग्य सिर्फ चन्द दिन रहा। साम्यवादी समय समय पर विश्व व्यापी भ्रातृत्व और अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता के जो प्रदर्शन करते रहते हैं वैसा ही एक प्रदर्शन मरी मातृभूमि की राजधानी में किया जा रहा था, कुछ सप्ताहों तक बन्दिशें हटा दी गईं। पश्चिम के सब लोगों को वहाँ के शान्ति समारोह में जाने की इजाजत दे दी गई।

पेरिस से मैंने यह आखिरी गाड़ी पकड़ी जो उत्सव के उदघाटन समारोह में ठीक समय पर पहुंचा सकती थी। गाड़ी खचाखच भरी हुई थी और सोने के डिब्बे का कंडक्टर नाराजगी से इधर-उधर देख रहा था।

"ऐसा प्रतीत होता है, मानो यह बालचर मेला हो," वह नाराजगी से कन्धे उचका कर बोला, "और वह भी हमारी गाड़ी में, क्या खूब!"

गाड़ी बहुत लम्बी थी और उसमें तिल धरने की भी जगह नहीं थी। अधिकतर यात्री नौजवान, उत्साही और शोरोगुल करने वाले थे, किन्तु वैसे वे परस्पर विजातीय और विसदृश तत्वों का सम्मिश्रण थे। उनमें न्यूजीलैंड, इंडोनेशिया, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, चिली, लंका, स्वीडन और न जाने कितने और देशों के नौजवान लड़के और लड़कियां थीं। गाड़ी के गलियारे में स्कैंडीनेवियनों के साथ मैडागास्कर के रहने वालों का खवे से खवा छिल रहा था। पूर्व की ओर जाते हुए जब गाड़ी रास्ते में ठहरती तो जर्मन, आस्ट्रियन, स्विस और इटालियनों के और भी झुंड के झुंड उसमें सवार हो जाते।

"शान्ति! शान्ति!!" के खूब नारे लग रहे थे। किसी ने भी सोने की कोशिश नहीं की। सारी रात फ्रांसीसी लड़कियां गाड़ी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमतीं और अपना राष्ट्रगीत गाती रहीं। एक स्वीडिश छात्र ने, जिसकी नीली कमीज पर शान्ति का प्रतीक फाख्ता लगी हुई थी, मुझ से कहा कि स्वीडन के सामाजिक कानून—जो शायद संसार के सबसे अधिक प्रगतिशील सामाजिक कानून हैं—सड़े हुए हैं और उनमें आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

भोर होते ही हम सीमा पर पहुंच गये। गाड़ी थामी हो गई। चांद की उजली चांदनी में मैंने रेल की पटरी के साथ ही निगरानी के लिए बना लकड़ी का एक ऊंचा बुर्ज देखा जिस पर मशीनगनें और सर्च लाइटें चढ़ी हुई थीं। उस के पार एक जुता हुआ खेत था, जिसके बारे में शरणार्थियों ने मुझे बताया था कि उसमें बारूदी सुरंगें बिछी हुई हैं। कोई भी कभी यह नहीं

जान सकेगा कि कितने आदमी इस खेत को रेंग कर पार करने की कोशिश में मौत के मुंह में चले गये। ज्यों ही हम इस बुर्ज के पास से गुजरे टामीगन लिए एक सिपाही कूद कर आखिरी डिब्बे में चढ़ गया और नीचे के पायदान पर खड़ा रहा।

लड़के-लड़कियों ने तालियां बजाना और सिपाहियों की ओर रूमाल हिलाना शुरू कर दिया। पटरी के दूसरी तरफ दूसरा निगरानी का बुर्ज बना हुआ था, जो एक बड़े स्वागत-चिन्ह और शान्ति की तीक फाख्ता से लगभग ढका हुआ था। ज्यों ही गाड़ी सीमावर्ती स्टेशन पर पहुंची, सीमा रक्षक दल के शानदार अधिकारियों ने, जो बिल्कुल नई वर्दियां और सफेद दस्ताने पहने थे, टामी गनें लिए फौजी ढंग से गाड़ी को सलामी दी।

यात्री दल अत्यन्त जोशो खरोश के साथ नारे लगा कर अपनी खुशी का इजहार करने लगा। एक इटालियन लड़की ने कहा, "क्या यह सचमुच आनन्द की बात नहीं है कि हम शान्ति के देश में पहुंच गये हैं?" यह कह कर उस ने खिड़की से बाहर सिर निकाला और जोर से चिल्लाई: "शान्ति! शान्ति!"

मैंने कहा कि बन्दूकें लिये सिपाही मुझे बहुत शान्तिपूर्ण नहीं प्रतीत होते, भले ही उनके दस्ताना में कितना ही शान्ति का प्रतीक सफेद रंग हो। ये सिपाही बड़े बढ़िया निशानेबाज बताये जाते हैं।

लड़की ने मुझ पर घृणा भरी नजर डाली। "वे लोग शान्ति की रक्षा के लिए बन्दूक धारण किये हैं," वह बोली। और यह कह कर वह मेरी उपेक्षा कर दूर चली गई।

स्टेशन झंडों, नारों से अंकित प्रदर्शनपटों, साम्यवादी नेताओं की तस्वीरों और बिजली की रोशनी से जगमगाते एक बड़े लाल सितारे से सजा हुआ था। सैंकड़ों बच्चों से सारा प्लेटफार्म खचाखच भरा हुआ था और वे जोश के साथ "शान्ति! शान्ति!" चिल्ला रहे थे। सीमा रक्षकों ने गाड़ी

का चक्कर लगाया और हर एक आदमी का पासपोर्ट ले गये। अधिकारियों ने अंग्रेजी, इटालियन, फ्रेंच, जर्मन और अन्य भाषाओं में स्वागत भाषण दिये। लाउडस्पीकरों पर अरबी, चीनी और रूसी गीत सुन पड़ रहे थे। सिपाही गाड़ी के नीचे रेंग कर साम्यवाद-विरोधी पर्चों और ऐसे लोगों की तलाश कर रहे थे जिनके बारे में सन्देह हो सकता था कि वे बिना पासपोर्ट के छिपकर आये होंगे। कम से कम मुझे बताया यही गया था। प्लेटफार्म पर ही लोक-नृत्य हो रहे थे। बन्दूकधारी सिपाही जान-बूझकर पीछे की ओर चले गये ताकि उनसे इस उत्सव में कोई बाधा न पड़े। हरेक ने कहा कि स्वागत बड़ा जबर्दस्त हुआ है।

इस स्टेशन के चुंगी अधिकारी इस बात के लिए मशहूर थे कि वे बड़ी बारीकी से छानबीन करते हैं और कहा जाता था कि कभी-कभी वे सारे डिब्बे का कोना-कोना छान मारते थे, किन्तु इस यात्रा में किसी ने हमें अपना थैला खोलने तक के लिए नहीं कहा। उत्सव में आने वालों के लिए सब नियम ताक पर धर दिये गये थे। हरेक आदमी शांति का हामी था।

गाड़ी देरी से पहुंची थी। मेरे उतरते न उतरते बत्तियां जल चुकी थीं। उसके बाद और भी झंडे फहराये गये, भाषण हुए और बच्चों ने शान्ति के नारे लगाये। बैंड ने राष्ट्रीय गीत की और उत्सव के लिए विशेष रूप से तैयार किये गये शान्ति-गान की धुन बजाई। मुझे प्लेटफार्म पर बन्दूक लिये एक भी सैनिक नजर नहीं आया। मैं तेजी से बड़े हाल में हो कर बाहर गया और होटल के कुली को, जो मेरी प्रतीक्षा में खड़ा था, अपना थैला दे दिया। उसने मुझे टैक्सी में ले चलने को कहा, किन्तु मैंने उसे अकेले ही आगे चले जाने को कहा। मैं अकेला शहर में घूमना और एक बार फिर उस की हवा में सांस लेना चाहता था।

गोधूलि बेला हो गई थी—ऐसी बेला जो मुझ सब से अधिक मुग्ध कर लेती है। ऊंचे-नीचे पुराने मकानों और गिर्जा घरों के शिखरों की पंक्ति

सन्ध्या काल के आकाश की पृष्ठ भूमि में धुंधली नजर आ रही थी। नदी के पार पुराने महलनुमा मकानों में रोशनी होने लगी थी। मुझे अपनी युवावस्था की वे मौज-बहार की सन्ध्यायाएं कभी नहीं भूलतीं जब कि धुंधली रोशनियां, काली छायाए, अन्धकार से भरे द्वारों से निकलने वाली दवी हुई आवाजें और मन्द पवन राह चलतों पर एक अद्भुत प्रभाव डालती प्रतीत होती थीं। लोग ऐसी सन्ध्या के समय नदी में बत्तियों की छाया देखने के लिए या तो अपने कदम धीमे कर देते या बिल्कुल रुक जाते और शीतल वायु की गहरी सांसें लेते, मानों वे अभी-अभी किसी पहाड़ी स्थान पर पहुंचे हों।

और आज भी जब मैं वहां घूम रहा था, हवा वैसी ही थी, जैसी हमेशा रहती थी और रोशनियां, छायाएं और इमारतों की काली छाया-छवियां की पहले जैसी ही थीं, किन्तु फिर भी कहीं कुछ फर्क अवश्य था। कुछ समय बाद मैंने अनुभव किया कि फर्क कहां था। वह था लोगों में। ऐसा लगता था लोगों के मन पर कोई बोझ है। वे तेजी से चल रहे थे, मानों प्रकृतिस्थ न हों और किसी के दवाव से चल रहे हों। वे सड़क के किनारे के फुटपाथों पर नजर गड़ाए रहते और एक दूसरे की नजर से नज़र मिलाने से बचने की चेष्टा करते। पहले खुशी से भरी जो आवाजें और खुशी के जो गीत सड़कों पर सुन पड़ते थे, वे अब नहीं सुनाई पड़ते थे। संगीत अब भी था, किन्तु वह था कर्कश सैनिक संगीत जो हर रोशनी के खम्भे से बंधे लाउडस्पीकर के गले से निकल रहा था। इन लाउडस्पीकरों पर रूसी सैनिकों के गीत और प्रयाण गीत, विज्ञप्तियां एवं राजनीतिक भाषण सुनाई देते थे।

उस समय तक मुझे नगर में छाये तनाव और भय के वातावरण का पर्याप्त भान हो गया था। मेरा ध्यान तमाम सड़कों व गलियों के कोनों पर बड़ी तादाद में तैनात पुलिस के सिपाहियों की ओर गया, जो वहां से दोनों

दिशाओं में नजर रख सकते थे। पुलिस का सिपाही चाहे जहां खड़ा हो, वहां से दूसरे सिपाही को आसानी से देख सकता था।

और तभी मुझे यह भी भान हो गया कि एक लम्बी और अनगढ़ हड्डियों वाली स्त्री नीली पोशाक पहने मेरा पीछा कर रही है। जब मैं गाड़ी से उतरा था, वह सोने के डिब्बे के दरवाजे के पास खड़ी थी, किन्तु मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। अब वह मेरे पीछे-पीछे चल रही थी और जब मैं किसी दूकान में नजर डालने के लिए रुकता तो वह भी रुक जाती और एक बार तो जब मेरे एकाएक रुक जाने से वह एक दम मेरे पास पहुंच गई तो वह ठिठक कर खड़ी हो गई और उसने ऐसे दिखाया कि वह अपने जूते का तस्मा बांध रही है। बड़ी अजीब बात थी। अभी यहां आये मुझे दस मिनट भी नहीं हुए थे कि मेरा पीछा भी होने लग गया।

होटल के प्रवेश द्वार पर कुछ निठल्ले लोग खड़े बात-चीत कर रहे थे। भीतर घुसते ही एक आकर्षक नौजवान लड़की ने मेरे पास आ कर अपना परिचय दिया। उसने मुझे बताया कि वह साम्यवादी युवक संगठन की सदस्या है और जब तक मैं नगर में रहूं, उसे मेरी पथप्रदर्शिका का काम सौंपा गया है।

"सूचना एवं प्रचार मंत्रालय चाहता है कि आप के लिए हर तरह के आराम का इन्तजाम किया जाय," उसने नपी-तुली किन्तु लड़खड़ाती अंग्रेजी से कहा, "मंत्री महोदय ने स्वयं यह आशा व्यक्त की है कि आप यहां बिल्कुल घर की तरह अनुभव करेंगे।" इस के बाद मेरी ओर देख कर मुस्कुराते हुए वह फिर बोली, "हो भी क्यों नहीं, आखिर एक दिन आप यहीं रहते थे। क्या आप भूल गये हैं ?"

मेरा लौह आवरण के पीछे के अन्य देशों में और भी ऐसे गम्भीर चेहरे वाले नौजवान स्त्री-पुरुषों से वास्ता पड़ चुका था, जिनकी स्वधर्म के प्रति कट्टर आस्था ने विदेशियों के साथ उनकी विचक्षणता में कोई कमी नहीं

की थी। ये लोग "दुभाषिये" कहलाते थे। उनका काम था अतिथियों का अपने देश की जानकारी देना, उन्हें वहीं चीजें दिखाना जो दिखानी चाहिएं। और उन चीजों से बचाना जो नहीं दिखानी चाहिएं। लड़की ने अपना काम बड़े उत्साह से पूरा किया। यदि उसके साथ प्रेम प्रकट करने की जरा भी चेष्टा की जाती तो वह चकित हो जाती। वह स्त्री नहीं थी, वह सिर्फ वैसी दीख पड़ती थी।

मैंने उसे भरोसा दिलाया कि मैं अब भी शहर में अकेला आ-जा सकता हूं और अपने कमरे में चला गया। मैंने फोन उठाया और अमरीकी दूतावास में हावर्ड को बुलाया। थोड़ी देर तक उससे बातचीत करने के बाद मैंने फोन रख दिया। इसके बाद फिर किसी से बातचीत करने के लिए मैंने फोन उठाया। किन्तु इस बार आपरेटर की आवाज के बजाय मुझे उसमें अमरीकी दूतावास में हावर्ड से हुई अपनी बातचीत की ही पुनरावृत्ति सुनाई पड़ी। खुफिया पुलिस की रिकार्डिंग मशीन में कुछ गड़बड़ हो गई थी। शायद मेरे कमरे में कहीं कोई माइक्रोफोन था, किन्तु मैंने उसकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया था। इन दिनों वे लोग छोटी-छोटी मशीनें इस्तेमाल करते थे, जो चतुराई से कमरे में लगा दी जाती थीं और जिन्हें विशेष उपकरणों की सहायता के बिना तलाश नहीं किया जा सकता था। हो सकता है, वे छोटी-छोटी शैतानियत भरी रेडियो मशीनें हों जो बिना तार के दूसरी जगह छिपे रिसीवर यन्त्र में आवाज पहुंचा देती हैं।

खिड़की के पास जा कर मैंने बाहर झांका। नीचे हल्की नीली पोशाक वाली वही स्त्री कुछ अन्य निठल्ले लोगों के साथ होटल के सामने खड़ी थी। उन्होंने मेरे चारों ओर अच्छी तरह घेरा डाल रखा था। एक मिनट के लिए मेरे दिल में खयाल आया कि जो काम करने के लिए मैं आया हूं, क्या उसे पूरा कर सकूंगा। वह काम आसानी से नहीं हो सकेगा। इस नगर में कहीं ब्रूनो स्टर्न था और मुझे उसे ढूंढना था। मैं उसे ढूंढना और उससे एक

सवाल पूछना चाहता था, सिर्फ एक सवाल, फिर चाहे वही मेरी जिन्दगी का आखिरी काम हो।

नहीं, यह काम आसान नहीं था। मैंने वास्तव में ही पहले से यह कल्पना नहीं की थी कि मुझे कैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। स्वतन्त्र पश्चिमी जगत् में इस तरह की परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता। वहां बड़े से बड़े आदमी तक भी पहुंचा जा सकता है। किन्तु स्टर्न अदृश्य आदमी बताया जाता था। कोई भी पश्चिमी कूटनीतिज्ञ या पत्रकार उससे कभी बातचीत नहीं कर सका था।

इसके लिए मेरी कोई विशेष योजना नहीं थी। मेरा ख्याल था कि सबसे अधिक स्पष्ट मार्ग ही शायद सबसे अच्छा हो। मैंने सूचना एवं प्रचार मंत्रालय से सम्पर्क कायम किया और मन्त्री महोदय से मिलने की इच्छा प्रकट की। यह एक औपचारिक कार्रवाई थी, शिष्टाचारी भेंट थी। हो सकता है, वे इस भेंट में मुझे बताते कि स्टर्न कहां मिल सकता है और सम्भव है, वे मुझे न भी बताते। किन्तु जो हो, स्टर्न को अवश्य यह पता चल जाता कि मैं मन्त्री महोदय से मिला हूं।

एक घन्टे बाद मुझे फोन पर सूचना मिली, मन्त्री महोदय ने मुझ से अगले दिन सुबह ग्यारह बजे मिलना स्वीकार कर लिया था।

सूचना एवं ज्ञान प्रसार मन्त्री का कार्यालय—उन्हें प्रचार मन्त्री कहने का कठोर निषेध था—नगर के पुराने हिस्से में एक पुराने ढंग के महल नुमा भवन में था। यह भवन सत्रहवीं शताब्दी में मिलान के गियोवानी मारिनी ने एक सेनापति के लिए बनाया था, जिसने तीस-साला लड़ाई में ख्याति और सम्पत्ति अर्जित की थी। सेनापति की यह ख्याति उनके वंशजों के जीवन काल में ही समाप्त हो गई, किन्तु ये वंशज स्वयं उत्कृष्ट संगीत और चित्र कला के ज्ञाता के रूप में प्रसिद्ध हो गये। इस परिवार के पास रेम्ब्रांट रूबेन्स और जे० वान रूजडेल और वान डिक की प्रसिद्ध कलाकृतियां भी

थीं। भवन की ड्याढ़ी मैथियाज ब्राऊन ने बनाई थी और मोजार्ट ने वंश के एक सदस्य को अर्पण कर एक गीत की रचना की थी। इस वंश के प्रमुख सदस्यों की अनेक कलाकृतियां आज यूरोप और अमरीका की अनेक चित्र-शालाओं को सुशोभित कर रहीं हैं।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर इस वंश के अन्तिम वंशधर को समस्त सम्पत्ति से वंचित कर इस भवन के द्वार जनता के लिए एक संग्रहालय के रूप में खोल दिये गये। कभी-कभी प्रसिद्ध संगीतकारों का एक छोटा-सा दल इस भवन के एक कमरे में एक छोटे से कला पारखी श्रोतृ-वृन्द के सामने संगीत की धारा बहाता। सुनहरी रंग के चिकने पलस्तर की दीवारों और लाल पर्दों वाले इस कमरे में, जो कभी जनरल का बैठकखाना था, हेडन, मोजार्ट, बेथोवन और द्वोरक का संगीत सुनते हुए सुध-बुध खोकर आदमी उन संगीतचार्यों के युग में पहुंच जाता जिन्होंने अपने कला मर्मज्ञ संरक्षकों और आश्रयदाताओं के लिए यही सोचकर संगीत की रचना की थी कि वह इन विशाल भवनों में गाया जाय।

जब साम्यवादी सत्तारूढ़ हुए तो उन्होंने इन विशाल भवनों को सरकारी उपयोग के लिए अपने अधिकार में ले लिया। दल के अखबारों ने इस का कारण यह बताया कि नये मंत्रालयों को जगह की जरूरत है। यह भी एक विडम्बना थी कि इन नौकरशाहों को "जनता के हित के लिए" पर्याप्त स्थान की जरूरत है ताकि वे "श्रम जीवी वर्ग के समाजवादी कार्यों के प्रबन्ध के लिए" अपना साज-बाज जमा सकें।

द्वार पर सुरक्षा पुलिस का एक सिपाही बन्दूक लिये पहरा दे रहा था। एक अन्य सिपाही दरवाजे में खड़ा था। वह मुझे दरवान के कमरे में ले गया जहां मैंने अपने काम और मुलाकात की स्वीकृति की सूचना दी। मुझे मुलाकाती लोगों के प्रार्थनापत्र की तीन प्रतियां भरने के लिए कहा गया। एक छोटी सी खिड़की के पीछे एक आदमी ने अनेक बार टेलीफोन किये

और मुझे एक छोटे से कमरे में इन्तजार करने को कहा। कोने में भूरे बालों वाला एक दुबला-पतला आदमी बैठा अखबार पढ़ रहा था। उसका चेहरा बड़ा कठोर था, सिपाही की सी टूटी नाक थी और उसके दायें गाल पर एक गहरा दाग नीचे की ओर चला गया था। वह ऐसा दिखा रहा था, मानों अखबार पढ़ने में मशगूल हो, किन्तु मैं जानता था कि वह मुझ पर निगरानी कर रहा था।

फोन की घन्टी बजी और दरबान ने ड्योढ़ी में खड़े एक अन्य नागरिक रक्षक को इशारा किया। मुझे एक विशाल कमरे और संगमरमर की सीढ़ी से होकर मन्त्री महोदय के कमरे में ले जाया गया।

सेनापति का बैठकखाना अब एक प्रतीक्षागृह के रूप में तथा बड़े प्रतिनिधिमण्डलों का स्वागत करने के लिए योग में लाया जाता था। जिन दिनों में यहाँ संगीत सुनने आता था, उन दिनों की स्मृति की तुलना में यह कमरा मुझे अधिक बड़ा और अधिक ठण्डा लगा। कुर्सियां और चित्र यहाँ से हटा दिए गए थे। सिर्फ गहरे लाल रंग के कालीन और पर्दे रह गए थे। एक डेक्स के पीछे बिना नेकटाई की और ऊपर से खुली कमीज और एक काला सूट पहने एक आदमी बैठा था। उसने मुझ से कहा कि मन्त्री महोदय से अभी एक मिनट में मुलाकात होगी, तब तक यहीं इन्तजार करो।

इस कमरे का सारा सामान पहले सूक्ष्म संगीत मर्मज्ञता का अद्भुत परिचायक था। काँच के झाड़-फानूस, भव्य पुरुषों और सुन्दर स्त्रियों के सुनहरी फ्रेम में मढ़े चित्र; भारी पर्दे, कोने में पड़ी सफेद चीनी मिट्टी से बनी और सुनहरी चित्रकारी वाली बड़ी अंगीठी—ये सभी एक घन्टे के मधुर संगीत के लिए बहुत उपयुक्त पृष्ठ भूमि का काम देते थे। आज भी यह सब कुछ था, नहीं थी सिर्फ चीनी मिट्टी की अंगीठी। उसकी जगह अब एक छोटी लोहे की अंगीठी पड़ी थी जो इस सारे दृश्य में बेमेल प्रतीत होती थी। भवन के मौजूदा किरायेदारों को कला और शिष्ट शैली की उतनी फिक्र नहीं

थी, जितनी गर्मी प्राप्त करने की। सेक्रेटरी की डैक्स के पीछे दीवार से लकड़ी के कुछ टुकड़े भी निकाल लिए गए थे ताकि वहां रूस का नक़्शा लगाया जा सके।

साथ के कमरे का—मैंने सोचा कि यह मन्त्री महोदय का कमरा होगा—दरवाजा खुला और चार आदमी वाहर आये। उनके पास क़ागज-पत्र रखने के भारी थैले थे और वे उन छोटे आदमियों की भान्ति गर्व से चल रहे थे जो अचानक ही वड़े आदमियों के संग में पहुंच जाते हैं। यह जाहिर था कि उन्होंने अभी-अभी महत्वपूर्ण मामलों पर विचार किया था। उन्होंने गम्भीरता से सेक्रेटरी के साथ हाथ मिलाया और वह विशाल कमरा पार कर वाहर चले गये। जव उनकी नजर मुझ पर पड़ी तो उनकी आंखों में सतर्कतापूर्ण अविश्वास झलकता था।

मैं यहां के लोगों के चेहरों पर यह भाव पहले ही देख चुका था। उसका आशय यह था :"यह आदमी यहां क्या कर रहा है?" मैं स्पष्ट रूप से उन के लिए एक अवांछनीय आगन्तुक था और वे अपनी इस अविश्वासपूर्ण नजर से मुझे यह अनुभव कराते रहते थे।

एकाएक मेरे कानों में घंटी की आवाज और सेक्रेटरी की पुकार पड़ी, "महाशय, अव मन्त्री महोदय आपको मुलाकात देंगे।" उसने मेरे लिए दरवाजा खोल दिया।

मन्त्री का कमरा प्रतीक्षा-गृह से कम सजा हुआ था। उसका वातावरण पुराने जमाने के निम्न मध्यवर्ग के लोगों के घरों जैसा था। दीवरों पर से सुन्दर चौखटे और कांच के झाड़-फानूस निकाल दिये गये थे और भद्दी रुचि वाले किसी व्यक्ति ने वहां आधुनिक ढंग का काम-काजी फरनीचर रख दिया था और मैले हरे रंग का दीवार सजाने का कागज लगा दिया था। मन्त्री महोदय चाहते थे कि अखवारों में जो उनके नियन्त्रण में थे, उन्हें एक ऐसे आडम्बरहीन व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जाय जिसने सामन्तवादी युग

की समूची शान-शौकत को घता वता कर उसके स्थान पर प्रगतिशील सादगी का प्रतिष्ठित किया है। वे कहा करते थे कि मुझे अपना प्राइवेट आफिस साथ के बड़े मेल-मुलाकात के कमरे से, जहां का वातावरण उत्साह-हीन और सरकारी ढंग का है, अधिक अच्छा लगता है।

मन्त्री महोदय गोल कोनों वाली तीन गज चौड़ी एक मेज के पीछे बैठे थे। उनके पीछे की दीवार पर मलिनकोव और रूस के अपने देश के राष्ट्रपति की पुराने सुनहरी फ्रेमों में मढ़ी तस्वीरें टंगा थीं। किसी समय इन फ्रेमों में वानडिक और रूवन्स की कलाकृतियां मढ़ी थीं, किन्तु अब उनका स्थान अधिक समसामयिक विषयों के चित्रों ने ले लिया था। इस सबका प्रभाव हास्यास्पद प्रतीत होता था।

मन्त्री महोदय ने उठकर मुझ से हाथ मिलाया। उन के सिर के बाल उड़ रहे थे और अपने सरकारी चित्रों की तुलना में व काफी छोटे प्रतीत होते थे। फोटो खींचने वालों को आदेश था कि वे उनकी तसवीर इस ढंग से उतारें कि वे लम्बे प्रतीत हों। उनका चेहरा प्रसन्न और गाल था और वे अपने स्टेनलैस स्टील के आगे के दांत बड़े गर्व से प्रदर्शित करते थे क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता था कि उन्होंने काफी समय रूस में बिताया है।

सन् १९३९ में, जब जर्मनों ने देश पर आक्रमण कर दिया और बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने बच कर भाग निकलने का प्रयत्न किया, इस बात को कोई महत्व नहीं दिया जाता था कि कोई पूर्व की ओर गया है या पश्चिम की ओर। उस समय महत्व की बात सिर्फ यह थी कि किसी तरह जान बच जाय। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर भी यह प्रश्न असंगत था कि कोई देशभक्त निर्वासन काल में मास्को में रहा है या लन्दन में। किन्तु तीन वर्ष बाद यह प्रश्न ख्याति या अख्याति और जीवन या मृत्यु का प्रश्न बन गया। जो लोग युद्ध काल में दुर्भाग्य से पश्चिमी देशों में रहे थे, उन्हें एक-एक कर हटा दिया गया और उनकी जगह "पूर्व से लौटे" लोगों को रखा जाने लगा। और अब

युद्ध की समाप्ति के बाद आठ वर्ष बीतते न बीतते "पश्चिम से लौटा" शब्द "देशद्रोही" का पर्यायवाची बन गया है । इन में से कुछ लोग गिरफ्तार कर गोली से उड़ा दिये गये हैं और कुछ लापता हो गये हैं जो शायद मर जाने वालों से भी ज्यादा अभागे हैं।

मन्त्री महोदय ने भविष्य का ठीक अनुमान कर लिया था । इस लिए उन्होंने मास्को की ही शरण ली। वे सही अनुमान लगाने में हमेशा ही निपुण रहे हैं। तेईस वर्ष पूर्व जबवे एक मामूली अखबार के खेल-सम्पादक थे तब भी वे अक्सर महत्वपूर्ण फुटबाल के मैचों के सम्भावित परिणाम का सही अनुमान लगा लेते थे। जिस पत्र में वे काम करते थे वह फासिस्टों का एक घटिया दर्जे का सस्ता अखबार समझा जाता था और एक पागल गुट का प्रतिनिधित्व करता था । लोकतन्त्रीय संयुक्त सरकार के सदस्यों पर व्यक्तिगत रूप से कीचड़ उछालना उसकी विशेषता थी। वह हमेशा किसी न किसी मानहानि के मामले में फंसा रहता और उसके "उत्तरदायी सम्पादक" को, जिसका नाम अखबार पर छपता था, अपना अधिक समय जेल में बिताना पड़ता और उसके सहयोगी उसे "निष्क्रय सम्पादक" कहा करते थे। सम्पादकों को बारी-बारी से जेल जाना पड़ता था । खेल-संपादक महोदय भी दो बार जेल की हवा खा आये थे।

अखबार में खबरें कम और विचार अधिक होते थे । समस्त आक्षेप और आक्रमण अन्यायपूर्ण होते। कोई भी व्यक्ति उसे इसलिए नहीं खरीदता था कि उसे खेल की खबरें पढ़नी हैं। फुटबाल के खेल की खबरें पढ़ने के लिए वे कोई बड़ा दैनिक पत्र खरीदते जिसमें खेल के विस्तृत समाचार होते। पत्र के खेल-सम्पादक को प्रतिदिन दो कालम का स्थान दिया जाता था, सिर्फ सोमवार को तीन कालम का । उनका आफिस सम्पादकीय भवन की चौथी मंजिल पर दो छोटी-छोटी कोठरियों में था जिनका शेष सम्पादकीय विभाग से न सिर्फ दो मंजिलों की ऊंचाई का, बल्कि बहुत बड़े आदर और प्रतिष्ठा का

भी अन्तर था। प्रधान-सम्पादक को फुटबाल के खेल से नफरत थी। उनका प्रिय शारीरिक व्यायाम था अपने राजनीतिक शत्रुओं से लड़ाई।

महत्वकांक्षाएं रखने वाले युवक खेल सम्पादक के लिए यह जीवन निराशापूर्ण था। उसका वेतन कम तो था ही, समय पर भी नहीं मिलता था। किन्तु उसे राज्य की रेलों पर मुफ्त यात्रा के लिए टिकट प्राप्त था और उसके पास समय भी काफी था। वैसे वह असम्भव और कल्पनातीत स्थानों पर फुटबाल के मैचों में जाता जहां राजधानी से किसी आदमी का आना काफी हलचल पैदा कर देता है। उसे यह पद देने वाले उसके सहयोगी राजनीतिक सम्पादक जहां देश भर में अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ा रहे थे, वहां यह खेल सम्पादक नये-नये मित्र पैदा कर रहा था।

गेंद के खिलाड़ियों, क्लबों के सेक्रेटरियों और स्थानीय अधिकारियों में वह लोकप्रिय हो गया। वह उन फुटबाल के मैदानों में जाता जो बड़े इस्पात व लोहे के कारखानों के मालिकों ने अपने कारखानों की टीमों के लिए बनवाये थे। मजदूर संघों के नेताओं और मजदूर सेक्रेटरियों से उसकी मित्रता थी। खेल खत्म होते ही उसे उसकी खबर देने के लिए नजदीक के डाकखाने में भागने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी क्योंकि उसका अखबार उसकी आशा ही नहीं करता था। इस लिए वह विजयी टीम के साथ तरह-तरह की शराब पी कर, कहानी-किस्से सुना कर और नये-नये दोस्त बना कर उनकी विजय की खुशी में हिस्सा लेता।

प्रधान सम्पादक की आकस्मिक मृत्यु के बाद, जो एक बदनाम स्थानीय शराब घर में एक काफी भयंकर झगड़े के बाद सिर पर शराब की एक बड़ी बोतल के वार से हुई थी, जब पत्र के सम्पादक मंडल का पुनर्गठन किया गया तो खेल सम्पादक के सामने दो मंजिल नीचे राजनीतिक विभाग में अधिक वेतन का पद पेश किया गया। उस समय कहा जाता था कि इस पद से सचमुच किस्मत बन जाती है। उन दिनों फासिज्म तरक्की पर था इस लिए देखते-देखते यह पद काफी आदरणीय बन गया।

खेल सम्पादक ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और चौथी मंजिल की अपनी छोटी-सी कोठरी में ही बना रहा। यह उस के जीवन का सबसे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण निश्चय साबित हुआ। व्यक्तिगत और सामाजिक कारणों से वह साम्यवादी दल में शामिल हो गया था। कारखानों की टीमों के उस के फुटबाल के बहुत से मित्र भी दल से सम्बन्ध रखते थे। खेल-सम्पादक, जिस में हास्य और विनोद की बुद्धि का अभाव नहीं था, मन ही मन यह सोच कर हंसता था कि वह साम्यवादी होते हुए भी एक ऐसे समाचार पत्र में काम करता है, जो प्रतिदिन साम्यवादियों पर कटुतापूर्ण आक्रमण करता है (अवश्य ही ये आक्रमण उन पर उतने कटुतापूर्ण नहीं होते थे, जितने लोकतन्त्रीय दलों पर होते थे)।

अगले आम संसदीय चुनावों में साम्यवादी दल ने अनुभव किया कि एक कारखाना क्षेत्र में उसके पास एक लोकप्रिय उम्मीदवार की कमी है। खेल-सम्पादक के राजनीतिक मित्रों ने सलाह दी कि उम्मीदवारों की सूचि में प्रमुख उम्मीदवार के बाद उनका नाम भी शामिल कर लिया जाय। उस जिले में समाजवादी लोकतन्त्रीय दल का प्राधान्य होने के कारण वहां दो साम्यवादी उम्मीदवारों के जीतने के कोई आसार नहीं थे। दस्तुतः बहुत से लोगों को एक भी साम्यवादी उम्मीदवार के जीतने की आशा नहीं थी। किन्तु उसके मित्रों ने कहा कि खेल सम्पादक के लोकप्रिय होने के कारण उन से साम्यवादी दल के ध्येय को सहायता मिलने की आशा है।

खेल सम्पादक के उम्मीदवार नामजद कर दिये जाने पर उनके पत्र के सम्पादकीय विभाग के निचली मंजिलों के सहयोगियों में हलचल मच गई और उन्हें संक्षिप्त कार्यवाई कर के काम से अलग कर दिया गया। यह उनके लिए बहुत अनुकूल साबित हुआ। अब उन्हें अपना चुनाव आन्दोलन स्वयं चलाने का समय मिल गया।

उनके चुनाव आन्दोलन की यह विशेषता थी, कि उन्होने चुनाव सम्बन्धी सारे युद्धों को बिल्कुल स्पष्ट और संक्षिप्त रूप में मतदाताओं के सामने रखा। उन्होंने सन्देह या अस्पष्टता की कोई गुंजायश नहीं रहने दी। वे फुटबाल के समर्थक थे और उन सब लोगों के विरोधी थे जो उसे पसन्द नहीं करते। उन्हों ने मांग की कि सरकार फुटबाल के खेल के टिकटों पर से मनोरंजन कर हटा ले और वचन दिया कि यदि उन्हें चुनाव में सफलता मिली तो वे स्कूलों में शारीरिक शिक्षण की उत्कृष्ट व्यवस्था के लिए आन्दोलन और संघर्ष करेंगे। उन्होंने मांग की कि धनी लोग गरीबों के लिए स्की के खेल के नये मैदान तैराकी के नये सार्वजनिक तालाब और खेलने के लिए नये स्टैडियम बनवाएं। उन्होंने बाइसिकल, स्कैट्स और मोटर नौकाओं के निर्माताओं पर मुनाफा खोरी का आरोप लगाया, उन सब उम्मीदवारों की आलोचना की जो यह कह कर कि उनके पास दूसरे अधिक महत्वपूर्ण काम हैं, फुटबाल के खेल से नफरत करते हैं और फुटबाल खेलने वालों या न खेलने वालों, सभी के लिए उज्ज्वल भविष्य का वायदा किया।

उनका यह चुनाव मंच बहुत बढ़िया था। कारण, राजनीतिक सभाएं यदि पांच हजार आदमी जमा कर सकती हैं तो फुटबाल का एक अच्छा खेल आसानी से पचास हजार की भीड़ आकृष्ट कर सकता है। आधा खेल समाप्त हो जाने पर मध्यान्तर के समय जब दर्शक लोग आइसक्रीम या दूसरी चटपटी चीजें खा रहे होते तो खेल-सम्पादक महोदय लाउड स्पीकर पर अपने निस्तब्ध श्रोताओं को सम्बोधित कर भाषण करते।

साम्यवादियों को इस जिले में सिर्फ उतने ही वोट मिले जितने कि उन की सूचि का प्रमुख उम्मीदवार चुना जा सका। किन्तु उसे पार्लियामेंट में सीट नहीं मिली, क्योंकि चुनाव के बाद मालूम हुआ कि वह सजा यापता था। साम्यवादी दल के नेता, जो खेल-सम्पादक को एक मजेदार मसखरा समझ कर उसकी उपेक्षा कर चुके थे, अब उन की लोकप्रियता से इतने प्रभावित

हुए कि उन्होंने उन्हें पार्लियामेंटमें भेज दिया। और इस प्रकार वे सन१९३५ में पार्लियामेंट के सदस्य बन गये।

युद्ध से पूर्व अपनी पर्लिमेंट की सदस्यता के वर्षों में उन्होने अपने आप को विवादग्रस्त मामलों से बचाये रखा। वे जनता के शारीरिक शिक्षा के मामले के ही आन्दोलन कर्ता और संरक्षक बने रहे। उनके आन्दोलन के कारण हर आदमी शारीरिक शिक्षण के पक्ष में था। क्या जवान और क्या बूढ़े, क्या अमीर और क्या गरीब, क्या दक्षिणी पक्षी और क्या वामपक्षी और क्या सत्तारूढ़ संयुक्त दल और क्या विरोधी दल, सभी उसके समर्थक थे। कोई भी व्यक्ति फुटबाल का विरोधी नहीं हो सकता था, उसके विरोध का अर्थ था मातृभूमि का विरोध।

उनके अथक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप नई क्रीड़ा क्लबें स्थापित हुई और नये खेल के मैदान बनाये गये। और जब कभी ये क्लबें या मैदान बनते तो संसत्सदस्य महोदय उनके उद्घाटन के लिए बुलाये जाते। उस समय वे ऐसा जोरदार भाषण देते, मानों देश का हरेक फुटबाल का मैदान उन्होंने अकेले ही बनाया है। इसके बाद वे गेंद को पहली ठोकर मार कर खेल का प्रारम्भ करते और इन सब घटनाओं के फोटो खींचने के लिए उनके फोटोग्राफर खास-खास नाकों पर तैनात रहते।

पार्लियामेंट में, जहां उन दिनों साम्यवादियों की संख्या बहुत कम थी और वे एक छोटा सा किन्तु बड़बोला अल्पसंख्यक दल थे, हमारे संसत्सदस्य महोदय एक मसखरे के रूप में प्रसिद्ध हो गये। लोग उन्हें एक ऐसा विदूषक समझते थे जो किसी का कोई नुक्सान नहीं कर सकता। राजनीतिक व्यंग्यकारों के लिए तो वे वरदान सि हुए। वे उन्हें अपने व्यंग्य चित्रों में कभी नहाने की पोशाक पहने झुके कन्धों वाले आदमी के रूप में चित्रित करते और कभी एक भारी वजन उठाते हुए, जिस पर "गत्ते का गट्ठर" लिखा होता। अग्रलेख लिखने वाले अपने सम्पादकीय लेखों

म उन्हें एक ऐसा "शारीरिक शिक्षक छोकरा" कह कर उनका मजाक उड़ाते जिसने निःसन्देह कभी भी फुटबाल का खेल नहीं खेला।

किन्तु संसत्सदस्य महोदय इन सब बातों का बुरा नहीं मानते थे। उन्होंने यह सीख लिया था कि राजनीति में आगे बढ़ने के लिए यह जरूरी है कि अखबारों में ज्यादा से ज्यादा नाम छपे। उनका नाम कभी अखबारों के पहले पन्ने पर नहीं आया, फिर भी उन्होंने पहले पृष्ट पर दखल जमाने वाले अनेक राजनीतिज्ञों से, जो आज हैं और कल नहीं हैं, कहीं अधिक ख्याति प्राप्त कर ली थी।

साम्यवाद विरोधी अखबार अभी इस "शारीरिक शिक्षक छोकरे" को लेकर मजाक कर ही रहे थे कि स्वयं उसके अपने दल के नेताओं ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसका इस्तेमाल प्रारम्भ कर दिया। उन्हें अनेक नाजुक काम सौंप कर मास्को भेजा गया। उनकी मास्को यात्रा के लिए कोई उचित कारण आसानी से बताया जा सकता था, क्योंकि मास्को में बहुत सी फुट-बाल की क्लबें थीं। इसी लिए जब यह कहा जाता कि संसत्सदस्य महोदय "अपने देश के खेल के शौकीन श्रम जीवी वर्ग" के प्रतिनिधि के रूप में किसी महत्त्वपूर्ण खेल के मौके पर वहां गये हैं तो कोई राजनीतिक अटकलबाजी नहीं होती थी। कोई यह सन्देह नहीं करता था कि वे एक महत्वपूर्ण बिचौलिये के रूप में काफी महत्वपूर्ण सन्देश लेकर वहां गये हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने तक इस "शारीरिक शिक्षक छोकरे" के मास्को में अच्छे सम्बन्ध बन गये थे जो केवल खिलाड़ी वर्ग तक ही सीमित नहीं थे। जर्मन आक्रमण के बाद वे मास्को भाग गये और उस समय वहां पहुंचे जब कि डायनमो टीम और लाल सेना की टीमों का फुटबाल मैच प्रारम्भ होने वाला था और साथ ही वहां पहुंचते ही वे अपने देश के शरणार्थियों के नेता बन बैठे।

युद्ध काल में उन्होंने समझदारी के साथ निस्क्रियता का परखा और आजमाया हुआ रास्ता अपनाया। उन्होंने हरेक को खुश रखा और किसी को नाराज नहीं किया। उन्होंने सब जगह मित्र बनाए और स्वयं किसी से अधिक मित्रता नहीं की। जैसे-जैसे समय बीतता गया उनके शक्तिशाली रक्षकों की संख्या बढ़ती गई और साथ ही उनके स्टेनलैस स्टील के दांतों की संख्या भी बढ़ने लगी, जो दोनों चीजें साम्यवादी कामरेडों में उन के दर्जे और प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली थीं। उन्होंने यह सीख लिया कि कम बोलना चाहिए। इससे उनकी कभी-कबार कही गयी बातों का महत्व काफी बढ़ गया। उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन और 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया' का धार्मिक व्यक्ति की सी श्रद्धा से प्रति दिन परायण प्रारम्भ कर दिया।

युद्ध समाप्त होने पर वे स्वदेश लौट गये, जहां उन के दल के मित्र उन्हें मंत्रिमंडल रूपी भवन बनाने के लिए एक अनिवार्य इमारती लकड़ी मानने लगे। उन्हें शारीरिक शिक्षण विभाग का मंत्री बनाने का निश्चय किया गया; किन्तु उन्होंने प्रोपेगेंडे का काम — खासकर अपना प्रोपेगेंडा — करने में इतनी योग्यता दिखाई थी कि उन्हें अपने देश में साम्यवादी क्रान्ति के बाद सूचना व प्रचार मन्त्री बना दिया गया। वे अब भी फुटबाल के खेल के पक्ष में थे, अब भी मार्क्सवाद का अध्ययन करते थे और अब भी दल की नीति की जानकारी प्राप्त करने के लिए 'प्रावदा' और 'इजवेस्तियां' का, जो तीसरे पहर के विमान द्वारा मास्को से शहर में पहुंचते थे, धार्मिक श्रद्धा से पारायण करते थे। इस प्रकार मन्त्री महोदय साम्यवादी दल की नीति से दस घंटे से अधिक पीछे कभी नहीं रहते थे। फिलॉसफी के छात्रों के एक शिष्ट मंडल से एक बार उन्होंने कहा था, " 'लाल रोशनी' का ध्यान से अध्ययन एक समूची विश्वविद्यालय की पढ़ाई से अधिक कीमती है।"

इसी लिए छः बार मंत्री मंडलों में परिवर्तन हुए और पाँच बार बड़े पैमाने पर साम्यवादी दल का शुद्धीकरण हुआ किन्तु हर बार वे साफ बच

गये । उनकी मेज पर उन की एक तसवीर रखी थी जिस में दिखाया गया था कि वे फुटबाल की टीम की पोशाक पहने गेंद को ठोकर मार रहे हैं। यह तसवीर उनके देश के अखबारों में बहुत बड़े पैमाने पर छपी थी। नई पीढ़ी को, जिसे प्रचार मन्त्रालय के कठोर पथ प्रदर्शन में साम्यवाद की दीक्षा दी गई थी यह यकीन दिलाया गया था कि उनके देश ने मंत्री महोदय के जोड़ का फुटबाल का खिलाड़ी आज तक कभी पैदा नहीं किया।

मन्त्री महोदय ने मुझे लम्बी नली वाला रूसी "कास्बेक" सिगरेट पेश किया और बताया कि उन्हें अब पश्चिमी देशों के बने सिगरेट में मजा नहीं आता।

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि मैं सिगरेट नहीं पीता।

उन्होंने सोने के बने एक लाइटर से, जो उन्हें मास्को में डायनमो क्लब से भेंट में मिला था, अपना सिगरेट सुलगाया और कहा कि आशा है तुम्हारा नगर में निवास आनन्दपूर्ण होगा। मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि मुझे यहां आकर बड़ी प्रसन्नता हुई है। उन्होंने अपनी कुर्सी आधी घुमा कर आगे की ओर कर ली ताकि उनका मुझसे सामना न हो। वे विदेशियों को अपना चेहरा दिखाना नहीं चाहते थे। उन्हें भय था कि वे कहीं उससे कोई बहुत बड़ा मतलब न निकाल लें।

"हम ने तुम्हारे लिए एक दुभाषिये का बन्दोबस्त किया था, वह तुम्हें उपनगरीय जिले में श्रमिकों की नई बस्तियां दिखायगी। तुम्हारे देश की भांति यहां भी हर घर के साथ एक अलग गुसलखाना है," उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

मैंने कहा कि मैंने श्रमिकों के नये घरों की बाबत सुना है। मैं उन्हें नाराज नहीं करना चाहता था।

उन्होंने अपना सिगरेट फेंक दिया। ये सिगरेट देर तक नहीं चलते।

"हां, मुझे ख्याल आया, "उन्होंने कहा," तुम्हें यहां आने का वीसा इस लिए दिया गया था कि तुमने हमारी शान्ति कांग्रेस में भाग लेने की इच्छा प्रकट की थी। मुझे आशा है तुम उसमें जाओगे।"

"मेरा इस सप्ताह वाद में वैठकों में जाने का इरादा है।"

"वाद में ?" उन्होंने मुझ पर प्रश्न भरी दृष्टि डाली।

मैं वहुत समय तक यहां से दूर रहा हूं। मैं एक वार फिर नगर की जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं। यहां मुझे एक प्रकार से विल्कुल नये सिरे से ही शुरूआत करनी पड़ेगी।"

उन्होंने कहा, "शान्ति कांग्रेस अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं चाहता हूं कि तुम अपने नये देश में लौट कर लोगों का वताओ कि हम लोग यहां शान्ति के लिए सक्रिय प्रयत्न कर रहे हैं।

"मैं यहाँ लोगों से वातचीत का एक अवसर प्राप्त करने की आशा करता हूं।"

"निःसन्देह तुम किसी से भी वातचीत कर सकते हो," उन्होंने कहा, "जिससे चाहो खुल कर वातचीत करो।"

मैंने कहा, "मुझे वताया गया है कि पश्चिमी लोगों से वातचीत करने वाले व्यक्तियों से वाद में पुलिस पूछताछ कर सकती है।"

वे मेरी ओर घूमे और ऐसे देखा जैसे उन्हें सचमुच ही यह सुन कर आश्चर्य हुआ हो।

"मैंने ऐसी वेहूदा वात कभी नहीं सुनी," उन्होंने कहा, "मैं इस वारे में अभी उचित अधिकारियों से चर्चा करूंगा। क्या तुम मुझे यह शिकायत करने वाले किसी नागरिक का नाम वता सकते हो ?"

यहां उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मैं जानता था कि उनका नाम लेकर तो मैं उनके लिए जेल का दरवाजा खोल दूंगा। उन्होंने कुछ देर प्रतीक्षा का और जव मैं चुप रहा तो वे व्यंग्य से मुस्करा दिये।

"पश्चिमी देशों में हमारे बारे में बहुत-सी गलत बातें फैली हुई हैं। तुम्हारे साथी यहां आते हैं और हमारे बारे में भयानक बातें लिख डालते हैं। वे श्रमिकों के लिए बनाय गये नये मकानों और हमारे जीवन-स्तर के ऊंचे होने के बारे में कुछ नहीं लिखते। वे हमेशा भयंकर खुफिया पुलिस का उल्लेख करते हैं। यह ठीक है कि हमारे यहां पुलिस है। वह तुम्हारे यहां भी है। हमें षडयन्त्रकारियों और राज्य के शत्रुओं से अपनी रक्षा करनी पड़ती है। और वह तुम भी करते हो, ठीक है न? तुम्हारे यहां भी एफ० बी० आई० और आल्काबाजा (खुफिया पुलिस) हैं और दूसरी चीजें भी हैं।"

मैंने उन्हें होटल में फोन पर हुई अपनी बातचीत के बारे में बताया।

वे हंसे। बोले, "कहीं तुमने हाल में बहुत से जासूसी उपन्यास तो नहीं पढ़े हैं?"

मैंने बहस बन्द कर दी। कुछ वर्ष पूर्व लौह आवरण के पीछे के एक और देश की राजधानी में एक बार मुझे किसी ने बताया था कि वहां अमरीकी सूचना सर्विस के वाचनालयों में जाने वाले नागरिक कभी-कभी गिरफ्तार कर लिय जाते हैं। जब मैंने एक उच्चाधिकारी से इस बारे में पूछा तो उसने कहा कि यह झूठ है। दूसरे दिन सुबह मैंने वहीं का बना एक सूट पहना और वहां के निवासी का-सा हुलिया बना कर अमरीकी सूचना सर्विसके वाचनालय में गया। वहां से बाहर निकलते ही खुफिया पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। रिहाई के बाद मैं उस उच्चाधिकारी के पास गया और सारा घटना उसे बताई। किन्तु उसने मेरी तरफ घूरते हुए कहा, "मैं अब भी कहता हूं कि यह झूठ है।"

मैंने प्रचार मन्त्री से कहा, "यहां आने के बाद से ही मेरा पीछा हो रहा है। मैं जहां-कहीं जाता हूं, एक हल्की नीली पोशाक वाली स्त्री मेरे पीछे रहती है।"

"मेरे प्यारे भाई," उन्होंने कुछ बनावटी दुःख के भाव से कहा, "तुम्हें किस बात से उसके जासूस होने का सन्देह होता है ? क्या इस से पूर्व कभी किसी स्त्री ने तुम्हारा पीछा नहीं किया ? हो सकता है, उसके इस पीछे का कोई अधिक मधुर कारण हो, क्यों ?"

इसके बाद और अधिक दलीलबाजी करने की कोई तुक नहीं थी। मैंने कहा, "मैं आप से मिलने इस लिए आया हूं कि मेरी ब्रूनो स्टर्न से भेंट करने की इच्छा है।"

इस बार उन्हें सचमुच आश्चर्य हुआ। उनके चेहरे से मुस्कराहट गायब हो गई। उन्होंने घूर कर मेरी ओर देखा और वे अपनी आंखों से भय का भाव छिपा नहीं सके।

उन्होंने मृदु स्वर में दोहराया, "स्टर्न ?" मानों यह नाम उनके लिए बिल्कुल नया हो।

"जैसा कि आपने असन्दिग्ध रूप से मेरे कागजात में देखा होगा," मैंने कहा, "हम सहपाठी थे। इतने वर्ष बाद मुझे उस से मिलने की इच्छा होना स्वाभाविक है। मेरी उससे अन्तिम भेंट सन् १९४२ के प्रारम्भ में इंग्लैंड में हुई थी। मुझे विश्वास है कि आप उसके साथ मेरी भेंट की व्यवस्था कर देंगे।"

मन्त्री महोदय खिड़की से बाहर की ओर देख रहे थे। उन्हें मेरी बात से हठात् जो आश्चर्य का धक्का लगा था, उस पर उन्होंने विजय प्राप्त कर ली थी और अब सोचने का प्रयत्न कर रहे थे। यदि उन्होंने चातुर्यपूर्ण निष्क्रियता का मार्ग अपनाया होता तो वे उस समय वायदा कर लेते और बाद में कुछ न करते। किन्तु इन्होंने मेरी ओर मुंह करने के लिए अपनी कुर्सी घुमाई, और, शायद संयोगवश अचानक ही, उनका हाथ उनकी बैठने की जगह के पीछे दीवार में लगे लकड़ी के चौखटे से, जिसमें बिजली के बटन लगे थे, क्षण भर के लिए छू गया।

"युद्ध काल में स्टर्न से मास्को में मेरी अनेक बार भेंट हुई," उन्होंने कहा। कमरे में एकदम सन्नाटा था। मुझे ऐसा लगा, जैसे कि मैंने एक सुई की हल्की-सी घिसने की आवाज सुनी हो। तब मुझे महसूस हुआ कि शायद बिजली के बटन से उनका हाथ अचानक ही नहीं छू गया था।

"वह उन थोड़े-से लोगों में से था जिनकी योग्यता असाधारण होती है," उन्होंने कहा, "मैं स्टर्न के प्रतिभाशाली मन से बड़ा प्रभावित हुआ था। उसके सामने मैं खुद अपने आप को बिल्कुल बुद्धू महसूस करता था।"

मुझे अब बिल्कुल निश्चय हो गया था कि हमारी बातचीत रिकार्डिंग मशीन पर दर्ज हो रही है, क्योंकि साधारणतः मन्त्री महोदय अत्यधिक नम्रता दिखाने के आदी नहीं थे।

"इस में कोई कठिनाई नहीं होगी," मैंने कहा, "शान्ति कांग्रेस के दिनों में वह अवश्य शहर में रहेगा।"

"तुम्हें किसने बताया?" उन्होंने तुरन्त पूछा।

"किसी ने नहीं। लेकिन अवश्य ही ऐसे मौके पर, जब कि इतने विदेशी प्रतिनिधिमंडल यहां हों, वह शहर छोड़ कर नहीं जायगा।"

उन्होंने अपना सिर हिलाया और कहा, "मुझे अफसोस है, तुम गलत आदमी के पास आये हो। यह सूचना एवं प्रचार मन्त्रालय है। तुम्हें परराष्ट्र मंत्रालय को प्रार्थनापत्र देना होगा।"

"जब मैंने वीसा के लिए प्रार्थनापत्र दिया था, तब मुझे बताया गया था कि मैं आपके मन्त्रालय की देखरेख में रहूंगा।"

"सिर्फ अपने पेशे सम्बन्धी मामलों में। लेकिन इसे वैसा मामला शायद ही कहा जा सके।" यह कह कर वे उठ खड़े हुए। मुलाकात समाप्त हो गई। सेक्रेटरी भीतर आया, हालांकि मुझे निश्चय है कि मन्त्री महोदय ने उसे नहीं बुलाया था।

"अब मैं माफी चाहता हूं," मन्त्री महोदय ने कहा, "मुझे एक सम्मेलन में शामिल होना है। मुझे आशा है तुम्हारा यहां का निवास आनन्दपूर्ण होगा। और अगर तुम किसी को अपने बिछौने के नीचे पाओ, तो याद रखना वह कोई सुन्दर लड़की भी हो सकती है।" यह कह कर वे हंसे।

मैं बाहर निकल आया। अब मुझे मालूम हो गया कि शक्तिशाली प्रचार मन्त्री मेरे सहपाठी से डरते हैं। उनकी आंखों में भय की छाया झूठी नहीं थी।

किनारे की छोटी और शान्त गलियां, जिनके दोनों तरफ अन्य प्राचीन इमारतें बनी हुई थीं, और सेंट टामस चर्च के सामने के सुन्दर चौक के बीच से होकर जो छोटा रास्ता जाता था उससे कुछ ही मिनटों में पैदल अमरीका दूतावास तक पहुँचा जा सकता था। दूतावास एक पुरानी संकरी गली में था, जो पहाड़ी पर जाने वाले एक महल तक चली गई थी, जहां किसी समय राजा और सम्राट रहा करते थे। अब गणराज्य के राष्ट्रपति उसके एक पार्श्व में रहते थे और शेष भाग सरकारी दफ्तरों के लिए इस्तेमाल किये जाते थे।

मैं अनेक बार वहां पहाड़ी पर गया था। खास तौर से गर्मी के मौसम के आखिरी दिनों या पतझड़ में, जब कि नयी कोंपलें फूटने लगती हैं और पीछे की पहाड़ियां एक नीले से कुहासे में छिप जाती हैं, सुबह के समय वहां से नगर का दृश्य, उसके मकानों के शिखर, उन की छतें, सब बड़े मनोहर दीख पड़ते थे।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब देश ने, मुख्यत: अमरीका की सहायता से, तीन सौ वर्ष नी हाप्स बुर्ग वंश की गुलामी से स्वतन्त्रता प्राप्त की तो अमरीकी सरकार को इन सुन्दर प्राचीन महलों में से कोई एक महल जो एक महान् मित्र राष्ट्र के अविकृत प्रतिनिधियों के निवास के लिए खूब अनुकूल

प्रतीत हो, खरीदने के लिए निमंत्रित किया गया। उन दिनों अमरीकी दूतावास सरकार के समस्त सौजन्य का केन्द्र और जनता की सहानुभूति का लक्ष्य था। मैं अक्सर अपने मित्रों के साथ इस भवन के सामने से गुजरा करता था और उसके सामने हमेशा खड़ी रहने वाली चमचमाती मोटर गाड़ियों की तारीफ किया करता था। उसका सत्रहवीं सदी का बाहर का चेहरा वैसा ही रहने दिया गया था किन्तु उसका अन्दरूनी भाग अमरीका के बीसवीं सदी के सुख-सुविधा के स्तर के अनुरूप आधुनिक ढंग से सजा दिया गया था। तीन सौ वर्ष पुराने कमरों को अब दीवारों के भीतर से गर्म करने की व्यवस्था कर दी गई थी, आधुनिक ढंग के नल आदि लगा दिए गये थे और चमचमाते लिनोलियम के फर्श बिछा दिये गये थे। इनके पुराने स्वामी जिन्हें जाड़ों में खूब कष्ट उठाना पड़ता होगा अगर आज जीवित होते तो अवश्य इसे पसन्द करते।

अब उसके पुराने ढंग के द्वार पर नीली टोपी पहने एक सुरक्षा सैनिक पहरा दे रहा था। वह लकड़ी के एक खोखे में खड़ा था और जब मैं पास से गुजरा तो वह जान बूझ कर दूसरी ओर देखने लगा। दरवाजे के भीतर से मैंने पत्थरों से मढ़ा हुआ सुन्दर आंगन देखा और उसके पीछे की ओर, आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर को ओर उठती हुई पहाड़ी पर एक खूबसूरत सीढ़ी नुमा बगीचा था। पहाड़ी के सिरे पर इटालियन पुनर्जागरण युग की शैली का एक पैविलियन बना था। राजदूत की काली बड़ी मोटर गाड़ी, जो अग्रभाग पर लगे अमरीकी झंडे से सहज में ही पहचानी जा सकती थी, पत्थरों से मढ़े फर्श पर जिसके साथ उसके सौन्दर्य का कोई मेल नहीं था, खड़ी थी।

जहां सुरक्षा पुलिस का सिपाही खड़ा था, उसके सामने ही सड़क के उस पार नागरिक वेश में खड़े दो व्यक्ति ऐसे बातें कर रहे थे, मानों अभी एक मिनट पहले अचानक ही उनकी मुलाकात हो गई हो। नगर में कुछ

घंटे विताने के वाद मेरी पीठ पीछा करने वाले को भांपने की और मेरे कान कानाफूंसी की-सी हल्की आवाज को भी सुनने के अभ्यस्त हो गये थे।

मैंने मुलाकात के लिए आने वालों का स्वागत करने वाली लड़की को अपना नाम वताया और श्री हावर्ड से मिलने की इच्छा प्रकट की। इसने टेलीफोन किया और मुझे दफ्तर का नम्वर वताया। फोन रखने के वाद उसने मुझे नीचे से ऊपर तक ऐसी पैनी दृष्टि से देखा, मानों मेरी पोशाक और हुलिये को याद करने की कोशिश कर रही हो। शायद उसे खुफिया विभाग का आदेश था कि यदि वह अपनी नौकरी वरकरार रखना चाहती है तो वहां आने वाले सव आदमियों की पूरी सूचना उसे दे।

उस विशाल इमारत में विल्कुल सन्नाटा था। ऊंची छत वाले गलियारे के रवड़ के फर्श पर अपने पांवों की आहट की हल्की-सी प्रतिध्वनि भी मैं सुन सकता था। किसी समय दूतावास कर्मचारियों और आगन्तुकों से भरा रहता था, किन्तु अव इस शहर में वहुत थोड़े आदमी थे, जो यहां आने का साहस करते थे। इस देश का जो भी नागरिक अमरीकी दूतावास में घुसता दीख पड़ता था, वह स्वतः ही खुफिया पुलिस की अत्यन्त अप्रिय जिरह का शिकार हो जाता था। वह इस वात का पक्का वन्दोवस्त कर देना चाहती थी कि अमरीकी दूतावास के अधिकारी स्थानीय जनता के साथ कोई सम्पर्क स्थापित न कर सकें। पुलिस दूतावास के लोगों का पीछा करती, कानूनी दांव-पेंचों से उन्हें परेशान किया जाता और दफ्तरों और घरों में उनके स्थानीय कर्मचारी उन पर जासूसी करते। कुछ को जासूसी का झूठा आरोप लगा कर अवांछनीय व्यक्ति घोषित कर दिया गया और अड़तालीस घंटों के भीतर देश छोड़ देने का आदेश दिया गया। इन तरीकों से दूतावास के कर्मचारी मंडल की संख्या घट कर दस रह गई जिनमें राजदूत, उनकी देशी स्वागतकर्त्री और एक देशी ड्राइवर भी शामिल हैं। ये तरीके अत्यन्त प्रभावकारी थे, हालांकि टैलीरेंड और मैटरनिक के जमाने के कूटनीतिक प्रथा के आदर्श के अनुकूल नहीं थे।

मुझे हावर्ड से मिल कर हमेशा बहुत खुशी होती थी। मैं युद्ध काल में उस से मिला था, जब कि वह पश्चिमी यूरोप के एक अमरीकी दूतावास में तृतीय सचिव था। वह सुयोग्य, सतर्क और मिलनसार आदमी था। उसका रहन-सहन और पहरावा वैसा ही था जैसी कि उस से आशा की जाती थी, किन्तु उसमें कुतूहल की एक स्वस्थ भावना और विचारों की एक ताजगी देने वाली स्वतंत्रता रहती थी। वह आगे बढ़ कर पहल करने या अनिश्चितता त्याग कर निर्णय कर डालने से घबराता नहीं था और न ही अखबारों में बड़ी-बड़ी सुर्खियों से अपने नाम या वक्तव्य छपाने की तलाश में फिरने वाले राजनीतिज्ञों से उसे डर लगता था। किन्तु इन सब चीजों के कारण सतर्कता और फूंक-फूंक कदम रखने के इस जमाने में वह कुछ-कुछ दूज के चांद-सा बन गया था।

बाद में मैं एथेन्स, कासाब्लांका और वारसा में हावर्ड से मिला। किन्तु इस समय उसे सबसे मुश्किल जगह में भेजा गया था और वह प्रथम सचिव था। यदि किसी व्यक्ति से उसी समय मैत्री हो जाय जब कि वह तृतीय सचिव हो तो हो सकता है कि एक दिन तरक्की करते-करते वह राजदूत बन जाय और वह पुरानी मैत्री एक राजदूत से मैत्री में परिनत हो जाय। मुझे लगता है कि एक ऐसा दिन अवश्य आयगा जब मैं हावर्ड के दफ्तर में बैठा होऊंगा और वह दूतावास का प्रमुख होगा, उसके पीछे अमरीका का झंडा लगा होगा, सामने दोहरा कलमदान का सैट, पानी की कुप्पी और गिलास, धातु का कलैंडर, दो टैलीफोन और फाइलों का ढेर रखे होंगे।

"आखिर तुम आ ही गये!" हावर्ड ने मेरा स्वागत करते हुए कहा। मैं कुछ सप्ताह पूर्व ही पेरिस में उस से मिला था और उससे कहा था कि मेरा इरादा वीसा के लिए प्रार्थनापत्र देने का है। उसने मुझे चेतावनी दी थी, जो कि उसका कर्त्तव्य था, किन्तु जब उसे मेरी यात्रा का असली

कारण मालूम हुआ तो वह चुप हो गया। यही कारण था कि मैं हावर्ड को पसन्द करता था। वह हृदय से नौकर शाही में विश्वास नहीं रखता था।

"हां, तो ये लोग तुम से कैसा व्यवहार कर रहे हैं," वह बोला।

मैंने उसे प्रचार मन्त्री, नीली पोशाक वाली स्त्री और होटल में टैलीफोन की घटना का सारा हाल बताया। अपनी कुर्सी से मैं बाहर सड़क पर देख सकता था। एक काली मोटर गाड़ी दोनों सिरों पर खड़ी हुई थी और उसने सारा यातयात रोक रखा था। दोनों नागरिक वेशधारी व्यक्ति दूतावास के सामने सड़क के उस पार खड़े अब भी उसी तरह घुल-घुल कर बातें कर रहे थे।

हावर्ड ने सिर हिला कर कहा, "और तुम क्या उम्मीद करते थे ? मैंने तुम्हें पहले ही सचेत कर दिया था। तुम पर यहां चौबीसों घंटे निगरानी रखी जायगी। क्या उन्होंने तुम्हारा पीछा करने के लिए कोई मोटर लगा रखी है ?"

मैंने सिर हिला कर नकारात्मक संकेत किया।

वह बोला, "जब वे लोग ऐसा करते हैं तो उसका पता तभी चलता है जब आदमी अपनी जगह पर पहुंच जाता है।"

"मैंने सूचना मन्त्री से बातचीत की थी।"

हावर्ड मजाक करते हुए बोला, "दो पुराने फुटबाल के खिलाड़ियों में घुट-घुट कर पुराने जमाने की बातें हुई होंगी, क्यों ?"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ," यह कह कर मैंने जो कुछ हुआ था, उसे कह सुनाया।

हावर्ड ने गहरी सांस ली। दराज खोल कर उसने एक फाइल निकाली जिस पर "गुप्त" की मुहर लगी थी।

"तुम्हारे मित्र के बारे में जो कुछ हमें मिला है, वह हम ने प्राप्त कर लिया है," उसने कहा। उसने उठ कर फोन प्लग से निकाला, रेडियो चलाया और खिड़की खोल दी। जिस तरह सर्जन आपरेशन करने से पूर्व अपने हाथ धोता है, उसी तरह बाकायदा तरीके से और जानबूझ कर उसने यह सब किया। इसके बाद वह बैठ गया और एक कागज पर कुछ पंक्तियां लिख कर उसने मुझे दीं। उसमें लिखा था, "किसी नाम का उल्लेख मत करो। हो सकता है असावधानी से कोई गल्ती हो जाय।"

मैंने सिर हिला कर स्वीकृति दी। हावर्ड ने कागज वापिस ले लिया और एक दीयासलाई सुलगा कर आहिस्ता-आहिस्ता तरीके से कागज जला कर सिगरट की राख डालने की डिबिया में तब तक उसकी राख इकट्ठी करता रहा, जब तक कि उसका आखिरी टुकड़ा भी जल नहीं गया। मुझे उस "गुप्त" फाइल का ध्यान आया। इस जमाने में हरेक चीज का वर्गीकरण किया जाता है। हो सकता है किसी दिन कोई भला आदमी पाखाने में सफाई के लिए रखे जाने वाले कागजों का भी वर्गीकरण करने लग जाय। किन्तु हावर्ड ऐसे लोगों में से नहीं था फिर भी यदि वह ऐरिक ऐम्बलर की कहानी के पात्र की भांति आचरण कर रहा था तो अवश्य ही उसका कोई उपयुक्त कारण होना चाहिए।

"शायद उसके बारे में तुम हम से ज्यादा जानते हो," हावर्ड ने अपनी फाइल की ओर देखते हुए कहा, "हमारे पास बहुत कम जानकारी है··· अच्छा, आओ देखें। इसमें लिखा है कि वह इस शताब्दी के तीसरे दशक के शुरु के वर्षों में इस देश में आया।"

"१६१८ में," मैंने उत्तर दिया।

"धन्यवाद", हावर्ड ने फाइल के हाशिये पर नोट करते हुए कहा, "उसके बाद स्कूलों का जिक्र है और लिखा है कि उसका बाप एक व्यापारी था।"

"तुम्हारी फाइल में लोला का भी कोई जिक्र है ?"

"वह कौन है ?"

"उसकी बहन", मैंने कहा, "लोला। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ……"

"नहीं," हावर्ड ने कहा, "उसके बारे में हमारे पास कुछ नहीं है…… हां, तो उसने माध्यमिक शिक्षा बर्लिन में प्राप्त की। मास्को में अनेक वर्ष बिताये, लेनिन स्कूल में अध्ययन किया जहां अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघ के प्रमुख सदस्यों को ट्रेनिंग दी जाती थी। १९२९ में लेनिन स्कूल से उपाधि प्राप्त की और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघ (कमिंटर्न) में उसका तबादला कर दिया गया।"

हावर्ड चुपचाप पढ़ता गया और उस वर्गीकृत सूचना में से आवश्यक अंश कागज पर घसीट कर मुझे देता गया। इसके बाद उसने मेरी ओर देखा।

"उसके बाद के वर्ष अस्पष्ट हैं। प्रतीत होता है कि उसने एक संगठन कर्त्ता के रूप में अथवा विभिन्न देशों के साम्यवादी संगठनों के बीच सन्देशवाहक के रूप में सारे यूरोप की यात्रा की, भाषण दिये व सभाएं कीं। युद्ध आरम्भ होने के बाद मास्को गया और युवकों के संगठन कार्य में प्रमुख भाग लिया। तीसरी पैराशूटी युवक ब्रिगेड का संगठन किया, जिस के सदस्यों में सारे यूरोप के जर्मन अधिकृत देशों के भगोड़े साम्यवादी भी शामिल थे। ब्रिगेड स्टालिनग्राड के मोर्चे पर बहादुरी से लड़ी और भारी क्षति उठाई। स्टर्न को पदक दिया गया और क्रेमलिन में उस का स्वागत किया गया।"

हावर्ड ने पन्ना पलटा। "उसके मास्को के निवासकाल के बारे में हमारे पास कुछ नहीं है। जब इस देश की प्रवासी सरकार युद्ध समाप्ति से कुछ समय पूर्व स्टालिन से भेंट करने लन्दन से मास्को गई तो क्रेमलिन में

हुए स्वागत समारोह में स्टर्न भी उपस्थित था। 'प्रावदा' में प्रकाशित अतिथियों की सूचि में तीसरे स्थान पर उसका नाम है, राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री के ठीक बाद। यह सम्भव है कि उसे अभी तक अपने मौजूदा काम की ट्रेनिंग दी जा रही हो। यह भी खासा काम है, हालांकि हम उसके बारे में अधिक नहीं जानते। जो कुछ हम जानते हैं उसके अनुसार यहां वही एकमात्र ऐसा आदमी है जिसकी क्रेमलिन तक सीधी पहुंच है।"

हावर्ड पीछे की ओर झुका और छत की ओर ताकने लगा।

"जहां तक हम जानते हैं उसके बारे में अनेक बातें परस्पर विरोधी हैं। हमारी जानकारी के अनुसार वह दल का संचालन करता है किन्तु न वह अध्यक्ष मंडल का और न केन्द्रीय समिति का निर्वाचित सदस्य है। वह सिर्फ अत्यन्त गुप्त सभाओं में ही बोलता है। उनकी सरकारी छुट्टियों पर होने वाली परेडों के समय वह भी उच्च नेताओं के मंच पर होता है किन्तु कम महत्व के नेताओं की ओट में रहता है। अधिकतर आदमियों ने कभी उसकी तस्वीर नहीं देखी। उसके अपने दल के सर्वसाधारण सदस्यों ने कभी उसे आंखों से नहीं देखा। किन्तु वे सब उससे भयभीत हैं। तुम जानते हो, वे उसे क्या कह कर पुकारते हैं?"

मैंने सिर हिलाया।

हवार्ड ने कहा, "यह सोच सकना सचमुच बड़ा कठिन है कि जिस लड़के के साथ कोई स्कूल में पढ़ा हो वह........" उसने वाक्य पूरा नहीं किया और फांसी की रस्सी की भांति हाथ से अपनी गर्दन पकड़ कर उसने इशारा किया।

यह सोच सकना वास्तव में ही बड़ा कठिन था। स्टर्न ब्रूनो के बारे में यह सोचना कि वह भयंकर आदमी था, वास्तव में ही बड़ा मुश्किल था। मुझे लोला का ख्याल आया और उसके पिता का और उनके घर के कमरे का,

जिसमें ओक की लकड़ी का भारी फर्नीचर था, गहरे रंग के मखमली पर्दे थे, एक बड़ा प्यानो था और दीवार पर दाढ़ी वाले भव्य आदमियों के चित्र थे। उस पर मध्यवित्त वर्ग की इतनी गहरी छाप थी, इतनी गम्भीरता और ठोसपन था कि यह कल्पना करना भी कठिन था कि यहां क्रान्तिकारी और हत्यारे पैदा हो सकते हैं। मैं उसके बारे में इतना कुछ जानता था और फिर भी ऐसा लगता था कि मैं कुछ नहीं जानता। जब कभी वह मेरे साथ बैठा होता था तब भी वह एक पहेली सा प्रतीत होता था।

'वही असल मालिक है," वह बोला, "राज्य रक्षा-मन्त्री-और गृहमन्त्री तो बाहर के दिखावे के लिए सिर्फ आगे चलने वाले प्यादे हैं। वही सब कुछ संचालित करता है। वे उसी से सब आदेश ग्रहण करते हैं। हमें सभी मुकदमों और शुद्धीकरणों में इसका प्रमाण-मिला है। मौत की सजाओं पर उसी ने दस्तखत किये। वह यह सब काम रहस्यात्मक ढंग से गुपचुप करता है।

"हम नहीं जानते कि उसका मुख्य दफ्तर कहां है। वह तीन मन्त्रालयों में काम करता देखा गया है। दल के प्रधान कार्यालय में उसका एक दफ्तर है और एक शहर के बाहर भी है। मानो या न मानो, हमें यह नहीं मालूम कि वह कहां रहता है। इस प्रकार के प्रश्न पूछने की कल्पना तक नहीं की जा सकती। किसने यह निश्चय किया था कि सात आदमी गिरफ्तार कर लिये जांय और उन पर मुकद्दमा चलाया जाय ? दल के शुद्धीकरण का आदेश किसने दिया ? क्या अध्यक्ष मंडल की कोई बैठक हुई ? क्या उसने क्रेमलिन से सम्पर्क कायम किया या सोवियत राजदूत की मार्फत वहां से हिदायतें लीं ? यह सब किस तरह हो रहा है ? हमारे पास सब चीजों के मूल्यांकन विशेषज्ञ हैं किन्तु हम प्रभुत्व स्थापना के यन्त्र की सीधी-सादी मशीनरी के बारे में कुछ भी नहीं जानते।"

हावर्ड कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और चहलकदमी करने लगा।

"कभी-कभी मैं ऐसा पागल हो उठता हूं कि मानों सब तोड़-फोड़ डालूंगा। मुझे यहां आये चौदह महीने हो गये हैं और अब तक इस देश के सबसे शक्तिशाली आदमी से मेरा साक्षात्कार नहीं हुआ। मैं व्यर्थ समय नष्ट कर रहा हूं, आर्थिक और राजनीतिक मामलों पर लम्बे-लम्बे लेख लिखता हूं किन्तु असली तत्व तक नहीं प च पाता। इस देश में उच्च स्तर के निश्चय सिर्फ मुट्ठी भर आदमी करते हैं। हम उनके चरित्र, उनकी व्यक्तिगत आदतों के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। यह बात इन्सान को पागल बना देने वाली है।"

खिड़की के पास पहुंच कर वह रुक गया।

"उन आदमियों को देखते हो? दो आदमी हर वक्त वहां तैनात रहते हैं। दो मोटरें हर वक्त इस गली के प्रवेश द्वार की निगरानी करती हैं। कोई भी आदमी उनकी नजर से बच कर आ-जा नहीं सकता। जब कभी मैं यहां से जाता हूं, कोई न कोई मेरे पीछे लगा रहता है। और जब मैं अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचता हूं तो वहां कोई न कोई मेरी इन्तजार में खड़ा होता है। कभी-कभी उन्हें पता लग जाता है कि मैं कहां जा रहा हूं। कुछ सप्ताह पूर्व मैं ब्रिटिश दूतावास के अपने दो मित्रों के साथ गया था। हम लोगों को यों तो स्की के खेल का शौक है, किन्तु फिर भी हमारे जाने का मुख्य उद्देश्य था कुछ दिन के लिए छुटकारा पाना। हम ने अपना कार्यक्रम फोन पर बनाया था और जब हम पहाड़ पर पहुंचे तो वे वहां पहले ही पहुंच चुके थे। और फिर वे स्की के खेल के अच्छे खिलाड़ी भी निकले। कैसी बढ़िया छुट्टी रही, क्यों? हार कर हम वापस आ गये। एक बार एक बर्फानी तूफान में तो यह हाल हो गया कि हमें अपने ऊपर निगरानी रखने वालों को अपने साथ चाकलेट तक खिलाना पड़ा। हम अमरीकियों के साथ यही तो कठिनाई है; हम डटे नहीं रह सकते और वक्त आने पर उन लोगों के साथ भी मिल कर खाते-पीते हैं जो हमसे नफरत करते हैं। उन्होंने

हमारे चाकलेट स्वीकार कर लिये, किन्तु सिगरेट नहीं लिये।.....अच्छा खैर, आओ कुछ देर वगीचे में टहलें।"

उसने मेरी ओर देख कर अर्थपूर्ण मुद्रा से सिर हिलाया। मैं उस का आशय समझ गया। टैलीफोन का सम्बन्ध काट दिये जाने, रेडियो के पूरे जोर से वजने और खिड़की के खुले रहने पर भी जब हावर्ड यह अनुभव करता कि वह अपने दफ्तर में सुरक्षित नहीं है तब वह दूतावास के वगीचे में घूमने का सुझाव दिया करता था। कम से कम वगीचे के पेड़ों पर तो माइक्रोफोन नहीं लगे थे।

वाहर आ कर वह मुझे वोला, "जब तुम और स्टर्न एक साथ स्कूल में पढ़ते थे तो क्या तुम्हारी घनिष्ट मित्रता थी?"

इस का उत्तर ठीक समझा कर देना मुश्किल था। मैंने कहा, "स्टर्न का कोई घनिष्ट मित्र नहीं था। हम एक ही कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन वह मेरे घर पर भ(आया। किन्तु, उस की यह मुलाकात कामयाव नहीं हुई।"

"वह अपने पुराने सहपाठी से मिलकर प्रसन्न नहीं होगा," हावर्ड ने कहा, "तुम्हें देख कर उसे ऐसी वहुत-सी वातें याद आ जाएंगी, जिन्हें भुलाने की वह भरसक चेष्टा कर रहा है।"

"सम्भव है, वह उन्हें भुला चुका हो।"

'हो सकता है। इन लोगों में ऐसी चीजों को अपनी स्मृति से निकाल फेंकने की योग्यता होती है जो उनके अनुकूल नहीं होती।"

मैंने कहा, "मुझे इस की परवाह नहीं कि वह मुझसे मिल कर खुश होगा या नहीं। मैं हर हालत में उससे मिलना चाहता हूं। मुझे यह जानना ही होगा कि लोला का क्या हुआ।"

हावर्ड ने मेरी बांह पकड़ ली। वह आहिस्ता-से बोला, "कभी-कभी यह न जानना ही बेहतर होता है कि क्या हुआ।"

"यह सब कहने का कोई लाभ नहीं, हावर्ड। कोई भी मुझे बातों से भुलावे में नहीं डाल सकता। मैं स्टर्न से मिले बिना नहीं रहूंगा और उससे पता लगाऊंगा कि क्या हुआ, भले ही यह मेरी जिन्दगी का आखिरी काम...."

"हां, जैक, यही बात है। यह सम्भव है कि यही तुम्हारे जीवन का अन्तिम कार्य हो।"

"तुम कहीं किसी दुःखान्त नाटिका का अभिनय तो नहीं कर रहे हो?"

"सुनो," वह बोला, "यह बात मैं तुम्हें निजी तौर पर कह रहा हूं। राजदूत महोदय को तुम्हारी इस यात्रा के बारे में बड़ी चिन्ता है। हमने इस बारे में परराष्ट्र विभाग से भी सम्पर्क काम किया था और वे भी बहुत चिन्तित हैं। हम चाहते हैं कि तुम जितनी जल्दी हो सके, देश से बाहर चले जाओ।"

आजकल अमरीकियों को हमेशा ही चिन्ता रहती है। अमरीकी पासपोर्ट से यात्रा करने वालों के लिए संसार का एक बड़ा भाग वर्जित है। और पृथ्वी के दूसरे हिस्से में भी जहां अमरीकी आज भी यात्रा कर सकते हैं, वे अपने ही देश के कूटनीतिक अधिकारों में चिन्ता का कारण बने रहते हैं। वे अमरीकियों को वहाँ आने से नहीं रोक सकते, किन्तु आते ही इन्हें वहां से निकालने की चिन्ता उन पर सवार हो जाती है। मुझे याद है कि किस प्रकार पश्चिमी एशिया के एक अमरीकी हवाई अड्डे पर मुझे देखकर एक अमरीकी सेनापति चिन्तित हो गया था और उसने मुझे सलाह दी थी कि किसी "घटना" का केन्द्र बनने से पूर्व ही मैं वहां से चला जाऊं। और वहां के राजदूत तो कोई मुसीबत खड़ी करने से पूर्व ही मुझे वहां से बाहर निकलने के लिए अपना विमान तक देने को तैयार हो गये थे। उन्हें यह

समझाना वकार था कि मेरा पास्टपोट और वासा, दोनों विल्कुल ठीक हैं और मैं यहाँ एक आवश्यक काम कर रहा हूं। सेनापति महोदय तरक्की की उम्मीद कर रहे थे, इस लिए वे "अप्रीय घटनाओं" से डरते थे और राजदूत को वाशिंगटन से प्राप्त एक तार के कारण चिन्ता थी।

"अगर तुम यहां मुसीवृत में पड़ गए," हावर्ड ने मुझसे कहा, "तो हम तुम्हारी अधिक सहायता नहीं कर सकेंगे। वास्तव में तो हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे। मैं तुम्हें उनके जासूसी सम्बन्धी कानून का अंग्रेजी अनुवाद दिखाऊंगा। बड़ा भयंकर है यह क़ानून, जैक। तुम पर यह अभियोग लगाया जा सकता है कि तुमने किसी दूसरे देश को राज्य का भेद देकर जासूसी की है। किसी भी समाचार को, चाहे वह कितना ही निर्दोष हो, राजकीय भेद कहा जा सकता है। तुमने प्रचार मंत्री से स्टर्न के बारे में पूछा था। और स्टर्न का पता-ठिकाना राज्य का रहस्य है। इस लिए तुम आसानी से फंस सकते हो। अगर तमने स्टर्न की तलाश की तो तुम मुसीवत में पड़े विना नहीं रहोग। इस लिए उसके मामले से बिल्कुल हाथ खींच लो, जैक। वह बड़ा भयंकर आदमी है। भूतों का पीछा करना छोड़ दो, जैक। तुमने वारसा में ही मुझे काफा डरा दिया था और यहाँ तो मामला और भी बेढब है। जान पड़ता है, अबकी तुम मार ही डालोगे।"

वारसा में साम्यवादियों के सत्तारूढ़ होने से कुछ ही दिन पूर्व, एक रात मैं चॉपिन का संगीत सुनने के लिये हावर्ड के साथ गया था। यह एक असाधारण संगीत कार्यक्रम था। पोलेंड के एक सर्वश्रेष्ट पियानोवादक ने विल्कुल गुप्त रूप से एक बम-विध्वस्त कोठरी में अपने संगीत का प्रदर्शन किया था।

हावर्ड और मैं एक लम्बे-तड़ंगे और गम्भीर तबायत के एक विश्वस्त पोलिश मित्र के साथ, जिसकी चाल-ढाल फौजियों की सी थी और जिसकी गम्भीरता की मुद्रा हर वक्त बनी रहती थी, वहां गये थे। किसी समय वह

वारसा का एक प्रसिद्ध संगीत आलोचक था। युद्धकाल में वह जर्मनी के खिलाफ लड़ने वाले पोलिश देशभक्तों का, आदरणीय बन गया था। उसने हमें चेतावनी दी थी कि हम किसी को यह न बताएं कि हम अमरीकी हैं। जब हम बस में सवार हुए तो उसका रंग-ढंग रहस्यपूर्ण प्रतीत होता था।

हम एक उपनगर की एक सुनसान परित्यक्त गली में उतरे। यूरोप के बड़े शहरों में वारसा को ही द्वितीय विश्व युद्ध में सबसे अधिक क्षति और विध्वंस सहन करना पड़ा था। नगर के मध्य भाग का तो पुनर्निर्माण हो गया था किन्तु उपनगरों में उस समय भी मलबे के ढेर दूर तक फैले थे।

निस्तब्ध गली की टूटी-फूटी दीवारों से टकरा कर हमारे पांवों की आहट की प्रतिध्वनि हो रही थी। हमारे मित्र ने दो बार पीछे घूम कर देखा कि कहीं हमारा पीछा तो नहीं किया जा रहा है। हम एक मकान के अग्र भाग से, जो उसका एकमात्र अवशिष्ट अंश था, भीतर गये और आंगन पार कर सीढ़िया से नीचे उतर कर तहखाने में प्रविष्ट हुए।

तेल की लालटेन के मन्द प्रकाश में मैंने करीब चालीस आदमियों को भद्दी सी लकड़ी की बेंचों पर बैठे देखा। कुछ लोग फर्श पर दीवार का सहारा लेकर बैठे थे। सब लोग एक दूसरे के साथ सटकर बैठे थे ताकि तेज जाड़े से बच सकें। हमारे भीतर पहुंचने पर उनमें से कुछ ने सिर हिलाकर हमारे मित्र को नमस्कार किया। ऐसा प्रतीत होता था कि वे आपस में एक दूसरे को जानते थे। कुछ लोग एक तरफ सरक गये और आगे की एक बेंच पर हमारे लिए जगह कर दी।

तभी मैंने एक साधारण दृश्य देखा। एक प्यानो तहखाने की पीछे की दीवार के साथ लगा कर रखा था। एक आदमी उस पर उंगलियां चला रहा था। मैं उसका नाम नहीं लूंगा और न उसका वर्णन करूंगा। हो सकता है कि वह आज भी वहां हो। मुझे उसकी आंखें हमेशा याद रहेंगी। वे गहरी और काली थीं, वे एक ऐसे आदमी की आंखें थीं जिसने बहुत विपत्तियां

सही हों, किन्तु फिर भी आत्म विश्वास न हारा हो। उसका प्यानो टूट-फूट गया था। मुझे हैरानी हो रही थी कि वे लोग उसे वहां तक लाये कैसे।

"हमारे यहां के प्यानो-वादकों की बहुत ख्याति रही है," मेरे मित्र ने मुझ से कहा, "वारसा में जितने प्यानो के अव्वल दर्जे के कुशल उस्ताद हैं उतने यूरोप के शायद ही किसी और शहर में हो। यह आदमी हमारे सर्वश्रेष्ट प्यानो-वादकों में से एक है। वह कई तरह से एक असाधारण आदमी है। जर्मन कब्जेके आखिरी दो वर्षों में वह एक अन्य बम-विध्वस्त मकान के तहखाने में पोलिश देशभक्तों के एक छोटे से श्रोताओं के दल के सामने सप्ताह में दो बार प्याना बजाता था। वह सिर्फ चौपिन की ही शास्त्रीय धुनें सुनाता था। तुम जानते हो, पोल लोगों के लिए फ्रेडरिकचोपन एक राष्ट्रीय प्रतीक है। उसका संगीत हमारे लिए वही स्थान रखता है जो फ्रांस काराष्ट्र-गीत फ्रांसीसियों के लिए। हम अत्यन्त रोमांटिक लोगों की जाति हैं। जार्ज सैंड ने चौपिन के बारे में एक बार कहा था कि "वह स्वयं पोलैंड की अपेक्षा भी अधिक पोलिश है।" उसका संगात हमें पोलैंड की सदियों पुरानी आजादी की लड़ाई की याद दिलाता है। वह हमें शक्ति और आशा प्रदान करता है वह हमारे लिए महान् पुरुषों के वचनों से भी कहीं अधिक क्रान्ति का सन्देशवाहक है।

"निःसन्देह जर्मन लोग यह जानते थे, इसलिए उन्होंने सार्वजनिक रूप से चोपिन के संगीत के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। वे लोग वारसा के होली क्रास चर्च में जहां चोपिन का हृदय गढ़ा हुआ है, जाने वालों को गिरफ्तार कर लेते थे। चोपिन पेरिस में मरा था और वहीं उसे दफन किया गया था, किन्तु फ्रांसीसी लोग उसका हृदय हम से नहीं छीन सके। उसका हृदय हमारे पास है। पोलैंड से फ्रांस जाते हुए उसके अन्तिम शब्द थे, "मेरा हृदय तुम्हारे पास रहेगा।" चोपिन वारसा से पैंतीस मील पश्चिम जेलाजोवा वोला नामक एक छोटे गांव में पैदा हुआ था। उसका

मकान पहले विश्व युद्ध में जर्मन, आस्ट्रियन या रूसी, न जाने किस सेना ने नष्ट कर दिया था। पोलैंड की धरती पर कितनी ही विदेशी सेनाओं ने लड़ाई लड़ी है। यह मकान पुनः बनते न बनते दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। जर्मन सेना फिर वहाँ से गुजरी और उसने उसे पुनः नष्ट कर दिया, किन्तु वह हमारे हृदयों में बसे हुए चोपिन को नष्ट नहीं कर सकी।

"दो वर्ष तक इस प्यानो वादक ने अपने तहखाने में चोपिन का अद्भुत संगीत सुनाया। यह तहखाना इस ढंग से बना था कि इससे आवाज बाहर नहीं जा सकती थी, फिर भी जर्मन विध्वसकारी दल से जो सारी रात गली में गश्त लगाता था, उसका व्यवधान सिर्फ एक गज मोटी ईंट की दीवार का था। सिर्फ प्यानो वादक के या उसके किसी विश्वसनीय मित्र के घनिष्ट मित्र ही वहाँ जा सकते थे। यह बात शायद वारसा की युद्ध कालीन भावना की द्योतक है कि उसके साथ एक बार भी विश्वासघात नहीं हुआ। मैं भी कई रात वहां गया हूं। उस के संगीत से मैं कुछ घंटों के लिए युद्ध, भुखमरी जाड़ा आदि दुखों और विपत्तियों को भूल जाता था। उसके संगीत से एक ऐसी दिव्य स्वर लहरी उठती प्रतीत होती थी जो उसके श्रोताओं को हमारे जीवन की काली घटाओं से दूर एक उजली सुखमय दुनिया में ले जाती थी। हम सभी जानते थे कि यदि जर्मनों ने हमें यहां देख लिया तो हमें गोली से उड़ा दिया जायगा किन्तु हमने कभी उसकी परवाह नहीं की। अपने हृदयों में स्वाधीनता के संगीत को झंकृत रखना हमारे लिए जीवित रहने से ज्यादा महत्वपूर्ण था।

"जर्मनों से मुक्ति पाने के बाद सरकार ने प्यानो वादक को एक बहुमूल्य पदक से सम्मानित किया। उस ने वारसा के विशाल रोमा हाल में अपने संगीत का प्रदर्शन किया जो खूब सफल रहा और जिससे उसने ख्याति भी अर्जित की। किन्तु तभी एक अजीब बात हुई।"

मेरे मित्र ने ऐसे भाव से कन्धा उचकाया, मानो वह स्वयं यह नहीं समझ सका कि ऐसा कैसे हुआ।

"उसके संगीत को न जाने क्या हो गया। उसकी वादन-पद्धति अब भी वही पुरानी पद्धति थी। उसमें कोई गड़बड़ नहीं थी। विशाल रोमा हाल खूब गर्म हो रहा था और ध्वनि की गूंज को रोकने के लिए भी पूर्ण व्यवस्था थी और दो हजार श्रोता आरामदेह कुर्सियों पर उत्सुकता से बैठे थे। किन्तु न जाने क्यों उसका संगीत उतना मार्मिक और हृदय स्पर्शी नहीं लगा जितना कि उस समय लगता था जब कि वह खंडहरों, मलबे और चूहों से घिरे हुए अपने ठण्डे तहखाने में थोड़े से श्रोताओं के सामने प्यानो बजाता था। वह दिव्य स्वर लहरी उसके संगीत में अब नहीं रही थी।"

तहखाने में स समय भयकर ठण्ड थी। हम लोग ठिठुर रहे थे। मुझे लगा कि जिन्दगी में इतनी बेआरामी शायद मुझे कभी नहीं हुई। नमी हड्डियों तक धंसी जा रही थी। प्यानो के पीछे बैठा आदमी अब भी अपनी उंगलियां चला कर उन्हें गर्म कर रहा था।

"पिछले वर्ष," मेरे दोस्त ने कहा, "पोलैंड की आजादी फिर छिन गई। इस बार यह बात और भी ज्यादा पीड़ा दायक है। जर्मन कब्जे के दिनों में हम सब पोल मिल कर अत्याचारी का सामना कर रहे थे। किन्तु आज भाई भाई का दुश्मन है।"

"कुछ मास पूर्व प्यानो वादक फिर अदृश्य हो गया। निःसन्देह इस बार स्थिति पहले से बिल्कुल भिन्न है। साम्यवादियों ने चोपिन के संगीत पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। इसके बजाय वे उसे अपने निज के स्वार्थसाधन के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। उनका कहना है कि चोपिन का संगीत इस लिए क्रान्तिकारी है कि वह उनके प्रारम्भिक आदर्शों और सिद्धांतों में विश्वास रखता था। वे कहते हैं कि वह उन्हीं में से एक था।

"किन्तु हम लोग चोपिन को सचमुच प्यार करते हैं, निःसन्देह इस बारे में हम अधिक जानते हैं। इस लिए हम लोग कभी-कभी अपने चोपिन का संगीत सुनने के लिए यहां इकट्ठे होते हैं। किन्तु इस बार हमें अधिक

सावधानी से चलना पड़ा और एक दूसरा तहखाना ढूंढना पड़ा। पहले जो लोग संगीत सुनने के लिए एकत्र होते थे उन्हीं में से कुछ लोग आज उस गुट में हैं जिसने पोलैंड की स्वाधीनता एक बार फिर नष्ट करदी है।"

हमारा मित्र चुप हो गया। श्रोताओं में एक हलचल मच गई थी। प्यानो वादक ने चोपिन की एक धुन बजानी शुरु की। यह धुन हृदय को स्फूर्ति से भर देने वाली है, किन्तु उसे इतने अधिक स्फूर्तिदायक ढंग से बजाये जाते हुए मैंने पहले कभी नहीं सुना था। प्यानो घिसा-पिटा पुराना था और ध्वनि को नियन्त्रित करने की व्यवस्था भी बड़ी रद्दी थी, फिर भी संगीत सुनते-सुनते आत्मविभोर हो कर मैं कड़ी सर्दी और कष्ट को भूल गया। ऐसा लगता था कि कलाकार के हाथों से एक जादू निकल रहा है जो मुझे मन्त्र मुग्ध किये दे रहा था।

मैंने अपने इर्द-गिर्द के आदमियों पर निगाह डाली। कुछ ने आंखें मूंद रखी थीं और उनके चेहरों पर प्रसन्नता की एक आभा छा गयी थी। उनकी सांस सफेद कुहासे में परिणत हो रही थी किन्तु उनका इस ओर ध्यान नहीं था। मेरे पास बैठी सुन्दर चेहरे वाली एक बूढ़ी स्त्री, जिसने काले रंग का एक बेढंगा-सा कोट पहन रखा था, आहिस्ता-आहिस्ता रो रही थी।

हमारे मित्र ने मेरी बांह हिलाई। एक गहरी सांस खींच कर फुसफुसा कर वह बोला, "हे राम, यदि अभी खुफिया पुलिस यहां आ जाय . . . . ."

यह स्पष्ट था कि यदि खुफिया पुलिस आ जाय तो अमरीकी दूतावास के द्वितीय सचिव की मुसीबत हो जायगी और एक अमरीकी सम्वाददाता के लिए तो, जिसे कूटनीतिक पासपोर्ट का संरक्षण भी प्राप्त नहीं है और भी ज्यादा संकट हो जाएगा।

"मैं भी कैसा पागल हूं जो तुम्हारे साथ यहां आया," हावर्ड ने फुसफुसा कर कहा ।

"क्या तुम जाना चाहते हो ।"

"पागलों की बात मत करो । यह संगीत तो दिव्य है ।"

हम पौ फटने तक वहीं रुके रहे ।

और अब हावर्ड कह रहा था कि यहां की स्थिति वारसा से भी अधिक खराब है ।

"मेरा यह आखिरी मौका है," मैंने उससे कहा, "मुझे शायद यहाँ आने के लिए फिर कभी वीसा न मिले । मुझे स्टर्न से भेंट कर यह पता लगाना ही होगा कि लोला का क्या हुआ । उसके बाद मैं यहां से चला जाऊंगा ।"

हावर्ड ने अपने कन्धे उचका कर कहा, "तुम पागल हो । परन्तु पागलों पर मुझे हमेशा दया हो आती है । अच्छा मुझे बताओ, तुम क्या करना चाहते हो ।"

"मैं सिर्फ एक ही काम कर सकता हूं । मैं अपने जन्म स्थान जाऊंगा और वहां अपने मित्रों से बातचीत करूंगा । टोंडा वासेक अब एक महत्वपूर्ण आदमी बन गया है । वह ट्रेड यूनियन केन्द्र का सेक्रेटरी हो गया है । वह मुझे बता देगा कि स्टर्न से कैसे भेंट की जा सकती है ।"

हावर्ड ने एक लम्बी सांस छोड़ी । "अच्छा आओ, अब हम दफ्तर में लौट चलें । मुझे तुम से कुछ जानकारी लेनी है । आखिर, मुझे तुम्हारे बारे में तुम्हारे निकटसम्बन्धियों को तो सूचना देनी ही होगी ।"

जब मैं दूतावास से बाहर निकला तो खुफिया पुलिस के सिपाही ने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली । पीछे की ओर घूम कर मैंने देखा कि उसने एक कागज पर कुछ लिखा है । इस के बाद उसने अपना टेलीफोन का

रिसीवर निकाला। इन लोगों को सभी आगन्तुकों के बारे में सूचना देनी पड़ती थी, उन के आने और जाने का ठीक समय भी बताना पड़ता था। सड़क के उस पार खड़े दोनों नागरिक वेशधारी व्यक्ति अब भी वहीं खड़े थे और उत्साह के साथ बातें कर रहे थे। खुफिया पुलिस के पास मेरी फाइल अधिकाधिक मोटी होती जा रही थी।......

मैंने हावर्ड की चेतावनी को भुलाने की बहुत चेष्टा की। उस का कहना निःसन्देह ठीक था। मुझे भूतों का पीछा करते फिरने की आवश्यकता नहीं थी। मैं जानता था कि मैं लोला को अब कभी नहीं देख पाऊंगा। सचाई की तलाश करने की कोशिश न करना ही शायद अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण होगा। किन्तु मैं यह भी जानता था कि मैं किसी भी तरह कोशिश किये बिना न रहूंगा।

लाउडस्पीकर पर अब भी रूसी गाने बज रहे थे। सड़क पर मौजूद लोगों को, जान पड़ता है, शोर नहीं सुनाई दे रहा था। उन के कान हर वक्त इस शोर को सुनते-सुनते पक गये थे। लेकिन मेरे लिए यह नई चीज थी। मेरा जी करता था कि इन कान फाड़ने वाले लाउडस्पीकरों को चूर-चूर कर डालूं। यहां के लोगों को इतने लम्बे अर्से से यह सब सुनना पड़ रहा था कि वे उसके अभ्यस्त हो गये थे और कोई परवाह नहीं करते थे।

सड़क के कोने का टैक्सी स्टैंड खाली पड़ा था। जो थोड़ी-सी टैक्सियां खड़ी थीं, उन्हें देखने से लगता था कि वे भी जाने वाली हैं। मैं सड़क पार की ओर एक बस पर सवार हो गया। एक काली मोटर, जिस की अगली सीट पर दो आदमी बैठे थे रवाना हुई और बस के पीछे लग गई। जब बस ठहरती तो काली मोटर भी ठहर जाती। यह एक नई मोटर थी और उसका इंजन भी बहुत मजबूत था। इस तरह की मोटरें अब सिर्फ खुफिया पुलिस और उच्च अधिकारियों द्वारा ही इस्तेमाल की जाती थीं। वे देश की किसी भी दूसर, मोटर को दौड़ में पीछे छोड़ सकती थीं। वे इथाइल गैसोलिन से चलती थीं, जो प्राइवेट मोटरों के लिए उपलब्ध नहीं होता था।

होटल के सामने में वस से उतरा। काली मोटर भी सड़क के उस पार रुक गई। उसमें बैठे लोग मेरी तरफ घूर रहे थे। हावर्ड को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि पुलिस ने मेरे पीछे भी एक मोटर लगा दी थी। मैं अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच गया था।

वही पुराने निठल्ले आदमी अब भी होटल के दरवाजे के आस-पास फिर रहे थे और हल्की नीली पोशाक वाली स्त्री अपनी जगह पर तैनात थी। कमरों का इन्तजाम करने वाले क्लर्क मुस्कराकर मुझसे पूछा कि क्या मैं शान्ति परेड देखने जाऊंगा, जो जल्दी ही प्रारम्भ होने वाली है। मैंने उससे कहा कि मैं वाहर जा रहा हूं और उससे होटल का विल देने को कहा।

मेरे इस कथन ने उन्हें परेशानी में डाल दिया। क्लर्क ने इशारा कर के नीली पोशाक वाली स्त्री को वुलाया और उसके कान में कुछ कहा जिसे सुन कर वह टैलीफोन की ओर दौड़ी। उन आवारा निठल्लों में से भी एक तुरन्त ही काली मोटर में बैठे लोगों को सूचना देने के लिए सड़क के उस पार भागा गया। उनका सारा कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो गया और उनकी समूची जासूसी व्यवस्था गड़वड़ में प गई। इन देशों में निश्चित कार्यक्रम की वंधी लकीर से जहां जरा इधर-उधर हुए कि एकदम घबराहट और गड़वड़ पैदा हो जाती है। साम्यवादी दिमाग में लचकीलापन नहीं होता। यदि पूर्वनिश्चित व्यवस्था का पालन न हो तो एक दम वदहवास भाग दौड़ मच जाती है।

किन्तु मैंने प्रचार मन्त्री को फोन करके इस सारे तनाव को हल्का कर दिया। मैंने उनके सेक्रेटरी से कहा कि मैं वाहर जा रहा हूं। उसने पूछा, "कहां ?" उसने यह भी कहा कि वह मेरे लिए खुशी से होटल में ठहरने का वन्दोवस्त कर देगा, क्योंकि होटलों में इन दिनों वहुत भीड़ रहती है।

मैंने से अपना गन्तव्य स्थान वता दिया। चाहे मैं कितना ही चाहूं किन्तु मैं अकेला अपनी इच्छा से चाहे जहां नहीं जा सकता था। जहां भी मैं

जाता वे मेरा पीछा करते हों। सेक्रेटरी ने मेरे लिए होटल में व्यवस्था करने का वायदा किया और मेरे लिए शुभ यात्रा की कामना की। ऐसा लगा कि हल्की नीली पोशाक वाली स्त्री, कमरों का इन्तजाम करने वाला क्लर्क और उन आवारा निठल्लों ने चैन की सांस ली है।

रेलवे स्टेशन बहुत दूर नहीं था। मैंने पैदल ही जाने का निश्चय किया। मेरे पास रात के सफर के लिए एक छोटा-सा थैला था। सड़क के दोनों ओर बने फुटपाथ शान्ति परेड देखने वालों से खचाखच भरे थे। सूर्य चमक रहा था और कहीं से एक ब्रासबैंड की आवाज आ रही थी।

लोगों के चेहरे अब कम उदास नजर आ रहे थे। झण्डे हवा में लहरा रहे थे, उनके उज्ज्वल रंगों से मटमैले भद्दे मकानों के अग्र भाग ढंक गये थे। छोटे-छोटे लड़के-लड़कियां एक ट्रक में इधर-उधर आ जा रहे थे। वे छोटे-छोटे झण्डे हिला रहे थे जिन पर शान्ति की प्रतीक फाख्ता अंकित थी। उनके कण्ठ से मशीन की भांति बारीक आवाज में "शान्ति! शान्ति!" की आवाज आ रही थी। सरकार उन्हें खाने को काफी नहीं देती थी किन्तु उन्हें जोश और उत्साह काफी देती थी। लोग कुछ घण्टों के लिए अपने जीवन के आशाहीन और अनुज्ज्वल दैनिक कार्यक्रम को भूल जाना चाहते थे।

विशाल रेलवे स्टेशन पर अन्धकार और मायूसी छाई हुई थी। गाड़ियां ऐसी लगती थीं मानों अभी उन पर हमला हुआ हो। पहले और दूसरे दर्जे के डिब्बों में तीसरे दर्जे के डिब्बों से भीड़ अवश्य कम थी, किन्तु और किसी किस्म का फर्क नहीं था। मेरे डिब्बे में सीट के ऊपर लगा छोटा आयना चटक गया था और जिस चौखटे में विज्ञान के लिए पहले देश के रमणीय और स्वास्थ्यप्रद स्थानों की तस्वीरें लगी रहती थीं, उसमें अब रूसी पुस्तक सप्ताह का एक इश्तहार लगा था।

नीला सूट पहने एक मोटा आदमी भीतर आया और मेरे बराबर

की सीट पर बैठ गया। उसने साम्यवादी दल का अखबार 'लाल अधिकार' निकाला और पढ़ने लगा।

अतीत के दिनों में मैंने कितनी ही बार वहाँ की यात्रा की थी इसलिए मैं उसकी हरेक तफसील से वाकिफ था। मैं आंखें मूंद कर भी सिर्फ गाड़ी के दायें या बायें झुकाव को देख कर ही ठीक-ठीक बता सकता था कि गाड़ी किस जगह पर है। मुझे पास से गुजरती पहाड़ियों पर पुराने ढंग के गिरजाघरों के इर्द-गिर्द आबाद कस्बों की शक्ल याद आने लगी। स्टेशनों की इमारतें कुछ बदली हुई प्रतीत होती थीं। उनमें से कुछ पर रंग रोगन किया गया था और कुछ में सुधार किया गया था। सभी पर लाल झण्डे लगे थे और शान्ति के नारे लिखे थे। साथ ही उन पर टामी गनें लिए सर्वव्यापी फौजी सिपाही तैनात थे।

स्टेशनों पर भारी भीड़ थी। कोयले की अत्यधिक कमी के कारण गाड़ियों की संख्या में बहुत कमी कर दी गई था। गाड़ियों के भीतर काफी भीड़ होने पर भी स्टेशन पर उतरने और चढ़ने वालों की आनन्दपूर्ण रेल-पेल नहीं थी। लाग एक-दूसरे को धक्का देकर चढ़ने-उतरने की कोशिश अवश्य करते थे किन्तु चुपचाप और इस ढंग से कि मानों उन्हें बहुत जल्दी हो और सब फाटकों पर और पटरियों के बीच में तैनात सिपाहियों से प्रति-क्षण भय लग रहा हो। लोगों को अपने ही देश में आजादी से यात्रा करने की छूट नहीं थी। एक शहर से दूसरे शहर में जाने के लिए विशेष अनमति लेनी पड़ती थी।

मैं अपने डिब्बे से उठ कर भोजन की गाड़ी में गया। कुछ लोग विषाद भरी खामोशी से बैठे खिड़कियों के बाहर झांक रहे और जौ की शराब पी रहे थे। मेरी नकली काफी में मिठास के लिए सैकरीन डाली गई थी और मक्खन का तो नाम भी नहीं था। रेल में सफर करते हुए तीसरे पहर के वक्त भोजन की गाड़ी में जा कर काफी पीना मुझे हमेशा ही अच्छा

लगता था, उससे मुझे अपना सफर छोटा लगने लगता था। क्रीम, मक्खन, रोल और जैम के साथ काफी कितनी आनन्दप्रद लगती थी। मेरी मां, जो अपने तीसरे पहर के नाश्ते की इतनी शौकीन थी, रेल के भोजन के डिब्बे की कितनी तारीफ करती थीं। परस्पर अपरिचित मुसाफिर भी एक ही मेज पर बैठते और आपस में मधुर वार्तालाप करते। किन्तु अब यदि कोई वैसा करना चाहता तो उसे सब से पहले यह ख्याल आता कि वह पुलिस को न्योता दे रहा है।

मैं अपने डिब्बे में वापस चला गया। मोटा आदमी सोने के लिए उतर गया था। मैं खिड़की के बाहर झांकने लगा और उस मोटे आदमी, पुलिस, शान्ति के नारों से अंकित प्रदर्शनपटों और उन निरीह बालक-बालिकों को, जिनका बचपन 'शान्ति! शान्ति' की चिल्लाहटों ने नीरस हो गया था, भुलाने की कोशिश करने लगा। परिवर्तित चीजों के बजाय मैं उन चीजों को देखने लगा जो बदली नहीं थीं; इधर-उधर फैले जंगलों, पहाड़ियों, नदी तट के मकानों, चरागाहों और पुराने पत्थर के पुलों को। किन्तु मुझे ऐसा लगने लगा कि शायद वे भी बदल गए हैं। मैं जानता हूं कि यह सोचना बेवकूफी थी, यह मेरी कल्पना मात्र थी। इस तरह की कल्पनाएं करते-करते तो शायद मुझे जल्दी ही अपने बिछौने के नीचे भी चीजें नजर आने लगेंगी, जैसी कि प्रचार मन्त्री ने भविष्यवाणी की थी।

जब मैं अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचा तो हठात् आश्चर्य में पड़ गया। एक क्षण के लिए मुझे लगा कि मैं कहीं गलती से किसी और स्टेशन पर तो नहीं उतर गया। पिछली बार मैं जब यहां आया था तो स्टेशन की इमारत एक छोटी-सी दुमंजिली इमारत थी। किन्तु अब यहां चौमंजिली विशाल इमारत खड़ी थी। जहां तक नजर जाती थी साइडिंग बने थे और मालगाड़ियों की लम्बी कतारें थीं और ऐपेटाइट से भरे छकड़े खड़े थे। मैं जानता था कि जैसा कि अखबारों ने लिखा है, 'नये शासन ने मेरे जन्मस्थान

का देश का मैगनितोगार्स्क अर्थात इस्पात उद्योग का विशाल केन्द्र बना दिया था, किन्तु मैंने इतने विशाल पैमाने पर परिवर्तन की कल्पना नहीं की थी।

मैं प्लेटफार्म पर घूमने लगा जहाँ किसी समय ताजा रोटी, अन्य स्वादिष्ट चीजें और भारी गिलासों में शराब बिका करती थी। जब पूर्व की ओर से ओरियंट एक्सप्रेस आती तो रूमानियाइ भद्र वर्ग के लोग, पोलिश जमींदार, हंगेरियन कूटनीतिज्ञ और समूर के कोट पहने ग्रीस की भद्र महिलाएं अपनी टांगें और कमर सीधी करने के लिए यहां उतरते। कोई जौ की शराब का एक गिलास खरीदता और कोई अन्य खाने की वस्तु। वे सब पश्चिमी संसार में लौट कर अपने आपको सुखी अनुभव करते।

मैं स्टेशन से बाहर निकल गया। मेरे पीछे-पीछे भारी कदमों से कोई चल रहा था। मैंने घूम कर पीछे देखने की भी चिन्ता नहीं की। उन्हें मालूम हो गया था कि मैं आ रहा हूं। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। हर वक्त कोई न कोई मेरे पीछे रहता ही था। इसलिए बेहतर यही था कि उधर ध्यान ही न दिया जाय, नहीं तो इन्सान पागल हो सकता है। स्टेशन के बाहर तीन भद्दी-सी टैक्सियां खड़ी थीं। मैंने उनसे एक के पास जा कर ड्राइवर को एक होटल में चलने को कहा।

इस नगर में मोटर से यात्रा करना, इस्पात के कारखानों, मिलों, रद्दी कोयले या कच्ची धातु के ढेरों और खानों के पास से गुजरना प्राकृतिक दृश्य के सौन्दर्य की दृष्टि से कभी भी अच्छा नहीं था। किन्तु अब तो इन चीजों की वहां पहले से भी ज्यादा भरमार हो गई थी और हवा कोयले की धूल से जितनी भारी इस समय हो रही थी उतनी शायद मेरी स्मृति में पहले कभी नहीं हुई। नये कारखाने और नई फैक्टरियां खड़ी हो गई थीं। नगर का फौलादी कलेजा तेजी से धकधक कर रहा था।

जैसे-जैसे हम शहर के मध्यभाग के नजदीक पहुंचने लगे, सारा दृश्य परिचित सा होने लगा। किन्तु पूरी स्पष्टता के साथ नहीं, कुछ-कुछ धुंधलेपन

के साथ पुराने परिचित मकानों के साथ ही नए मकान बन गये थे और बीच बीच में खाली जगहें पड़ी थीं जहां कभी मकान थे और अब जिनके गिर जाने से घास और झाड़ियाँ उग आई थीं।

मकानों का आकार छोटा हो गया था और रंग अधिक गहरा। बसें पुरानी थीं और खड़-खड़ करती थीं और ब्रेक लगाने पर उनसे तीखी रगड़ की आवाज निकलती थी। हम उस मकान के पास से गुजरे जहां मैं नाच सीखने जाया करता था। उसका सामने का भाग भी मानों इर्दगिर्द की कुरुपता में भली भांति विलीन हो गया था।

एक क्षण के लिए नृत्य-शिक्षक की पत्नी की स्मृति मेरे मन में जाग उठी। उसका नाम था फ्राक वोन आमोन। अवगुण्ठन के पीछे छिपी उसकी हल्की नीली आंखें, उसके रुंधे कण्ठ की आवाज, उसका छरहरा हल्का बदन और नहाने की भीगी पोशाक की भांति नितम्बों से चिपटी हुई उस की सुनहरी तारकशी की पोशाक—ये सभी चीजें मेरे स्मृति पट पर उभर आई।

मुझे छोटी-छोटी चीजें भी याद आने लगीं। वह अन्धेरी छोटी गली मुझे याद आई जहां बरसात के उन अन्धियारे दिनों के तीसरे पहर में और मेरियान घूमा करते थे। पुरानी गैस की बत्तियां आज नहीं रही थीं, उनके स्थान पर सब जगह नई बिजली की रोशनियां हो गई थीं।

वह मदिरालय भी कायम था जहां कालेज से पास होकर निकलने पर हमने अपनी सफलता का उत्सव मनाया था। उसके प्रवेश द्वार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, सिर्फ बाहर लाल बिजली की रोशनी से जो निषिद्ध फल का प्रतीक मालूम होती थी, 'मदिरालय' लिख दिया गया था। उस पर दृष्टि पड़ने से ही मेरे शरीर में कंपकंपी छा जाती थी। प्रवेश द्वार के दोनों ओर दो कृत्रिम ताड़ के वृक्ष खड़े थे। घर, गिरजे, कारखाने और मकान सभी धराशायी हो गये थे, किन्तु मदिरालय फिर भी बमों की विध्वंस लीला से बच गया था।

हम उस मकान के पास से भी गुजरे जहां हमारे परिवार का डाक्टर रहा करता था, किन्तु अब उसके नाम की पट्टी वहां नहीं थी। जिस कमरे में किसी समय डा० अुएन का दफ्तर था उसकी खिड़की से चार खाने की कमीज पहने एक आदमी झाँक रहा था। नानवाई की दूकान भी वहीं थी, जहां में खूबसूरत लड़कियों को लेकर जाया करता था। किन्तु और कितनी ही दूकानों की भांति वह भी तख्तों से बन्द थी। उसका साइन बोर्ड धुंधला पड़ गया था और उस पर मैल जम गया था।

टैक्सी होटल के आगे पहुंच कर रुक गई। यह शहर मे सबसे बड़ी सबसे नई और सबसे अच्छी जगह थी। किन्तु अब वह निहायत डरावने तौर पर बदसूरत हो गई थी। रोगन दीवारों पर से उतर रहा था। खिड़कियों पर पर्दे नहीं थे। साइन बोर्ड के अक्षर गिर गिये थे। जनकी जगह पर नये अक्षर लगाने की कोइ फिक्र नहीं की गई थी। सड़क के दूसरी ओर बैंक था, या यों कहिये कि मुझे एकाएक बड़े मानसिक आघात के साथ याद आया कि यहां किसी समय चाचा एडी का बैंक था पर अब उसके समूचे अग्रभाग पर ऊंचाई पर एक लम्बा साइन बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था, "साम्यवादी युवक संघ का प्रधान कार्यालय।" ऊंची ऊंची खिड़कियों वाले कोने के कमरे में से जो किसी समय चाचा एडी का दफ्तर था, एक लाल झंडा लटक रहा था। बेचारे चाचा ऐडी ! भगवान जाने उनका क्या हुआ होगा। मैं सिर्फ यह आशा ही कर सकता हूं कि उन्हें बहुत कष्ट नहीं सहने पड़े होंगे।

अन्धेरा होने लगा था। बैंक के आगे अवस्थित विशाल सरकारी दूकान में रोशनियां जल गई थीं। स्टर्न के नाम की पट्टी हटा कर लाल रंग की बिजली की रोशनी से किसी बढ़ी सरकारी सोसाइटी का नाम लिखा था। इमारत का फौलाद और कांच का बना अग्रभाग, जो किसी समय मुझे संसार की सबसे भव्य रचना प्रतीत होता था आज भी मौजूद था, किन्तु अब वह

श्य नहीं लगता था। दूकान की दो बड़ी-बड़ी खिड़कियां तोड़ कर उनकी गह लकड़ी के चौखटे वाली छोटी खिड़कियाँ लगा दी गई थीं। लम्बी कांच । पट्टियाँ दुर्लभ हो गई थी।

बिजली की रोशनी से लिखे अक्षर जल और बुझ रहे थे। कुछ ाशनी के अक्षर बिल्कुल बेकार हो गये थे। दूकान की खिड़कियों में कोई भी ामान प्रदर्शन के लिए नहीं रखा था, सिर्फ साम्यवादी प्रचार के लिए कुछ ाफ और इस्पात कारखाने की भट्टियों के आगे खड़े मजदूरों, कोयले से भरी ाड़ियां धकेलने वाले आदमियों एवं खान में काम करने वाली मजदूरनियों ो चित्र रखे थे। मुझे ध्यान आया कि श्री स्टर्न अपनी दूकान की इन खिड़कियों में प्रदर्शित वस्तुओं पर कितना गर्व अनुभव करते थे (वे प्रति प्ताह इन प्रदर्शित वस्तुओं में परिवर्तन करते रहते थे)। तभी गालीचेदार फर्श वाले बिक्री के कमरे में खड़ी लोला की स्मृति मेरी आंखों के आगे उभर आई—वह दुबली और इकहरी सुन्दर देह, वह काली पोशाक, ओवर कोट की वे मुड़ी हुई आस्तीनें और न जाने क्यों क्षण भर में ही मेरा सारा मन ऐसे एकाकीपन और व्यथा से भर गया जैसा मैंने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था।

मेरी पीठ की सूक्ष्म ग्रहण शक्ति ने एकाएक मुझे सचेत कर दिया। मैंने पीछे की ओर घूम कर देखा। टैक्सी के पीछे खड़े दो आदमी मुझे घूर रहे थे। उन में से एक ने ड्राइवर से कोई प्रश्न किया। मैंने तुरन्त ड्राइवर को पैसे दिये और पैलेस होटल में दाखिल हो गया।

होटल का गोष्ठी कक्ष ठण्डा और उसका फर्श नंगा था। फर्श पर से कालीन हटा दिये गये थे। सजावट का अभाव दूर करने के लिए दीवारों पर नारे और पोस्टर लगा दिये गये थे।

मेज के पीछे बेढंगी-सी हुलिया वाला एक आदमी खड़ा था। उसकी हजामत दो दिन से नहीं बनी थी। उसका सूट भी बिना इस्त्री किया था।

हम लोगों को बैंकों और होटलों के क्लर्कों को अच्छी पोशाक में देखने का अभ्यास हो गया है, किन्तु यहां अब हर रोज दाढ़ी बनाना और कपड़ों पर इस्त्री करना "पश्चिमी देशों की हसोन्मुखता" का चिन्ह माना जाता था और राज्य के अधिकारी उस पर रोष प्रकट करते थे। दफ्तरों और दूकानों में प्रतिदिन हजामत बनाने और इस्त्री की हुई पतलून पहनने वाले "प्रतिक्रियावादी" कहलाते थे। यह देख कर भारी निराशा होती थी। लोग गिरगिट की भांति कैसे आसानी से रंग बदल लेते हैं।

मैंने क्लर्क से अपने लिए एक कमरे का इन्तजाम करने को कहा। क्लर्क ने मेरा पासपोर्ट मांगा और उसे ध्यान से देखा। इस के बाद बोला, "मंत्रालय का टैलीफोन आया था। आप के लिए कमरा सुरक्षित करने को कहा गया था। आप का कब तक रहने का विचार है ?"

"मैं अभी से कुछ नहीं कह सकता।"

उसने मुझे अपनी पीठ के पीछे से तालियों के तख्ते से एक ताली निकाल कर दी और बोला, "तीसरी मंजिल। लिफ्ट वहां है।"

खाने के कमरे का दरवाजा खुला था। उस पर फ्रांसीसी भाषा में लिखी भोजनागार की पुरानी तख्ती अब भी लगी थी। मेरे पन्द्रहवां जन्मदिन पर चाचा ऐंडी ने मेरी मां को और मुझे यहां दावत के लिए निमन्त्रित किया था। फ्रांसीसी भाषा की तख्ती देख कर मैं बड़ा प्रभावित हुआ था। एक साधारण भोजनागार में खाना और बात थी और फ्रांसीसी भाषा के रुआबदार नाम से अंकित तख्ती वाले भोजनागार में खाना दूसरी। उस समय उस में गहरे लाल रंग के गलीचे बिछे थे और खूब उजली और तेज रोशनी की बत्तियां जल रही थीं और जब हम बढ़िया पोशाक पहने मुख्य बहरे के पीछे-पीछे, जिस की कमर शायद बहुत अधिक झुक कर आदाब करने के कारण हमेशा के लिए कमान की तरह हो गई थी, भीतर प्रविष्ट हुए तो मैंने मेजों पर ताजा फूल, गिलास, चांदी के बर्तन और सफेद

मेजपोश देखें। चीनी और चांदी के वर्तनों पर चमकीली वत्तियों की चमक से चकाचौंध हो रही थी, गिलास चमचमा रहे थे और भोजन की सुगंध हवा में फैल रही थी। यह एक अविस्मरणीह अनुभव था।

किन्तु अव सिर्फ थोड़ी-सी मेजें खिड़कियों के पास रखी थीं। उन के चारखानेदार मेजपोश मैले थे। बाकी मेजें वहां से हटा कर दीवार के सहारे एक ओर ढेर करके डाल दी गई थीं। कुर्सियों का मुंह भोजनागार के पीछे के भाग की तरफ था जहां एक चबूतरा बना था। उसके ऊपर लाल कपड़े की एक लम्बी पट्टी पर लिखा था: "हरेक मानवीय समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।"—(मार्क्स)।

मैं वापस क्लर्क की मेज पर गया और वहां अपनी ताली रख दी। मुझे खाली कमरे में जाने से डर लग रहा था, मैं एकाकीपन और अपनी स्मृतियों से भयभीत था।

मैं होटल से बाहर निकल आया और सड़क के उस पार गया। मैं किसी से वातचीत करके एकाकीपन दूर करना चाहता था। जिस मकान में लियो काफ्का रहता था, वह सिर्फ दो ब्लाक छोड़ कर था।

मकान का दरवाजा खुला था। मैं सीधा तीसरी मंजिल पर चला गया, जहां डा० काफ्का के पास दो फ्लैट थे, एक अपने लिए और दूसरा अपनी पत्नी के लिए। सत्रह वर्ष की आयु तक लियो अपनी मां के साथ रहा, उसके बाद वह अपने पिता के घर में चला गया जो अधिक सुविधा-जनक था, क्योंकि अनेक लड़कियां लियो से मिलने आया करती थीं। हेल्गा से विवाह के बाद उसके पिता ने उन्हें अलग रहने के लिए अपना घर दे दिया और स्वयं अपनी पत्नी के घर में रहने लगे। शहर में हर कोई प्रसन्न था।

नाम की तख्तियां हटा दी गई थीं। एक भी साइनबोर्ड नहीं था। मैंने दाहिणी तरफ की घंटी बजाई।

कुछ देर बाद मुझे द्वार के भीतर से पांवों की आहट सुनाई दी। किसी स्त्री ने कुंडा खोला और बाहर झांका। उसने मुझ पर कठोर और अविश्वास भरी नजर डाली।

"डा० काफ्का हैं ?" मैंने कहा, "डा० लियो काफ्का ?"

"व अब यहां नहीं रहते," स्त्री ने उत्तर दिया और एकदम दरावाजा बन्द कर भीतर चली गई।

मैं नीचे तहखाने में गया और दरवान के फ्लैट की घंटी बजाई। एक बूढ़े ने दरवाजा खोला। मैंने उस का चेहरा कुछ-कुछ अस्पष्ट-सा पहचाना। उसने मुझ पर भयभीत दृष्टि डाली। उसके लिए मैं अजनवी था और किसी अजनवी को देख कर उसकी पहली प्रतिक्रिया भय की थी।

मैंने डा० काफ्का के बारे में पूछा।

"वे पिछले साल यहां से चले गये," उसने उत्तर दिया।

"क्या तुम मुझे उनका पता बता सकते हो ?" मैंने कहा, "मैं उनका एक पुराना मित्र हूं। मैं उनके साथ पढ़ता था।"

उस आदमी ने मेरे पीछे की ओर नजर डाली। उसे उम्मीद थी कि वहां कोई और भी खड़ा होगा। मैंने उसके मन का भाव ताड़ लिया। खुफिया पुलिस जब वहां किसी को गिरफ्तार करने जाती थी तो कम से कम दो सिपाही होते थे। जब उसने देखा कि मैं अकेला हूं तो उसने फुसफुसा कर मुझे पता बता दिया जो किसी ऐसी सड़क का था जिस का नामकरण एक छोटे साम्यवादी वीर के नाम पर किया गया था। इसके बाद वह जल्दी से बोला, "किसी से कहना नहीं कि मैंने तुम्हें पता दिया है।" यह कह कर उसने आहिस्ता से डरते-डरते दरवाजा बन्द कर लिया।

यह सड़क कच्ची लोहे की धात के ढेरों के बीच एक पुराने और मैले-कुचैले उपनगरीय इलाके हेमार्केट में मिली। जब मैं चौमंजिली चालों

की कतार के पास पहुंचा तो हवा में एक खास दुर्गन्ध भरी हुई थी, जिसे मैंने तुरन्त पहचान लिया। यह वदवू गन्धक की थी। आज भी उस की याद आते ही भय सा लगने लगा। वचपन में मैं मैक्स रोजेनज्वाइग और टोंडा वासेक से मिलने के लिए कितनी ही वार यहां आया था। जब मैं गन्धक वाले इलाके में पहुंचता तो नाक वन्द कर लेता और गहरी सांस न लेने का प्रयत्न करते हुए भागने लगता। मैक्स रोजेनज्वाइग के घर तक पहुंचते-पहुंचते मैं हांफने लगता और मेरा दम फूल जाता। एक वार मैक्स रोजेन ज्वाइग की मां मुझे घर के सामने ही मिल गई और मुझे हांफते देख कर पूछने लगीं कि क्या मेरी तवीयत अच्छी नहीं है। मैंने सिर हिला कर नकारात्मक संकेत किया और ऊपर भाग गया। मुझे उन्हें यह वताने में शर्म मालूम होती थी कि विषैली गैसों से दम घुटने के भय से मैंने अपनी सांस रोक ली थी। अपने रसायन शास्त्र के पाठ में गन्धक के वारे में पढ़ने से पूर्व मैं गैसों से नहीं डरता था। भय के दार्शनिक सिद्धान्त की विवेचना करते हुए हमारा प्रोफेसर मनुष्य के फेफड़ों और झिल्लियों पर जहरीली गैसों के असर का प्रभावोत्पादक वर्णन करने में कभी नहीं चूकता था।

पार्क के पास जहां काफ्का परिवार रहता था, वहां से यह स्थान भौगोलिक दृष्टि से नजदीक ही था किन्तु और सव दृष्टियों से यह दूरी वहुत वड़ी थी। मुझे ख़याल आया कि यदि मेरी मां को मालूम हो कि डा० काफ्का का लड़का अव नगर के सवसे गरीव इलाके में रहता है तो वह क्या सोचेगी। लियो के सुन्दर फ्लैट का आखिर हुआ क्या ? शायद हेमार्केट के इलाके का कोई आदमी अव वहां रहता होगा। संसार के इस भाग म इस तरह के परिवर्तन अव आम हो गये हैं। हरेक दिन गतिशील दिन है। मार्क्सवाद की कीमियागरी के फलस्वरूप अव एक नया वूर्जुआ (मध्यवित) वर्ग पैदा हो गया है, जो अत्यन्त क्षुद्र है, अनवड़ है और पुराने व विनष्ट मध्यवित वर्ग की स्मृतियों को कायम रखने के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहा है।

गली विल्कुल अन्धेरी थी। मकान का नम्वर पढ़ सकना आसान नहीं था। भीतर जाने से पूर्व मैंने चोरी से पीछे की ओर घूम कर देखा। हावर्ड ने कहा था, "जितना सावधान हुआ जा सके उतना ही अच्छा है।" पीछे देख कर सतर्क होने की प्रवृत्ति सहजात प्रवृत्ति वन जाती है। इस देश में कुछ घण्टे विताने के वाद ही मैं इस प्रकार के वहम का शिकार हो गया था।

और फिर यह तो लियो का मामला था। मुझे अवश्य ही ऐसी कोई हरकत नहीं करनी चाहिए थी जिस से वह फंस जाय। जेव में अमरीकी पासपोर्ट होने पर शेर वन जाना आसान था। मुझे किसी किस्म की चिन्ता नहीं थी, मैं अगली गाड़ी पकड़ कर ही देश से वाहर जा सकता था (वास्तव में क्या सचमुच में जा सकता था?) किन्तु लियो तो फंस जायगा।

अपने पुराने मित्र को देख सकने के खयाल से ही मुझ में एक उत्तेजना, किन्तु साथ ही भय भी पैदा हो गया था। मैं मन ही मन आशा कर रहा था कि लियो वहुत नहीं वदला होगा। इतना तो मैं पहले ही जान चुका था कि भय और आंतक का सुदीर्घ राज्य हर व्यक्ति में कुछ न कुछ परिवर्तन ला देता है, किन्तु कुछ लोग इस परिवर्तन से पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी हालत में हो जाते हैं और कुछ वदतर हालत में। किन्तु परिवर्तन होता अवश्य है।

डयोढ़ी में ठंडक और नमी-सी थी और गर्म की हुई गोभी की सब्जी की-सी गन्ध आ रही थी जिस से हमेशा विना हवा के और अत्यधिक भीड़-भाड़ वाले कमरों, वासी रोटी और टीन के घटिया चम्मचों की कल्पना मेरे दिमाग में पैदा हो जाती थी। दूसरे शब्दों में यह गन्ध गरीवी की गन्ध थी। गलियारे के उस छोर पर नल चलने की आवाज आ रही थी। एक बूढ़ा आदमी नल के पास खड़ा वाल्टी भरने की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे आते

देख कर उसने मुझ पर क्षण भर के लिए नजर ठाली और उसके बाद मानों मुझे दिखाते हुए दूसरी ओर फेर ली।

मैंने उससे पूछा कि डा० काफ्का कहां रहते हैं।

उसने मेरी तरफ आंखों में वैसा ही भाव लिये हुए देखा जो मैंने उस बूढ़े दरवान की आँखों में देखा था। उसने झटके से सिर हिला कर ऊपर चौथी मंजिल की ओर इशारा किया और फिर नल बन्द कर बाल्टी उठा तेजी से चला गया।

मैं जीने से ऊपर गया और गलियारे में पहुंचा। मेरे दाईं ओर एक दरवाजा आवाज के साथ खुला, उसकी सन्ध पर एक जोड़ा आँखें नजर आईं और उसके बाद तुरन्त ही दरवाजा फिर बन्द हो गया। कुछ दरवाजों पर भीतर रहने वालों के नाम के कार्ड लगे थे। किन्तु गलियारे में अन्धेरा था और मेरे पास माचिस नहीं थी।

तभी गलियारे के आखिरी सिरे पर एक दरवाजा खुला। मुझे पीछे की बत्ती के प्रकाश में एक छाया मूर्ति खड़ी दिखाई दी।

मैंने सोचा, हो सकता है वह लियो हो। वह मेरी ओर पीठ फेर रहा था और वहाँ से जाने और दरवाजा बन्द करने वाला था। वह मुझे लियो की अपेक्षा, जैसी कि मुझे उस समय उसकी याद थी, अधिक भारी और अधिक चौड़े कन्धों वाला प्रतीत हुआ। किन्तु उसकी हरकतों में कुछ ऐसी उदासीनता थी जिससे मुझे लियो की याद आ गई।

उसने मेरे पांवों की आहट सुनी और मेरी तरफ घूमा। क्षण भर में रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी।

"लियो", मैंने आहिस्ता से कहा।

वह मेरी ओर खड़ा घूर रहा था। मैं अभी तक अन्धेरे में था और वह मेरा मुंह नहीं देख सकता था। मैं हट कर रोशनी में आ गया। वह

अचल खड़ा रहा, जैसे कि फर्श पर कील से ठोक दिया गया हो और फिर एकाएक उसकी नजरों में पहचान का भाव दीख पड़ा।

"वाह, भाई वाह!" उसने फुसफुसा कर कहा। मेरी ओर घूरते-घूरते ही वह वापस कमरे में घुसा। मैं भी उसके पीछे तेजी से भीतर चला गया और अपने पीछे दरवाजा वन्द कर लिया। वह मेरी ओर आया और अपना हाथ मेरे कन्धे पर रख कर इतने जोर से मेरे ऊपर झुका कि मुझे लगा कि कहीं उसे गश तो नहीं आ रहा है। उसका सारा शरीर कांप रहा था और वह रो रहा था।

हम दोनों वहां देर तक खड़े रहे। कुछ देर वाद मुझे लगा कि मेरे मुंह का जायका नमकीन सा हो गया है और तव मुझे मालूम हुआ कि मैं भी रो रहा था।

वह पीछे हटा और एक गहरी सांस लेकर उसने मेरी बाँह दवाई।

"मुझे अफसोस है जैक", उसने कहा, "मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम्हें फिर कभी देख पाऊंगा। वर्षों से मैंने किसी मित्र की सूरत नहीं देखी है।'

"मुझे तुम्हें सूचित किए विना यहां नहीं आना चाहिए था। किन्तु तुम्हें पत्र लिखने का साहस नहीं हुआ, लियो। मैंने सोचा, ऐसा करना खतरनाक होगा और..."

"मुझे कोई परवाह नहीं" उसने जल्दी से कहा। उसने अपना हाथ मेरे मुंह से नीचे कर लिया और वोला, "मुझे अव कोई चिन्ता नहीं...आह, जैक, तुम्हें देख कर मुझे कितनी खुशी हो रही है।"

उसके वाल सफेद हो गये थे, शरीर में भारीपन आ गया था और वाईं आंख में कोई खरावी मालूम होती थी। उसके चेहरे में एक ऐसा पीलापन था, जिससे प्रतीत होता था कि शायद वह दीर्घकाल से हवा और धूप में नहीं निकला है। हम दोनों ने एक दूसरे की तारीफ की कि हम विल्कुल वदले नहीं हैं, किन्तु वास्तव में हम दोनों ही वदल गए थे और दोनों

ही इस बात को जानते थे। हमें एक दूसरे को देखे चौदह साल हो गये थे।

उसने अपना ओवर कोट उतार कर रख दिया। किसी समय उसका सूट अवश्य बढ़िया रहा होगा किन्तु अब उसकी आस्तीनें घिस गई थीं और कोहनियों पर थेगलियाँ लगी थीं। उसके पाँवों में भारी बूट और बदन पर सस्ती चारखाने की कमीज थी। उसने मेरी ओर ताका और मुस्करा दिया। अब वह फिर वही पुराना लियो बन गया था।

"मैंने एक बार पढ़ा था कि लोगों को प्रालितेरियन (सर्वहारा) बनने में पीढ़ियां गुजर जाती हैं। लेकिन यकीन मानों, यह सब झूठ है। सिर्फ कुछ महीने ही लगते हैं। अपने इर्द-गिर्द नजर डालकर देखो। क्या यह सुन्दर आकर्षक कमरा नहीं है ?"

कमरा छोटा था, दीवारों पर रोगन की पतली सी परत थी और कुछ स्थानों पर वह भी उतर गई थी और ईंटें नजर आने लगी थीं। कमरे के बीचों-बीच तार से लटकता हुआ बिजली का एक लट्टू मद्धिम रोशनी दे रहा था। एक लोहे का पलंग था जिस पर घोड़े पर डालने वाला एक खुरदरा कम्बल बिछा था। इसके अलावा एक लकड़ी की मेज, दो कुर्सियाँ और एक कोने में एक मुंह-हाथ धोने की चिलमची थी जिसका रोगन जगह-जगह से उतर गया था। उसके नीचे तश्तरियां धोने की एक सस्ती बाल्टी पड़ी थी। दूसरे कोने में एक गैस का चूल्हा था जो लकड़ी के एक उल्टे किये हुए बक्स पर रखा था जिस पर किसी रूसी कारखाने का नाम लिखा था।

"हैरान मत होओ," लियो मुझसे बोला, "यह बुरी हालत नहीं है। इस इलाके के कुछ और कमरे देखो तब तुम्हें मालूम होगा। मुझे तो खुश होना चाहिए कि मुझे यह कमरा मिल गया। पुराने बुर्जुआ (मध्यवित्त) वर्ग के दूसरे लोग तो सीमावर्ती इलाके के उजाड़ गाँवों में भेज दिये गये हैं ·· पर तुम बताओ, इतने दिन कहाँ रहे और यहाँ कैसे पहुंचे ?"

कुछ मिनट तक हम दोनों में उसी तरह तेजी से सवाल-जवाब चलते रहे, जैसे कि ऐसे लोगों में चलते हैं जो यह जानते हैं कि वातजीत करने और तमाम घटनाओं को जानने और बताने के लिए पर्याप्त समय नहीं है और जो अत्यधिक जल्दवाजी में सव कुछ जान लेना चाहते हैं। हम अव भी तेज गति से आधे और अपूर्ण वाक्यों में बातें करते हुए बैठ गये। मेरे पास ही बिछौने के सिरहाने रखी एक छोटी मेज़ पर एक फोटो रखा था जिसमें लियो और हैल्गा एक छोटी मोटर कार के सामने खड़े थे और पीछे की ओर मौंट कार्लो का कैसिनो था। हैल्गा...जिसे मेरी मां हैल्गा वर्डीविजे कहती थीं—उससे कुछ अधिक मोटी थी जितनी कि मुझे याद थी किन्तु उसके चेहरे से उसका यौवन का आकर्षण झलकता था और उसकी आंखों में वह मोहक भाव था जिसने हमारे कितने ही साथियों को दीवाना बना दिया था।

"उसकी यही एकमात्र तस्वीर मेरे पास है", वह बोला, "वापस आने पर यही मुझे मिली। बाकी सब कुछ चला गया था।"

वह उठा और खिड़की के पास जा कर बाहर रात के अन्धकार की ओर देखने लगा। भट्टी से निकलने वाले पिघले लोहे की चमक से आकाश में कुछ लाली छा रही थी। भाप और पम्पों की सी-सी की आवाज आ रही थी और रद्दी कच्ची धात के कारखाने से बाहर के ढेर तक ले जाने वाले लोहे के छकड़ों की अनवरत खड़खड़ से सारा वायुमण्डल मुखर हो रहा था।

मैंने तस्वीर की ओर देखा। मेरे पास कहने को ऐसी कोई बात नहीं थी जो सुनने में अजीब और निरर्थक न लगती।

"हम लोग रिवीरा गये थे," लियो ने अब भी बाहर की ओर ताकते हुए कहा, "यह १९३७ के बड़े दिनों की बात है। वही हमारे अन्तिम सुखपूर्ण दिन थे। मौंट कार्लो सूर्य की उजली धूप में चमक रहा था। हैल्गा जूआ

खेलना चाहती थी । वह जूए में पक्की उस्ताद थी । वह बाजी लगाने में जरा भी नहीं हिचकती थी । इधर या उधर—यही उसकी भावना रहती थी । वह हमेशा ९ संख्या पर, जिसे वह अपने लिए फलने वाला शुभ अंक समझती थी, बाजी लगाती थी । पांचवीं दफा में उसने बाजी जीत ली और जितना पैसा लगाया था उस का पैंतीस गुणा उसे मिला । हमने वह सारा धन शराब पर लगा दिया ।........हे भगवान, वे भी कैसे सुख के दिन थे ।"

उसने अविश्वास की-सी मुद्रा में सिर हिलाया और मेरे सामने बैठ गया ।

"अगर तुम पिछले साल यहां आते तो मैं पार्क के पास अपने पुराने मकान में ही तुम्हारा स्वागत करता । युद्ध के बाद वह मुझे वापस दे दिया गया था । उन्हें देना पड़ा । मैं लड़ाई के दिनों में रूस में लाल सेना की तरफ से लड़ा था और मुझे पदक मिला था । मुझे पूर्व का समर्थक माना गया और उन्होंने मुझे मेरा घर और दफ्तर लौटा दिया और कुछ समय तक वहां रहने दिया । करीब एक साल तक मैं अपना दिल बहलाता रहा; सोचता कि सब ठीक हो जायगा ।"

"तुम्हें यहां नहीं रहना चाहिए था ।" मैंने कहा ।

"निःसन्देह नहीं रहना चाहिए था । किन्तु मेरे पास अपना फ्लैट था और कुछ पुराना फर्नीचर और असली गद्देदार पलंग भी था । सात वर्ष मैंने कैम्पों या बैरकों में बिताये थे या बरफ या जंगल में सोकर रातें काटी थीं । मैं बिछौने पर सोने का आनन्द भूल गया था । मुझे यह सोच कर अपने आप को बहलाने में आनन्द आता था कि एक दिन सब ठीक हो जायगा । हर थाड़े-थोड़े समय बाद मैं देश छोड़ने का खयाल करता किन्तु तभी मुझे ध्यान आता कि यदि मुझे जाने की अनुमति मिल भी गई तो भी बहुत कम चीजें साथ ले जाने की अनुमति दी जायगी । एक गद्दीदार कुर्सी, दो पलंग, दो लैम्प दो गद्दे, तीन सादी चीनी की तश्तरियां, छः पानी के गिलास, छः छुरियां, छः

कांटे और छः चम्मच—और कुछ नहीं। एक विकट लड़ाई के बाद वापस मिले बढ़िया घर को छोड़ देना और एक बार फिर सिर्फ छः कांटे और छः चम्मच लेकर शून्य में निकल पड़ना आसान नहीं था। मैं जानता हूं कि ऐसा सोचना मूर्खता थी। मुझे समय रहते ही यहां से चले जाना चाहिए था।"

"और अब क्यों नहीं ?"

"अब समय नहीं रहा, बहुत देरी हो गई है," उसने ठोस वास्तविकता वादी की भांति कहा, "अब मुझे पासपोर्ट नहीं मिलेगा। पासपोर्ट पार्टी के नेताओं को ही मिलते हैं जो सरकारी यात्राओं पर बाहर जाते हैं या उन लोगों को जिन के पश्चिमी लोगों के साथ सम्बन्धों से किसी तरह का लाभ उठाया जा सकता है। ग्रिटल के पिता जनरल मैनेजर क्रैमर की तुम्हें याद है ? प्रथम गणराज्य में हमारे जमाने में वे एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। नाजी कब्जे के दिनों में वे यहीं डटे रहे। समूचे युद्ध काल में वे यहीं रहे। किन्तु अब मौजूदा शासन के अन्तर्गत एक बड़े आदमी हैं। उन्होंने निश्चय ही अपनी डटे रहने की ताकत दिखा दी है। तुम जानते हो, सरकार को उनकी जरूरत है। वे देश से बाहर आते-जाते रहते हैं और राज्य के धातु उद्योग के लिए कच्चा माल खरीदते हैं। किन्तु उन्हें पासपोर्ट तभी तक मिलेगा जब तक कि उनका उपयोगिता समाप्त नहीं हो जाती। ग्रिटल ने भारी उद्योग मन्त्रालय के एक महत्वपूर्ण अधिकारी से विवाह कर लिया है। अब वह राजधानी की अधिकृत मेजबानों में से एक है।"

खून की कमी के कारण पीले चेहरे वाली वही मरियल ग्रिटल जिस की नाक हर वक्त बहती रहती थी और जिसे कोई टके को भी नहीं पूछता था ! इसी का नाम तो दुनियां है !

"तीन वर्ष पूर्व खतरे के संकेत हटा लिये गये थे, किन्तु मैं उन्हें देखना नहीं चाहता था" लियो ने कहा, "उन लोगों ने मुझ से ऐसी सम्पत्ति या आमदनी पर भी जो कभी मेरे पास नहीं थी या मुझे नहीं मिली थी टैक्स वसूल करना

शुरू किया। इस सारी कार्रवाई पर कानूनीपन का मुलम्मा बड़ी सावधानी से चढ़ा दिया जाता था। इसके बाद खुफिया पुलिस मेरे पीछे लगी। मुझ पर आरोप लगाया गया कि मेरे पश्चिमी देशों के लोगों से सम्बंध हैं। यदि किसी का कई पीढ़ी दूर का चचेरा या ममेरा भाई, जिसका बीस बरस से उसे कोई पता भी न हो, वेनेजुएला जैसी दूरस्थ जगह में रहता हो तो उसका भी पश्चिमी देशों के साथ वैसा ही सम्पर्क समझा जायगा, जैसा कि किसी खतरनाक शत्रु के साथ सम्बन्ध होने पर समझा जाता है। मैंने पुलिस से कहा कि वह मेरे साथ छेड़छाड़ न करे। मैंने उन लोगों को अपने पिता की याद दिलाई। यदि उन्होंने उस जमाने में जब कि इन में से कुछ छोकरे यह जानते भी नहीं जानते थे कि साम्यवादी क्या चीज है, उनके धर्म के लिए संघर्ष न किया होता तो शायद आज वे जीवित होते। किन्तु उनमें से कुछ ने मेरे पिता का नाम ही कभी नहीं सुना था और कुछ ने जानते हुए भी यह दिखाने का प्रयत्न किया कि वे कुछ नहीं जानते।"

मैंने लियो की ओर देखा। उसने मेरी आंखों के भयग्रस्त भाव को देखा और समझ गया। ऐसे मौकों पर मुख से साफ-साफ पूछने की आवश्यकता नहीं होती।

"मेरे पिता जर्मनों के नगर में आने पर सब से पहले गिरफ्तार किये गए थे। वे साम्यवादी रह चुके थे और उनके शत्रुओं की भी कमी नहीं थी। उन्हें एक एकान्त काल कोठरी में बन्द कर दिया गया और रोज जिरह की जाने लगी। मैं नहीं जानता कि उन के साथ क्या हुआ और एक तरह से यह अच्छा ही है। जेल के पुराने रक्षकों में से एक व्यक्ति ऐसा भी था जो मेरे पिता के उन दिनों के उपकारों को नहीं भूला था, जब कि वे उसके मुवक्किलों—अपराधियों—से बातचीत करने के लिए जेल आया करते थे। उसने मेरे पिता के कमरे में किसी तरह चोरी से एक ब्लेड पहुंचा दिया। छठे दिन सुबह वे फर्श पर पड़े पाये गये। बाद में मुझे बताया गया कि

मृत्यु के वाद भी उनके चेहरे पर शान्ति झलक रही थी, मानों मुस्करा रहे हों।"

मुझे डा० काफ्का का खयाल आने लगा, जो हमेशा खुशवाश रहते थे और नाटक से लौटने के वाद अपने हंसी मजाक और विनोद से मेरी माँ की पार्टियों में जान डाल देते थे। वे जीवन से इतना प्रेम करते थे, फिर भी उन्होंने जेल की कोठरी के ठण्डे फर्श पर आत्मघात कर लिया। तो भी उनके लिए इतना ही कहा जा सकता है कि "शायद यह उनकी खुशकिस्मती थी कि उनकी जल्दी मौत हो गई।"

"उन्हें मेरे पिता को याद रखने की जरूरत हा क्या थी ?" लियो मानों अपने आप से ही वोला, "वे लोग हर किसी को याद नहीं रखते। वे सिर्फ वही याद रखते हैं जिसे रखना चाहते हैं। उनके लिए मैं गलत आदमी हूं, बुजुआ हूं। मेरा पेशा भी उनके लिए गलत था। किसी वकील को अपने पेशे का कोई गोपनीय रहस्य रखने की इजाजत नहीं दी जाती। उसे अधिकारियों को अपने मुवक्किलों की, उनके व्यक्तिगत रहस्यों की भी सूचना देनी चाहिए। यदि कोई मामला राष्ट्र हित के विरुद्ध है तो वह उसे हाथ में नहीं ले सकता। वह आयकर का भी कोई मामला हाथ में नहीं ले सकता क्योंकि ऐसा करना राष्ट्र-हित के विरुद्ध होगा। क्या अव तुम समझे कि मध्यवित्त वर्ग के इतने लोग क्यों साम्यवादी दल में शामिल हो गये हैं ? वे मध्यवित्त वर्ग में ही रहना चाहते हैं। नया मध्यवित्त वर्ग ही दल का आधार स्तम्भ है। दल के सदस्यों को रोजगार, छुट्टियाँ, फ्लैट और नाटक घरों में सीटें मिलती हैं। पुराने मध्यवित्त वर्ग के जो लोग दल में शामिल नहीं हुए उन्हें सर्वहारा वना कर नये श्रमजीवी वर्ग में, उस वर्ग में जिसके कर्तव्य तो हैं, अधिकार नहीं हैं डाल दिया गया है। सर्वहारा वर्ग में उनका परिवर्तन तीव्र गति से कर डाला गया है और मजा यह कि इस पर भी साम्यवादी लोग नये वर्गहीन समाज की वातें करते हैं।"

लियो की आवाज में कटुता का लेश भी नहीं था। यह एक ऐसे आदमी की अनाशक्तिपूर्ण आवाज थी जो किसी भी विपत्ति को इसलिए सहज भाव से ग्रहण कर सकता है कि उस पर उसका कोई व्यक्तिगत असर नहीं पड़ा है।

"आखिर अन्त में होगा क्या ?"मैंने पूछा।

"मैं नहीं जानता। यहां लोगों को एक अस्पष्ट और सर्वथा निराधार आशा है कि किसी न किसी तरह एकाएक फिर सब कुछ ठीक हो जायगा। पश्चिम के किसी आदमी ने "मुक्ति" शब्द का उल्लेख किया है; या यहां के किसी आदमी ने किसी गुप्त सैनिक हलचल की भनक पायी है; किसी अन्य सोवियत देश में आसन्न विद्रोह की अफवाहें हैं। रायक, स्लैन्स्की और बेरिया की मिसालें भी लोगों के सामने हैं। गर्ज यह कि लोगों को कोई न कोई तिनका सहारा लेने और मन को ढाढस देने के लिए मिल ही जाता है। किसी को कोई निश्चित जानकारी नहीं है, किन्तु यदि तुम अपनी सूचना के स्रोत तक पहुंच कर जिरह करो तो मालूम होगा कि सारी बातों का आधार एक मनोरथ मात्र है। किन्तु फिर भी लोग कहते हैं कि बहुत जल्दी हम फिर स्वतन्त्र और सुखी हो जाएंगे। वे मुक्ति की निश्चित तारीख तक बता सकते हैं, किन्तु वह निश्चित तारीख कभी आती नहीं, वह पीछे हटती या बदलती रहती है। लोगों को आशा के सेवल की आवश्यकता है। यह उन्हें भोजन से भी ज्यादा आवश्यक है। इसके बिना जीवन सहनीय नहीं रहेगा। सिर्फ एक ही चीज रह जायगी···" यह कह कर उसने अपनी तर्जनी उंगली बन्दक की भांति अपनी कनपटी पर लगा कर संकेत किया।

'लियो !" मैंने एकाएक घबरा कर कहा, "ऐसा मत कहो।"

"चिन्ता मत करो। मैं ऐसा नहीं करूंगा। सही हो या गलत, यह निश्चित है कि मैं अपने अयुक्तियुक्त जीवन के लिए कोई युक्तियुक्त निष्कर्ष नहीं निकाला करता। मैंने तेईस मास एक सोवियत बेगार शिविर में काटने

के बाद भी ऐसा नहीं किया। फिर एक क्षणिक दुर्बलता के वश हो कर मैं अपनी जिन्दगी को परे नहीं फेंकूंगा। ठीक-ठीक कहूं तो मैं तेईस मास और साढ़े उन्नीस दिन सोवियत बेगार कैम्प में रहा हूं।"

"रूसी बेगार शिविर में तुम पहुंचे कैसे ?"

"मैं खुद नहीं जानता," उसने सिर हिलाते हुए कहा, मानों उसे स्वयं अब तक इस बात पर यकीन न हो रहा हो। "सचमुच ही मैं नहीं जानता कि किस कारण से मैं सन् १९३९ की ग्रीष्म ऋतु में भाग खड़ा हुआ था। हैल्गा उस समय अपनी माता के साथी इटली में थी और मेरे पास बाकायदा पासपोर्ट था और इंग्लैंड में मेरे कुछ मित्र भी थे। मुझे पूरा निश्चय था कि मैं हैल्गा को सन्देश भेज सकता हूं कि वह मुझे वहां आ मिले। मेरा व्यापार छिन्न-विच्छिन्न हो गया था। मेरे पास पैसा भी ज्यादा नहीं था और यह अफवाह थी कि पोलैंड के किसी कस्बे में कोई विशेष अंग्रेज कमेटी बैठी है जो इंग्लैंड जाने के पासपोर्ट दे रही है। मैंने अपने पिता से भी कहा कि वे मेरे साथ चलें, किन्तु उन्होंने मुझे यह कह कर टाल दिया कि मैं बेकार आतंकित हो रहा हूं। वे कहते, "जर्मन यहां कभी नहीं आयंगे। हमारे पास भी अपनी सेना है। हमारी किलेबन्दी भी मजबूत है। हिटलर के बारे में तुम और कुछ भी कहो, पर वह बेवकूफ नहीं है। वह जानता है कि रूसी हमारी सहायता करेंगे। वे हमें कदापि धोखा नहीं देंगे। हिटलर उन्हें उत्तेजित नहीं करना चाहेगा। मैं यहीं रहूंगा। मैं जानता हूं कुछ होने वाला नहीं है और मैं अपने आप को कदापि बेवकूफ नहीं बनाऊंगा।"

लियो ने ठण्डी सांस ली और बोला, "इस लिए मैं अकेला ही चला गया। उस पोलिश कस्बे में एक ब्रिटिश कमेटी थी अवश्य किन्तु वह वीसा नहीं दे रही थी। उसने मुझे वारसा जाने को कहा। वहां पहुंचने पर कुछ लोगों ने मुझे और भी पूर्व की ओर सोवियत रूस की सीमा के पार जाने की सलाह दी। मुझ से कहा गया, "रूसी हमारे मित्र हैं। बाहें फैलाकर तुम्हें अपनी गोद में ले लेंगे। एक बार तुम वहां पहुंच जाओ और फिर बात की

रात में इंग्लैंड पहुंच सकोगे।" दनीस्तर की एक छोटी सहायक नदी ज्वुर्क को मैंने तैर कर पार किया और सोवियत रूस में दाखिल हो गया। दो रूसी सैनिक वहां मेरा इन्तजार कर रहे थे, किन्तु यह प्रतीक्षा स्वागत के लिए उत्सुक व्यक्ति की प्रतीक्षा नहीं थी। उन्होंने मुझे जासूस के रूप में गिरफ्तार कर लिया, यह मत पूछो कि क्यों। मुझे दस वर्ष के बलात् श्रम का दंड दे कर साइबेरिया भेज दिया गया।"

मैंने लियो की ओर ताका। उसकी आवाज में भावुकता नाममात्र को भी नहीं थी।

मैं कैम्प से भी जिन्दा निकल आया, क्योंकि मैंने जिन्दा रहने का संकल्प कर लिया था। मैं हैल्गा को एक बार फिर देखना चाहता था। अब भी कभी-कभी साइबेरिया के स्वप्न आते हैं; वे आदिकालीन जंगल और उन में डांस, मच्छर, बिच्छू और ऐसी भयंकर मक्खियों की भरमार जो मैंने शायद ही अन्यत्र कहीं जीवन में देखी हों। या तो वहां अत्यधिक गर्मी पड़ती है या अत्यधिक ठण्ड। क्या तुमने शून्य अंश से भी चालीस अंश नीचे की ठण्ड में पेड़ काटने का काम किया है? किन्तु मैंने किया है और मैं उस जाड़े में भी अपने कुल्हाड़े से तब तक काम करता रहता, जब तक कि पसीने से तर-बतर न हो जाता और उसके बाद आसमान से गिरती बरफ में बैठ कर बरफानी तूफान की सर्दी को हड्डियों में घुसते अनुभव करता। किन्तु एक बार भी मुझे जुकाम तक नहीं हुआ।"

"क्या तुमने कभी भागने की भी चेष्टा की?"

"वहां से निकटतम गांव चालीस मील दूर था। जाड़ों में वहां तक पहुंचने से पूर्व ही या तो भूख से मर जाना या सर्दी से जम जाना अनिवार्य है। गर्मियों में भागने की चेष्टा करो तो वे लोग अपने शिकारी कुत्तों के जरिए पीछा कर तुम्हें पकड़ लेंगे। मैंने इसी लिए वहीं डटे रहने का निश्चय किया और राजनीतिक घटना के घटने की आशा करता रहा। सन् १९४२ की

वसन्त ऋतु में मुझे बताया गया कि रूस में हमारे लोग लाल सेना की एक ब्रिगेड बनाना चाहते हैं। मैंने तुरन्त उस में भर्ती होने की स्वीकृति दे दी। जुलाई में मैं साइबेरिया के कैम्प से रवाना हो गया।"

लियो उठा और एक बार फिर खिड़की के पास गया।

"मध्य रूस से जद्दो-जहद करते हुए अपने घर तक पहुंचने के लिए बहुत लम्बी मंजिल थी, किन्तु मैंने वह तय की। मैं जीवित रहने के लिए इतना उत्सुक था। अन्त में हृदय में आशाएं लिये मैं यहां पहुंच गया। किन्तु जब मैं यहां पहुंचा तो मुझे बताया गया कि हैल्गा की कुछ महीनें पूर्व साक्सेन हाउजन के जर्मन नजरबन्दी शिविर में मृत्यु हो चुकी है।"

कमरे में अब बिल्कुल शान्ति थी। किन्तु बाहर लोहा पीटने वाले भारी घनों और मशीनों की आवाज बराबर जारी थी। आवाज वहां हमेशा रही है, कम से कम जहां तक मुझे याद है। हम लोग इस शहर में शोर के साथ ही बड़े हुए हैं, उसी तरह जैसे कि हम अपने खून और दिल की धड़कन के साथ बढ़ते हैं। गणराज्य का फौलादी दिल इस राजनीतिक नारे के बनने से भी कहीं पहले से धड़क रहा है। आधी रात के सन्नाटे में भी हमेशा हथौड़ों की हलकी आवाज और कच्ची धातु को ढोने वाले छकड़ों की खड़खड़ाहट सुन पड़ती रही है।

"अच्छा, आजकल तुम क्या कर रहे हो, लियो ?" मैंने पूछा।

"मैं एक अर्धदक्ष श्रमिक हूं," वह बोला, "मार्क्स ने दक्ष और अर्धदक्ष मजदूर का भेद नहीं माना था, किन्तु साम्यवादियों ने श्रमिकों का एक अर्धदक्ष वर्ग बना कर इस उलझन को सुलझा लिया है। हमें कम राशन और घटिया मकान मिलते हैं। अर्धदक्ष मजदूर की श्रेणी से उपर चढ़ कर दक्ष मजदूर की श्रेणी में तब तक कोई नहीं पहुंच सकता जब तक कि वह 'सैद्धान्तिक दृष्टि से साम्यवाद में शिक्षित' न हो और मूलतः श्रमजीवी वर्ग में पैदा न हुआ हो।"

"यह सरासर जुल्म है," मैंने कहा, "तुम्हें उन लोगों की खातिर लड़ने की तो इजाजत दे दी गई, किन्तु अच्छे ढंग से जीवन बिताने की अनुमति नहीं दी जाती ।"

"किन्तु मैं खूब मजे में रह रहा हूं," लियो ने कहा और यह बात उसने व्यंग्य से नहीं कही थी । वह बोला, "मेरे पास रोजगार है । राज्य मेरी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है । यदि मैं दल में शामिल हो जाऊं तो मुझे सात हफ्तों में एक दफा थियेटर का टिकट भी मिल सकता है । मेरे पड़ोसी भी बहुत अच्छे हैं । इस इमारत में रहने वाले अधिकतर लोगों के पास किसी समय पार्क के पास अपने मकान थे । थियेटर में हर मंगलवार की रात को पीली कतार, याद है ? हम लोगों की माताएं उस समय वहां हुआ करती थीं । किन्तु दुर्भाग्य से मैं शाम को देर तक जागा नहीं रह सकता; मुझे हर रोज सुबह पांच बजे उठना पड़ता है । मैं हर्कमेनिस के नये कैमिकल के कारखाने में काम करता हूं । मैं वहां स्टाक का क्लर्क हूं ।"

"टोंडा तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता ?"

"उसी ने मुझे रोजगार दिलाया है । उसने सहायता न की होती तो मुझे सीमावर्त्ती इलाके में भेज दिया गया होता । किन्तु दो बरस से मेरी उस से भेंट नहीं हुई ।"

मुझे आश्चर्य हुआ । मैंने पूछा, "लेकिन क्यों ?"

लियो ने आहिस्ता से कंधे हिलाये । बोला, "टोंडा ट्रेड यूनियन केन्द्र में बड़ा आदमी है किन्तु इतना बड़ा नहीं कि मेरे साथ निर्भय होकर मिल सके । उसे भय हो गया है । जब मैं लौट कर आया था तब उससे मेरी अक्सर मुलाकात होती थी ।........खैर, मैं उसे दोष नहीं देता । उसे भी आखिर मार्त्ता और अपने बच्चों की फिक्र करनी है ।"

"पुराने साथियों में से और यहां कौन है ?"

"सिर्फ वावर, वावर ओटो। वह जरा भी नहीं वदला है। दम्र्यानि लोग क्रान्तियों को भी मजे में झेल लेते हैं, वे उन्हें वदल नहीं पातीं।"

"और स्टर्न ?" मैंने कहा, "उसके रूस से लौटने के वाद क्या तुम्हारी कभी उससे भेंट हुई ? क्या वह........."

मैं रुक गया। लियो के चेहरे पर एकाएक भय का जो भाव उभर आया था उससे मैं स्तब्ध रह गया। उसने उंगली होंटों पर रख कर मुझे चुप होने का इशारा किया। मैं कुछ समझ नहीं सका और उसकी ओर ताकने लगा। वह रूस और अन्य सभी चीजों के वारे में वेखटके वोल रहा था और अव.........।

"वेहतर है कुछ चीजों का जिक्र न किया जाय," उसने कहा। अव उसके चेहरे के भाव को समझने में कोई भूल नहीं रह गई। वह डर गया था।

वह उठ खड़ा हुआ। वोला, "आओ, पुराने दिनों की भांति पार्क में सैर करने चलें।"

पार्क में अन्धकार और सन्नाटा था। नदी से महीन कुहरा उठ रहा था और विजली की वत्तियों की रोशनी हल्की हो गई थी। वहां नयी तख्तियां लगी थीं जिन पर लिखा था, "घास पर मत चलो।" उन पर अक्षर पहले से वड़े थे, और जुर्माने की सजाएं भी वड़ी रखी गई थीं। हम वगल के दरवाजे से भीतर घुसे, जहां हमेशा चैस्टनट वेचने वाला खड़ा रहता और एक खुली अंगीठी पर चैस्टनट मेवा भूना करता था। वह आधा दर्जन चैस्टनटों के कागज के ठोंगे वना कर वेचा करता था। वगल के दरवाजे पर उसका खड़ा होना हमेशा जाड़ों के आगमन, रातों के वड़े होने और वरफ़ का मौसम शुरू होने का संकेत होता था।

हम वगल की छोटी गलियों से, जो रात के इस वक्त सुनसान पड़ी थीं, होकर पार्क पहुंचे। ऐसा नहीं लगता था कि कोई हमारा पीछा कर रहा

हो। लियो खामोश था। तब हम पार्क में पेड़ों के नीचे पहुंच गये तभी वह मेरी ओर मुखातिब हुआ।

"जैक, मैं तुम्हें भयभीत करना नहीं चाहता था। मैं नहीं समझता कि मेरे मकान पर बातचीत को सुनने के लिए गुप्त तार लगा रखे गये है, खैर मैं डरता भी नहीं, किन्तु फिर भी बेकार अपने गले में फांसी का फन्दा डालने की कोशिश करना पागलपन है। और उसके बारे में बातें करने का मतलब है, गले में फन्दा डालना।"

मैंने कुछ नहीं कहा। हावर्ड से, जिसका कर्त्तव्य ही मुझे चेतावनी देना था, चेतावनी पाना एक बात है और लियो को एकाएक भयग्रस्त देखना दूसरी बात है, और वह भी तब जब कि वह अभी-अभी बिल्कुल अनासक्त की तरह मात और कष्टों के बारे में बातचीत कर चुका हो।"

"मैं जानता हूं, जैक, कि तुम क्यों आये हो," वह बोला।

मैंने स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया। लियो अवश्य सब समझता है। वह हमेशा मेरे बहुत निकट रहा है।

"तुम्हें सम्पूर्ण सत्य का कभी पता नहीं लगेगा," वह बोला, "हो सकता है कि आंशिक सत्य ज्ञात हो जाय, पर सम्पूर्ण सत्य को शायद कोई नहीं जानता। उसके अपने सिवाय कोई नहीं।"

"हां, लियो, और इसी लिए मैं स्टर्न से मिलना चाहता हूं।"

लियो ने सिर हिलाया और कहा, "वह तुम्हें कुछ नहीं बतायगा।"

"वह जरूर बतायगा, बशर्त्ते कि मेरी उससे मुलाकात हो जाय।"

उसने मेरी बांह थाम ली। मुझे अपने मोटे कोट के भीतर से भी उसकी उंगलियों का दबाव अनुभव हुआ।

"जैक," उसने हर शब्द पर काफी जोर देते हुए कहा, "स्टर्न के चक्कर में मत फिरो। वह अब हमारे बचपन के दिनों का स्टर्न नहीं रहा।"

"मैंने युद्ध के दिनों में उसे लन्दन में देखा था। वह राक्षस जैसा नहीं लग रहा था।"

"मैं नहीं समझता कि तुम आज भी उसे पहचान सकोगे। उसके बाद वह स्टालिनग्राड और मास्को में रह चुका है। उस में परिवर्तन हो गया है।"

"क्या तुमने उसे देखा है ?"

लियो देर तक मेरी ओर देखता रहा। मैं जानता था कि वह क्या सोच रहा है। जब कभी मैंने कोई मूर्खता की बात कही है, कोई ऐसी बात जो सिर्फ ऐसा ही आदमी कह सकता है, जो इतने समय तक दूर रहने के कारण बिल्कुल सम्पर्क खो चुका हो, तभी इस देश के अनेक लोगों ने मुझ पर इसी तरह की अजीब, विचारपूर्ण और व्यंग्यात्मक ृष्टि डाली है। उनकी दृष्टि का भाव यह होता कि यह आदमी यह भी नहीं जानता कि यहां क्या हो रहा है। इसने मुझे यह अनुभव करा दिया कि अब मैं यहाँ बिल्कुल अजनबी हूं, अर्थात् जो लोग किसी समय मेरे देशवासी थे, उन्हीं को मैं भली भांति नहीं समझता। म उन लड़कों तक को भली भांति नहीं जानता जो मेरे ही साथ बचपन से बड़ हुए हैं।

"हमारी आखिरी मुलाकात के बाद इस देश में कुछ घटनाएं घटित हुई हैं," लियो ने कहा। वह आहिस्ता-आहिस्ता मृदु स्वर में किन्तु जोर देकर बोल रहा था, मानों कोई ऐसी समस्या समझाने की ेष्टा कर रहा हो जो, उसकी राय में, मुझे नहीं समझनी चाहिए।

"स्टर्न," उसने कहा, "आज इस देश में सब से ज्यादा शक्तिशाली व्यक्ति है। उसकी ताकत असीम, रहस्यपूर्ण और सर्वज्ञतामय है। हर आदमी उसका नाम जानता है, फिर भी बहुत कम उसका उच्चारण करने का साहस करते हैं। वह उन लोगों का भी संचालन करता है जो इस देश का संचालन करते हैं। उसकी अनुमति के बिना कोई महत्वपूर्ण निश्चय नहीं किया जाता।"

"मैंने पहले भी यह बात सुनी है," मैंने कहा, "पर मैं इस पर विश्वास नहीं करता।"

"मैं तुम्हें इसके लिए दोष नहीं देता। जब मैं वापस आया था तब मैं भी यही अनुभव करता था। मेरे लिए वह उस समय भी वही लड़का था जिसके साथ हम कभी पढ़ा करते थे। एक निरीह फितुरी, एक दयनीय एकाकी आदमी। हैल्गा अक्सर उसे याद करती थी। वह उसके साथ कुछ समय रहा था, तुम जानते हो। जब कभी वह स्टर्न के बारे में बातचीत करती तो उसके प्रति उसकी दया प्रकट होती। उसे लगता था कि उसे वास्तव में तरक्की का अवसर नहीं मिला है। उसकी मां की मृत्यु के बाद ऐसा कोई नहीं था जो उसे अच्छी तरह समझता हो। मैं समझता हूं कि जो महत्वाकांक्षाएं भीतर ही भीतर उसे खाये जा रही थीं, विश्लेषक और इतिहासकार उनका व्याख्या तरह-तरह से करेंगे। उन्हें इस काम में एक सुविधा यह रहेगी कि उन्होंने कभी भी व्यक्तिशः उसे देखा या जाना नहीं है। लेकिन हमें यह सुविधा नहीं है। हम सोचते हैं कि हम उसके बारे में काफी जानते हैं और फिर भी कुछ नहीं जानते। हमने उसे भौतिक और शारीरिक दृष्टि से देखा है किन्तु वह देखना ही क्या है? शारीरिक दृष्टि से बाहरी तौर पर आज भी वह वही आदमी हो सकता है जिसे हम जानते हैं, परन्तु और सब दृष्टियों से वह उससे बिलकुल जुदा किस्म का हो सकता है। क्या तुमने अपने यहां के अखबारों में जनरल पिलर का मुकदमा पढ़ा था?"

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया। तीन वर्ष पूर्व सेना का प्रधान कार्यालयाध्यक्ष और देश का एक सच्चा वीर जनरल पिलर जासूसी और देशद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार किया गया था। पश्चिमी जगत के लिए उसका नाटक रहस्यपूर्ण शुद्धीकरण का ही एक और नाटक मात्र था। युद्ध काल में जनरल पिलर ने लाल सेना की तरफ से वीरतापूर्ण लड़ाई लड़ी थी। क्रेमलिन में उसे सम्मानपूर्ण आतिथ्य मिला था। रूसियों ने उसे पदक

दिये थे और अक्सर बड़े सोवियत सेनापतियों के साथ उसके फोटो खिचे थे। और अब वही सैनिक न्यायालय के सामने खड़ा था और उन बेहूदा अपराधों का जिन पर विश्वास तक नहीं किया जा सकता, दीनता से इकवाल कर रहा था। उसे मौत की सजा दे दी गई थी।

"गणराज्य के राष्ट्रपति उसके दण्ड को घटा कर आजीवन कारावास में बदलना चाहते थे," लियो ने कहा, "किन्तु स्टर्न ने उनकी इच्छा ठुकरा दी। उसे मृत्यु दण्ड दे दिया गया।"

"तुमने कैसे जाना ?" मैंने पूछा।

"साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति का हर सदस्य जानता था। स्वयं स्टर्न ने उन्हें यह सूचना दी थी। मुझे इसका पता केन्द्रीय समिति के एक सदस्य से लगा। दो वर्ष पूर्व से वह बेचारा उससे पिछले वर्ष के भयंकर मुकदमे के फलस्वरूप लापता है। उस मुकदमे का संचालन भी स्टर्न ने किया था। वह व्यक्तिशः कभी अदालत में नहीं आया, फिर भी वही अभियोक्ता था, वही जूरी और वही जज।"

सात साम्यवादी नेताओं के इस मुकदमे ने सारे सभ्य संसार को स्तब्ध कर दिया था। लगातार दस दिन तक एक के बाद दूसरा अभियुक्त सामने आ कर अपने आपको और अपने अन्य साथियों को जासूसी, विध्वंसपूर्ण षड्यन्त्र, देशद्रोह, ट्राट्स्कीवाद, टीटोवाद, बुर्जुवा राष्ट्रवाद व अन्य साम्यवादी अपरदाधों का अपराधी ठहराता रहा।

"स्टर्न के निर्णय के खिलाफ अपील नहीं हो सकती," लियो ने कहा, "इस देश के हर आदमी के जीवन और मरण का वही अन्तिम निर्णायक है।"

मैंने कहा, "यह अधिकार उसे किसने दिया है ?"

"कोई नहीं जानता। जानकार लोगों का कहना है कि रूसी इस देश में सब से अधिक विश्वास उसी पर करते हैं। किन्तु असलियत यह है कि

जब क्रैमलिन का सवाल आता है तो सुविज्ञ से सुविज्ञ लोग भी धोखा खा जाते हैं।"

यह हमारा वह स्टर्न ब्रूनो था, ऊंची पतलून पहनने वाला लड़का, लोला का भाई और बाइबिल के नाटक 'ऐस्थर' का लेखक और वही स्टर्न जो स्टालिनग्राड में पैराशूटी युवक ब्रिगेड का नेता था। यह सब मुझे एक अजीब गोरखधन्धा लगा।

"जब मैं वापस लौटा," लियो ने फिर कहा, "मैंने स्टर्न के बारे में यथासम्भव जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया। मुझे यह सारी पहेली खूब मजेदार लगती और मैं जोड़जाड़ कर उसका समाधान करने का प्रयत्न करता। उस समय यहां लोकतन्त्रीय सरकार थी और साम्यवादी विरोधी दल में थे। दल के लोगों से खुल कर बातचीत की जा सकती थी और मैंने की भी। उस समय मेरे पिता के कुछ पुराने बोलशेविक मित्र मौजूद थे, हालांकि उन में से बहुत-से अब लापता हो चुके हैं। मैंने काफी मालूम कर लिया। स्टर्न १९४६ की गर्मियों में केन्द्रीय समिति की प्रथम युद्धोत्तर कालीन बैठक में भाग लेने के लिए मास्को से आया। उसने खुले अधिवेशन में एक बार भी भाषण नहीं दिया। मेरे मित्रों का ख्याल था कि वह अपनी भारी आवाज से, जिससे वह बाहर का आदमी मालूम पड़ता था, समिति के अन्य सदस्यों को नाराज नहीं करना चाहता था, किन्तु उस का प्रभाव उस समय तक काफी बढ़ चुका था। स्टालिनग्राड से लौटने पर मास्को में उसे कमिटर्न का सदस्य बना दिया गया था। कमिटर्न उस समय विश्वव्यापी साम्यवादी प्रसार योजना का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन था। युद्ध काल में पश्चिमी मित्र राष्ट्रों को प्रसन्न करने के लिए उसे औपचारिक तौर पर भंग कर दिया गया था किन्तु वस्तुतः मास्को का हमेशा के लिए उसे खत्म कर देने का कोई इरादा नहीं था। कमिटर्न की सारी मशीनरी अखिल संघीय साम्यवादी—अथवा बोलशेविक दल के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग में शामिल कर ली गई। स्टर्न दुनायस्की के उपनाम से उसका सदस्य बन गया।"

दुनायस्की उपनाम सार्थक उपनाव था। दुनाय का अर्थ है डैन्यूब। मुझे ख्याल आया कि हावर्ड की गुप्त फाइल में यह नाम है या नहीं।

"स्टर्न ने अवश्य ही मास्को में रहते हुए खूब होशियारी से चाल चली होगी। अपनी सहज प्रेरणा से या सौभाग्य से वह कभी भी ऐसे आदमियों के साथ नहीं घुलता-मिलता था, जो बाद में गलत आदमी सिद्ध होते। कमिन्टर्न में उसने एक संगठनकर्त्ता और नौजवानों के नेता के रूप में अपनी योग्यता का परिचय दिया था। उसने मालेन्कोय का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। उसने ठीक घोड़े का चुनाव किया था। १९४५ के प्रारम्भ में जब हमारा सारा शासन मास्को के हाथों से गुजर रहा था, उस समय स्टर्न मास्को में था। वह पीछे पर्दे में रह कर सब कुछ देख रहा था किन्तु कहता कुछ नहीं था। आम तौर पर लोग समझते थे कि वह सिर्फ कमिन्टर्न का एक सदस्य मात्र है। जब वह यहां लौट कर आया तब भी उसका पद साधारण-सा था; वह दल के कार्यालय के वैदेशिक विभाग का प्रमुख और जनरल सेक्रेटरी का सहकारी कहलाता था। उस समय हमारे वैदेशिक मामलों का संचालन विदेश मंत्रालय करता था न कि किसी राजनीतिक दल का, एक ऐसे दल का जो उस समय विरोधी दल था, सचिवालय। स्टर्न की सभी अधिकारी उपेक्षा करते थे। इन उपेक्षा करने वालों में से एक परराष्ट्र मंत्री भी था। जानते हो उसका क्या हश्र हुआ?"

पर राष्ट्र मंत्री को दो वर्ष पूर्व देशद्रोह के अभियोग में मौत की सजा दे दी गई थी।

लियो अपनी भावुकताहीन आवाज में बोलता रहा, मानों वह अदालत में कोई बयान पढ़ रहा हो। वह कहने लगा, "जब सन् १९४७ में आठ राष्ट्रों के साम्यवादी सूचना संगठन—तथाकथित कमिन्फार्म—का पुनरुद्धार किया गया तो स्टर्न उसके चोटी के नेताओं में था और इस देश का

मुख्य प्रतिनिधि था। वर्षों तक उसका नाम बुखारेस्ट से प्रकाशित होने वाली कमिन्फार्म की पत्रिका के अन्तिम पृष्ठ पर सम्पादक के रूप में छपता रहा। कमिन्फार्म ने टीटो को उलटने के लिए जो आह्वान किया था उसके रचयिताओं में उसका भी नाम था। उसने सर्वत्र गैर-साम्यवादियों से नये 'शान्ति-अभियान' का समर्थन करने के लिए कहा था। हमारे पुराने सहपाठी का नाम अन्त में, इस प्रकार, इतिहास की पुस्तकों का नाम बन गया।"

मैंने कहा, "यह भी अजीब बात है। वह इस देश में पैदा नहीं हुआ था। वह यहूदी था। वह यहां की भाषा भी अच्छी तरह नहीं बोल सकता। उसकी सारी पृष्ठभूमि बूर्जुआ है। हर लिहाज से वह अनधिकारी आदमी है। तब इतने लोगों में से उसी को क्यों इस के लिए चुना गया?"

"बिल्कुल उन्हीं कारणों से जिनका तुमने अभी जिक्र किया है। उसकी कमियां ही उसकी सबसे बड़ी पूंजी हैं। रूसी यहां किसी ऐसे आदमी को नहीं चाहते जो इसी देश का मूल निवासी हो, जो सर्वहारा रह चुका हो, जो आम जनता में लोकप्रिय रहा हो और इस लिए जिसके दूसरा टीटो बनने का भय हो। स्टर्न की हर बात इसके विपरीत है। उसकी इस देश के प्रति कोई निष्ठा नहीं है। वह विशुद्ध अन्तराष्ट्रीयतावादी है। जनता उससे नफरत करती है और दल के सदस्य उससे डरते हैं। यहां तक कि नेता भी उसका नाम नहीं लेना चाहते।"

जी, हां। प्रचार मन्त्री भी नहीं।

"उसकी वफादारी है रूस के प्रति," लियो ने कहा. "उन्हें उस पर पूरा भरोसा है। वे उसे तब तक कायम रखेंगे जब तक उसकी उपयोगिता खत्म नहीं हो जाती।"

हम पार्क के दूसरे सिरे तक पहुंच गये थे। उसके बाद वह लम्बा मैदान था जहां हम फुटबाल खेला करते थे। उसके पीछे दूरी पर मैंने खूब तेज रोशनी, ऊंची-ऊंची इमारतों की बाह्य रूपरेखा, फौलाद के कारखाने,

भट्टियां और ऊपर चलने वाली क्रेनें देखीं। ये सब चीजें पिछले पांच सालों में बनी थीं। बिजली की बहुत कमी थी, इस लिए लोगों को आदेश था कि वे सारे घर में तीस वाट की एक बत्ती से अधिक न जलाएं। इमारती सामान की कमी के कारण नये मकान नहीं बन रहे थे। किन्तु गणराज्य के फौलादी कलेजे की धक-धक की गति तेज करने के लिए बिजली और इमारती सामान की कमी नहीं थी।

मैं लियो की ओर घूमा और पूछा, "तुम लोला के बारे में क्या जानते हो ?"

वह कुछ देर तक चुप रहा। अन्त में बोला, "मैं चाहता हूं तुम मुझ से यह मत पूछो।"

"क्यों ? क्या वह ·······"

"नहीं, नहीं। असल में मुझे तुम्हारे प्रश्न का निश्चत उत्तर देने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं है। १९४५ के प्रारम्भ के दिनों तक लोला शहर में ही थी। जर्मनों ने हमला करने के बाद जल्दी ही उसकी दूकान पर कब्जा कर लिया था, किन्तु लोला को उन्होंने कुछ नहीं कहा। कुछ समय तक उन्होंने उसे अपने फ्लैट में ही रहने दिया। १९४२ की गर्मियों में जब हालत ज्यादा खराब हो गई तो उसे वहां से हट कर हेमार्केट के एक कमरे वाले एक मकान में चले जाना पड़ा। बाद में उसी इमारत में रहने वाले अन्य लोगों से मेरी बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि लोला तारीफ के लायक प्रसन्नता से दिन काट रही थी। वह लोगों में घूमती-फिरती और उन्हें जो सहायता दे सकती, देती। दो बार उस का नाम नजरबन्दी शिविर में भेजने के लिए दर्ज किया गया किन्तु दोनों बार काट दिया गया। फरवरी, १९४५ में एक दिन सुबह जो वह घर से निकली तो फिर किसी को दिखाई नहीं दी। वह अपने साथ खरीद-फरोख्त करने के छोटे-से थैले में कुछ चीजें डाल कर ही निकली थी, मानों किसी काम से शहर में जा रही हो। उसका सारा सामान बाद में उसके कमरे में पड़ा पाया गया।"

"क्या वह अपनी इच्छा से गई थी ? और गई कहां ?"

"यहीं से तो रहस्य का प्रारम्भ होता है। उसके पड़ोसियों ने मुझे बताया कि कोई आदमी उसे बुलाने आया था। वह उसके साथ चली गई। वह आदमी जर्मन नहीं था। दरअसल, उसके लापता हो जाने के बाद जर्मन तो खुद उसकी तलाश करते रहे। पर सवाल यह है कि वह रहस्यपूर्ण सन्देशवाहक कौन था और वह उसके साथ कहां गई ? शायद वह जर्मनों के खिलाफ लड़ने वाले देशभक्त मुक्ति दल का आदमी था। उस समय मुक्ति दल के लोग यहां से करीब ही पहाड़ों में छिपे हुए थे। वे भोजन सामग्र। लूटने के लिए हमले करते और जर्मनों को परेशान करते। मैंने टोंडा से, जो मुक्ति दल के लोगों के साथ रहा था, पूछा किन्तु उसने ऐसा दिखाया कि मानों लोला के बारे में कुछ जानता ही न हो। मैंने स्टर्न से भी पूछा ?"

मैंने उसकी बांह पकड़ ली और आश्चर्य से पूछा, "तुम्हारी उस से बातें हुईं ?"

"मेरी आस्तीन मत खींचो" लियो ने कहा, "मेरी और कोट खरीदने की हैसियत नहीं है·····। १९४६ के पतझड़ में मैंने सुना कि स्टर्न दल के सम्मेलन में भाग लेने के लिए दो दिन के वास्ते यहां आ रहा है। सुनते ही मैं दल के कार्यालय में ऐसे जोश के साथ गया, जैसे कि मेरे पास घुड़दौड़ का टिकट हो और लाटरी निकालने के समय में उपस्थित होऊं। मुझे उम्मीद थी कि स्टर्न मेरी बात सुनेगा और मेरी सहायता करेगा। दो घंटे तक प्रतीक्षा करने के बाद मुझे एक कमरे में ले जाया गया जहां स्टर्न टोंडा और कुछ अन्य आदमियों के साथ बैठा था। वह नम्र और विरक्तसा लगता था। उसकी शक्ल-सूरत में शायद ही कोई परिवर्तन हुआ हो, किन्तु उसके रंग-ढंग में एक प्रकार की निश्चिन्तता और दृढ़ता प्रतीत होती थी। उसने मुझ से मेरे बारे में सवाल किये, किन्तु मेरे सब प्रश्नों को टाल दिया। मुझे

अदालत में जूरी के सामने कई घाघ और पक्के आदमियों से जिरह का मौका हुआ है किन्तु ऐसा कोई आदमी मेरे देखने में नहीं आया था जिसने स्टर्न की तरह होंठ सी रखे हों। मैंने उससे सीधा सवाल किया कि उसकी बहन कहां है, परन्तु उसने कहा कि लड़ाई खत्म होने के बाद से उसे उसकी कोई खबर नहीं मिली। कुछ देर बाद मुझे बाहर पहुंचा दिया गया। उसके बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। बाद में मैंने उस के बारे में टोंडा से पूछा किन्तु उसने मुझे सख्ती से कहा कि मैं ऐसे किसी मामले में दस्तन्दाजी न करूं जिससे मेरा कोई वास्ता नहीं है। हो सकता है, उसे कुछ पता हो।"

मैंने तुरन्त ही कहा, "मैं कल उससे मिलूंगा।"

लियो ने व्यंग्य करते हुए कहा, "तुमसे मिल कर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। भाई, उसे दोष मत देना। इन दिनों हर आदमी डरता है।"

"डरता है? मेरे कारण?"

"तुम अमरीकी हो, जनता के शत्रु हो।"

मेरे मन में एक ख्याल उठा और मैंने कहा, "क्या हम लोग, हम तीनों और ओटो बावर एक जगह इकट्ठे नहीं हो सकते?"

"हां, खूब बढ़िया पार्टी होगी और पुराने दिनों की याद ताजा हो जायगी," लियो हंस कर बोला, "पर मुलाकात हो कहां?"

"क्यों? कहीं भी। किसी के घर पर। किसी रेस्टोरां में। या मेरे होटल में।"

लियो ने फिर मेरी ओर अजीब और कुछ-कुछ व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से देखा, मानों मैंने कोई बेहूदा बात कह दी हो। मुझे गुस्सा आ गया।

"यह भी अजीब बात है। हम लोग बातचीत करके शाम बिताने और एकाध गिलास शराब का मजा लेने के लिए क्यों इकट्ठे नहीं हो सकते? अमरीका में...।"

"अमरीका में," लियो ने मुस्करा कर बाधा देते हुए कहा, "सब कुछ बिल्कुल भिन्न है।"

"हमें राजनीति पर बातचीत नहीं करनी है। हम में कभी कोई गम्भीर झगड़ा नहीं हुआ। क्यों हम एक रात के लिए सारी राजनीति को भला कर पहले की भांति इकट्ठे नहीं हो सकते ?"

लियो ने एक गहरी सांस ली। उसने दोनों हाथ ऊपर उठाए और उसके बाद फिर नीचे कर लिय, मानों मुझे समझाने की चेष्टा करना व्यर्थ हो।

"अच्छी बात है," वह बोला, "टोंडा से मिलो और फिर मुझे बताना कि तुम कहां तक पहुंचे।"

उस समय रात के साढ़े बारह बज चुके थे और सड़कें वीरान पड़ी थीं। हेमार्केट इलाके की सीमा पर लियो मुझ से अलग हो गया। यह अजीब बात थी कि उस के लिए मेरे साथ घर जाने के बजाय अकेले जाना अधिक सुरक्षित था।

शान्ति के नारों से अंकित इश्तहार और पर्चे एवं साम्यवादी नेताओं की बड़ी-बड़ी तस्वीरें, जो इस परिचित इलाके में गैरमौजू प्रतीत होती थीं, अन्धकार में लुप्त हो गई थीं। सिर्फ मकानों, दीवारों और टावरों की शक्लें उसी रूप में खड़ी थीं जिस रूप में मैं उन्हें जानता था। वही गलियां व सड़कें थीं और वही चौक थे। मुझे एकान्त पा कर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। मैं अपनी मां के घर वापस जा रहा था।

हेमार्केट से हमारा घर काफी दूर था, किन्तु इस समय यह दूरी मानों सुकड़ कर छोटी हो गई थी। मैंने पुल पार किया। लियो और टोंडा के साथ खड़ा हो कर मैं यहां से नीचे से गुजरती हुई रेलगाड़ी देखा करता था। इंजन सफेद भाफ छोड़ते और कुछ देर के लिए हम बादलों से घिर जाते, मानों पृथ्वी से दूर उन्मुक्त आकाश म उड़े जा रहे हों ...

एक वर्दीधारी आदमी इसी समय अन्धकार में से निकल कर आया और मेरी ओर घूरने लगा। पुल पर पहरा था। मैं नई इमारतों के एक झुण्ड के पास से नीचे उतरा और मुख्य सड़क पर घूम गया।

रोशनी धुंधली थी। सड़क की हर तीन बत्तियों में से दो बिजली की बचत करने के लिए बुझा दी गई थीं। खानों के मजदूर पर्याप्त कोयला नहीं निकाल रहे थे। शासन के प्रति अपना असन्तोष व्यक्त करने का उनका यही एकमात्र तरीका था। हमारा नगर कोयले की खान के ऊपर बना हुआ था, फिर भी लोगों को अपने मकानों को गर्म और रोशन करने के लिए काफी कोयला नहीं मिलता था।

किसी समय इस सड़क पर खूब जगमगाती रोशनी होती थी। यह फैशनेबल सड़क समझी जाती थी। सारे प्रान्त के लोग यहां खरीदारी करने के लिए आते थे और मनियारी, हैट, जेवरात और किताबों की दूकानों पर खिड़कियों में सजाई गई चीजों को देख कर चकित रह जाते थे। हमारे नगर के लोग तेजी से पैसा कमाते थे और उससे भी तेजी से खर्च करते थे। उन्हें इस बात का अभिमान था कि वे, "अमरीकियों की तरह" बड़प्पन के साथ सब काम करते हैं। मैं ऐसे लोगों को जानता था जो पहले धनी थे, फिर दीवालिया हो गये और फिर कुछ वर्षों में अमीर बन गये। यूरोप के अन्य नगरों में व्यापार में असफलता एक बहुत बड़ा संकट समझी जाती थी और असफल व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पर उससे धब्बा लग जाता। किन्तु हमारे शहर में उसे जीवन की एक मामूली-सी तकलीफ समझा जाता था और निश्चय ही उससे किसी व्यक्ति की योग्यता और चरित्र पर आँच नहीं आती थी।

एक मिनट के लिए मैं उस चौराहे पर रुका, जहां हम छोकरे बचपन में शाम को छः और सात बजे के बीच खड़े होकर गुजरती हुई लड़कियों को देखा करते थे। उनमें हैल्गा बडिए भी थी, जो भड़कीला लाल

वेटर और तंग घाघरी पहने रहती। दूसरी मैरियान थी जो गर्दन घुमा कर ल्दी से मुझ पर नजर डाल कर मेरे मन में आशा की गुदगुदी पैदा कर ती थी। और थी लोला, जो तेजी से निकल जाती, न दायें देखती न बाएं। ब वह गुजरती तो हमारी सारी बातें बन्द हो जातीं और हम खामोशी । प्रशंसा के भाव के साथ उसे निहारते रहते। परन्तु लोला हमारी ओर आंख उठा कर भी नहीं देखती। वह उस किस्म की लड़की ही नहीं ी।

कुछ घरों की इस समय वह शक्ल नहीं रही थी जो मेरे स्मृतिपट र अंकित थी और कुछ बिल्कुल ही नष्ट हो गये थे। कहीं-कहीं अकेली ड़ी दीवारों के बीच, जो आकाश की ओर चेतावनी का संकेत करने वाली उंगलियां प्रतीत होती थीं, खाली जगह पड़ी थी। युद्ध के आखिरी दिनों में गर पर खूब बम वर्षा हुई थी।

मैं कुछ देर तक वहां खड़ा रहा और सड़क की ओर देखता रहा, जो वर्षों तक जान बूझ कर की गई उपेक्षा के कारण टूट-फूट गई थी। क्या यही सड़क किसी दिन खूब जगमाती, चहल-पहल वाली और हंसी-खुशी और उल्लास से भरी सड़क थी, जहां मेरे जीवन के कितने ही सुखपूर्ण क्षण बीते थे? यहां कॉफी हाउसों में संगीत होता, राह चलते लोग हंसी ठट्ठा करते, अखबार बेचने वाले शोर मचाते। अखबारों में खूब सनसनीदार खबरें होतीं—हमेशा उन में कोई न कोई सनसनी से भरा दिलचस्प मामला रहता, कभी कोई चटपटा तलाक का मामला, कभी हड़ताल, दंगा या कोई उत्तेजनाजनक मुकदमा। तब डा० काफका की तसवीर पहले पन्ने पर होती। वे मुकदमे में हत्यारे को भी अत्यन्त सहानुभुतिपूर्ण रूप देने में माहिर थे। और वकीलों के हत्यारे मुवक्किल महज हत्यारे होते किन्तु डा० काफका अपने हत्यारे मुवक्किलों के बारे में यह सिद्ध करते कि या तो उन्होंने आवेश में आकर हत्या की है या किसी उद्देश्य इच्छा के वशीभूत होकर। यदि आप उन दिनों दैनिक अखबार पढ़ते तो आप को लगता कि हमारा शहर ऐसे लोगों से भरा

है जो हत्या कर सकते हैं। आस पास के छोटे कस्बों के सतर्क निवासी अपनी बहू-बेटियों को खरीदारी करने के लिए शहर में नहीं आने देते थे। वे कहते, यह काम बहुत खतरनाक है। निःसन्देह इसमें कोई खतरा नहीं था किन्तु हम छोकरे यह सोच-सोच कर फूले नहीं समाते थे कि हम एक छोटे-मोटे शिकागो में रहते हैं। हमें अपने शहर की कुख्याति पर बड़ा गर्व था।

मेरी स्मृतियां और अधिक स्पष्ट और ठोस शक्ल अख्तियार करने लगीं। इस समय रास्ते का हर पग तरह-तरह की असोसियेशनों से भरा हुआ था। एक ओर वह मकान था जहाँ मैं वायोलिन सीखने आता था। उसके प्रवेश द्वार के भीतर ठंडे संगमरमर से नमी की गन्ध उठ रही थी, जीने पर ऊंची-ऊंची सीढ़ियाँ थीं। मैं अपन शिक्षक के फ्लैट के दरवाजे के सामने खड़ा होकर भीतर से आती संगीत की आवाज सुन रहा था। रीयलशूले का एक लड़का संगीत की शिक्षा ले रहा था। इस लड़के के बारे में मुझे सन्देह था कि वह शिक्षक का लाडला है। शिक्षक अक्सर इस लड़के के तर्ज की प्रशंसा करते थे (बाद में मुझे मालूम हुआ कि इस लड़के से वे मेरे तर्ज का भी प्रशंसा करते थे)। वायोलिन शिक्षक हम में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करने की कोशिश करते थे ताकि हम अधिक मेहनत से अभ्यास करें।

मैं अपनी दादी के मकान के पास से गुजरा। उसकी दूसरी मंजिल की खिड़की की स्मृति मेरे मन में उभर आयी। यहीं चचेरा भाई रोल्दी और मैं सीखचों के पीछे बैठकर बाहर सड़क पर मई दिवस की परेड देखा करते थे। यही से रोल्दी एक बार नीचे चाचा मोरित्ज की चमड़े की दुकान की टाट की छत पर जा गिरा था। तभ। मुझे ख्याल आया कि चाचा मोरित्ज की अब न जाने क्या हालत होगी। मैंने देखाकि खिड़की के सींखचे निकाल लिए गये हैं। उसके दूधिया रंग के काँच पर एक दन्तचिकित्सक का नाम लिखा है। ओह,

मेरी दादी के कमरे में दन्तचिकित्सक की कुर्सी ! जहां हंसी और विनोद के फुहारे छुटते थे, जहां मेरी मां के हाथ की बनाई बढ़िया कॉफी की गन्ध उठती थी, वहां अब दन्तचिकित्सक की दांत खोदने की मशीन की घर्र-घर्र आवाज और रोगियों की दर्द भरी चिल्लाहटें उठती हैं। उस जमाने में चाहे किसी वक्त घर पर पहुंचो, मेरी दादी ताजा कॉफी का प्याला जरूर पेश करतीं। हो सकता है, वह उसी वक्त ताजा न बनाई गई हो, पर उसका स्वाद बढ़िया होता था। उनकी लड़कियां अक्सर उनसे उनका कॉफी बनाने का नुस्खा जानने का यत्न करतीं किन्तु दादी हमेशा एक रहस्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ उत्तर देतीं, "मुझ से मत पूछो, मेरी बच्चियो मैं कुछ नहीं बताऊंगा। कुछ चीजें ऐसी भी होनी चाहियें जिनका भेद तुम नौजवानों को मालूम न हो।"

अधेड़ उम्र की हो जाने पर भी वे उन्हें बच्ची ही कहतीं। एक बार उन्होंने मेरे सबसे बड़े ताऊ को जिनकी उम्र पचास बरस से ऊपर हो गई थी, कोई ऊटपटांग बात कर देने के कारण तमाचा मार दिया था।

मैं उस चौक पर पहुंचा, जहां से भाग कर मैं हमेशा पाठशाला में जाता था। मैंने अपना समय इस ढंग से बनाया हुआ था कि मैं ठीक आठ बज कर पांच मिनट पर पहला घन्टा शुरू होने के समय पहुंच जाऊं। पुराने सिटी हाल का—जो नया सिटी हाल बनने के बाद इस्तेमाल नहीं होता था—घन्टा आठ बार टन-टन बजाता और मैं दौड़ लगाता। यह क्रम जारी रहा, किन्तु एक दिन घंटे को न जाने क्या हो गया। उस दिन वह बजा नहीं। मैं उसकी परिचित आवाज की, जिसे सुनकर मैं अपनी सुबह की दौड़ शुरू करता था, प्रतीक्षा करता रहा और जब वह सुनाई नहीं दी तो मैंने सोचा "हो सकता है, आज मैं जल्दी तैयार हो गया हूं" और मार्तिनेक की डाक के टिकटों की दूकान के पास खड़ा होकर उस सप्ताह के खास टिकटों को, जो अलबानिया की दो दुर्लभ टिकट मालाएं थीं, प्रशंसा भरी नजरों से देखने लगा। उसके बाद मुझे लगा कि नहीं, मैं जल्दी तैयार नहीं हुआ हूं। मैं सीगल

की हीरे जवाहरात की दूकान के सामने गया जहां एक चौखटे केस में ओमेगा की एक बड़ी घड़ी रखी रहती थी जिससे हमारी गली के सब लोग अपनी घड़ियाँ मिलाते थे। घड़ी की सुइयाँ आठ बज कर तेईस मिनट का समय बता रही थीं।

एक क्षण के लिए लगा मेरी हृदय की धड़कन बन्द हो गई है। प्रोफेसर फ्राँक का जो उस समय कक्षा के मंच पर बैठे होंगे, ध्यान आते ही मेरे माथे पर पसीना आ गया। मैंने दौड़ लगाई किन्तु आधे रास्ते में ही मैं साँस लेने के लिए एकाएक रुक गया और आहिस्ता-आहिस्ता चलने लगा। सोचा, "अब भागने का कोई लाभ नहीं। इससे तो अच्छा है, मैं आराम से चलूं और देरी के लिए कोई अच्छा-सा बहाना खोज निकालूं।" हमारे परिवार में मेरे दादा जी के नाम से एक कहावत प्रचलित थी कि "जो चीज तुम्हारे दिमाग में नहीं है वह तुम्हारी टांगों में होगी" या शायद वह इस से उल्टी हो। हमारे परिवार की कहावतें बहुत स्पष्ट नहीं होती थीं। किन्तु, जो हो वह मेरे दिमाग में नहीं आया, मैं कोई भी अच्छा बहाना नहीं खोज सका। मैं टोंडा की स्पष्ट कल्पना शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकता, जिसके बल पर वह स्कूल आते हुए रास्ते में अपने साथ घटी घटनाओं का इतना रंगीन वर्णन किया करता था।

मैंने डरते-डरते कक्षा का दरवाजा खटखटाया और ईश्वर से मन ही मन प्रार्थना करते हुए भीतर घुसा। सब ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। यहां तक कि टोंडा भी मुझ से पहले ही पहुंच चुका था। प्रो० फ्रांक ने ब्लैक बोर्ड से मेरी ओर मुंह फेरा, अपनी त्योरियां चढ़ाई और अपनी वास्कट की जेब से भारी रेलव इंजन मार्का घड़ी निकाली और उसका ढकना खोला।

"आठ बज कर उनतीस मिनट हो गये हैं, विलर्ट," उन्होंने कयामत की आवाज में कहा, "खुशी की बात है कि तुमने आने का फैसला तो कर

लिया।" सारी कक्षा हंसने लगी। कक्षा में ऐसे लोग हमेशा रहते थे जो यह समझते थे कि प्रो० फ्रांक खूब मजाकिया हैं। मैं ऐसे लोगों से नफरत करता था।

"मुझे अफसोस है, श्रीमन्। आज सिटी हाल का घंटा नहीं बजा। इस लिए मैं अलबानियन टिकट देखने लग गया," मैंने कहा।

सारी कक्षा को इस लंगड़ी दलील पर बड़ा मजा आया और लोग हंसने लगे, किन्तु मैं अब बिल्कुल खुश था, और उनके लिए कोई घृणा मेरे दिल में नहीं थी। गणित के घंटे की उद्विग्नता में थोड़ी-सी भी राहत मिलना हमेशा स्वागत योग्य था। उसके बाद क्या हुआ, इसकी कोई स्मृति मेरे दिमाग में नहीं है। मेरा ख्याल है पढ़ाई का समय समाप्त होने पर मुझे दंड के रूप में कक्षा में ही खड़ा रहना पड़ा होगा।

मैं उस सड़क के नजदीक पहुंचता जा रहा था जहां मैरियान रहा करती थी। यहां चमकीली रोशनी के नीचे मैं हमेशा ही उसका चुम्बन लिया करता था। मेरे लिए अपने आपको सम्वरण करना मुश्किल होता क्योंकि उसके घर जाने से पूर्व यही मेरा दिन का अन्तिम मौका होता था। एक दिन शाम का जब मैंने उसका चुम्बन लिया तो चाची आना वहां से गुजर रही थीं। उन्होंने ऐसा दिखाया मानों उनकी नजर दूसरी ओर थी और वे मेरे इस निन्दनीय व्यवहार की शिकायत करने सीधी मेरी मां के पास भागी गईं।

किन्तु मेरी मां उलटे इस से खुश ही मालूम हुईं। जब कभी वे मुझे किसी लड़की के साथ देखतीं तो उनकी आंखों के आगे मेरे विवाह का कल्पना चित्र उभर आता—मैं उस समय पन्द्रह वर्ष का था—और वे कहा करतीं, मैरियान बड़े अच्छे परिवार की लड़की है। उनके पिता एक प्रमुख भवन निर्माता थे। उनके घर की बाहर की बड़ी बैठक हमेशा दीवार पर लटके इमारतों के नक्शों से भरी रहती।

मैंने वह छोटा मदिरालय देखा, जहां से वर्टा हर रात को शराब का गिलास लेने जाती थी। वर्टा के रात्रिकालीन भोजन में नित्य गर्म-गर्म कलेजी और पनीर का टुकड़ा एवं ठण्डी जौ की शराब का एक गिलास सम्मिलित रहते थे। वर्षों से हर रोज रात के भोजन में वह यही ले रही थी, फिर भी उसका मन उकता नहीं रहा था। वर्टा से जब भी पूछिये, वह अपने पांवों में तकलीफ की शिकायत किया करती थी, किन्तु रात आते ही उसके पांवों में न जाने कहां से अद्भुत शक्ति आ जाती और वह मदिरालय को भागी जाती और वहां से इतनी तेज गति से लौटती कि उसके मदिरा के गिलास में उस समय भी फेन ज्यों का त्यों मौजूद होता।

चाचा मैक्स के विएना से लौटने पर एक भयंकर घटना घट गई। उन्होंने निश्चय किया था कि वे मेरी माँ के आवश्यक निमंत्रण को टाल नहीं सकते। यहाँ लौटने पर उन्होंने पहला भोजन हमारे ही घर पर किया। मेरी माँ ने उनके लिए उनकी प्यारी वस्तु तवा हुआ मुर्गा तय्यार किया था और साथ में आलू की तरकारी और खीरे का सलाद बनाया था, जो उस वर्ष पहली ही बार बनाया गया था। उन्होंने वर्टा को जौ की शराब का एक घड़ा लाने के लिए भेजा। किन्तु उस समय मालूम हुआ कि चाचा मैक्स अंगूर की शराब पसन्द करते हैं। वह हमारे घर में नहीं थी और उस समय सब दूकानें बन्द हो चुकी थीं।

चाचा मैक्स ने तो इस की कोई परवाह नहीं की और हंस कर बात को टाल दिया परन्तु मेरी माँ उसके बाद भी कई दिन तक उदास और दुःखी रहीं। बेचारे चाचा मैक्स की मृत्यु एक ऐसी भयंकर बीमारी से हुई बताई जाती है कि लोग ऊंचे स्वर से उनका नाम तक लेने में डरते हैं। उन्हें अवश्य ही भयंकर दर्द होता होगा। चाचा मैक्स इस बात को अवश्य जानते होंगे, और उन्होंने उसे कम करने में अपनी सहायता भी की। कुछ लोग इस रोग के लिए उन्हीं का दोषी ठहराते थे किन्तु मेरी माँ ने कभी ऐसा नहीं किया।

मेरी मां ने उनकी मृत्यु के बाद मुझसे कहा था, "बेटा बेचारे चाचा मैक्स ! उनकी बाईं बांह दवा की सुइयों से इतनी गुदी हुई थी कि उस पर जरा सी जगह भी नहीं बची थी।"

अब मैं पार्क के पास उस मकान के सामने पहुंच गया था, जहां स्टर्न परिवार रहा करता था। काले संगमरमर का वह पत्थर, जिस पर एक दूसरे को काटते हुए दो हथौड़े बने थे और जो एक विशाल इस्पात कारखाने का संकेत था, अब नहीं रहा था। इस्पात के कारखाने को राष्ट्र ने अपने हाथ में ले लिया था और उसकी सारी सम्पत्ति और इस घर पर भी सरकार ने कब्जा कर लिया था। अब घर के बाहर वह पुराना वर्दीधारी दरबान भी नहीं रहा था।

मैं ऊपर नजर उठा कर मकान की काली खिड़कियों की ओर निगाह दौड़ाई और सोचने लगा, अब यहां न जाने कौन रहता होगा। स्टर्न परिवार का फ्लैट चौथी मंजिल पर था। लोला का कमरा वह कोने की खिड़की वाला था। लोला को जब वहां से हेमार्केट इलाके के गन्दे मकान में जाने का आदेश दिया गया होगा तब वे सब कालीन, चीनी के बर्तन, प्यानो और पर्दे सब क्या हुए होंगे। क्या उन्होंने उसे चीनी की वे दो मूर्तियां, वह फूलदान, तीन चम्मच और अपने पिता की छोटी सी तस्वीर साथ ले जाने की अनुमति दी होगी ? लोला अपनी दुकान के कर्मचारियों को सुख-सुविधा के लिए हमेशा बहुत चिन्तित रहा करती थी। मेरे मन में ख्याल आया कि क्या उनमें से कोई उस समय भी, जबकि वह उन के मालिक की कन्या नहीं रही थी उसकी छोटी और ठण्डी कोठरी में उसे देखने गया होगा?

मैं वहां काफी देर खड़ा रहा और लोला के बारे में सोचता हुआ उस समय तक ऊपर ताकता रहा, जब तक कि मेरी आंखें थक न गईं। उसकी स्मृति मेरे दिमाग में अत्यन्त तीव्र और दर्दनाक हो गई। हो सकता है, यदि मैं काफी देर तक यहीं इन्तजार करता रहूं तो वह सहसा अपनी

मृदु मुस्कराहट और प्रेम भरी बोली के साथ स्वागत करती हुई तेज गति से चल कर मकान के भीतर से मेरे पास आ जाय । अगर में काफी देर तक इन्तजार करूं ·····

उसी समय एक पुलिस का सिपाही पास से गुजरा । मैं एकाएक चौंक कर अपने स्वप्न से जाग पड़ा—उस स्वप्न से जो कभी सत्य नहीं होगा । मैं घूमा और आगे चल पड़ा ।

यह सड़क पहले पत्थरों से मढ़ी हुई थी । मेरी माँ अक्सर इससे चिढ़ जाती थी, खास कर रात के समय, जब कि वे थियेटर से घर लौटतीं और उनकी ऊंची एड़ी के जूते कभी-कभी पत्थरों के बीच में फंस जाते और चटक कर टूट जाते । कई बार मेरी माँ लंगड़ाती-लंगड़ाती एक जूते की ऊंची एड़ी हाथ में लिए घर पहुंची थीं । किन्तु अब यह सड़क पक्की कर दी गई थी । उस पर रोड़ी डाल कर कोलतार बिछा दिया गया था और दोनों ओर बिजली की नई बत्तियां लगी थीं । किन्तु मेरी माँ इस सुख का उपयोग करने के लिए यहां नहीं थीं ।

मैंने इस बात की काफी कोशिश की कि अपनी मां के यहाँ न होने का ख्याल अपने मन से निकाल दूं । परन्तु उनकी हंसी और आँसुओं को याद किये बिना, जो मेरे जीवन के चिर-सहचर थे अपनी जवानी की पुरानी स्मृतियों को याद करना मेरे लिए असम्भव था । खास तौर से उनकी हंसी मेरे स्मृति पट से हटती ही नहीं थी । जर्मन कब्जे के भयंकर वर्षों में भी, जब कभी वे मुझे रेड क्रास संघ की सहायता से चिठ्ठी लिखतीं तो उसमें उनकी हंसी-खुशी की झलक रहती थी । उन्होंने यह आशा एक दिन भी नहीं छोड़ी थी कि एक दिन सब ठीक हो जायगा और वे मुझे फिर देख सकेंगी······

कोने पर जाकर मैं घूमा और सामने ही घर दिखाई दिया । मेरा घर । कुछ क्षण तक मैं अपने ही ऊपर विश्वास नहीं कर सका । क्या यही

वह घर है जिस पर मुझे इतना गर्व था। अब वह गन्दा और टूटा-फूटा पड़ा था। उसका रोगन उतर गया था और चौथी मंजिल की दो खिड़कियां टूट गई थीं। जिस कमरे में हम खाना खाते थे उसकी बड़ी खिड़की खुली थी। इस खिड़की के पीछे पीतल के बड़े भोंपू वाला फोनोग्राफ पड़ा रहा करता था, जिसे मैं और चचेरे भय्या रोल्दी अपना नाविकों की खेलों के लिए इस्तेमाल किया करते थे। बाद में जब हम सिनेमा की फिल्में बनाने का खेल खेलने लगे तो वह मैगाफोन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। यह बड़ा बढ़िया खेल था, जिसके लिए सामान थोड़ा-सा चाहिए किन्तु आनन्द खूब आता। सिर्फ पीतल के भोंपू और पीछे की ओर मोड़ी हुई एक टोपी से ही घंटों तक यह खेल खेला जा सकता था।

मकान में प्रवेश के लिए एक भारी दरवाजा था जिसका अब भी मुझे खूब याद थी। उसे खोलने के लिए ताली को एक बार बाएं से दाएं, फिर एक बार दाएं से बाएं और फिर दो बार बाएं से दाएं घुमाना पड़ता था। मैं उसे खोलने का तरीका इतनी अच्छी तरह जानता था कि जब किसी दिन काफी रात गये मैं नाच से लौटता और इतना थका होता कि वहीं घर के सामने पड़ रहने से भी गाढ़ी नींद में सो सकता, तब भी आंखें मूंदे-मूंदे ही मजे में उसे खोल लेता था।

मेरी मां कहा करती थी कि यह ताला तिजोरी के ताले जैसा मजबूत और सुरक्षित है और चोरों से रक्षा के लिए बड़ा उपयोगी है। जिन दिनों चाचा मैक्स हमारे साथ रहते थे, उन दिनों जब पहले ही रोज शाम को वे कॉफी घर या रात्रि क्लब में जाने लगे तो मेरी मां उन्हें उसे खोलने का भेद बताना भूल गई।

चाचा मैक्स रात को तीन बजे लौटे और दरवाजा नहीं खोल सके तो गुल मचा कर उन्होंने सारे पास-पड़ोस को जगा दिया। इस बात का

खूब चर्चा हुई। अगले दिन शहर में हर आदमी की जबान पर सिर्फ यही बात थी।

इसी इमारत में भोजन के सामान की भी एक दुकान थी। गर्मी के दिनों में पाछे के आँगन में कूड़ेदान में पड़ी भोजन की जूठन से आकृष्ट हो कर आये चूहों की खूब धमाचौकड़ी रहती। चूहे कूड़ेदान से आगे बढ़कर जीने में भी आ जाते और जब हम रात को घर लौटते तो अक्सर उन्हें वहां देखते। चूहों से बचने के लिए मेरी मां सीढ़ियोंपर अपने जूतेकी एड़ियोंको खूब जोर से चटखातीं ताकि उन्हें पहले से ही वहां से हट जाने की चेतावनी मिल जाय। मेरी माँ कहती थीं कि वे जानती हैं कि यहां चूहे हैं और वे उनका कोई इलाज भी नहीं कर सकतीं, किन्तु उन्हें उन को स्वयं कभी देखना नहीं पड़ता।

भोजन की दूकान अब उठ चुकी थी। वह जगह एक फोटोग्राफर ने ले ली थी। उस पर एक तख्ता लगा था जिसमें यह विज्ञापन किया गया था कि यहां शिनाख्त पत्रों और पासपोर्ट आदि के लिए फोटो खींचे जाते हैं। लोगों को इन दिनों अपने परमिटों, सीमा-क्षेत्र नियन्त्रण कार्डों आदि के लिए फोटो खिचाने की बहुत जरूरत पड़ती थी। फोटोग्राफी का धन्धा उन थोड़े से धन्धों में से था जो इन दिनों स्वल्पकालीन समृद्धि का उपभोग कर रहे थे।

मैं यहां अवश्य काफा देर तक खड़ा ऊपर की ओर ताकता रहा। मुझे ऐसा अनुभव होता रहा कि मानों भीतर ही भीतर से मैं खोखला हो गया हूं और सूख गया हूं। मैंने अपने आप से कहा, यह हमारा घर नहीं है। सिर्फ ईंटों और गारे-चूने के ढाँचे का ही नाम घर नहीं है। घर तब कहलाता है जब उसके भीतर का सामान भी अपना हो। किन्तु इस खाली-से दीख पड़ने वाले घर में मेरे अपने लिए कुछ भी नहीं है। अब सिर्फ इस घर की स्मृतियां ही रह गई हैं और उन्हें मैं अपने हृदय में संजोये हुए हूं और हमेशा

संजोये रहूंगा। जो कोई भी अब इस में रहता है उसने उसके दीवार के कागज और बत्तियों को इधर-उधर कर दिया है और कमरों और उन कोनों की जिसमें मैं अपनी चीजें छिपाया करता था, व्यवस्था को बदल दिया है। देखने में भले ही यह वही घर है जो कभी मेरा था, परन्तु वास्तव में यह आज वही नहीं है।

मैं घूमा और वहां से हट गया। जब मैं होटल पहुंचा तो हांफ रहा था। अवश्य ही मैं उस घर से दूर भाग जाने के लिए खूब तेज चला होऊंगा।

दूसरे दिन सुबह मैं टोंडा से मिलने उसके दफ्तर गया किन्तु उस समय वह वहां नहीं था। दो घंटे बाद जब मैं फिर वहां गया तो मुझे बताया गया कि वह किसी बैठक में गया है। मैंने सोचा कि शायद वह जानबूझ कर मुझ से बचने का यत्न कर रहा है। किन्तु फिर उसने तीसरे पहर होटल में मुझे फोन किया। उसने ऐसा प्रकट किया कि मुझ से मिल कर उसे बड़ी खुशी ई है, किन्तु मुझे उसकी आवाज मे एक प्रकार का बोझ प्रतीत हुआ; ऐसा लगा कि उसकी बातचीत में जो हार्दिकता है, वह स्वाभाविक नहीं है, बल्कि वह प्रयत्न करके उसे बनाये रख रहा है।

"क्या तुम आज रात मेरे साथ खाना खाने आ सकोगे ?" उसने कहा।

मैंने उत्तर दिया कि मैं आ सकता हूं।

उसने मुझे जरा जल्द बाजी में अपना पता दिया और कहा कि हम लोग साढ़े सात बजे तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।

वासेक का फ्लैट पार्क के सामने के एक बढ़िया मकान में पांचवा मंजिल पर था। मैं इस मकान को खूब अच्छी तरह जानता था क्योंकि यह मैरियान के मकान के साथ लगा हुआ था। मैंने इन मकानों के सामने कितने ही घंटे उसके साथ चहलकदमी करते ए बिताये थे।

लिफ्ट के दरवाजे में ताला लगा था। उसके छेद में सिक्का डालने से वह खुल जाता था। किन्तु मेरे पास सिक्का नहीं था, इसलिए मैंने दरबान स्त्री के कमरे की घण्टी बजाई। थोड़ा देर बाद बिखरे बालों वाली एक मोटी औरत तहखाने से निकली। उसके पांवों में स्लीपर थे। उसने मुझे सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखा। उसने मुझसे पूछा कि मैं किससे मिलना चाहता हूं और जब मैंने उसे बताया तो उसने एक ताली से मेरे लिए लिफ्ट का दरवाजा खोल दिया। मैं उसे बड़बड़ाती छोड़ कर लिफ्ट से पाँचवीं मंजिल पर पहुंच गया और वासेक के फ्लेट की घण्टी बजाई।

मार्त्ता ने आकर दरवाजा खोला। उसने अपनी पोशाक पर बिन्दयों वाले कपड़े का एक चोगा पहना हुआ था।

उसने अपना हाथ आगे बढ़ा कर कहा, "कहो, कैसे हो, भीतर आओ। टोंडा ने अभी-अभी तुम्हारे बारे में दफ्तर से फोन किया है। वे किसी भी क्षण यहाँ आ सकते हैं। तुम आज शाम यहाँ आ रहे हो, इसकी खबर मुझे पहले ही मिल जाती तो कितना अच्छा होता। मैं तुम्हारे लिए कुछ चीजें बना कर रखती। आजकल पहले की भांति सब चीजें प्राप्त कर सकना आसान नहीं है।"

उसका दम फूल रहा था और कुछ घबराई-सी प्रतीत हो रही थी। ऐसा लगता था कि वह अपने आप को प्रसन्न दिखाने का प्रयत्न कर रही है। क्लेसांडा परिवार की दोनों बहनों में से मार्त्ता कम आकर्षक थी, इसलिए जब टोंडा ने उनके साथ मेलजोल करना शुरू किया तो हर किसी को यह आशा थी कि अन्त में वह जारमिला को ही पसन्द करेगा, जो खेल की खूब मजेदार साथिन थी और जिसके दिमाग में तरह-तरह का आश्चर्यजनक कल्पनाएं भरी रहती थीं। शायद उसने सोचा है कि जीवन संगिनी के रूप में उसे चुनने पर कहीं वह उसे खूब परिश्रान्त न कर डाले। जो हो, उसने मार्त्ता से ही विवाह किया। वह सुन्दर और शान्त थी और कहा जाता था कि दोनों खूब सुखी हैं। मार्त्ता खाना बनाने में बड़ी निपुण थी।

हमारा ख्याल था कि समोसे और केक बनाने में शहर भर में कोई उसका जोड़ नहीं था।

मैंने देखा कि वह मोटी हो गई है और उसके हाथ खुरदरे और शृङ्गार रहित हैं।

वह बोली, "सब कुछ मैं अकेली ही करती हूं। यह नौकर रखने का जमाना नहीं है। उनकी हमारे कारखानों को जरूरत है।"

उनकी बड़ी और रोशनी से जगमगाती बैठक में ओक की लकड़ी का साफ-सुथरा फर्श देख कर मुझे अपनी मां का घर याद आ गया। मेरी मां कभी फर्श को साबुन और पानी से नहीं धोने देती थी, क्योंकि उससे वह काला हो जाता था, इसके बजाय वर्टा और एक अन्य स्त्री, जो उनकी सहायता के लिये आया करती थी, उसे इस्पात के ब्रुश से रगड़तीं और फिर उसे मोम से चिकना कर देती थीं—इस सारे काम में खूब मेहनत पड़ती थी।

मार्त्ता ने मुझे प्रशंसा भरी दृष्टि से फर्श की ओर ताकते हुए देख कर मुस्कराते हुए कहा, "मुझे सहायता के लिए एक स्त्री मिल गई थी, फिर भी सारे फ्लैट को साफ करने में तीन दिन लग गये। यह ईस्टर के दिनों की बात है। टोंडा ने कहा कि यह सब बेवकूफी है, किन्तु मैं चाहे जैसे हो, सारे फ्लैट को खूब सजा कर रखना चाहती हूं।"

और वह साफ-सुथरा और सजा हुआ था भी। दीवार के पास माध्यवित्त वर्ग के लायक सुख-सुविधा का सामान पड़ा था। एक कांच की अल्मारी में नीला और लाल बोहेमियन कांच का सामान था, दो कांच के फूलदान थे जिन पर हिरण के शिकार के दृश्य अंकित थे। दो प्राकृतिक दृश्यों के चित्र भी थे। मार्त्ता और टोंडा के लिए, जिनके पास शादी के समय हेमार्केट के निकम्मे इलाके के पास एक छोटा सा दो कमरों का फ्लैट था, यह स्थान खासा अच्छा था। उन्हीं दिनों लियो और हैल्गा ने भी पार्क के पास ही स्थित अपने फ्लैट को खूब सजाया था…।

एक कोने में एक बड़ा-सा प्यानो रखा था। मैंने मार्त्ता से पूछा कि क्या घर में कोई आदमी इसे बजाता है।

'हेलेन्का सीखा करती थी किन्तु अब उसने भी छोड़ दिया है," उसने उत्तर दिया, "फिर भी हम प्यानो रखेंगे। हमने इसे सस्ते दामों में ही खरीदा था। ऐसी चीज रखना अच्छा है।"

"यह है किसका ?"

"यह किसी ऐसे आदमी का है जो लौट कर नहीं आया," उसने अस्पष्ट सा उत्तर दिया, "इसकी आवाज बड़ी अच्छी है। बजाकर देखोगे ?"

कुछ मिनट में टोंडा आ गया। उसने अपनी पत्नी का चुम्बन लिया और फिर जोर से मेरा हाथ दबाया।

"मैं फोन पर तुम से बात नहीं कर सका," वह बोला, "मेरा दफतर लोगों से भरा हुआ था। बैठो, बैठो।"

उसने भी हार्दिकता दिखाने का प्रयत्न किया, शायद कुछ अधिक ही प्रयत्न किया। पहली नजर में टोंडा लगभग वैसा ही लगा, जैसी कि मुझे उसकी स्मृति थी—लम्बा-चौड़ा और तकड़ा, मज़बूत हाथ और बिखरे बाल। किन्तु सके बाद मैंने देखा कि यहां के अन्य लोगों की भांति वह भी बदल गया है। पहले हमेशा मैं यह देख कर बहुत प्रभावित होता था कि उसमें जीवन के लिए अपरिमित उत्साह है, जो कुछ भी वह करता—चाहे काम हो या फुटबाल—उसमें उसे खूब जोश और स्फूर्त्ति रहती; किन्तु अब वह थका हुआ लगता और उसका उत्साह स्वाभाविक नहीं कृतिम प्रतीत होता था। उसने नेकटाई नहीं बांधी हुई थी और साम्यवादी दल का चिन्ह उसके कोट में लगा था।

टोंडा ने स्कूल के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। उसके पिता की, जो बैंटन हाउसमैन की एक कोयला खान में अकाउंटेंट का काम करते थे, इतनी

हैसियत नहीं थी कि वे उसे विश्वविद्यालय में भेज सकते। जिस दफ्तर में वे स्वयं काम करते थे, वहीं उन्होंने उसे काम दिला दिया। टोंडा को यह बुरा नहीं लगा, क्योंकि उसे स्कूल जाना कभी भी पसन्द न था। वह खूब मेहनत करता और तफ्तर के लोग उसे पसन्द करने लगे। अपने पिता के सेवा निवृत्त होने पर टोंडा वहीं इकाउंट विभाग का प्रमुख बन गया। उस समय तक मार्त्ता से उसकी शादी हो चुकी थी। हेमार्केट के पास के दो कमरों वाले फ्लैट को छोड़ कर वे पार्क के नजदीक तीन कमरों वाले फ्लैट में आ गये। किन्तु फिर भी वह पार्क के बहुत ज्यादा निकट नहीं था। यह नगर का एक नया हिस्सा था जहां छोटे क्लर्क नये साफ-सुथरे फ्लैटों में रहते थे। इन फ्लैटों के पीछे के आंगन और कपड़े धोने के कमरे सम्मिलित थे और वे लोग बारी-बारी से शनिवार की सुबह सर्वसाधारण जीना धोते थे।

टोंडा अपने पड़ोसियों में बहुत लोकप्रिय था। शनिवार की रात को वह नजदीक के एक मदिरालय में कुछ मित्रों के साथ बैठ कर जौ की शराब पीता और रविवार को तीसरे पहर फुटबाल खेलता। जाड़ों में वह मार्त्ता को सिनेमा दिखाने ले जाता। इस प्रकार उनकी जिन्दगी खूब आराम से बीत रही थी।

उसके बाद आया जर्मन आक्रमण। टोंडा ने यह प्रदर्शित किया कि वह 'राजनीति से कोई सरोकार नहीं रखता।' उसने दफ्तर जाना जारी रखा। वह कहता कि उसे अभी पैसा कमाना है, क्योंकि उसके यहां दूसरा बच्चा होने वाला है और हर चीज मंहगी होती जा रही है। बैरन हाफमैन की सम्पत्ति छीन ली गई। उनकी कोयला खानों पर जर्मनों ने कब्जा कर लिया। टोंडा का दफ्तर एक जर्मन अधिकारी के अधीन था जिसे व्यापार की कोई जानकारी नहीं थी। वह टोंडा को पसन्द करता था जिसे साथ ले कर चलना आसान था। १९४३ तक टोंडा उक्त जर्मन अधिकारी का अपरिहार्य और विश्वासनीय सहकारी बन गया। यह नहीं कहा जा सकता कि इसी तरह

कब तक वह इस स्थिति में बना रहता। किन्तु इसी समय १९४३ के जाड़ों में जब कि जर्मन विशेषज्ञों का एक दल खान की लिफ्ट में चढ़ा ही था कि खान के भीतर एक विस्फोट हो गया जिसमें चार जर्मन मारे गये।

जर्मन तूफानी सेना की एक टुकड़ी ने तुरन्त खान के चारों ओर घेरा डाल दिया। सब कर्मचारियों को खान की दफ़्तर की इमारत के बाहर कतार में खड़ा कर दिया गया और जर्मनों ने उन लोगों को गिनना शुरू किया। हर दसवें आदमी को बन्धक के रूप में उन्होंने गिरफ्तार कर लिया। टोंडा भी इनमें से एक था। बन्धकों को एक स्थानीय जेल में ले जाया गया। दूसरे दिन नौ बजे उन्हें सार्वजनिक रूप से 'पश्चात्ताप स्तम्भ' के नीचे नगर के चौक में गोली से उड़ाया जाना था ताकि "यहाँ के लोगों के सामने चेतावनी के तौर पर एक मिसाल कायम की जा सके।"

लेकिन गोली से उन्हें उड़ाया नहीं जा सका। देश भक्त मुक्ति सेना के एक दल ने भोर में ही जेल का ताला तोड़ कर जर्मन पहरेदारों के गोली चलाने से पहले ही उन्नीस में से ग्यारह बन्धकों को छुड़ा लिया। बाकी लोगों को जर्मनों ने राजधानी भेज दिया।

मुक्त किये गये लोगों में टोंडा भी था। स्वभावतः वह अब लौट कर शहर नहीं जा सकता था, इसलिए उसे देश भक्त मुक्ति सैनिकों के साथ ही रहना पड़ा। उसने वहीं अपने दोस्त बना लिए और जर्मनों के विरुद्ध लड़ाई में खूब नाम कमाया। युद्ध के बाद जब मुक्ति सैनिकों ने लाल सेना के आने से एक दिन पूर्व नगर को मुक्त किया (लेकिन बाद में इस मुक्ति का श्रेय खुद लाल सेना ने ही ले लिया) तो टोंडा एक खास टुकड़ी का नेता था, जिसने खानों और फौलाद के कारखानों पर कब्जा किया।

यद्यपि वह साम्यवादी दल में शामिल नहीं हुआ था फिर भी उसे प्रतिरोध युद्ध का वीर कहा गया। वह अब भी अपने आप को "राजनीति से अलग"

ही समझता था। किन्तु साम्यवादी दल के सत्तारूढ़ होने के बाद जल्दी ही वह दल में शामिल हो गया। अपनी नौकरी बरकरार रखने के लिए दल की सदस्यता अब अनिवार्य थी। टोंडा के पास बहुत अच्छा काम था और वह नहीं चाहता था कि महज एक जरा- सी "टैकनिकल चीज" की वजह से, जैसा कि वह कहता था, उसने हाथ धो बैठे।

"बच्चे कहाँ हैं ?" उसने मार्त्ता से पूछा।

"हेलेन्का आने ही वाली वाली है," उसकी पत्नी ने उत्तर दिया किन्तु ऐण्टोनिन आठ बजे से पहले नहीं आयेगा। आज मंगलवार है !"

"मंगलवार ? क्या मतलब ?"

"तुम्हें याद नहीं," मार्त्ता ने कहा, "आज राजनीतिक शिक्षा का दिन है।"

"ओह, हाँ !" टोंडा ने गम्भीरता से गर्दन हिला कर कहा, जिसमें एक मायूसी का भाव था। इस तरह गर्दन हिलाना यहां के लोगों का भवितव्यता के प्रति निराश आत्मसमर्पण का एक आम संकेत बन गया है। इसके बाद ही अचानक उसे मेरी उपस्थिति का ध्यान आया और उसमें अपने आप को सम्भाल लिया।

मैंने अपना आश्चर्य का भाव छिपाते हुए कुछ भी नहीं कहा। जैसी कि मुझे आशा थी, टोंडा के व्यवहार से ऐसा नहीं लगा कि उसमें दल के एक उच्च अधिकारी का-सा उत्साह हो।

काफी देर तक वह मेरी ओर देखता रहा, मानों मन ही मन कुछ निश्चय कर रहा हो। उसके बाद बोला, "राजनीतिक शिक्षा यहाँ हर सप्ताह तीन दिन दी जाती है।" उसके बात इस ढंग से मानों किसी खास व्यक्ति को लक्ष्य करके न बोल रहा हो, कहा, "लड़के को शाम का वक्त तो अब खाली मिलता ही नहीं। रविवार को उसे श्रमिक दल के साथ फार्म पर काम करने

या सड़कें बनाने के लिए जाना पड़ता है । बड़ी/बढ़िया राजनीतिक शिक्षा है !"

मार्त्ता कुछ घबराई-सी प्रतीत हुई और उसने चेतावनी का संकेत देते और रोकने की चेष्टा करते ए उसकी ओर देखा ।

"हर किसी को जाना पड़ता है और टोंडा से यह बात छिपी नहीं है," उसने मेरी ओर लक्ष्य कर कहा, "यह सरकारी आदेश है । टोंडा किसी भी तरह अपने आप को यह समझाने की चेष्टा नहीं करते कि जमाना बदल गया है । मैं उन्हें बार-बार यह पुरानी कहावत सुनाती रहती हूं कि भे यों के साथ ही चिल्लाओ, वर्ना वे तुम्हें फाड़ कर खा जाएंगे ।' क्यों, यह कहावत कितनी सही है ।"

"मैं उन के साथ चिल्ला तो रहा ही हूं," टोंडा ने मानों हार मान कर कहा, "मैं सारे दिन दफ्तर में चिल्लाता हूं । किन्तु मैं उसका झूठा दिखावा करने के लिए तैयार नहीं हूं । कम से कम आज की रात विलर्ट के सामने तो किसी भी तरह नहीं ।"

"हूं, एक अमरीकी के सामने !" उसने मेरी ओर खास तौर लक्ष्य कर के कहा ।

"पागल मत बनो, मार्त्ता !" उसने तीखी आवाज से कहा ।

मार्त्ता कुछ देर के लिए रुकी और उसका चेहरा सुर्ख हो गया । कोई भी कुछ नहीं बोला । यह बड़ा तनावपूर्ण क्षण था । इसके बाद टोंडा उठा और अपने बेढंगे तरीके से बोला, "मुझे अफसोस है, प्रिये । यह कम्बख्त दफ्तर, ये सब लोग ! इनके मारे आहिस्ता-आहिस्ता मेरा तो धैर्य नष्ट होता जा रहा है ।"

"वे लोग उतने बुरे नहीं जितने, तुम बता रहे हो," मार्त्ता ने कहा, हमें दल को कई चीजों के लिए श्रेय भी देना चाहिए ।"

"मसलन ?"

"मसलन, आज कोई बेकार नहीं है," उसने उत्तर दिया, "क्या तुम १६३० के आसपास के साल भूल गये हो, जब हमें अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ता था ?"

टोंडा के चेहरे पर अत्यधिक ऊब उठने का भाव अंकित हो गया और वह चुप रहा।

"खैर," उसने निरुपाय हो कर कहा, "अच्छा, मैं चलूं और अपने मीठे समोसे जरा देखूं। क्या तुम्हें अब भी रसभरी, पनीर, चीनी और मक्खन से भरे समोसे अच्छे लगते हैं ?"

मैंने कहा कि हां, मुझे अब भी वे अच्छे लगते हैं। मुझे खुशी थी कि मैं कोई ऐसी बात कह सका जिससे वह चिढ़ी नहीं।

"यह अच्छी बात है," वह बोली "मैं अभी शराब लाती हूं।"

जब वह चली गई तो टोंडा उसकी तरफ देखता रहा और फिर माफी मांगता हुआ, मुस्कुरा कर बोला, "मुझे अफसोस है कि मैं धैर्य खो बैठा था। मार्त्ता की किसी बात का तुम ख़याल मत करना। स्त्रियां हमेशा ऐसी चीजों के बारे में भावुक हो जाती हैं।"

'स्त्रियां ही नहीं" मैंने मन ही मन सोचा किन्तु कहा कुछ नहीं।

'मुझे लगता है कि मेरे उस निकम्मे भाई के साथ उसकी बहुत ज्यादा बातें होती रही हैं। तुम्हें वाक्लाव की याद है ?"

मुझे उसकी धुंधली-सी याद थी। वाक्लाव उन किस्म के लोगों में से था, जो किसी भी काम पर जम कर नहीं रहते, और इसी लिए किसी मे माहिर न होने के कारण वह कभी पत्रकारिता, कभी फिल्म उद्योग और कभी राजनीति में अपना दखल जमाता, परन्तु अधिकतर वह कॉफी घरों के चक्कर काटता और कहीं जम कर नहीं बैठता। मैं हमेशा यह सन्देह किया करता था कि टोंडा ही उसे निर्वाह के लिए पैसे से मदद करता है।

"वाक्लाव अब बड़ा आदमी हो गया है," उसने कहा, "उसने यह महसूस कर लिया है कि दल की राजनीति में भाग लेने की प्रतिभा उसमें खूब है।"

"क्या तुम उसम भाग नहीं लेते, टोंडा ?"

"हां, मैं भी लेता हूं," उसने कुछ कटुता से कहा। वह उठा और खिड़की के पास जा कर वाहर झांकने लगा और फिर वोला, "क्या तुमने अभी मार्त्ता की वात सुनी नहीं थी ? मैं भी भेड़ियों के साथ चिल्लाता हूं। किन्तु मार्ता और उसकी वहन जारमिला के सिवाय सचाई नहीं जानता। और अब तुम भी उसे जानते हो।"

मैं चुप रहा। शायद मुझे टोंडा से घृणा करनी चाहिए थी कि उसने अपने आप को गुमराह होने दिया, किन्तु इसके वजाय मुझे उस पर दया आई। विदेशी पासपोर्ट तथा एक महान् स्वतन्त्र देश की संस्थाओं का साया सिर पर हो तो ऐसी दयालुता पैदा हो जाना स्वाभाविक ही है।

"कभी-कभी मुझे अपने भाई पर रश्क होने लगता है," टोंडा ने अब भी वाहर की ओर ताकते हुए कहा, "वाक्लाव ने सम्भवतः कितनी ही वार अपने आप से कहा है कि वह एक अच्छा साम्यवादी है। इसी लिए अब उसे इस वात पर विश्वास भी हो गया है। वह हर काम में दखल देने की कोशिश करता है। यदि उसे मालूम हो जाय कि मैं क्या सोचता हूं तो वह अवश्य मुझे खुफिया पुलिस के हवाले कर देगा।" एकाएक वह घूमा और मेरी ओर आ कर वोला, "तुम्हें आश्चर्य नहीं होता कि मैं तुम से इस प्रकार की बातें कर रहा हूं ?"

मैं चुप रहा।

उसने कहा, "कभी-कभी ऐसे क्षण आ जाते हैं जव कि हम किसी भी तरह वात को यहां नहीं रख सकते।" यह कहते हुए उसने अपनी मुट्ठी अपनी

छाती पर मारी। फिर बोला, "उस समय हम यह परवाह नहीं करते कि बाद में क्या होगा।"

"कुछ भी नहीं होगा," मैंने शान्ति से कहा।

"जरूर, जरूर। मैं जानता हूं कि मार्त्ता पागलपन की बात कर रही थी" उसने बैठ कर कहा, "मैं दल में इस लिए शामिल हुआ था कि मुझे उन्होंने एक अच्छा काम दिया और अपने परिवार का भरण-पोषण तो आखिर मुझे करना ही था। इसके अलावा जब मैं दल में शामिल हुआ था उस समय हालत इतनी खराब नहीं हुई थी। इस के बाद उन्होंने मुझे और भी बड़ा काम, और भी बड़ा मकान और और भी बड़ी मोटर दी। मेरे लिए और कोई उपाय नहीं रहा। मार्त्ता को यह फ्लैट बहुत पसन्द है। खैर, यह भी हमेशा हमारे पास नहीं रहेगा। क्रान्ति के बाद जो लोग शामिल हुए उन सब की उन्होंने कड़ी जाँच शुरू कर दी है। एक न एक दिन वे मुझे भी पकड़ेंगे और जब वह दिन आयगा • • • •।" उसने वाक्य समाप्त नहीं किया। इन दिनों यहाँ लोगों के कितने ही वाक्य अधूरे रह जाते हैं।

मुझे बड़ी हैरानी हुई। यह टोंडा, जो नये शासन में एक महत्वपूर्ण, शक्तिशाली और सम्पन्न व्यक्ति है, जो उन थोड़े-से लोगों में से है, जिन्हें सब आराम हैं। पर्याप्त भोजन, मोटर और बड़ा फ्लैट, सब कुछ प्राप्त है। हेमार्केट के गन्दे मकान में रहने वाले लियो से भी ज्यादा भयभीत और दुःखी है।

"टोंडा," मैंने कहा, "भले आदमी, क्या तुम सिर्फ पुराने दिनों का ख्याल कर के ही लियो की कुछ सहायता नहीं कर सकते ?"

उसने घबराहट से मेरी ओर देखा।

"तुम उसकी योग्यता से भली भाँति परिचित हो। तुम उसका कारखाने के स्टाक क्लर्क की अपेक्षा किसी अधिक अच्छे काम में उपयोग कर सकते हो।"

"तुम नहीं जानते कि इस देश का क्या हाल हो गया है," उसने कड़वाहट भरे स्वर में कहा, "तुम इन कई वर्षों में यहाँ से दूर रहे हो। मैंने लियो को यह काम और रहने की जगह दिला दी है। इस से अधिक मैं कुछ नहीं कर सकता। बिल्कुल कुछ नहीं, समझे ?"

"लेकिन क्यों, बताओ क्यों ?"

"वह बूजुआ है। यह उसकी खुशकिस्मती है कि वह किसी कोयले की खान में या बेगार शिविर में काम करने के लिए नहीं भेज दिया गया।"

मैंने कहा, "यह सब पागलपन है, टोंडा, यह देर तक नहीं चल सकता।"

"यही यहां के लोग भी कहते हैं। उनका कहना है कि यह हालत देर तक नहीं चल सकती। मोटे तौर पर हमारी अस्सी प्रतिशत आबादी उन के विरुद्ध है, हालांकि वे इसे स्वीकार नहीं करते।"

यहां उन लोगों से भी जो दल का चिन्ह धारण करते हैं 'वे' या 'उन' का जिक्र सुनना आश्चर्य की बात नहीं थी। वास्तव में अब यहां कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं रह गया था। और यह भी तब जब कि मुझे यहां आये अभी ४८ घंटे भी नहीं हुए थे।

"आदमी कर भी क्या सकता है ?" उसने कहा, "उन लोगों के पास पुलिस है, तोपें हैं। दूसरे लोगों के पास न दिमाग है और न कुछ करने का साहस। हर आदमी डरा हुआ है। आजा रात यहां आते हुए मैं भी डरा हुआ था। मुझे बस पर आना पड़ा। मेरी मोटर मरम्मत के लिए गई हुई है। मेरी रूसी पोबेदा गाड़ी में हर समय कुछ न कुछ गड़बड़ रहती ही है।" यह कह कर उसने गुस्से से सिर हिलाया और फिर बोला, "बस में मेरे सामने की ओर बैठे एक आदमी ने मुझ पर एक अजीब-सी नजर डाली। मैंने भी उसकी ओर देखा और स्वतः ही मेरे मन में प्रश्न जाग उठे।"

"कौन-से प्रश्न ?" मैंने पूछा।

"मैं समझता हूं कि हरेक के लिए भय का कोई न कोई कारण है। हर आदमी कोई न कोई चीज गुप्त रखना चाहता है। आदमी इस लिए भी डरता है कि कहीं उसके चेहरे से उसके सन्देह और इरादे प्रकट तो नहीं हो रहे। मैंने उस आदमी की ओर देखा और अपने आप से प्रश्न किया, 'उसका किससे सम्बन्ध है ? उसने दलका बिल्ला नहीं लगाया हुआ। इस लिए यह कहा जा सकता है कि वह गैर साम्यवादी है। किन्तु साथ ही यह भी असम्भव नहीं है कि वह इतना महत्त्वपूर्ण साम्यवादी हो कि उसे दलका बिल्ला लगाने की आवश्यकता ही न हो। हो सकता है, वह दल की केन्द्रीय समिति का सदस्य हो या खुफिया पुलिस का आदमी हो। या वह कोई प्रतिक्रियावादी भी हो सकता है। कहीं वह यह तो नहीं जानता कि मैं महज एक अवसरवादी हूं ? फिर वह मेरी ओर क्यों घूर रहा है। क्या मैंने आज, कल, गत सप्ताह, गत मास या कभी भी कोई ऐसा काम किया है, जो मुझे मुसीबत में फंसा दे ? कहीं इस का कारण यह तो नहीं कि अभी-अभी एक पुराने मित्र ने, जो अब अमरीकी है, मुझे फोन किया है ?"

"मुझे अफसोस है, टोंडा," मैंने कभी नहीं सोचा था······"

"नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। मैं सिर्फ यह बता रहा हूं कि किस प्रकार सारे राष्ट्र को घबराहट और चिन्ताएं खाये जा रही हैं। लोग जब सोते हैं तो भय उनकी हड्डियों में समाया होता है और जब वे सुबह सो कर उठते हैं तो भी वह ज्यों का त्यों कायम होता है। आज लोग बिल्कुल अकेले हैं, पहले हमेशा की अपेक्षा कहीं अधिक अकेले।"

मार्ता एक ट्रे लेकर भीतर आई, जिस पर कुछ गिलास, सफेद शराब की एक बोतल और मक्खन की मोटी तह से ढके काली रोटी के टुकड़े रखे थे।

टोंडा ने गिलास भरे और कहा, "आशा है तुम इसे पसन्द करोगे। यह हमारी आखिरी अच्छी बोतलों में से एक है।"

"लेकिन, अगर तुम हर वक्त कसूर ढूंढना बन्द कर दो और जैसी परिस्थिति है उसका यथासम्भव लाभ उठाने की कोशिश करो तो तुम जितनी शराब चाहो प्राप्त कर सकते हो," उस की पत्नी ने तीखेपन से कहा, "दल के सदस्यों को दूसरों से पहले चीजें मिलती हैं, ठीक है न ?"

"सुनो, मार्त्ता," टोंडा ने कहा, "मैं कितनी ही वार तुम से कह चुका हूं कि मैं किसी रौब दिखाने वाले विदूषक सरीखे आदमी से कृपा की भीख मांगने नहीं जा सकता।"

इसी समय टैलीफोन की घंटी बजी और मार्त्ता उसे सुनने के लिए चली गई।

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा भी दिन आयगा जब हमारे परिवार में राजनीतिक बातों पर बहस हो जायगी," टोंडा ने उदासी से अपने गिलास की ओर देखते हुए कहा, "एक जमाना था, राजनीति की बहस दिल बहलाव का साधन थी, जब लोग मदिरालय में बैठ कर और कोई बात न होने पर बेफिक्री से उस पर बहस करते थे। लेकिन अब जब भी हम में से कोई मुंह खोलता है, चाहे बच्चे ही हों, तो झगड़ा छिड़ जाता है। ऐंटोनिन को साम्यवादियों से नफरत है, किन्तु हेलेन्का उनकी जोरों से तरफदारी करती है। राजनीति हमारी रोजमर्रा की कड़वी खुराक हो गई है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे बातचीत का कोई और विषय हो ही नहीं। इस से मेरा तो मन बेचैन हो गया है।"

वह उठा और खिड़की के पास जा कर बाहर ताकने लगा।

"मुझे सूचना दी गई थी कि तुम यहां आ रहे हो," उस ने कहा,

"मुझे हैरानी हुई। मैंने सोचा 'वह सिर्फ अपने दोस्तों से मिलने ही यहां नहीं आ रहा होगा'।"

'नहीं, टोंडा, मैं यह पता लगाने के लिए आया था कि···"

उसने टोक कर कहा, "मुझे मत बताओ, । मैं गुप्त रहस्यों से नफरत करता हूं।"

मैंने कहा, "यह रहस्य नहीं है। तुम्हारी पुलिस जानती है कि मैं क्या करने आया हूं। तुम्हारे प्रचार मन्त्री भी जानते हैं···टोंडा, मुझे जैसे भी हो स्टर्न से मिलना है।"

वह वापस आ गया और मेरे सामने बैठ गया। उस का चेहरा सफेद हो गया प्रतीत होता था। पर सम्भव है यह मेरी कल्पना ही हो।

"जैक, ऐसा मत करो," उसने कहा। अब मुझे पूरा निश्चय हो गया था कि उसकी आवाज में डर छिपा हुआ है। वह डर गया था।

"मैं मूर्ख नहीं हूं," मैंने कहा, "मेरे पास अपना अमरीकी पासपोर्ट है······"

"तुम्हारी बात का ढंग तो मूर्खों का-सा है। तुम क्या समझते हो, क्या यह बच्चों का खेल है?"

"मुझे सत्य का पता लगाना है, टोंडा।"

"इस झंझट में हाथ मत डालो, जैक," उसने आहिस्ता-आहिस्ता, किन्तु जोर देते हुए कहा, "यहां कोई नियम-कायदा नहीं है। जब कोई गलत खेल खेलता है तो सीटी बजा कर रोकने वाला कोई अम्पायर यहां नहीं है। और अगर उन्हें पता चल गया कि तुमने काफी रहस्य जान लिये हैं तो वे गलत खेल खेलने पर उतारू हो सकते हैं।"

हमने बाहर का दरवाजा खुलने और बन्द होने की आवाज सुनी। टोंडा ने एक गहरी सांस ली, जैसे कि इस बाधा से उसे कुछ राहत मिली हो।

"हेलेन्का होगी," उसने कहा।

क्षण भर बाद ही उसकी लड़की कमरे में आई। वह एक सुन्दर लड़की थी किन्तु उस में एक ऐसी चिन्तापूर्ण गम्भीरता थी जिस से वह अपनी बारह बरस की आयु से ज्यादा बड़ी दीखती थी। न तो उसके बालों पर पड़ी हुई लाल जाली से और न टखनों तक के मोजों से ही उसके बालिका होने का पता लगता था। मुझे देख कर स्वागत में जरा सा मुस्करा-भर दी और जब मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया तो उसने उसे हल्का सा छू भर दिया और उसके बाद तेजी से अपनी उंगलियां खींच लीं। सारे समय वह बेचैनी से मेरी ओर देखती रही।

"हलो," हेलेन्का ने अपने पिता से बिना उनके पास गये कहा।

"स्कूल की कोई नई बात सुनाओ," टोंडा ने पूछा।

लड़की जरा हिचकिचाई और एक बार फिर मेरी ओर सतर्कतापूर्ण दृष्टि डाली। इसके बाद उसने कहा, "आज हमारा अपनी उस प्रतिक्रियावादी संस्कृति-विशेषज्ञा कात्या से फिर झगड़ा हो गया। हम स्कूल में अपने देश के मित्रों की एक चित्र प्रदर्शनी कर रहे हैं। वह उस में दो अमरीकी राष्ट्रपतियों — विल्सन और रूजवेल्ट — के भी चित्र लगाना चाहती थी। मुझे यह मामला छात्र समिति के सामने ले जाना पड़ा।"

"हेलेन्का शात्र समिति की सेक्रेटरी है," टोंडा ने मुझ से कहा। मैं निश्चय नहीं कर सका कि वह यह बात गर्व से कह रहा है या सफाई देने के लिए।

"यह छात्र समिति क्या चीज है?" मैंने पूछा।

हेलेन्का को जैसे बड़ा आश्चर्य हुआ हो। बोली, "क्यों, हर कक्षा में समिति है। हम लोग राजनीतिक शिक्षा, खेल, अखबार, लैक्चर, अर्थशास्त्र, सैर-सपाटा और साथ ही संस्कृति के विशेष अध्ययन के लिए कक्षा की एक

समिति चुनते हैं। संस्कृति के विशेष अध्ययन के लिए कात्या चुनी गई है। स्वभावतः वह इस प्रश्न पर एक के मुकाबले छः वोटों से हार गई। उसका कहना था कि ऐतिहासिक दृष्टि से ये दो राष्ट्रपति हमारे मित्र थे। इस से साफ जाहिर है कि वह किस किस्म की लड़की है।"

टोंडा ने गहरी सांस ली। बोला, "हेलेन्का, हमारे देशवासी वास्तव में ही इन दोनों आदमियों के बहुत ऋणी है।"

लड़की ने अजीब मुंह बनाया और बोली, "यह सही नहीं है और मैं इसे सिद्ध कर सकती हूं। आप जानते हैं 'लाल अधिकार' ने क्या लिखा है?" इसके बाद वह उस में से उद्धरण सुनाने लगी, 'हमारे इतिहास का जो अध्याय पश्चिमी देशों से सम्बन्धित था, वह अब समाप्त हो गया है। अब हम पश्चिम पर निर्भर नहीं हैं। हमारा राष्ट्र अब समाजवाद तथा महान् सोवियत यूनियन के साथ अनन्त्र मित्रता की ओर बढ़ रहा है।"

ये रटी हुई पंक्तियां उसने यंत्रकी भांति नीरस आवाज में दोहराई और मैं यह निश्चय नहीं कर सका कि वह यह जानती भी है या नहीं कि वह क्या कह रही है। उसके व्यवहार में बालकोचित कुछ भी नहीं था।

मैंने टोंडा पर नजर डाली और उसने उत्तर में जिस ढंग से मुझे देखा, उससे मुझे लगा कि उसे इस से दुःख हुआ है। वह धीरे-धीरे हेलेन्का को खो रहा था, किन्तु इस का कोई प्रतीकार उसके हाथ में नहीं था।

मैंने कहा, "हेलेन्का, तुम अभी बहुत छोटी हो। यह समझने की अभी तुम्हारी अवस्था नहीं है कि अमरीका ने इस देश के लिए क्या क्या किया।"

लड़की ने एक बार फिर मुंह बनाया।

उसके पिता गुस्से से लाल हो गये और उन्होंने कहा, "हेलेन्का, अगर तुम समझदार हो तो अपने कमरे में चली जाओ।"

हेलेन्का ने गर्दन हिलायी और वाहर चली गई।

घड़ी भर के लिए हम दोनों खामोश रहे। टोंडा की आंखों में निराशा देख कर दुःख हुआ। आखिर मुझे कुछ कहना पड़ा। मैंने सान्त्वना देते हुए कहा, "अभी वह बच्ची है।"

टोंडा ने एक गहरी सांस ली और अपना गला साफ किया।

"अभी वह बारह साल की है," वह बोला, "इस आयु की लड़कियों को किस चीज में दिलचस्पी लेनी चाहिए—किताबें, खेल या सिनेमा? मैं नहीं जानता। परन्तु हेलेन्का इन में से किसी की ओर भी ध्यान नहीं देती। उसके कमरे की दीवारें सोवियत श्रमवीरों के चित्रों से ढकी हैं। उसकी मौसी जारमिला उसके लिए कुछ पश्चिमी सिनेमा सितारों की तस्वीरें लाई थी, किन्तु उसने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसकी राजनीति के सिवाय किसी भी चीज में दिलचस्पी नहीं प्रतीत होती। उसने प्यानो सीखना बन्द कर दिया है और मार्क्स और लेनिन की जो पुस्तकें मैं पढ़ रहा हूं उन्हीं को गम्भीरता से पढ़ना शुरू कर दिया है। इस सब का कारण मुझ से मत पूछो। अब किसी बात का कोई अर्थ नहीं रह गया है। आओ थोड़ी शराब और लें।"

इसी समय मार्ता भीतर आई। ट्रे की ओर नजर डाल कर बोली, "तुमने कुछ भी नहीं खाया। क्या तुम मक्खन-रोटी पसन्द नहीं करते?"

"मेरा खयाल है, हेलेन्का की बातें सुनते-सुनते हमारी भूख सूख गई," उसके पति ने कहा।

मार्ता ने उसकी ओर प्रश्न भरी दृष्टि डाली और सांस लेकर कहा, "तुम शायद फिर बहस कर रहे थे। मैं चाहती हूं, टोंडा, तुम लड़की को अपने से विमुख मत करो।"

"मैं उसके दिमाग से ये बेवकूफी की बातें निकाल देना चाहती हूं।"

"एक दिन वह जरूर अपनी अध्यापिका से तुम्हारे बारे में कहेगी और फिर खुफिया पुलिस···"

टोंडा ने एक दम भड़क कर कहा, "पागलों की बातें मत करो।" उसकी पत्नी बीच में ही रुक गई और दरवाजे की तरफ चली गई।

वह भी उसके पीछे-पीछे गया। "मुझे बहुत अफसोस है, मार्त्ता," उसने कहा, "पहले कभी मैं आत्मसंयम नहीं खोता था।"

मार्त्ता ने मेरी ओर क्षण भर नाराजगी की नजर डाल कर उससे कहा, "लेकिन अब तुम बहुधा खो बैठते हो।" मैं सोचने लगा कि किसी तरह यहाँ से चला जाऊं। पर गया नहीं। मुझे टोंडा की सहायता की जरूरत थी।

"फोन पर कौन था ?" टोंडा ने पूछा।

"जारमिला। वह हमारे साथ खाना खाने आ रही है।"

"हे भगवान्, तुम्हें आज की रात ही उसे निमन्त्रित करना था ?"

"तुम तो जानते हो, जारमिला को निमन्त्रित करने की जरूरत नहीं पड़ती," मार्त्ता ने उत्तर दिया, "तुम भी मेरी बहन को उतना ही जानते हो, जितना मैं। वह स्वयं अपने आपको न्योता दे देती है। शायद वह सारे दिन शहर में कपड़े खरीदने के लिए फिरती रही और घर आ कर उसे मालूम हुआ होगा कि खाने को कुछ नहीं है। हां, जैक तुम भी तो उसे जानते हो।" यह कह कर उसने मेरी ओर दृष्टि डाली।

मैं जारमिला को अच्छी तरह जानता था। वह खूब उत्साही, तेज मिजाज की और सुन्दर स्त्री थी। जहां तक मुझे याद है, हमेशा उसके साथ कोई न कोई झगड़ा बना रहता। कभी वह स्कूल से निकाल दी गई है, कभी नौकरी से हाथ धो बैठी है और कभी किसी आदमी से उसकी बिगड़ गई है। कैसी भी कठिन परिस्थिति हो, वह घबराती नहीं थी। वह थियेटर और

सिनेमा की आलोचना करती और शहर का कोई आदमी नहीं था जिसके बारे में वह जानती न हो। वह अत्यन्त उदार थी और हमेशा कर्ज में डूबे रहना उसकी आदत बन गया था। वह नितान्त ईमानदार और साथ ही भावुक और मन-मरजी से चलने वाली थी। जर्मन कब्जे के दिनों में जब वह प्रतिरोधकारी दल में शामिल हो गई और मुक्ति सैनिकों के एक दल के साथ रहने जंगल चली गई तो किसी को भी आश्चर्य नहीं हुआ। वहां उसने मुक्ति सेना के एक साधारण सैनिक से शादी कर ली, किन्तु देश के मुक्त होते-होते उनकी भावुकता खत्म हो गई और वे दोनों अलग हो गये। जारमिला के पास एक कौड़ी भी नहीं रही, जब कि उसकी गोद में एक बच्चा था। कुछ समय तक उसने एक दुकान में सेल्ज गर्ल का काम किया और उसके बाद गुजारा चलाने के लिए घर की चीजें एक-एक कर बेचने लगी।

"मुझे उम्मीद है, सारी संध्या तुम दोनों में लड़ाई नहीं होती रहेगी," टोंडा ने अपनी पत्नी से कहा। मैं जानता था कि उसने जारमिला की वफादारी और दयालुता की हमेशा प्रशंसा की थी। शायद वह कभी उसके प्रति आसक्त भी रहा था, किन्तु यह बहुत पुरानी बात थी।

"मैं नहीं लड़ती," मार्त्ता ने कहा, "झगड़ा जारमिला ही शुरू करती है। वह तुम्हारे जैसी है और किसी भी तरह नहीं मानती कि जमाना बदल गया है। जिन्दगी का अर्थ अब रात्रि क्लब में मजेदार शाम बिता देना ही नहीं रह गया है।"

उसने अपने पति की ओर दृष्टि डाली। मैं हमेशा इस भ्रम में रहा हूं कि टोंडा और मार्त्ता का विवाह सम्बन्ध बहुत सुखी है। हो सकता है वह जारमिला के प्रेम में पड़ा रहा हो, किन्तु यह तो उसकी जवानी के दिनों की बात है और बहुत दिन पूर्व ही भुलाई जा चुकी थी (कम से कम मेरी यह धारणा थी) और मार्त्ता इस बात को लेकर अपनी बहन के प्रति नाराजगी नहीं रख सकती थी।

"जारमिला अब रात्रि क्लबों में नहीं जाती," टोंडा ने नाराजगी के स्वर में कहा।

"पर वह जाती थी, खूब जाती थी और तुम्हीं उसे वहां ले जाते थे।"

"मैं क्या कर सकता हूं जब तुम रात्रि क्लब में जाना पसन्द ही नहीं करती।"

"मैं भी जाना पसन्द करती हूं, परन्तु दूसरों के साथ!" उसने गम्भीरता से कहा, "क्या तुम समझते हो कि वहां तुम्हारे साथ बैठना और उदासी भरे चेहरे की ओर देखना आनन्दप्रद है? और फिर सारी शाम में तुम सिर्फ एक बार मेरे साथ नाचते हो और उस पर चाहते हो कि इसके लिए मैं तुम्हारी कृतज्ञ होऊं! तुम ऐसे खूबसूरत आदमी हो—लेकिन दूसरों के लिए।"

यह कह कर वह गुस्से से दरवाजा बन्द कर चली गई।

थोड़ी देर में ही जारमिला अपने साथ अपनी लड़की अन्ना को लेकर आ गई। वह नौ वर्ष की सुन्दर कन्या थी, और अपनी मां पर गई थी। पिछले कुछ दिनों में मैंने यहां जो स्त्रियां देखी थीं उनके चेहरे पर एक थकान और निराशा की झलक थी। उन्हें केश या मुख के प्रसाधन की कोई चिन्ता नहीं थी। वे मुड़े हुए कालर वाले कोट और घिसी एड़ी के जूते पहनतीं। किन्तु जारमिला उनमें से नहीं थी। उसने बढ़िया कपड़े पहने हुए थे, उसके नाखूनों पर पालिश थी और पलकों के बाल रंगे थे। उसके केस चमकीले थे और उनकी खूब देखभाल की गई थी।

उसने मेरी गर्दन में बाहें डाल दीं और देर तक जोर से मेरा चुम्बन लिया।

"भगवान भला करे अमरीका का, जैक!" वह बोली, "मेरा भी एक बार अमरीका के एक अदभुत आदमी से परिचय हो गया था।"

मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ। जारमिला का सभी जगह अ ्भुत आदमियों से परिचय होता रहता था।

"हे भगवान्, मैं बुरी तरह थक गई हूं। एक जोड़ा जूते के लिए सारा शहर छान मारा है।"

"मैंने तुमसे कहा नहीं था ?" मार्त्ता ने अपने पति से कहा।

"अन्ना के जूते, मेरे नहीं," जारमिला ने कहा, "यह लड़की इतनी तेजी से बढ़ रही है कि इसके नाप के जूते ढूंढना भी मुश्किल हो गया है। तुमने 'मामा' के बारे में नया मजाक सुना है ?" 'मामा' राष्ट्रपति की पत्नी का मजाक का नाम था। वह सीधी-साधी औरत कितने ही चुटकलों और मजाकों का केन्द्र बनी हुई थी। जारमिला बोली, "किसी ने मामा से पूछा, श्रीमती क्या आप कल 'फिगारो का विवाह' (एक सिनेमा फिल्म) देखने जायेंगी। उसने उत्तर दिया, नहीं, मैं बहुत व्यस्त हूं। हां, मैं उन्हें बधाई का तार दे दूंगी।"

जारमिला और मैं खूब हंसे। और कोई नहीं हंसा। टोंडा नाराज-सा प्रतीत हुता।

"हंसी-मजाक करती हो," उसने कड़वे स्वर में कहा, "हमने अपनी आजादी और आत्मसम्मान खो दिया है और करते क्या हैं ? सिर्फ मजाक।"

"देखो, मायूस मत हो, टोंडा," जारमिला ने उसके सिर पर हल्का-सा चुम्बन अंकित करते हुए कहा, "यह हालत हमेशा नहीं रहेगी। कोई भी चीज हमेशा नहीं रहती। देख लेना, अगली वसन्त ऋतु में ही वे यहां आ पहुंचेंगे।"

"कौन आ पहुंचेंगे ?" मैंने पूछा।

"कौन ?" जारमिला ने आश्चर्य से कहा, "अरे, अमरीकी, और कौन ? क्या तुम्हें मालूम नहीं "मैंने किसी आदमी से यह बात सुनी है,

जिसका अब भी अमरीकी दूतावास में परिचय है। यह कोरी गप्प नहीं है। मेरे मित्र ने खूब समझ-बूझ कर यह बात कही है।"

टोंडा के ठण्डी सांस लेकर कहा, "ईश्वर जाने, तुम ये गप्पें कहां से सुन आती हो, जारमिला !"

"यह गप्प नहीं है। यह सच है, टोंडा," जारमिला ने कहा, "अच्छा तुम्हीं बताओ, जैक, अमरीकी कब आकर हमें मुक्त कर रहे हैं ?" यह कह कर उसने मेरी ओर देखा।

वह मेरी ओर टकटकी लगाए देख रही थी। उसकी नजर में आशा भी थी और निराशा भी। मैंने उत्तर नहीं दिया। मैं उसे बता भी क्या सकता था ? मैं झूट नहीं बोल सकता था और सच्ची बात उसे बताने का भी मुझे साहस नहीं था। यहांके लोगों को आशा की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी हवा, भोजन और पानी की। आशा नहीं रही तो जीवन अधिक समय तक जीने लायक नहीं रहेगा।

देर तक नीरवता छाई रही। जारमिला ने एक गहरी सांस ली।

उसने चुनौती देते हुए कहा, "फिर भी एक दिन वे यहां अवश्य आयंगे।" वह सचाई जानती थी किन्तु फिर भी उसे अपने आप से भी स्वीकार नहीं करती थी। वह आश्चर्यजनक स्त्री थी। उसने कहा, "मुझे थोड़ी शराब दो, टोंडा।" शराब पीकर और एक तला हुआ टोस्ट खाकर फिर उसी विनोद पूर्ण मुद्रा में लौट आई।। बोली, "मुझे अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिए, वर्ना जल्दी ही मैं 'मागा' जैसी हो जाऊंगी।"

मैंने उसे भरोसा दिलाया कि वह वैसी नहीं होगी।

"क्या तुमने देखा है कि किस तरह यहां सभी स्त्रियां मोटी हो जाती हैं ?" उसने कहा, "इसका कारण है कि वे आलू, समोसे और गोभी बहुत अधिक खाती हैं। यहां मांस मिलना मुश्किल है। मैंने अभी उस दिन एक अमरीकी पत्रिका देखी जिसमें मोटापा घटाने के बारे में एक लेख था।" इसके

बाद वह एक चाहभरी मुस्कराहट के साथ बोली, "जरा सोचो, सिर्फ थोड़ा-सा मांस और सलाद, और कुछ भी नहीं।"

"पंच वर्षीय योजना की समाप्ति पर हमें यथेष्ट मांस मिलने लगेगा," मार्त्ता ने कहा।

"पर उस समय तक तो हम सब समोसे की तरह फूल जायंगी," जारमिला ने मुझ से कहा, "और हमारा सुन्दर शहर एक रूसी गांव बन जायगा।"

उसने अपने लिए शराब का एक गिलास और भरा और कहा, "अन्ना आओ हेलेन्का के साथ खेलो।" फिर मुझ से बोली, "वह हमेशा बड़ों से चिपकी रहती है। कभी बच्चों के साथ खेलना नहीं चाहती।"

अन्ना ने सिर हिला दिया। बोली, "मैं हेलेन्का के साथ नहीं खेलना चाहती। वह साम्यवादी है।"

मुझे इससे आश्चर्य हुआ, किन्तु यह जाहिर था कि और किसी को नहीं हुआ।

"अन्ना!" जारमिला ने गुस्से में कहा, "मैंने तुम से कहा था कि यहाँ आओ तो ऐसी बात कभी मत करो!"

"तुम्हें उसे ऐसी बातें सिखानें पर शर्मिन्दा होना चाहिए," मार्त्ता नें अपनी बहन से कहा, "लड़की वयस्कों से भी गई बीती हो गई।"

"पर जो कुछ उसने कहा है, वह सही है, क्या नहीं?" जारमिला ने कहा, "हेलेन्का और उसके रूसी श्रम वीरों का क्या ठिकाना है! पिछले सप्ताह उसने अन्ना को घंटा भर रूस से आयी तस्वीरें दिखाने में लगा दिया। अन्ना मुझ से पूछती है कि उन तस्वीरों में सब लोग इतने बढ़िया कपड़े पहने क्यों नजर आते हैं। क्यों न आयें जब कि वे हमारी बनाई सब चीजें यहाँ से ले जाते हैं, और बदले में हमें सड़ा गेहूं भेज देते हैं, मानों हमारे पास पेट

भरने को रोटी न हो। जानती हो लोग क्या कहते हैं? वे कहते हैं, "हम रूसियों को अपना इस्पात और मोटरें देते हैं और इसके बदले में वे हमारा कोयला ले जाते हैं।"

"उन्हें तुम्हें आकर पकड़ लेना चाहिए। तुम इसी लायक हो।" मार्ता ने गुस्से से कहा।

"तुम अपने मित्र जल्लाद को चिट्ठी क्यों नहीं लिख देतीं? उसे मेरी गिरफ्तारी का आदेश जारी कर खुशी होगी। मैं उस हरामजादे को कभी पसन्द नहीं करती!"

"जारमिला!" टोंडा ने गुस्से से कड़क कर कहा। मैंने कभी उसका चेहरा इतना सफेद नहीं देखा था। कमरे में एकदम सन्नाटा छाया था। अन्ना आंखें फाड़ कर अपनी माँ की ओर देख रही थी।

"बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!" जारमिला ने नर्मी से सिर हिला कर कहा, "मैंने काफिरों की बात की है, मैंने तुम्हारे भगवान की बेइज्जती की है……खैर, मुझे इस बात की आज भी खुशी है कि तीन साल पहले मैं उस सभा में नहीं गई थी, जिसमें उस ने यहाँ देश भक्त मुक्ति सैनिकों के सामने भाषण दिया था। कामरेड टोंडा वासेक ने उसका परिचय दिया था।"

"क्या तुम्हारी उससे बात चीत हुई थी, टोंडा?" मैंने जल्दी से पूछा।

"सिर्फ दो-चार शब्द," उसने संक्षेप में कहा और गम्भीरता से सिर हिलाया। वह इस बात की चर्चा बढ़ाना नहीं चाहता था। किन्तु उसे जारमिला पर भरोसा नहीं था।

"नहीं, इनमें काफी देर तक बात चीत हुई," वह बोली। जारमिला जब बोलने लगती है तो कोई उसे रोक नहीं सकता। "दोनों में खूब दोस्ती थी। और एक दोस्त को उच्च पद पर देख कर टोंडा को जरा भी ईर्ष्या नहीं

हुई। अहा, ऐसा साधु आदमी है !" उसने कुछ घृणा के साथ कहा, "अपनी एकमात्र वहन की भी रक्षा नहीं की।"

"चुप रहो, जारमिला !" टोंडा ने कहा। मुझे लगा कि कहीं वह उसे मार न बैठे। उसके सूखे सफेद गालों के मांस के नीचे हड्डियां साफ उभरी दीख पड़ती थीं। "ईश्वर के लिए, इस बच्चे के सामने तो चुप रहो।"

जारमिला ने मानों उसकी वात सुनी ही नहीं।

"वेचारी लोला ! वह कैसी प्यारी लड़की थी। किसी समय तुम भी से प्यार करते थे। क्यों, जैक ?"

उसने मेरी ओर देखा।

"अगर उसका भाई इन्सान होता तो वह आज भी जिन्दा होती। किन्तु वह उसे जीवित नहीं देख सकता था। वह वहुत-से भेद जानती थी।"

उसने आहिस्ता से कन्धे उचकाए और उठ कर खिड़की की तरफ चली गई। किसी ने एक शव्द भी नहीं कहा। वच्ची अन्ना अभी तक स्तब्ध वैठी थी और उसकी आंखें खुली हुई थीं।

टोंडा मेरी ओर घूमा और बोला, "मुझे तुम्हें किसी रेस्टोरेंट में ले चलना चाहिए था। वहां हम इन सारी वेवकूफी भरी वातों को सुने विना वीते दिनों की वातें कर सकते थे।"

"जैक इन वातों को क्यों न सुने ?" जारमिला ने एकदम घूम कर कहा, "उसे भी मालूम होना चाहिए कि इन दिनों हमारे देश में परिवारों में किस तरह की वातें होती हैं। सारे देश में, लगभग हर घर में यही वातें होती हैं। लोग घरों में वैठते हैं और एक दूसरे को सिर्फ ताकते रहते हैं और एक दूसरे से डरते हैं। वच्चे अपने माँ-वाप से लड़ते हैं और माँ-वाप उन से डरते हैं। मैं अन्ना को 'स्नो व्हाइट एण्ड दी सैवन डवार्फ स' फिलम दिखनो

ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने स्कूल में उस से कहा कि वह सिर्फ रूसी फिल्म देखे।

"कुछ रूसी फिल्में बहुत अच्छी हैं," मार्त्ता ने कहा।

"तुम्हें मालूम होगा तुम ने रूसी फिल्में देखी हैं। क्या उस दरबान औरत ने तुम से वहां जाने को कहा था? कम्बख्त जासूस कहीं की!"

"जिस-जिस को तुम जासूस कहती हो, वे सब यदि जासूस होते, तो आज राष्ट्र के आधे लोग जेल में होते," मार्त्ता ने उत्तर दिया।

"हां, हैं नहीं हैं क्या?"

"चुप रहो! तुम तो फासिस्टों की-सी बातें करती हो?"

"और मैं पूछती हूं, तुम क्या हो" जारमिला ने चीख कर कहा।

"मैं? मैं जनवादी लोकतन्त्र समर्थक हूं!" मार्त्ता ने चिल्ला कर कहा।

"चुप रहो, चुप रहो, दोनों चुप हो जाओ!" टोंडा ने कहा, "मैं तुम्हारे झगड़ों से तंग आ गया हूं। चलो हम लोग खाना खा लें।"

मार्त्ता गुस्से से अपना होंठ काटने लगी। "मैं जाऊं, देखूं, खाना तय्यार हो गया है या नहीं।" यह कह कर वह रसोई में चली गई।

बाकी सब लोग कुछ देर खामोश बैठे रहे। अन्ना अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से चकित हो कर मेरी तरफ देखती रही। अन्त में जारमिला उठ खड़ी हुई।

"जाऊं, ज़रा मार्त्ता की मदद करूं," उसने कहा "आओ, अन्ना, चलें।" और वह चली गई।

टोंडा गद्दीदार कुर्सी की पीठ से सहारा लगा कर वैठ गया और आंख मलने लगा। वह अभी तक अशान्त था।

"अव दोनों जी भर कर रोयंगी," वह वोला," और दोनों में समझौता हो जायगा, क्योंकि वस्तुतः दोनों एक दूसरे से वहुत प्यार करती हैं। किन्तु पांच मिनट में ही फिर वही सव कुछ शुरू हो सकता है। यह एक मर्ज वन गया है। कभी-कभी जव जारमिला यहां होती है तो मैं रात दस वजे तक दफ्तर में ही रहता हूं ताकि मुझे घर आ कर यह सव झगड़ा न सुनना पड़े। मार्त्ता इस वात पर मुझ से वहुत नाराज है कि मैं इस वहस में जारमिला के विरुद्ध उसका पक्ष नहीं लेता।"

वह शून्य की ओर ताक रहा था। मैं टोंडा को हमेशा वखेड़ों और पेचीदगियों से वच कर आराम से सीधी-सादी जिन्दगी विताने वाला आदमी समझता रहा हूं। किन्तु किसी भी दिन यदि नजदीक से देखा जाता तो मालूम होता कि वह वखेड़ों से मुक्त नहीं है। ईश्वर ही जाने, इन क्लेसन्दा वहनों के सम्पर्क में आने के वाद इन पच्चीस वर्षों से उसने कैसे दिन विताये हैं।

"मैं जारमिला की इज्जत किये विना नहीं रह सकता, हालांकि वह कभी-कभी वेहूदा वातें भी करती है," उसने कहा, "वह एक ऊंचे दर्जे के साम्यवादी अधिकारी से शादी कर सकती थी। वह एक योग्य आदमी है और ईमानदार भी। तीस वर्ष तक वह दल का संगठन कर्त्ता रहा है किन्तु कभी उसने इस काम में हिचकिचाहट नहीं दिखाई। जारमिला चाहती तो रहने को वंगला, मोटर और अन्ना के लिए काफी कपड़े और जूते प्राप्त कर सकती थी, किन्तु वह इस आदमी के साथ खाना खाने या रात्रि क्लव म भी नहीं गई और तुम जानते हो जारमिला को इस का क्या दंड भोगना पड़ा? उसके पास किराया देने को पैसा नहीं है और अपने कपड़े वेच कर उसे दिन काटने पड़ रहे हैं। मुझे निश्चय है कि जव मार्त्ता ने उसे वताया होगा कि तुम यहां

हो तो वह अपनी आखिरी अच्छी पोशाक और अपना एकमात्र नाइलोन के मोजों का जोड़ा पहन कर आई होगी। कुछ सप्ताह पूर्व इस आदमी ने उसे एक बहुत बढ़िया काम दिलाने का प्रस्ताव रखा था, एक बड़ी दूकान के सहकारी मैनेजर का काम। निःसन्देह यह काम प्राप्त करने के लिए उन के पास ट्रेड यूनियन कार्ड होना जरूरी था और वह साम्यवादी दल में शामिल हुए बिना नहीं मिल सकता था। उसने कहा कि यह महज औपचारिक कार्रवाही होगी, किन्तु जारमिला ने स्पष्ट न कर दी।" इसके बाद फिर टोंडा ने आह भर कर कहा, "काश, मुझ में भी उसी के समान चरित्र की दृढ़ता होती।"

मैंने कहा, "किन्तु तुम बाल-बच्चेदार आदमी हो। तुम्हारे पत्नी है और दो बच्चे भी।"

"इस परिवर्तन ने कुछ ही लोगों के चरित्र को उज्ज्वल बनाया है और बाकी सब को गिरा दिया है," टोंडा ने कहा, "किन्तु परिवर्तन सभी में हुआ है। अब मुझे चैन की नींद नहीं आती। और जब मैं वहां अन्धेरे में सो रहा होता हूं, तब यह स्मरण करने की चेष्टा करता हूं कि यह सब घटित होने से पूर्व मेरी जिन्दगी कैसी थी। तब मेरी जिन्दगी की सब से बड़ी समस्याएं उस वक्त उठी थीं जब कि एण्टोनिन को न्यूमोनिया हो गया था और मार्ता अपने बजट से अधिक खर्च करने लगती थी। उस समय मैं सोचता था कि मुझे बड़ी चिन्ताएं हैं, किन्तु वे चिन्ताएं आज की समस्याओं के मुकाबले में क्या हैं? उस समय आज की भांति किसी भी रात सोते समय मुझे यह नहीं सोचना पड़ता था कि क्या मैं अगले दिन सुबह हर रोज की भांति उठ सकूंगा या वे लोग उससे पहले ही आ कर मुझे पकड़ ले जायंगे। वे लोग हमेशा पौ फटने के वक्त ही आते हैं ताकि किसी का ध्यान उधर न जाए।"

"किन्तु तुम्हारी तो अच्छी स्थिति है। दल में तुम्हारे मित्र भी हैं,"

टोंडा ने अपने हाथ उठाये और फिर निराशा के साथ उन्हें नीच गिरा दिया। बोला, "क्या तुम्हें दल और शासन के शोधन के लिए की गई कार्रवाहियों की याद है ? अगर वे लोग किसी को पकड़ने आयें—और कभी-कभी कोई भी उसका कारण नहीं जान पाता—तो उन से उसके बचाव का कोई उपाय नहीं है।"

बाहर का दरवाजा पुनः खुला और फिर बन्द हो गया। साथ ही ऐन्टोनिन कमरे में घुसा। वह लम्बा और भूरे बालों वाला नौजवान था। जब वह मुस्कराता तो मुझे उसके पिता की शक्ल याद आ जाती जब कि वह लड़का था। उस का मित्रतापूर्ण मुख व आंखें टोंडा के मुख व आंखों से मिलती थीं। टोंडा की प्रसन्नचित्तता भी उसने पाई थी। उसकी कारडुराय की जाकट और पेंट में कोई भी आसानी से उसे एक अमरीकी कालेज छात्र समझ सकता था।

उसने मुझ से हाथ मिलाया और इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि मैं उन लोगों से मिलने आया था। उसके पिता ने पहले ही उसे मेरे बारे में बता दिया था।

"अमरीका कैसा देश है ?" उसने पूछा, "काश, मैं भी वहां जा सकता।"

थोड़ी देर तक एक दुविधापूर्ण शान्ति छाई रही, और उसके बाद उसने सफाई देते हुए कहा, "मेरा मतलब है, यात्रा के लिए।"

"मेरा मन चाहता है, तुम वहां जा कर रह सकते," टोंडा ने धीरे से कहा, "लेकिन अपनी मां से मत कहना।"

"मैंने एक अमरीकी पत्रिका में नई अमरीकी मोटरों की तस्वीरें देखी थीं," ऐन्टोनिन ने मुझ से कहा, "वहां अब नित्य पहले से बड़ी मोटरें बन रही हैं। इतनी बड़ी कारें खड़ी कैसे की जा सकती हैं ?"

मैंने कहा, "बहुत-से अमरीकी इस सवाल का उत्तर खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मार्त्ता ने हमें खाने के कमरे में बुलाया। जब हम लोग मेज के चारों ओर इकट्ठे हो गये तो मार्त्ता शोरबे की रकाबियां ले कर आई। उसके पीछे ही जारमिला दूसरी तश्तरियां ले कर आई। दोनों की आंखें रोने से लाल हो रही थीं। टोंडा का कहना सही था। हम सब लोग बैठ गये। जारमिला मेरे साथ,उसके बाद अन्ना तथा ऐन्टोनिन एवं हेलेन्का हमारे सामने बैठे और उनके माता-पिता मेज के दोनों सिरों पर।

"रूसी श्रमवीरों का आज रात क्या हाल है ?" ऐन्टोनिन ने अपनी बहन से पूछा। उसके बाद आंख बिचका कर मुझ से बोला, "यह हमारे परिवार की ला पैशनेरिया है !"

हेलेन्का ने तुरन्त उसे लगाम लगाई। बोली, "प्रति क्रियावादी कहीं का !"

"ऐन्टोनिन ! हेलेन्का !" मार्त्ता ने कहा।

दोनों बच्चे चुप हो गये। मार्त्ता ने विषय बदलने के लिए मुझ से कहा कि उसने मेरे सामान में घर के सर्वोत्तम चीनी के बर्तन निकाले हैं।

वह बोली, "मैंने ये बर्तन अत्यधिक असाधारण मौकों के लिए रखे हुए हैं। एक बार एक प्याला मुझ से टूट गया। उससे मेरा दिल भी टूट गया, किन्तु अब मैं इसकी बहुत परवाह नहीं करूंगी। अब हम लोग भी इन का इस्तेमाल कर सकते हैं। कौन जाने हम सब का कब क्या हो जाय ?"

"मुझे अब ये सब चिन्ताएं नहीं हैं," जारमिला ने प्रसन्नता से कहा, "मैं पहले ही सब कुछ बेच चुकी हूं।"

मार्त्ता के मीठे समोसे आज भी वैसे ही स्वादिष्ट थे, जैसे कि मुझे उनकी उस जमाने की याद थी। उन में रसभरियां भरी थीं और ऊपर

पनीर, चीनी और मक्खन लगा था। मैंने उस से कहा कि वे खूब बढ़िया बने हैं। इस पर वह मेरी ओर देख कर मुस्करा दी। उस दिन मेरे लिए उसकी वही एकमात्र मुस्कराहट थी।

भोजन के बाद स्त्रियां और लड़कियाँ बर्तन धोने के लिए रसोई म चली गई। टोंडा, ऐन्टोनिन और मैं बैठक में लौट आये। ऐन्टोनिन एक रूसी व्याकरण पढ़ने बैठ गया। वह हमारे स्कूल की आठवीं कक्षा का छात्र था। रूसी अब वहाँ सबसे महत्वपूर्ण विदेशी भाषा थी, किन्तु वह लैटिन, अंग्रेजी और फ्रैंच भी पढ़ रहा था। सिर्फ उन्हीं लड़कों को अंग्रेजी और फ्रैंच भी पढ़ने की अनुममि दी जाती थी जो पहले से ही श्रमजीवी वर्ग के सदस्य हों।

थोड़ी देर में ही ऐन्टोनिन ने अपनी आंखें पुस्तक से ऊपर उठाई और अपने पिता से बोला, "आखिर उन्होंने कारासेक का खोज ही लिया है।"

'उसी जगह पर ?" टोंडा ने पूछा।

" हां, उसकी माँ आज वहाँ गई और उसे नीचे पहनने के कपड़े और कुछ अतिरिक्त भोजन देना चाहा, परन्तु उन्होंने उसे देने नहीं दिया।"

"मुझे उम्मीद है तुम्हारा इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं होगा," टोंडा ने चिन्तित हो कर कहा, "तुम्हारी माँ पिछले सप्ताह एक दिन सारी रात रोती रही। वह इस बारे में इतनी चिन्तित थी।"

"पिता जी, ऐसा कोई मामला ही नहीं था, जिससे सम्बन्ध रखने की बात हो।"

"फिर भी मैं चाहता हूं, तुम छोकरों से अलग रहो और अपने काम से काम रखो।"

इसके बाद टोंडा ने मेरी ओर मुखातिब हो कर कहा, "तीन सप्ताह पूर्व ऐन्टोनिन के तीन सहपाठी एकाएक लापता हो गये। निःसन्देह, इनके

पिताओं का बुरा हाल हो गया। तब पिछले सप्ताह उन में से एक का समाचार मिला। वह पुलिस के सदर मुकाम की एक कोठरी में कैद था। तुम सहज में ही कल्पना कर सकते हो कि इस सब का क्या अर्थ है। अब मालूम होता है कि दूसरा भी, जिसका हम अभी जिक्र कर रहे थे, वहीं है। शायद किसी जगह उससे कई दिनों तक राज्य-विरोधी प्रवृत्तियों के बारे में पूछताछ की गई है।"

"राज्य-विरोधी प्रवृत्तियां ! राम का नाम लो !" ऐन्टनिन ने कहा "उन्हें छ अमरीकी पत्रिकाएं मिल गई थीं, वे उन्होंने सारी क्लास में घुमा दीं। लैटिन के अध्यापक की इस पर नजर पड़ गई। वह अध्यापक ऐसा दिखाता है कि जैसे वह प्रतिक्रियावादी हो, किन्तु हमारा ख्याल है कि वह पुलिस का भेदिया है। हमारी आधी से अधिक कक्षा साम्यवादियों के विरुद्ध है।"

"मैं चाहता हूं, तुम जरा अधिक सावधानी रखो।" उसके पिता ने कहा।

"मैं बहुत सावधान हूं," लड़के ने कहा, "किन्तु इसका लाभ क्या ? उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। वे जानते हैं कि मैं पश्चिम-समर्थक हूं।"

"तुम साम्यवादी युवक संघ के सदस्य हो।"

लड़का हंसा। "हो सकता है कि पुलिस को धोखा भी दिया जा सके, परन्तु अपने सहपाठियों को नहीं दिया जा सकता। हम सब एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं।"

हेलेन्का भीतर आ गई।

एन्टोनिन ने अपनी रूसी व्याकरण की पुस्तक में ध्यान लगाया और मजाक करते हुए बोला, "सावधान हो जाओ, भाई, ला पैसनेरिया वापस आ गई है।"

लड़की बैठ गई। इसके बाद जैसे दीवारों से कह रही हो, इस प्रकार बोली, 'मैं ऐन्टोनिन के बारे मे सब जानती हूं। वह गुप्त रूप से अपनी कक्षा के एक प्रतिक्रियावादी गिरोह का सदस्य है, हालांकि वह एक अच्छा साम्यवादी होने का दिखावा करता है।"

"हेलेन्का !" टोंडा ने गुस्से से डांट कर कहा।

"मैं दरवाजे के पीछे से सब सुन रही थी !" उसने विजयी की भांति फर्श पर पांव पटकते हुए कहा, "हाँ मैंने सुना है, सब सुना है।"

टोंडा उठ खड़ा हुआ। मैंने सोचा शायद वह लड़की को पीटने वाला है।

"जाओ, अपने कमरे में जाओ, फिर इस कमरे में आने की हिम्मत मत करना," उसने बड़ी कठिनाई से अपनी आवाज को संयम में रखते हुए उस से कहा, "मैं अब तुम्हें इस रात का और नहीं देखना चाहता। यह दरवाजे के पीछे छिपकर सुनने की सजा है। जाओ।"

हेलेन्का ने जानबूझ कर अपनी एक टांग दूसरी टांग पर रख ली, किन्तु थोड़ी देर बाद फिर सीधी हो कर बैठ गई।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है," अन्त में उसने कहा, "मैं जा रही हूं। मुझे यहां से जाने में खुशी ही है।" यह कह कर वह मुस्कराती हुई बाहर निकल गई।

टोंडा जैसा का तैसा खड़ा रहा। उसकी कनपटी की नसें फड़क रही थीं इसके बाद वह बैठ गया और अपने हाथ मलने लगा।

"शहर के लोग कहते थे कि बासेक परिवार बड़ा सुखी है," उसने मुझसे कहा, "तुमने देख लिया हम कितने सुखी हैं।"

"हेलेन्का मूर्ख है, पिताजी," ऐन्टोनिन ने कहा, "अभी उस दिन उसने मुझे धमकी दी थी कि वह मेरी शिकायत करेगी......"

"चुप रहो !" टोंडा ने गर्ज कर कहा, "चुप रहो, अपना रूसी व्याकरण पढ़ो !"

मार्त्ता और जारमिला भी भीतर आ गईं। उन्होंने कहा कि उन्होंने अन्ना को मार्त्ता के कमरे सुला दिया है। मार्त्ता ने मेरी ओर देखकर कहा, "तुम सबको क्या हो गया है ? क्या फिर लड़ाई झगड़ा हो गया है ?"

टोंडा ने उत्तर नहीं दिया। वह रसोई में गया और एक ब्रांडी की बोतल लेकर वापस लौटा। जो पहला गिलास मिला वह उसने उठा लिया और आधा भरकर एक बड़ी-सी घूंट पी गया। ऐन्टोनिन कुछ नहीं बोला और बाहर निकल गया।

दरवाजे की घंटी बजी। टोंडा तन कर बैठ गया और भय से अपनी पत्नी की ओर देखने लगा। "वह कौन है ?" उसने पूछा।

मार्त्ता ने कहा, "हे भगवान् !"

जारमिला खड़ी हो गई। बोली, "मैं देखती हूं।"

वह बाहर गई और दरवाजा खोल दिया। वहां कुछ आवाजें सुन पड़ीं। इसके बाद जारमिला लौट आई। इसके पीछे-पीछे दरबान स्त्री थी, जिसने कन्धों पर एक शाल डाला हुआ था और इस समय भी शयनागार के स्लीपर पहने थी।

जारमिला ने मेरी ओर आंख का इशारा किया और बोली, "दरबान परेशानी में थी।"

"परेशानी में थी ?"

"सोच रही थी कि जब तुम्हारे अतिथि यहां से जाएंगे तब क्या तुम स्वयं उन्हें नीचे पहुंचा कर दरवाजा बन्द कर दोगे ? वह अब सोने लगी है।"

टोंडा कुछ परेशान-सा नजर आया। बोला, "जरूर, मैं जरूर उन्हें

नीचे ले जाऊंगा। मैं तो हमेशा ही खुद अपने अतिथियों को नीचे पहुंचा कर दरवाजा बन्द किया करता हूं, कामरेड।"

दरवान स्त्री ने कमरे मे इधर-उधर नजर डाल कर कहा, "यह कायदा है, कामरेड। वे नहीं चाहते कि उन्हें दरवाजा खुले रहने के कारण चिन्ता करनी पड़े।" फिर मेरी ओर ताक कर बोली, "और खास कर तब जब कि वाहर के लोग आए हुए हों।"

"एकाध गिलास शराब लोगी ?" टोंडा ने कहा, "तुम तो पसन्द करती हो ?"

"ले लूंगी, अगर तुम कुछ ख्याल न करो," दरवान स्त्री ने कहा और गिलास ले लिया। "फिर तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए !" कह कर गिलास खाली कर रख दिया। "अच्छा, मैं तो सोने लगी हूं। नमस्कार ! कामरेड वासेक, दरवाजे में ताला लगाना भूल नहीं जाना।"

वाहर का दरवाजा वन्द होने की आवाज हमें सुनाई दी। मार्त्ता उठी और वाहर के वड़े कमरे में नजर डालकर वापस आ गई।

"गई, चली गई वह," उसने फुसफुसा कर कहा।

"निकम्मी जासूस !" जारमिला ने कहा।

"ला, तुमने देख लिया," टोंडा ने मुझ से कहा, "तुमने हमारे सुखी जीवन की एक झाँकी आँखों से देख ली है। यही है वह अदभुत नया संसार, जिसके लिए मैं जंगलों में रहकर मुक्ति सैनिकों की तरफ से लड़ा था। मैं यह सब कब तक सहन कर सकूंगा ? एक साल और, और फिर मेरी सारी वचत की रकम खत्म हो जाएगी। हो सकता है कि हम सब भी एक दूसरे से अलग हो जाएं।" एक गहरी सांस लेकर उसने कहा, "तुम कब तक यहां ठहरोगे ?"

मैंने उसके प्रश्न में चिन्ता की झलक पाई। मैं सब समझता था।

मैं जानता था कि मुझे अपने पास रखना किसी भी तरह आनन्दप्रद नहीं है।

"एक दिन और," मैंने कहा।

मैं उठ खड़ा हुआ। घड़ी देखी, उसमें दस बज गये थे। जाने का वक्त हो गया था।

"आओ चलें, लियो को भी साथ ले लें," मैंने टोंडा से कहा, "मदिरालय में चल कर जरा गला तर करेंगे। स्कूल पास करने के बाद की पार्टी के बाद मैं एक बार भी उसमें नहीं गया।"

"इस वक्त ?" टोंडा ने कहा। उसे यह विचार पसन्द नहीं आया प्रतीत होता था।

"क्यों नहीं ? ईश्वर जाने फिर कभी हमारी मुलाकात होगी भी या नहीं। हो सकता है, ओटो बावर को भी हम साथ ले सकें।"

टोंडा ने इस पर फिर विचार किया और उठ खड़ा हुआ।

"अच्छी बात है," अन्त में वह बोला, "मैं मोटर के लिए फोन कर देता हूं और ओटो बावर को भी। मेरा ख्याल है कि लियो इस वक्त घर पर ही होगा ?"

"और कहां होगा ? उसने मुझ से कहा था कि वह हर रोज रात को घर पर ही रहता है।"

टोंडा ने सिर हिलाया और फोन करने चला गया।

जारमिला मुझे बाहर के बड़े कमरे में ले गई। बोली, "जब मैंने सुना कि तुम हमारे यहां आ रहे हो, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। हालांकि मुझे निमन्त्रित नहीं किया गया था, फिर भी तुमसे मिलने के लिए आज रात मुझे यहां आना पड़ा। किन्तु अब मैं सोचती हूं, जैक, तुम न आते तो अच्छा होता। हालात इतने दुःखद और निराशापूर्ण हैं।"

मैंने उसका हाथ थाम लिया और पूछा, "जारमिला, सच-सच बताओ, लोला का क्या हुआ ? अभी कुछ समय पूर्व तुमने जो कुछ हमें बताया था, उससे तुम निःसन्देह अधिक जानती हो।"

उसने अपने कन्धे उचकाए और एक आह भरी।

"युद्ध के आखिरी साल में यहां नहीं थी। मैं देशभक्त मुक्ति सैनिकों के साथ जंगल में थी। उससे पहले तक बीच-बीच में मेरी उससे भेंट हो जाती थी। उन लोगों ने उसका फ्लैट छीन लिया था। वह हेमार्केट में एक छोटे-से कमरे में रहती थी। मैं कभी-कभी उसे थोड़ा भोजन पहुंचाया करती थी। एक बार मैं उसे एक पुराना स्वेटर, गर्म दस्ताने और मौजे भी देने गई थी। उसकी सभी चीजें चली गई थीं, किन्तु फिर भी वह डटी रही। वह इस बात के लिए कृतसंकल्प थी कि जीवित रहेगी। वह लड़की आश्चर्यजनक थी।"

"उसके बाद," मैंने पूछा।

"देश के मुक्त होने के बाद मैं यहां लौट आई। किन्तु लोला वहां नहीं थी। जिस मकान में वह रहती थी, वहाँ एक बूढ़े ने मुझे बताया कि फरवरी १९४५ तक वह वहीं थी। एक दिन वह एक अजनबी के साथ घर छोड़ कर चली गई। मैंने उस आदमी के बारे में पता लगाने का बहुत प्रयत्न किया। मैंने सभी से पूछा, अपने मित्र मुक्ति सैनिकों से भी, किन्तु किसी को कोई खबर नहीं थी। उस समय मुक्ति सेना काफी बड़ी थी और उसके सदस्य एक-दूसरे से वैसे परिचित नहीं थे, जैसे प्रारम्भ में थे। वह रहस्यमय अजनबी, सम्भव है, मुक्ति सेना का आदमी न भी हो। हो सकता है, वह कोई सिपाही हो अथवा गुप्त सन्देशवाहक।"

"क्या तुम्हारा ख्याल है…"

"ओह, जैक," जारमिला ने मेरा हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, "यदि लोला जीवित होती तो अवश्य लौट आती।"

"मुझे सत्य का पता लगाना है, जारमिला।"

"सिर्फ एक ही आदमी है जो उसे जानता है"

"हां," मैंने कहा, "किन्तु वह मुझ से बात नहीं करेगा।"

"तुम टोंडा से क्यों नहीं पूछते ?" उसने जल्दी से कहा, "वे जानते हैं कि स्टर्न तक कैसे पहुंचा जा सकता है। वे..."

तभी टोंडा और मार्त्ता के बाहर आ जाने से जारमिला ने वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया। उसने मेरा चुम्बन लिया और वापस बैठक में चली गई। मार्त्ता ने भी मेरे लिए शुभ यात्रा की कामना की। यह स्पष्ट था कि उसे मेरे जाने का कोई दुःख नहीं था।

टोंडा की मोटर मकान के बाहर इन्तजार में खड़ी थी। शोफर ने हमारे लिए दरवाजा खोल दिया। जहां लियो रहता था, वहां जा कर हम रुक गये। मैं ऊपर उसके कमरे में गया।

लियो को बाहर जाने के विचार से बहुत खुशी हुई। वास्तव में उसने ऐसा व्यवहार किया, मानों उसे यह विचार पूरा करने से नफरत हो।

"यह निरा पागलपन है," उसने कहा और सिर हिलाया, "खैर, यह मत कहना कि मैंने तुम्हें पहले से चेतावनी नहीं दी थी।"

नीचे पहुंच कर टोंडा और उसने बिना एक शब्द कहे आपस में हाथ मिलाया।

"ओटो वावर कहां है," उसने मुझ से पूछा।

"मैंने उससे अभी फोन पर कह दिया है," टोंडा ने संक्षेप में कहा, "वह अभी-अभी हमारे साथ आ मिलेगा।"

हम खामोशी से शहर में से गुजर रहे थे। मदिरालय के सामने पहुंच कर दरबान ने मोटर का दरवाजा खोला। टोंडा को देख कर उसने झुक कर सलाम किया।

"एक जरूरी टैलीफोन आया है आपके लिए, कामरेड वासेक।" उसने कहा।

टोंडा ने मेरी ओर घूम कर कहा, "तुम लोग भीतर चलो। मैं भी अभी आकर शामिल हो जाऊंगा।"

मदिरालय में एक तरह की उदासी की छाया थी। बिजली की बत्तियों के चारों ओर गहरे लाल रंग के क्रेप के पर्दे लगे थे जिनकी मुझे खूब याद है। रोशनी के हल्केपन से भी उस जगह का भद्दा और मैलापन छिपा नहीं था। काउंटर के पीछे थोड़ी सी बोतलें पड़ी थीं और मदिरालय के लिए प्राइवेट कमरों पर पर्दे नहीं पड़े थे। सारा दृश्य नग्न और अश्लील सा लगता था। लियो ने कहा कि नये शासन की राय में अलग प्राइवेट कमरे पश्चिमी पतनोन्मुखता की निशानी हैं। इसलिए पर्दे उतार दिये गये हैं। फलतः मदिरालय का रोजगार भी मन्दा हो गया है।

सिर्फ थोड़ी-सी मेजों पर दल के लोग बैठे थे। इन लोगों ने नेक-टाइयां नहीं लगाई हुई थीं। उनके बिना इस्त्रा किये सूटों पर दल के बिल्ले लगे थे। कुछ ऐसे लोग भी थे जो अच्छे समृद्ध-से लगते थे, जिनके साथ दो कांसी के-से रंग की भूरे बालों वाली स्त्रियां भी थीं। उन्होंने हमारी ओर आश्चर्य भरी नजर से देखा। लियो ने अपना आखिरी अच्छा सूट पहन रखा था और टाई लगाई हुई थी। मैं स्पष्टतः ही विदेशी जान पड़ता था।

"टाई यहाँ एक तरह का राजनीतिक सवाल बन गई है," लियो ने कहा। ९० प्रतिशत लोगों ने उसे छोड़ दिया है, या तो इसलिए कि उनकी शिक्षा-दीक्षा ही वैसी हुई है, या इसलिए कि वे उसे एक बेकार का झंझट समझते ह, या इसलिए कि वे डरते हैं कि कहीं इसे उनके प्रतिक्रियावादी विचारों का चिन्ह न समझ लिया जाय। सिर्फ दल के बड़े लोग, जिनका

टाई पहनने लायक सामर्थ्य है, या विदेशी ही टाई लगाते हैं, या कुछ मुझ जैसे मूर्ख।"

"तुम्हें अधिक सावधान रहना चाहिए," मैंने कहा।

"मैं अब परवाह नहीं करता," उसने कन्धे उचका कर कहा, "जो होना है, वह देर-सवेर, एक दिन होगा ही।"

वेटर एक घिसा हुआ कोट पहने हमारे पास आया, जिस की कोहनियों पर से रोएं उड़ गये थे। उसने हमें ऐसे देखा, मानों हम पर कृपा कर रहा हो, और पूछा कि क्या हम ने मेज रिजर्व करा ली है। मुझे यह सवाल बड़ा विचित्र लगा क्योंकि हमारे इर्द-गिर्द कितनी ही मेजें खाली पड़ी थीं, किन्तु लियो को इस प्रश्न से आश्चर्य नहीं था।

"हमने मेज़ रिजर्व नहीं कराई," उसने उत्तर दिया। उसकी आंखों में एक विनोद पूर्ण चमक थी।

वेटर की नज़र से स्पष्ट रूप से असन्तोष झलकने लगा, मानों उस का खयाल हो कि हम कीमत अदा नहीं कर सकेंगे।

"कामरेड वासेक अभी पल भर में हमारे साथ शामिल हो जायेंगे," लियो ने उसे कहा।

इन शब्दों का असर जादू की तरह आश्चर्यजनक था। वेटर जरा झुका और एक नम्रतापूर्ण मुस्कान के साथ बोला, "जी हां, जी हां, यह तो हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है। आपने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा। कृपा कर मेरे साथ आइये।" कुछ झुके-झुके और मुस्कराते हुए वह हमें पीछे की एक मेज पर ले गया, जो उस स्थान के सामने की तरफ होने पर भी एकान्त में थी ताकि और लोग हमें देख न सकें। उसने हमारे लिए कुर्सियां बढ़ाई और अपने अंगोछे से मेज़ साफ की हालांकि उस पर रोटी के टुकड़े बिखरे हुए नहीं थे। मैं उसी समय आर्डर देना चाहता था किन्तु लियो ने

वेटर को थोड़ी देर बाद आने को कहा और वह आखिरी बार सलाम कर चला गया।

लियो हंसा। बोला, "आज हमारा खूब आतिथ्य होगा। हो सकता है, एकाध बोतल बढ़िया शराब भी मिल जाय, हालांकि शायद तुम्हें और मुझे न मिले, क्योंकि वह थोड़े से भाग्यशालियों के लिए ही सुरक्षित है।"

मदिरालय में बैठे लोगों की ओर उस ने संकेत किया और कहा, "दल के अधिकारी हैं, एक दो स्तखानोवाइट हैं। और उधर जो लोग दो औरतों के साथ बैठे हैं, वे महशूर चोर-बाजारिये हैं जो अच्छी कीमत मिलने पर हर चीज मुहय्या कर सकते हैं। इन लोगों की दल के लोगों से सांठ-गांठ है।"

एक छोटे-से मंच पर तीन आदमियों का एक वाद्यवृन्द था जिसका संगीत अमरीकी धुन की नकल प्रतीत होता था। कुछ जोड़ों ने संगीत की धुन के साथ नाचना शुरू कर दिया। परन्तु उस नाच में उत्साह नहीं था, मानों उन्हें अपरिहास रूप से यह काम किसी बन्धन से करना पड़ रहा हो।

"क्या तुम्हें टोंडा से कुछ पता चला?" लियो ने अत्यन्त धीमी फुस-फुसाहट की आवाज में कहा।

मैंने सिर हिला दिया।

"मेरे और बाबर के चले जाने पर तुम उसी के साथ ठहरना," उसने कहा, "लो, ओटा आ गया।"

दर्म्यानि कद का ओटो बाबर, जिसके सिर के बाल उड़ रहे थे, फूंक-फूंक कर सावधानी से कदम रखता भीतर आ रहा था' मानों उसे भय हो कि कहीं किसी के पांव पर उसका पांव न आ जाय। वह अब एक सरकारी अधिकारी था और टैक्स वसूली के दफ्तर में काम करता था। वह हमेशा ही एक साधारण आदमी रहा है और ऐसा प्रतीत होता था कि समय ने उसके चहरे पर सामान्यता की छाप पूरी तरह अंकित कर दी थी। शक्ल से वह

पहले की अपेक्षा भी अधिक अज्ञात व्यक्ति था। उसने हमसे हाथ मिलाया, किन्तु मुझ पर एक बार नजर डालने के बाद मुश्किल से ही आंखें मिलाईं। ऐसा लगता था कि उससे मिले पन्द्रह वर्ष नहीं, पन्द्रह घन्टे ही गुजरे हों।

उसने सम्भ्रम के से भाव से इधर-उधर नजर डाली।

"मैं यहां एक अर्से से नहीं आया," वह बोला, "इतनी हैसियत ही नहीं। इसके अलावा पैसे की मालकिन मेरी पत्नी है।"

वह अपनी पतलून की क्रीज बचाने के लिए उसे सावधानी से खींच कर बैठ गया और पूछा, "टोंडा वासेक कहां है ?"

"वह मिनट, दो मिनट में ही आ जायगा," लियो ने कहा।

ओटो ने सिर हिला दिया। कहने लगा, "मैं पैदल आया हूं नये सिटी हाल के रास्ते से। सारे दिन दफ्तर में काम करने के बाद इन्सान को कमर सीधी करने की जरूरत पड़ती है। आज हमने दफ्तर का वक्त खत्म होने के बाद भी काम किया।"

"टैक्स वसूली का धन्धा कैसा चल रहा है ?" लियो ने मुस्कराते हुए पूछा।

ओटो अपने हाथ मलने लगा। फिर बोला, "हमारा कभी भी मन्दी का सीजन नहीं आता। लोग हमें यह समझाने की बेहद कोशिश करते हैं कि हम से कम टैक्स लिया जाय। अगर वे होशियार हों तो कभी ऐसा न करें। आखिर हम तो उतना ले ही लेते हैं, जितना मांगते हैं।"

मैंने उसके बिना दलीय बिल्ले के कोट पर नजर डाली और पूछा, "तुम दल के सदस्य नहीं हो ?"

ओटो कुछ हतप्रभ नजर आया। बोला, "मैं दल का सदस्य नहीं। मैं सिविल सर्विस का आदमी हूं। मेरा दफ्तर का रिकार्ड बहुत बढ़िया

है। गत सप्ताह टैक्स वसूली के दफ्तर के डायरेक्टर ने कहा था, 'वावर, मैं चाहता हूं, इस दफ्तर का हर आदमी तुम्हारे जैसा हो, अपना काम करता रहे और न अधिक वोले, न अधिक सोचे।''

मैंने उसकी ओर इस आशा से देखा कि उसकी आँखों में खुशी की चमक होगी, किन्तु वह तो नितान्त गम्भीर दिखाई दिया।

"हम जानते हैं कि तुम एक आदर्श राज्य कर्मचारी हो," लियो ने कहा, "किन्तु क्या आज इतना ही पर्याप्त है?"

"देश को मेरे जैसे आदमियों की जरूरत है," ओटो ने उत्तर दिया, उसकी आवाज में ईमानदारी की झलक थी। फिर सामने वैठे दल के लोगों की ओर इशारा कर वोला, "वे लोग तो आते हैं और चले जाते हैं, किन्तु हम लोग स्थिर रहते हैं।"

मैंने लियो पर एक आश्चर्य भरी नजर डाली। मुझे अनेक वार सन्देह हुआ था कि ओटो लोगों की नजरों में जान वूझ कर ही साधारण वना रहता है और उसमें सामान्य वुद्धि और समझ-बूझ वहुत है, किसानों के समान वह चतुर है। मुझे उसके वारे में इतना भी याद नहीं था कि कक्षा में वह कहां वैठता था। वह कक्षा में रोज आता था फिर भी ऐसा लगता था कि किसी की उस पर नजर नहीं पड़ती। एक वार प्रो० फ्रांक ने पूरे सत्र भर उसकी ओर ध्यान दिया, जव कि हम सव लोग हर वक्त डरते रहते थे कि न जाने कव हमें आवाज पड़ जाय। वर्ष की समाप्ति पर उसे 'सन्तोषजनक' लोगों की श्रेणी से स्थान मिलता था। उसे किसी भी चीज में 'अच्छी' 'वहुत अच्छी' या 'असन्तोषजनक' श्रेणी में कभी स्थान नहीं मिला। वह हमेशा 'सन्तोषजनक' श्रेणी में ही रहता। वह फुटवाल का खिलाड़ी था, किन्तु कभी सवसे प्रथम टीम में नहीं गया। हमारी कक्षा की तीन सुन्दर लड़कियों में से किसी से भी वह कभी नहीं मिला, वह वाहर जाता था वेरोनिका के साथ, जो देखने

में बिल्कुल सीधी सादी थी। नाटकों प्रदर्शनों या समारोहों में उसने कभी कविता नहीं सुनाई, गाना नहीं गाया, कभी बाजा नहीं बजाया, कभी नाटक में हिस्सा नहीं लिया और न कभी जादू का कोई खेल दिखाया। वह सिर्फ रंगमंच पर पर्दा गिराने या उठाने का काम करता था, जिस में उसने काफी निपुणता प्राप्त करली थी। इस प्रकार ओटो असाधारणता से बहुत दूर था।

पढ़ाई खत्म करने के बाद वह स्थानीय टैक्स कार्यालय में फाइल-क्लर्क बन गया था। एक छोटे से कमरे में, जहां उसके साथ चार और क्लर्क बैठते थे, टैक्स के विवरणों पर मुहर लगाने और उन्हें फाइलों में टांकने में ही वह पूर्णतः सन्तुष्ट था।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गये, उसके वेतन में वृद्धि और कमरे के क्लर्कों की संख्या में कमी होती गई। खुशहाली आई और चली गई। हिटलर राष्ट्र-पति बना, लोग युद्ध की बातें करने लगे, चैम्बरलेन म्युनिख से स्वदेश लौटा और शान्ति की बातें करने लगा, किन्तु ओटो उसी प्रकार हर सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन सुबह पौने आठ बजे से दो बजे तक और शनिवार को आठ बजे से बारह बजे तक दफ्तर जाता रहा। अन्तिम बार जब मेरी उससे मुलाकात हुई थी तब उसके बड़े से दफ्तर के कमरे में सिर्फ एक ही आदमी और बैठता था और उसे एक सेक्रेटरी भी मिला हुआ था।

"लड़ाई के दिनों में तुम कहां थे ?" मैंने पूछा।

"सेना ने मुझे लेने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि मेरी आंखें कमजोर थीं," ओटो ने उत्तर दिया, "साथ ही वे जानते थे कि मेरे बिना काम नहीं चल सकता। और मैं कहता हूं, वाकई नहीं चल सकता था। १९४२ में जब कुछ समय के लिए मैं बीमार पड़ा था, उस समय को छोड़ कर कभी भी मैं दफ्तर से गैरहाजिर नहीं हुआ। मुक्ति युद्ध के दिनों में भी मैं दफ्तर में

काम करता रहा। मुझे वे दिन खूब याद हैं। सारे दिन सड़कों व गलियों में घमासान लड़ाई होती थी। मैं टैक्स की कुछ फाइलें घर ले जाना पसन्द करता हूं ताकि भोजन के बाद जब मेरी पत्नी ऊनी कपड़े बुनती है, मैं कुछ काम कर सकूं। उस दिन भी शाम को घर जाते हुए मेरे पास फाइलें थीं। म हमेशा पैदल ही घर जाता हूं। मेरी पत्नी कहती है, 'व्यायाम तुम्हारे लिए अच्छी चीज है'। उस दिन ब्रिज स्ट्रीट के कोने पर खूब गोलियां चल रही थीं। यह सब अप्रिय था, किन्तु किया ही क्या जा सकता था। मैंने अपने मुंह के बचाने के लिए फाइलें आगे कर लीं और गोलियों के बीच से पैदल घर को चल पड़ा।"

मैंने आश्चर्य से सिर हिलाते हुए कहा, "सचमुच ?"

"मैं यह स्वीकार करता हूं कि मुझे उन फाइलों के बारे में चिन्ता थी". ओटो ने कहा। अवश्य ही उसने मेरे आश्चर्य का गलत अर्थ समझा था। बोला, "कल्पना करो वे नष्ट हो जातीं तो मेरे विरुद्ध अनुशासन भंग की कार्रवाही की जाती। तुम जानते हो फाइलें घर ले जाने का कायदा नहीं हैं। जब मैं घर पहुंचा, मेरी पत्नी मकान के सामने खड़ी थी, उसका चेहरा जर्द हो गया था। मुझे देखकर वह रोने लगी और बोली तुम सारे रास्ते पैदल आये हो ? मैंने कहा, जरूर, टैक्स विभाग के अधिकारी की एक बड़ी मोटर रखने की हैसियत नहीं होती।"

ओटो हंसा और फिर यह देखने के लिए उसने हमारी तरफ नजर उठाई कि हम ने उसके मजाक को पसन्द किया या नहीं। फिर कहने लगा, "मेरी पत्नी और भी जोर से रोने लगी और बोली कि मुझे उस समय शहर से इस तरह पैदल नहीं आना चाहिए था, जब कि हर आदिमी गोलियां चला रहा था। पर औरतों को तो तुम जानते हो। वे थोड़ी बहुत भावुक होती हैं। अगले दिन शाम को भी मैं पैदल ही घर आया, हालांकि उस दिन मैं फाइलें साथ नहीं ले गया।"

उसने माफी-सी माँगते हुए कहा, "मेरा ख्याल है कि इस कहानी में कोई नवीनता नहीं है, कोई रोमांच नहीं है ?"

लियो ने सिर हिला कर कहा, "नहीं तुम ने बड़ी रोमांचक कहानी सुनाई है, ओटो।"

ओटो ने आत्म-विश्वास के साथ खखार कर गला साफ़ किया। फिर बोला, "नहीं यारो, तुम मुझे बना रहे हो।"

"नहीं बिल्कुल नहीं," लियो ने कहा, "मुझे देखो। टोंडा को देखो, बल्कि हम सभी को देखो। हर आदमी किसी न किसी चीज से परे भागता रहा है। हर वक्त भागम-भाग रही है। सिर्फ तुम्हीं थे जो नहीं भागे, ओटो। तुम ने कोशिश तक नहीं की। तुम डटे रहे। तुम में कुछ ऐसा गुण है, जो हम सब में उस समय से ही कभी नहीं रहा जब हम सब बच्चे थे और वह गुण है स्थिरता।"

टोंडा भी आकर हम लोगों के साथ शामिल हो गया। उसने ओटो के साथ बिल्कुल शिष्टाचारी ढंग से हाथ मिलाया।

"बहुत अफसोस है मुझे," वह बोला, "सरकारी काम था।"

अब वह दूसरों से बिल्कुल अलग-अलग और रौबदार लग रहा था, मानों ट्रेड यूनियन केन्द्र के दफ्तर में अपनी मेज के पीछे अपनी कुर्सी पर बैठा हो। उसकी उपस्थिति से मदिरालय में एक हलचल-सी मची नजर आयी। कुछ लोगों ने आत्मीयता से उसकी तरफ हाथ हिलाये और कुछ को उसके हम लोगों के साथ आ बैठने से स्पष्टतः बहुत आश्चर्य हुआ। वह स्वयं यह अनुभव कर रहा था कि वहां वह सबके ध्यान का केन्द्र बना हुआ है और इससे वह बेचैनी महसूस कर रहा था।

वेटर बहुत नीचे तक झुक कर अदब दिखाता हुआ आया और टोंडा ने बढ़िया शराब का आर्डर दिया। वेटर जल्दी से चला गया।

वास्तव में अब हलचल शुरु हुई। एक और वेटर आया और वह टोंडा के आगे इतना झुका कि जैसे दण्डवत् कर रहा हो, जैसा कि पूंजीवादी युग में होता था। उसने धब्बों और दागों से भरा मेजपोश बदला। तीसरा वेटर शराब के गिलास और एक फूलदान ले कर आया। उसके बाद प्रमुख वेटर शराब की बोतल ले कर हाजिर हुआ और उसने सब के गिलास भर दिये।

एक दुविधापूर्ण बेचैन खामोशी छाई हुई थी। ओटो अपनी कुर्सी के सिरे पर इस तरह बैठा था, मानों उस का अफसर टैक्स-कलक्टर उसे लैक्चर देने वाला हो। लियो खूब आनन्द और रस ले रहा प्रतीत होता था, किन्तु टोंडा तन कर बैठा था और उसके चेहरे पर विषाद की छाया प्रतीत होती थी। यह जाहिर था कि हममें से कोई भी उस तरह के विनोद और हल्की-फुल्की बातों और सवालों के लिए तय्यार नहीं था, जो अनेक वर्षों के बाद इकट्ठे होने पर मित्रों में हुआ करती हैं।

"अच्छा, हम लोग किन की शुभ कामना के लिए जाम पियें ?" टोंडा ने हम सब की ओर नजर डालते हुए कहा।

"उन लोगों की शुभ कामना के लिए जो अब हम लोगों में नहीं रहे हैं," लियो ने कहा।

शराब हल्की और खुश्क थी और बाद में उसमें फूलों का-सा स्वाद आता था, जिस की मुझे उस वक्त भी खूब याद थी। इससे मेरी स्मृति उन दिनों की ओर लौट गई जब कि हम लोगों ने एक छिपी हुई जगह पर, जहां स्कूल अधिकारियों ने हमें जाने की मनाही कर रखी थी, शराब पीते हुए, पहले पहल चोरी से सिगरेट पीया था। लियो और टोंडा भी उस समय थे। उनके अलावा केन ओ' नील, व्लादो कैलर तथा कुछ अन्य लड़के भी थे। उन में से कुछ की अब मृत्यु हो चुकी थी। हैरीबर्ट की जर्मन सेना में एक

सार्जेंट-मेजर के रूप में मृत्यु हुई थी। केन ओ' नील अमरीकी सेना में लैफ्टीनेंट हो गया था और नार्मण्डी तट पर आक्रमण के समय उनकी मृत्यु हो गई। दो लड़के, जो ब्रिटिश आठवीं सेना के सदस्य थे, उत्तरी अफ्रीका में मारे गये थे। हमारी कक्षा के लड़कों ने द्वितीय विश्व युद्ध में सभी मोर्चों पर लड़ाई में भाग लिया था और वीर गति प्राप्त की थी। एक के बारे में बताया गया था कि युक्रेन में एक ब्रिगेड के सिपाही के रूप में, जो लाल सेना के साथ नत्थी कर दी गई थी, लड़ते हुए मारा गया था। शायद वह उस लड़के के खिलाफ लड़ रहा था जो जर्मन सेना में सार्जेण्ट-मेजर था। इन्सान के मरने के लिए इतनी सेनाएं थीं और इतने रणस्थल। तीन लड़के मुक्ति सैनिक के रूप में लड़ते हुए भी मारे गये थे। ब्राबर ओटो से लेकर विलर्ट जैक तक कक्षा के सभी साथियों को हमने याद किया, किन्तु उन के बारे में हमें बहुत कम जानकारी थी। और लड़कियां ? उनके बारे में शायद हम कभी भी नहीं जान पायंगे कि उनका क्या हुआ। वेरोनिका के बारे में, जो सुन्दर नहीं था, बताया गया कि वह अभी तक जिन्दा थी, पर कहां यह नहीं मालूम हो सका। बाकी सब खत्म हो गई थीं, सब की सब।

वेटर ने फिर हमारे गिलास भर दिये और आहिस्ता-आहिस्ता हमने बातें शुरु कर दीं। ये उन लोगों की बातें थीं जो इतने समय तक एक दूसरे से अलग रहने के कारण साथ न चल सकते हों।

मैंने प्रश्न किया कि प्रोफेसर फ्रांक का क्या हुआ ?

"बेचारा फ्रांक !" लियो ने कहा। उसने दुःख के साथ अपनी बाजू उठाये और फिर नीचे कर के कहने लगा, "आखिरी बार मैंने उसकी पत्नी को जर्मनों के नगर में आने से कुछ सप्ताह पूर्व देखा था। तुम्हें मैरियान की याद है ?"

वही मैरियान, जो नारियल की मिठाई की बेहद शौकीन थी और कभी यह नहीं समझ सकी कि मैं सड़क की उजली रोशनी में हमेशा क्यों

उसका चुम्बन लेता था ! वही मैरियान, जो गणित बिल्कुल नहीं जानती थी, फिर भी जिसका विवाह अन्त में जा कर हुआ एक गणित के अध्यापक से !

मैंने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"हम में आपस में देश से निकल भागने, पासपोर्ट और वीसा आदि के बारे में बातें हुईं। हमने होंडुरा द्वीप पुंज तथा अन्य सम्भव स्थानों के सम्बन्ध में चर्चा की। उन दिनों हर आदमी होंडुरा और क्यूबा का जिक्र किया करता था। मैरियान ने कहा कि नहीं, हम नहीं भाग सकते। प्रोफेसर फ्रांक को स्कूल का डायरेक्टर बना दिया गया था। पर वह डूबते हुए जहाज का कप्तान था। फ्रांक जीवन को ऐसा समझता था, जैसे कि वह एक समीकरण का सवाल हो जिस में एक नहीं, अनेक अक्षर अज्ञात हों। परन्तु वह समीकरण के हर सवाल का उत्तर निकालता था। उसने मैरियान से बे फिक्र रहने को कहा। मैं समझता हूं कि वास्तव में वह कभी भी यह नहीं समझ सका कि दुनियां में क्या हो रहा है।"

"यदि वह समझता तो आज शायद जीवित होता," टोंडा ने कहा। वह प्रोफेसर फ्रांक से हमेशा नफरत करता था। उसने फिर कहा, "यदि वह सही पक्ष की ओर होता तो आज वह आराम की जिन्दगी बसर कर रहा होता।"

"हाँ, परन्तु यह सब इस बात पर निर्भर है कि तुम सही पक्ष किसे समझते हो," लियो ने कहा और यह कह कर उसने टोंडा की ओर देखा। टोंडा ने जवाब में पहले उस पर और फिर चारों ओर नजर डाली।

"तुम्हारी खुशकिस्मती है कि कोई सुन नहीं रहा," टोंडा ने कहा।

लियो ने बेफिक्री से कन्धे उचकाए। बोला, "मैं परवाह नहीं

करता। उन्होंने मुझ से सब कुछ छीन लिया है। अब वे और क्या कर सकते हैं?"

"वे तुम्हीं को छीन ले जा सकते हैं," टोंडा ने कहा, "वे जरूर ले जायंगे एक दिन, मैं भविष्यवाणी करता हूं, यदि तुमने यह ध्यान नहीं रखा कि तुम कहां पग रख रहे हो।"

मैंने उसकी ओर देखा। मैं कुछ कह नहीं सकता था। क्या यह वही आदमी है जिससे अभी एक घंटा पूर्व ही मैं बातें कर रहा था, जिसने अत्यन्त हताश हो कर मेरे सामने अपने आन्तरिक भय की बात स्वीकार की थी? इस समय वह कठोर और न झुकने वाला कट्टर दलीय अधिकारी था जो किताबों के उदाहरणों से चलता है और नवीनतम दलीय नीति से जरा भी इधर-उधर नहीं होता। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि कोई आदमी इतना भ्रष्ट हो सकता है। किन्तु न लियो को और न ओटो को ही आश्चर्य हुआ। उनके लिए टोंडा का व्यवहार बिल्कुल साधारण था।

"प्रचार मंत्री ने क्या पिछले सप्ताह यह नहीं कहा था कि सरकार सबकी स्वतन्त्रता की गारन्टी करती है?" लियो ने पूछा।

हां, उन्होंने यह भी कहा था कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर लगाई गई सब सीमाएं अस्थायी हैं," टोंडा ने घिसी-पिटी नीरस आवाज में कहा। वह "लाल उधिकार" पुस्तक में से उदाहरण देती हुई अपनी लड़की जैसा लग रहा था। वह फिर बोला, "उन्होंने कहा था कि अभी ऐसे तिं यावादी हैं जो अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर सकते हैं।"

मुझे डर लगा कि कहीं दुबारा राजनीतिक बहस न छिड़ जाय। इस लिए मैंने फिर जल्दी से गिलास भर दिये।

"सुनो भाई, सुनो," मैंने कहा, "आओ थोड़ी और पीयें।"

ओटो हंसा। वोला, "यह अच्छा ख्याल है, राजनीति से कहीं अच्छा।"

टोंडा ने गट-गट कर अपना गिलास खाली कर दिया। शराब का असर उसके चेहरे पर नजर आ ने लगा था। वह ओटो की ओर घूमा।

"मैं तुम्हारे बारे में सोच कर हैरान हो रहा था," उसने लड़ाई के तर्ज पर कहा, "उस समय तुम कहां थे, जब देश क्रान्ति में से गुजर रहा था ?"

ओटो हतबुद्धि-सा प्रतीत आ। वह बोला, "मैं कहां था ? मैं यहीं था। मैं अपना काम कर रहा था। और मैंने हमेशा ही अपना काम किया है। मैं अपने दिन दफ्तर में बिताता और शाम को घर चला जाता।"

"हां, हां, यह ठीक है," टोंडा ने अधीर हो कर कहा, "परन्तु मेरा मतलब है, राजनीतिक दृष्टि से तुम में क्या परिवर्तन हुआ ?"

"क्यों ? कुछ नहीं हुआ," ओटो ने कहा।

टोंडा का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, 'मजाक करते हो ?"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा कि तुम क्या कह रहे हो," ओटो ने उत्तर दिया।

टोंडा ने मेज पर मुक्का मारा।

"दुनियां बदल गई है, ओटो," उसने कहा, "श्रमजीवी वर्ग ने इस देश में सत्ता ग्रहण करली है। पुराना समाज खत्म हो गया है और तुम कहते हो कि तुम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।"

ओटो मुस्कराया, मानों आखिरकार उसने सब समझ लिया है।

"हां, अवश्य ही हमेशा कुछ न कुछ होता रहता है," उसने कहा "दफ्तर में हमेशा कुछ न कुछ हलचल होती रहती है। लोग मुझ से मिलने

आते रहते हैं। वे गिड़गिड़ाते हैं, रोते हैं। आखिर, अब मैं फाइल क्लर्क तो हूं नहीं। मेरे ऊपर जिम्मेवारियां हैं।"

लियो हंसा।

टोंडा ने कहा, "ठीक है, परन्तु राजनीतिक दृष्टि से तुम्हारा क्या पक्ष है ?"

ओटो ने कन्धे उचकाये और बोला, "खरी बात यह है, भाई, मैं इस या उस पक्ष की चिन्ता नहीं करता। हमारी ओर से कोई भी राज्य का संचालन करे। जो भी शासक होगा, उसे हमारी जरूरत पड़ेगी। उसे राज्य चलाने के लिए धन चाहिए और हम उसके लिए यह धन जुटाते हैं।"

देर तक खामोशी छाई रही। ओटो ने अपनी घड़ी पर नजर डाल कर कहा, कि अब उसे घर जाना है।

"मुझे हर हालत में सुबह पौने आठ बजे दफ्तर पहुंच जाना चाहिए," उसने कहा, "हमें बड़ी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।"

वेटर बिल लाया। सभी ने अपने बटुए टटोलने शुरू किए, किन्तु टोंडा ने शान से उस पर हस्ताक्षर कर दिए और कहा कि पैसे की कोई फिक्र करने की जरूरत नहीं। ओटो और लियो उठ खड़े हुए। मैंने देखा कि टोंडा ने ओटो से हाथ मिलाया, परन्तु लियो से नहीं।

मैंने कहा, "देखो, टोंडा, तुम दोनों से हाथ क्यों नहीं मिलाते ? यह बचपना छोड़ो।"

टोंडा ने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे मेरा अभिभावक बुजुर्ग हो और फिर बोला, "बचपना? मेरे भाई, तुम नहीं समझते।" उसने बची हुई शराब अपने और मेरे गिलास में डाल दी।

"चिन्ता मत करो," लियो ने मुझ से कहा, "मैं उससे हाथ मिलाना नहीं चाहता।"

उसने और ओटो ने मुझ से हाथ मिलाया और चले गये। मैंने बड़ी थकान और परेशानी महसूस की।

"लियो निरा बेवकूफ है," टोंडा ने उदासी से अपने गिलास के भीतर झांकते हुए कहा, "एक दिन मैं उससे हाथ झाड़ कर अलग हो जाऊंगा और तब···उसने वाक्य पूरा नहीं किया।

मैं इस सब से ऊब उठा।

"हम सब हमेशा ऐसे पक्के दोस्त थे," मैंने उद्विग्न हो कर कहा, "और अब हरेक आदमी दूसरे से घृणा करता है। हम सब को क्या हो गया है?"

टोंडा ने सिर हिलाया।

"हमें इतिहास ने धर दबाया है," वह बोला, "हम चाहें या न चाहें, कुछ कर नहीं सकते। इतिहास के चक्र को उल्टा नहीं चलाया जा सकता। तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था, जैक।" वह उठ खड़ा हुआ और मेरी ओर हाथ बढ़ा कर बोला, "नमस्कार।"

किन्तु मैंने सोचा, अब वह चला गया तो मेरा आखिरी अवसर भी हाथ से निकल जाएगा।

इसलिए मैंने कहा, "टोंडा, मुझे स्टर्न से अवश्य मिलना है।···यह आखिरी चीज है जिसकी मैं तुमसे प्रार्थना कर रहा हूं।"

वह शून्य दृष्टि से कमरे के उस पार देखने लगा। अब कमरा लगभग खाली था। अधिकतर मेहमान उठ गये थे। वेटर जमुहाई लेता दरवाजे के पास खड़ा था।

टोंडा ने अपने दायें हाथ के मुक्के को नीचे की ओर कर मेरी बात न मानने का संकेत किया। एक क्षण के लिए मेरी आंखों के सामने अपनी कक्षा के बहादुर टोंडा की सूरत फिर गई, जिसके पास देरी से स्कूल

आने के लिए बहानों की कभी कमी नहीं होती थी, जो हमारी फुटबाल की टीम का कप्तान होता था और कहा करता था कि तब तक हार नहीं होती जब तक अम्पायर अन्तिम सीटी न बजा दे।

"अच्छी बात है," सने कहा, "तुम दूरदर्शी नहीं बनना चाहते, जैसा कि मार्त्ता कहा करती है। जब तुम लौट कर राजधानी में जाओगे, तो दल के दफ्तर में जाना और फोल्टिस नाम के एक आदमी से मिलना। वह मुक्ति सेना में मेरे साथ था। मैं आज रात उसे फोन करूंगा। अच्छा नमस्कार।"

"नमस्कार !" मैंने कहा, "और धन्यवाद।"

किन्तु वह उस समय तक जा चुका था। वेटर ने उसके निकलने पर झुक कर सलाम किया।
